

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.



श्रीसम्यक्तव मूल बार व्रतनी टीप.

हिंदुस्थानी भाषामां

पंफित श्री उद्योतसागरगणिविरचित.

द्वितीयावृत्ति

तेनुं

गुर्ज्ञरभाषामां भाषांतर करीने

समस्त सम्यक्दष्टि शुद्ध श्रद्धायुक्त सुज्ञजनोने भणवा वांचवाने योग्य जाणी.

शा़₀ जीमसिंह माएकें

श्री मुंबाख्य पुरीमध्यें

निर्णयसागराभिध मुद्रायंत्रमां मुद्रित करावी छे.

संवत् १९५४.

सने १८९७.

-

ञ्रनुकमणिका.

	STR 2	25.22				
विषय.					I	पृष्ठ.
मंगलाचरणना दोहा.	••••	• • • •		••••	••••	र
सम	यक्त्वन	तस्तरूपं				ζ
प्रथम सम्यक्त्वखरूपं.	• • • •	••••	••••	••••		ζ
व्यवहारथी द्युद्ध देवतल्	ৰ প্ৰীস্থ	रिहंतज	ीनुं लच	হায়.	••••	र
· · ·						হ
श्रीअरिहंतजीना चार नि		••••			••••	হ
निश्चयथौ शुद्ध देवतत्वनु				• • • •		ช
व्यवहारश्री शुद्ध गुरुतत्व				••••	••••	В
निश्चयंथी शुद्धगुरुतत्वनुं					••••	ह
व्यवहार शुद्धधर्मनुं लद्द		••••	• • • •	••••		् ह
निश्चयगुद्धधर्मनुं लक्तण		• • • •	••••			ر رو
सिथ्यात्वनुं लक्तण, अनेव	_	-		• • • •		रुव
निश्चयसम्यक्तवनुं खरूप		••••			* * * *	१६
					••••	रह
देराशरनी सहोटी दश व						29
सम्यक्त्वीनी करणीनुं स्व			****	••••	• • • •	<i>3</i> a
सम्यक्तवव्रतना पांच अ		 . .	 r	••••	• • • •	
व विंभिनां नाम तथा स्	रा पार्यु नजना	19100	ι,	****	• • • •	70 20
चार आगारनुं स्वरूप.	····	····		••••	••••	২ ০
्त्रथम स्थूल प्र						
डव्य अने जावशी स्वरू			• • • •			
आकुटी, दर्प, प्रमाद ने		· •				য়ঽ
श्रावकने सवा विश्वानी	दयानुं ः	स्वरूप.		• • • •	••••	হ৪

विषय.

प्राणातिपातविरमणवतना पांच अतिचार	২০
् दितीय स्यूल मृषावादविरमणव्रतस्ररूपं.	হ্র
डव्य अने जावश्री खरूप,	হির
कन्यालिकादिक पांच मोटकां जूठनां खरूप	হ্
मृषावादविरमणव्रतना पांच अतिचार	_
तृतीय स्यूल व्यदत्तादान विरमणव्रतस्वरूपं.	នុក
डव्य अने जावश्री स्वरूपं	ៜ៹
चार प्रकारनां अदत्तनुं स्वरूप	१८
श्रदत्तादानविरमणवतना पांच अतिचार	ชุร
चतुर्थ स्थूलव्रह्मचर्यव्रतखरूपं.	83
इव्य अने जावशी खरूप	83
परदरागमनविरमणवत तथा स्वदारासंतोषवतस्वरूपं.	ងច
ब्रह्मचर्यव्रतना पांच अतिचार	ଧଜ
पंचम स्यूलपरियहपरिमाखवतस्वरूपं	ષર
डव्य अने जावश्रीस्वरूप	<u>थ</u> ३
चौद अन्यंतरगंथिनां नाम	યર
नव प्रकारना वाह्य परिग्रहनुं जेदसहित विस्तारें वर्णन.	યપ્ર
नव प्रकारना परिग्रहनी तूट राखवा संवंधि विचार.	યદ્વ
परिग्रहपरिमाणवतना पांच अतिचार	यज
षष्ट दिशिपरिमाणग्रणवतस्वरूपं-	Ęσ
निश्चयवद्वारथी दिशिव्रतनुं स्वरूप	•
दिशिपरिमाणना जेद	
दिशिपरिमाणवतना पांच अतिचार	६३
सप्तम जोगोपजोगविरमणवतस्वरूपं.	६४
निश्चयव्यवहारश्री जोगोपजोगनुं स्वरूप	६ ए
वाबीश अन्नहय वस्तनां नाम	

...

_

¢

ं विषय.	(३)				দৃষ্ট.
बत्रीश अनंतकायनी	जातिनां नाम.	****	••••	••••	ঀয়
ञ्चनंतकायनां लक्त्ण.	••••	• ••••	• • • •	••••	গ্র
चौद नियम, प्रत्येक ।	देवसें धारवा, ते	नां नाम	तथा रु	वरूप.	9 8
पंदर कर्मादाननुं खरू	्प, सविस्तर पर्य	पेवे.	••••	••••	ወረ
पंदर कर्मादान राखव	ानी विगत.	• • • •	••••	• • • •	ए र्
जोगोप जोगविरम णव	-		••••		ણ્ય
শ্রহন	ञ्चनर्थदंभविरमा	ग्वतस्वरूप	ŧ.		୯୨
सप्रयोजन अर्थदंगना	चार प्रकारनुं स	वरूप.	• • • •	••••	ଜ୍ଞ
प्रथम ञ्चनिष्टसंयोग व्य	प्रने बीजुं इष्टविये	ोग आर्त्तध्य	ाननुं ल	क्ति.	୯୯
त्रीजुं रोगनिदान आ	र्त्तध्याननुं लक्ता	U.	••••	• • • •	रेवव
चोशुं अग्रशोच आत्त	ध्याननुं लक्तण		••••		<u>र</u> ेवर्
पेहेलुं हिंसानंद रौड	ध्याननुं लक्तण.	• • • •	••••	< * • •	Sas
बीजुं मृषानंद रौंद्रध्य	ाननुं लक्तण.		• • • •	••••	१०६
त्रीज़ुं चौर्यानंद रौड़क	याननुं लक्त्ण.	••••	• • • •	• ••	१ण्ट्
चोथुं संरक्तणानंद रौ	द्रध्याननुं ल क्तण	1. छहीं सुध	ग्री प्रथ	म छप	ı
ध्यान अनर्थ दंगना व	प्रार्त्तध्यान छने	रौडध्यान,	ए बे जे	द हे. रे	Ì
प्रतिजेदो सहित कह्य	π	• • • • •	••••	1 2 • • •	रण्ट
बीजुं पापकर्मोंपदेे्रा व	अनर्थदंगनुं लक्त	ए.	••••	••••	रेou
त्रीजुं हिंसप्रदान अन					
चोथुं प्रमादाचरित छ	।नर्थदंग्नुं लक्तण			••••	રરય
ञनर्थदंनविरमणव्रतन				••••	
नवम सामाय	कनामक प्रथम (शेकावतर	वरूपं '		<u> </u>
सामायकमां लागता	बार कायना,दर	ा मनना इ	प्रने दुइ	ा वच	
नना. ए रीतें वधा मत	न्नी बत्री श दोषन	ां नाम तथ	ग लक्त	ण.	৻ৼ৻
•	\sim ·				

सामायकवतना पांच त्यतिचारतं स्वरूप

205

	•		•		
देशावगाशिक व्रतना पांच अति	ाचा.	* • • •	* * * *	••••	रइर
एकादज्ञ पौषधोपवासरूप तृ	तीय शि	काव्रतर	वरूपं.		રરૂય
देश थकी तथा सर्वथकी पोसहतुं	<u> </u> रुवरूप,	,	• • • •	• • • •	રરૂપ
ञ्जाहारादिक चार प्रकारना पोर	।हनुं लद्द	ন্.	••••	••••	રરૂપ
	••••				৻ঽঀ
पोसहंवतना पांच अतिचार.	••••	• • • •	••••		৻ঽ৻
पोसहमां छढार दोषनो त्याग व	हरवो, तेन	नां नाम	ſ.		
द्वादश अतिथिसंविजागना					
अतिथिनुं लक्तण	-	••••			Հধহ
जैनमार्गीदातारना पांच गुएनां		* * * *			<u> </u>
आहार आपतां आवकथी थता	शोल दो	षनां न	ाम.		5 83
साधुं श्री थता शोल दोपनां नाम				••••	११७
द्रा ग्रहणदोषनां नाम					રયદ્
आहार करति वखत मंघलीना				• • • •	१्रय्ए
ञ्चति थिसंविजागव्रतना पांच अ	-				रुइर
श्री संक्षेषणाव्रता	तेचार ख	रूपं.	• • • • •		१६५
डव्यसंबेषणा छने जावसंबेषण	ानुं खरूप				रुइए
संखेपणा वतना पांचं अतिचार.			••••		
~ 		2			
ज्ञानाचारना आठ अतिचार.	•••	••••	• • • •	••••	१६ए
द्रीनाचारना आठ अतिचार.	• • • •		••••	• • • •	র ৪১
चारित्राचारना आठ अतिचार.	• • • •	••••			१ ७ए
तपाचारना वार छतिचार.	• * •	• * • •	• • • •	• • • •	3 52
वीर्याचारना त्रए व्यतिचार	* * * *			• • • •	৻ ৻ঢ়
यंथसमाप्तिना दोहा	****	* * * #	• • • •	••••	৻ ৻৻৶

विषय.

दशम देशावगाशिक दितीय शिक्तावतस्वरूपं.

पृष्ठ.

॥ श्री गौतम गुरु ज्योनमः ॥

স্সয

श्री श्रावकना बार व्रतनी टीप प्रारज्यते.

॥ दोहरा ॥

 \sim

सदा सिद्ध जगवानके, चरण नमुं चित लाय; श्रुतदेवीपुनी समरिये, पूजुं ताके पाय. ॥ १ ॥ करुं सुगम जाषा सही, बारह व्रत विस्तार; जिन्न जिन्न जेदे करी, जव्य जीव जपगार. ॥ १ ॥ 'पंचाणु व्रत प्रथमते, तीन गुण व्रत जाण; शिक्ता व्रत चारु मिली, बारह व्रत जु वखाण ॥३॥ शास्त्र सुग्रुरु जपदेश सुनि, धारे व्रत शुज चाल; ता घरि जश सुख संपदा, होवे संगल माल. ॥ ४ ॥ बुध ज्योत सागर गणी, अपनी मति अनुसार; विधिश्रावकके व्रततणी, पीपलिखुं निरधार. ॥ ८ ॥

खां प्रथम सम्यक्तवरूप विखेठे. ते समकितना वे जेदठे. एक व्यवहार समकित छने बीजो निश्चय समकित. छंहींसम्यक्तव शब्दनुं छर्थ लखेठे (तत्वार्थ श्रद्धानं सम्यक्त्वं) तत्व एटले जे यथार्थ खरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा तेने सम्यक्त कहीए, ते तत्व त्रण प्रकारनुं ठे. एक देव तत्व, बीजुं गुरु तत्व, त्रीजुं धर्म तत्व, अपे प्रकारनुं ठे. एक देव तत्व, बीजुं गुरु तत्व, त्रीजुं धर्म तत्व, अने वली ए त्रणे तत्वनी सददहणा एटले जे साची प्रतित तेना वे जेदठे. एक व्यवहारथी छने बीजी निश्चयथी तेमां प्रथम व्य वहारथी ज्युद्ध देव तत्वनी सददहणा देखाडे ठे.

एमां देवतो श्री ऋरिहंतजी जेमना छढारे दोष इतय पाम्या बे. ते छढार दोषना नाम नीचे प्रमाणे वे.

(१) प्रथम छज्ञान दोष, बीजो कोध दोष, त्रीजो मान दोष, चोथो मा या दोष, पांचमो लोज दोष, ठठो अविरति दोष, सातमो हास्य दोष, ञ्चाठमो रति दोष, नवमो छरति दोष, दशमो जय दोष, छगीछार मो शोक दोष, वारमो छुगहा दोष, तेरमो निंदा दोष, चजदमो काम दोष, पन्नरमो छंतराय दोष, सोलमो मोह दोष, सत्तरमो मि थ्यात्व दोष तथा छढारमो निझा दोष. ए छढार दोष जेना मटी ग या हे, अने ए अहार दोषनो नाज्ञ थवाश्री अहार गुए प्रगट थ याहे, जेमने रतन्त्रयी जे ज्ञान दर्शन चारित्र ते क्तायक जावे थ ईंग्रे, जेमने अनंत चतुष्टयी संपूर्ण प्रगटीते, जेनाथी घनघाती कर्म नी सत्ता विघटी हे, जे जिन चारे निकायना देवतार्डने अने चो सठे देवेंड तथा नरेंड जे चक्रवर्त्यादिक तेने पूजनीक ठे, तथा जे चोत्रीश श्वतिशयेकरी युक्तवे, छने पांत्रीश गुण युक्त वाणीवडे देश नादेंने, जेमना आठ महाप्रातीहार्य शोजायुक्त सदा विराजेने, त था जेमनी एवी प्रजुता जगत्रयांतिशयरूप, वल, ऐश्वर्य, रुद्धि, सिऊि, बुऊि, जाति तथा कुलादि जावे उत्कृष्टवे. तो पण मददोप नो जेमने स्पर्श नथी वली जे अगिलाण पणे यथार्थ अने निर्देा ष एवी सकल जगत जीवने जपकारी देशना देवे, वली ज्यां श्री

अरिहंतजी विचरे लां फरती सवासो योजनमां इति उपडव नि वत्तें, ते इति उपडव सात प्रकारनाठे. पहेलो वर्षानी अतिदृष्टि, बीजो अनाइष्टि, त्रीजो उंदर प्रमुख जीवादिकनी वहुज उत्पत्ती याय, चोथो पतंग पद्दी तोता तीड प्रमुख धणा थाय, पांचमो मरकी जेनाथी वमनादिक विकारेकरी घणा मनुष्यादिक मरण पामे, ठठो खचक ते पोताना देशसंवंधी राजार्ठनुं सैन्य वियह करे अने सातमो परचक एटले अन्यदेशनुं आवेक्षुं कटक युद्ध हेतुए परस्पर लढाइथी वियह उपडव करे. ए प्रमाणेनी साते इति जे मना आगमने करी नाश पामेठे एवा श्रीश्चरिहंतजीठे. वली कृत कृत्य थयाथी जेमने कोइ साधननी न्यूनता रही नथी; जे मनी निर्विकारी शान्त मुद्धा जोवाथी काम, कोध, लोज अने मोहादिक छनादिना दोष मटे, छंतरमां संवरनी शैली प्रगटे, जेना वचन सांजलतांज छनादिनी मिथ्या च्रम जूल मटे जे श्रीछरिहंतजी चारे निक्तेपे सकल जीवने हितकारी हे.

चार निक्तेपा ते आ प्रमाणेवे.

प्रथम मान निक्तेपो एटखे श्रीश्चरिहंतजीनुं नाम जाणवुं. जेम नमो श्चरिहंताणं एटखुं नाम मात्र घाराधवाथी छनंतजीव मुक्ति पाम्या. बीजो स्थापना निक्तेपो एटखे जे श्री छरिहंतजी सकल दोषना चिन्होए रहित, निरुपम, सहज सुजग, समचतुरस्न संस्थानीय एवुं जे पद्मासन काउस्सग मुद्राते जिन विंबठे; तेने श्रीष्ठरिहंतजीनो स्थापना निक्तेपो कहिए. ते निःकामी लोकोत्तर स्थापनारूप जिन मुद्रानां दर्शने करी सेवा छर्चाए करी छनंत जीव मुक्ति पाम्या. त्रीजो इव्य निक्तेपो ते छावीरीते के, जेणे जिन पद निकाच त्त कखुं, पण पाम्यानथी, छने छागल जिनेश्वर थहो एवो जे जीवठे तेने इव्य छरिहंत कहिए. एना जावी ग्रणनुं ज्रूत काले उपचार करीने वंदन, नमन; स्मरण, प्रूजन छने स्तवन करतां पण छनेक जीव मुक्ति पाम्या.

चोथो जाव निक्तेपो एटले आप जगत उद्धरण समर्थ, चवन जन्मादि कल्याणक महोत्सव पूर्वक उत्तम कुलमां अवतार पामी ने, जोग कर्म सीम उदय अव्यापक रीते जोग विघ्न मटाडीने लोकांतिक देवकृत संकेत अवसरे वरसीदान सवा पहोरसुधी नि त्ये देइ करीने, संयम अहीने सम्यक्ज्ञान क्रियावडे चारे घनघाती कर्म क्तय करीने केवल ज्ञान पामे. ए वखत चल्लीताशन, चोसठे इंड सपरिवार आवी करीने अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे अहींयां रत्नमय सिंहासन उपर बेसीने निरवय देशनावडे जव्य जीवने प्रतिबोध करी चतुर्विध संघनी स्थापना करीने तीर्थप्र वर्त्तावे. सकल जीवने देशनावडे अनुप्रह करे. एवा जे समोसरणमां विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर तेने जाव अरिहंत कहिए, एमना चर्णार्विंदनी शेवाथी पण अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

एवा जे श्री छरिहंत देवाधिदेव, महा गोप, महा माहण, महा निर्यामक, महा सार्थवाह, महावैद्य इत्यादि बिरूदधारी, सकल स मकेति जीवना प्राणाधारक, सकल मुनि मनमोहन एवा जे श्री जिनेश्वर छरिहंत देव तेमने हुं देवकरी सरदहुं, एमनी सेवा करुं, एमनी छाज्ञा शिरधरुं, इतिश्री व्यवहार ग्रुऊ देवतत्व समाप्त. हवे निश्चय देव तत्व कहेंबे.

शुद्धात्म खरूप वस्तुगते वस्तुरूप प्रतीतिवडे शुद्ध तत्व श्रद्धा प्रगटे, ते निश्चय देव तत्वठे. एटले वरण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूप, क्रियादिथी रहित, शरीरथी जिन्न, योगथी जिन्न, छतिडिय, छविनाशी, छनुपाधी, छवंधी, छक्केशी, छमूर्ति, शुद्ध चैतन्य, झा न, दर्शन, चारित्रादि छनंतराण जाजन, सचिदानंद खरूपी एवुं मारुं छात्मतत्वठे, एम जे जाणवुं तेने निश्चें देवतत्व कहेठे.

हवे वीजा गुरुतत्वमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध गुरु कहेते.

जे पांच समिते समिता, त्रण गुप्तेकरी गुप्ता, समतात्मरमणे रमतां, पंचेंडिय दमता, व्यनेक छःकर परीसह उपसर्ग सर्व क माथी खयता, व्यनेक स्तुति निंदा सांजलवानुं तजीने समतारूप ग्रुज ध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काप्टने वालता,व्यनादि परचित विजाव परिएतिने वमता, जेने नहिं माया नहिं ममता, प्रतिक्रणे ग्रुरु चर्णाविंदे नमता, प्रतिक्तणे नव नव संयम स्थाने चढता, प्रति क्रणे ज्ञान दर्शनादि ग्रुण पर्याये वधता, पोतपोतानी शक्ति प्रमा णे नवीन नवीन तप किया करतां, प्रतिदिन आत्मवीयोंद्वासयुक्त ज्ञान कियाजास वडे लटिध प्रमुख ग्रुणे वर्त्तता, पंचांगी प्रमाण शु ऊस्याद्वादथी अनुसरीने ग्रुऊ चारित्राचार पालनरूप प्रवहणे क रीने संसार समुद्र तरता, सकल आ्राशंसा दोष त्यागी एक मुक्ति पद साध्य मन धरता, त्रिकरण शुर्ऊे एक विध श्रीजिनाज्ञानां प्रति पालक, दिविध धर्मना प्रकाशक, त्रिविध रत्न त्रयीना धारक, चतुर्वि ध कषायना जीपक, पंचविध शुजजावनाये युक्त थका पांच सहाव्र तना धुरंधर धोरी, ढविध ढकायना परम रक्तक, सप्तविध जय स्थानथी रहित, अष्टविध सदस्थानकना जीपक, नवविध ब्रह्मगु सिना धारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालवामां सावधान, एकाद शांग सूत्रना ऋर्थ विस्तारे पठन करवामां रसिक, इत्यादि उत्तरो त्तर ऋगणित गुण गणालंकुत गात्र, परम पात्र, परमोपकारी, झ ष्टादश सहस्र शीलांगरथधारी,नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान चारी, ञ्जनियत नव कब्पविहारि, सडतालीश दोषरहित गुऊाहार आ हारी, जेनी परीक्ता कसोटीए कस्या जात्यवंत सोनानी परे अ धिक ऋधिक गुणना रंगधारी, शत्रु मित्र समचित्तदृष्टि, जे कुखि पू रक संबलश्री नहीं ऋधिक वित्त, परमगुणी, परमदयाल, जगतबंधु, जगहितकारी, ज़ारंम पंखीनी पेरे अप्रमत्तचारी, पृथ्वीनी पेरे सर्व सहन करनारा, मधुकरी वृत्तिनीपेरे मुधा जीवी, आकाशनीपेरे निरा धार, गतप्रतिबंधी, छंतरमां छने बाह्यमां, सुता तेम जागतां, दिवज्ञ मां तेम रात्रीमां, एकाकीमां तेम महोटी परखदामां जेमने एकज प्र वृत्तिवे. एवा मुनिराज जविक जीवोने संसार समुद्ध तारवाने जेमना चरण वडसफरी वहाण समान खपरोपकारी ठे, एवा त्र्याजना वख तमां पण पंदर कर्म जूमिमां सर्व मलीने बे हजार कोडी साधु व त्तेंंग्रे. तेमने हुं गुरुतत्व करी सईहुं, एमनी आज्ञा माग्रं, एमने पर मपात्र बुद्धिए पडिलाजुं, एमनी कियानी श्रनुमोदना करुं, एवा शुद्ध

साधु मारा गुरुत्वंगे. इति व्यवहार शुद्ध गुरुतत्व समाप्त.

हवे निश्चयथी गुरुतत्व कहेंवे.

निश्चय गुरुतत्व ते गुऊात्म विंज्ञान पूर्वक वे. जे हेयोपादेय जपयोगयुक्त परिहार प्रवत्तिज्ञान तेने निश्चें गुरुतत्व कहीए.

हवे त्रीजा धर्मतत्वमां प्रथम व्यवहार धर्म कहेते.

श्रीश्ररिहंत देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमां वेसी करीने बार पर्पदानी वचमां श्रीगणधर पद धारीने त्रीपदी दान प्न वेक द्वादशांगीनी रचना करी, त्यां यथार्थ अर्थना कर्त्ता श्रीश्वरि हंतजी अने ते अर्थानुयायी सूत्रना कर्त्ता श्रीगणधर तेने श्रागम कहिए ते श्रागममां प्रकाश्या जे जाव सकल जीवोने हितकारी छुर्ग ति पडतां जीवने राखे तेने धर्म कहिए ते धर्म खरूपना बे जेद वे एक शुद्ध व्यवहार धर्म, बीजो शुद्ध निश्चय धर्म. त्यां प्रथम व्यवहार धर्म ते श्रीजिनागामोक्त शुद्ध दया खरूप विज्ञान पूर्वक जे धर्म प्रवृत्तिनु करवुं तेने कहिए वेए.

छहिंयां वली दयानु खरूप लखीए ठैए.

दयाना आठ प्रकार ठे. ऊञ्चदया, जावदया, खदया, परदया, खरूपदया, ञ्चनुवंधदया, व्यवहारदया तथा निश्चयदया. हवे ञ नुक्रमे ए ञ्चाठे प्रकारनी दयानुं संद्तेप वर्णन करीये ठीये.

प्रथम ऊव्य दया एटले जयण पूर्वक प्रवृत्तिए करी जे जीवर का करवी ते जैनमार्गिनो कुलधर्मेंठे. एने ऊव्यदया कहिए.

वीजी जाव दया एटले वीजा जीवने गुए प्राप्तिनी वुद्धे तथा डुर्गतिनो पतनोद्धारए झंतर झनुकंपावुद्धि सहित उपदेशादिक करवो तेने जाव दया कहिए.

त्रीजी खदया एटखे आपणो आत्मा अनादि कालनो मिथ्या त्व अग्रुऊ जपयोगथी अग्रुऊ श्रऊान पूर्वक अग्रुऊ प्रवर्त्तिए क रीने कपायादिक जाव शस्त्रथी प्रतिसमये झानादिक ग्रुणघात रूप जाव प्राण हणायठे; एंवुं श्री जिनवचनना जपकारे जाणी करीने खसत्ता जे परसत्ता प्रवृत्ति परिहाररूप, ग्रुद्धोपयोगधारी, विषय क षायथी दूर रहे. ग्रुजाग्रुज जदये अव्यापक रहे. अहींयां चेतना ख रूप सन्मुखंबे. तेने सुख छःखनी प्राप्ति ते कर्मोदयिक बे, पण मन मां हर्ष विषाद नरहे, प्रतिक्त्ए कर्मबंधनी चिंता रहे ते खदया. ए खदया वालो जीव पोतानी चेतना समारवाने जिन पूजा, तीर्थ यात्रा, रथ यात्रा, प्रमुख द्युत्ताश्रव प्रवृत्ति करीने जिनगुण गान ब हुमान पूर्वक पोतानी चेतन तत्वावलंबी करे, पुजलावलंबी पणुं मटाडे, जोके ए ग्रुजाश्रवमां बाहेरथी जोतां तो हिंसाढे,पण ए नि मित्तथी ऋनादिनी विजाव चाल मटे, गुणी जे श्री ऋरिहंतादिक तेना बहुमाने करीने आत्मा गुणप्राही थाय, अने ज्यारे गुण ग्राही थाय त्यारे ते ज्ञानी पण थाय, ते माटे सर्व साधकोने ए खदया ते परम साधन ढे. साधु पण नवकर्ल्पी विहार करे, उपदेशआपे, चर्चा करे, पूंजन प्रमार्जन करे ते खदयानी पुष्टिने वास्ते करे. छहींयां योगनी चपलताए करीने छाश्रव थाय खरो, पण चेतना खरूपानुयायी रहे, जिनाज्ञापले, कषाय स्थान मंद पडे, जन्नकता मटे, यथा बंदी पणुं मटे, धर्म प्रवृत्ति चढे तेथी खदया निमित्त जे ग्रुजाश्रव तेने साधु पण पोतानी दुशा माफक छादुरे.

चोथी परदया ते ए के, ढए कायना जीवोनी रक्ता करवी जे का रणे सर्व जीव जीव्युं चहायढे, सुखना ऋर्थी सर्व ढे, जेम ऋापणो जीव छुःखथी करे ढे तेम सर्व जीव छुःखथी जय पामेढे; एवुं जा णीने जीवनी दया करे तेने परदया कहीए. वस्ती ज्यां खदयाढे त्यां परदया नियमा ढे; छने ज्यां परदयाढे त्यां खदयानी जजना ढे.

पांचमी खरूपदया ते ए के छा लोक तथा परलोकना पुजलीक सुखनी छाज्ञामां तथा देखा देखीयें करीने जीव रक्ता करे तेने ख रूपदया कहीए. छा दयावडे करीने तरत तो पुजलीक सुख पामेठे पण पठी मेडकाना चूर्णनी पेरे संसार वधे छा खरूप दया विषे देखवामां दयाठे पण जावश्री हिंसाठे.

ठठी अनुवंध दया एटले श्रावक बहु आमंबर करीने मुनि वं दनने माटे जाय, उपकार बुद्धिवडे बीजा जीवोने आक्रोश ताड नादिक करीने शिक्ता आपे, सुमार्गे लावे कुमार्ग तजावे आसां उपरथी जोतां हिंसाढें पण आगल पोताना अने पारका जीवने लाज थाय तेथी अनुवंधनुं फल दयाने पामे. साधु तथा आचार्य पण पोताना शिष्य शिष्यणिने सारणा, वायणा, चोयणा तथा पडिचोयणादिक करे शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिए करी शिक्ता आपे कदापि पंचेंद्रि जीवने पण शुद्ध मार्गे प्रवर्त्ताववाने अर्थे शिक्ता करे, शासन स्थिर करे, ते अनुवंध दया कहिए.

सातमी व्यवहार दया एटले विधि मार्गानुयायी जयणा पा खे, कम वेस नकरे, जुले नहिं ते व्यवहार दया कहिए.

आठमी निश्चय दया एटले ग्रुऊ साध्य जपयोगमां एकी जा व छाजेदोपयोग होय, साध्य जावमां एकता ज्ञान तेने निश्चय दया कहीए ए दया ग्रुण ठाणे चढावे तेणे करी जत्क्वप्टठे.

इत्यादिक छनेक प्रकार दया खरूप विज्ञान पूर्वक सूत्र, निर्शुक्ति जाष्य, जूणि छने वृत्ति ए पंचांगी संमत्त प्रत्यक्तादि प्रमाण पूर्वक नेगमादिक नय शैक्षी पूर्वक नामादि निक्तेप रचना पूर्वक स्यादस्ति नास्तिप्रमुख सप्तजंगी खरूप रूप, यथार्थ विज्ञान पूर्वक ज्ञान कि या, तथा निश्चय व्यवहार, तथा ऊव्यार्थिक, पर्यायार्थिक इत्या दिक उत्तय जावमां यथावसरे श्रपितानर्पित नय निपुणताथी मु ख्य गौणजावे, उत्तय नय सम्मत एवी ग्रुऊस्याद्वाद शैली विज्ञान पूर्वक श्री सिऊांतोक्त दान, शील, तप, जावना, रूप ग्रुज प्रवार्त्त प्रवर्त्तन तेने व्यवहारथी ग्रुऊ धर्म कहीए. ピノ

ज्ञुद्ध निश्चय धर्म ते आत्मानी आत्मता जाणे, वस्तु खजाव ंजेलखे, जे आत्म डव्यने ते शुद्ध चैतन्यतारूप असंख्यात प्रदेशी अमूर्त लोक प्रमाण, सर्व पुजलथी जिन्न, अखंग, अलिप्त, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र सुख वीर्य अव्याबाधादि अनंत गुणमयी, ख गुए जोगी, अविनाशी, अनुपाधी, अविकारी एवो मारो आत्म इव्य खनाव तेज जपादेयुंगे, एनाथी जे विलक्तुण परपुजलादिक ते मारुं नथी, हुं तेनो नथी, ते पुजल जे वर्ण, गंध, रस फरसरूप ते ना पांच विकारढे. शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श, ए पांचेना उत्तर जेद श्वनेकने ए शब्दादि एकेक जेद वर्णादि चार चार जेद लइ रह्या वे. आ लोकाकाशमां जे अजवालुं वे: तथा अंधारुवे, शब्द जे उ ठेठे, सर्व रूपी वस्तुनो परठायो पडेठे, रत्नादिकनी कांति पडेठे, शित पडेंचे, ठाया पडेंचे, धूम्र पडेंचे, ताप पडेंचे, नानाप्रकारना रूप, रंग, संस्थानना घाटनो नमुनो दीठामां आवेठे तथा नाना प्रकारना रूप, रंग, संस्थाननी सुगंध तथा छुर्गंध आवेठे,नानाप्र कारना रसनी मजा हे, सर्व संसारी जीवोनी देह, जाषा, मननी कब्पना तथा प्राणना दश जेद हे, तथा पर्याप्तिना ह जेदहे, हास्य, रति, अरति, जय, शोक, छगंठा. खुशबख्ती, जदासी, कदायह, हठ, लढाइ, कषाय, क्रोधादिक चार, साता, ऋसाता, उंचपणुं, नीचपणुं, निद्रा, विकथा, सर्व पुन्य प्रकृति, सर्व पाप प्रकृति, रीज, मोज; खीज, खेद ठ, खेरया; खाजालाज, यरा, अपयरा, मूर्खपणुं, चतुरता, स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक वेद, कामचेष्टा, गति, जाति इलादिक जे आठ कर्मना विपाकठे. ते सर्व जीवने अनुजव सिद्धहे.

बीजा पण सुझ्मपुजल जे इंडिश्रोची श्रगोचर परमाणु त्रादि लइने श्रनेक जेदना श्रमहित एवा ढुटा पुजल ढे.ए पुजलना संयोग श्री चारे गतिमां जीव जटके ढे, ए पुजलनो संग तेज संसारठे.

र

، برد (<0)

एना संयोगथी जीवना छनंत ज्ञान दर्शन चारित्रादिक छनंत गुण वगडे, एवी जे पुजल डव्यनी रचना हे ते मारो खजाव नथी, ए पुज ल मारीजाती नथी, ए पुजलथी मारो संबंध नथी ए पुजल मारेत्या गवा योग्यंे पण श्चाद्रवा योग्यनथी. तथा जे धर्मास्तिकाय डव्यंे ते पण जीवनें तथा पुजलने गति सहायकारीठे, छने छधर्मास्तिकाय डव्य ते जीव पुजलने स्थिति सहायकारीठे, आकाश डव्य सर्वनुं जा जन अवगाहना दाइढे; कालडव्य नवपुरातनकारी वर्त्तनालक्त्ण वंतठे; एम ए चारडव्य जे ठे ते मारे झेयरूपठे: एनाथी पण मारुं खरूप न्यारुंठे. तथा वीजापण संसारी जीव जे हे, ते पण पोत पोताना खजाव सत्ताना धणीठे. ए पण मारा झेयरूपठे. ए सर्वनाथी हुं न्या रोढुं. ए मारा संगी नहीं तेम हुं एमनो संगी नहीं. हुं मारी ख नावसत्तानो धणी ढुं. मारो खनाव सम्यग् ज्ञान दर्शन चारि त्रादि रूप, अवन्ने अगंधे, अरसे, अफासे, चेंगणगुणे, अनंत अ व्यावाध, श्चनंत दान, श्चनंत लान, श्चनंत नोग, उपनोग, श्चनं त वीर्यादिक, अनंत गुण खरूपठे. तेमनी श्रद्धा जासन पूर्वक गुणाखादिकरूप चिदानंदनघन मारो खजावठे. एवोमाहरो पूर्णा नंद खनावते तेने प्रकट करवाने व्यवहार नयथी, सर्व ग्रुऊ व्य वहार जे वे ते निमित्त मात्रवे. पण मुख्य तो मारा खजावमांज र मए करवुं तेज ग्रुऊ साधनवे. तेज धर्म वे. तथाचोक्तं श्रीजत्तरा ध्ययनसूत्रे ॥ वह्रुंसहावो धम्मो ॥ इत्यादि विज्ञानपूर्वक चेतन प्रवृत्ति तेने निश्चय धर्म कहीए. ॥ इति धर्म तत्वं समाप्तम्.

ए त्रणे तत्वनी ज़े श्रद्धानिश्चल परिणति रूप प्रतित तेने सम्यक्त कहीए.॥ यजुक्तं सिद्धांते। निस्संकं पावयणं॥ जंजिणेहिं पवेहियं। तंतहा मेवसचं। एसमठे सेसे छाणठे॥ इत्यादि ते कारणे तत्वार्थ स र्दहणा तेपण सम्यक्त कहीए. छने एनाथी विपरीत वासना एटले तत्वार्थ छाश्रद्धान छाप्रतीत, छातत्वार्थ श्रद्धान ते मिथ्यात्व कहीए. ए मिथ्यात्वना मूल चार जेद हे. तेमां प्रथम परूपणा मिथ्या त्व एटले जिनवाणीथी विपरीत प्ररुपे. बीजुं प्रवर्त्तन मिथ्यात्व एटले मीथ्यात्वनीज करणी करे ते जाणवुं. त्रीजुं परिणाम मि थ्यात्व एटले मनमां, परिणाममां विपरीत कदायह रहे, ग्रुऊार्थ सरदहे नहीं. चोथुं प्रदेश मिथ्यात्व एटले सत्तागत जे मिथ्यात्व मोहनीना कर्मदल हे, तेने प्रदेश मिथ्यात्व कहीए ए कर्म दल विपाकमां आवे त्यारे परिणाम मिथ्यात्व होय, अने ज्यां सुधी तेदलीक सत्तामां पड्यां रहे त्यारे तो जीवने समकेत पण थाय.

हवे ए चारे मिथ्यात्वना उत्तरन्नेद एकवीशठे ते लखे ठे. १ प्रथम तो जिनप्रणीत जे शुद्ध निरवद्य धर्म तेने अधर्म कहे. १ बीजो हिंसाप्रवृत्तिप्रमुखआश्रवमयी अशुद्धअधर्मतेनेधर्मकहे. ३ त्रीजो संवरजाव सेवनरूप जे मार्ग तेने उन्मार्ग कहे. ४ चोथो विषयादि सेवनरूप जे उन्मार्ग तेने मार्ग कहे. ४ पांचमो विषयादि सेवनरूप जे उन्मार्ग तेने मार्ग कहे. १ पांचमो सत्तावीश गुणेकरी विराजमान, काष्टना नावसमान, तरण तारण समर्थ एवा जे साधु तेने असाधु कहे.

६ बछो आरंज परिग्रह, विषय कषाये जरेलो, लोज मग्न, कुवा सना दायी, लोढाना तथा पाषाणना नाव समान, एवो जे अन्य लिंगी तथा कुलिंगी असाधु होय तेने सुसाधु कहे. पण एम न विचारे के जे पोते दोश थकी जरेलोबे ते बीजाने केवीरीते निदों षि करशे ? जेम पोते दारिडी बतां बीजाने धनपती क्यांथी करशे ?

9 सातमो एकेंडियादिक जे जीवोठे तेने छजीव करी माने. o छाठमो काष्ट सुवर्षादिक छजीव पदार्थठे तेने जीवकरी माने. ए नवमो मूर्त्तिवंत एवा जे रूपी पदार्थठे तेने छरूपी कहे जेवी रीते. स्पर्शवान वायुने छरूपी कहे, पण ते जो छरूपी ठे तो तेमां स्पर्श केमठे ? एवुं विचार करे नहीं.

१० दशमो अरूपी पदार्थने रूपी कहे. जेवी रीते मुक्तिमां तेजनो

गोलो माने पण एम न विचारे के जे छरूपी चीज ठे तेनुं तेज केम नजरमां आवे? एवो विचार न करे. ए दश जेद कह्या.

तथा पांच वीजां मूल जेदढे ते लखेढे.

र जे पोतानी मतिमां त्राव्युं ते साचुं बीजुं सर्व जुंठुं पण प रीक्ता करवानी इहा राखे नही ग्रुद्धा ग्रुद्धनी खोल करे नही ते प्रथम श्वजियहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

१ सर्व धर्म साराबे सर्व दर्शन जलांबे सर्व कोइने वंदना करि ए पए कोइनी निंदा करिए नही. एऐ अमृत अने विष ए वन्ने समान गण्या ते बीजो अनन्नियहिक नामे मिथ्यात्व जाएवो.

३ जे जाणी बुजीने जुतुं वोले, पहेला पोताना छज्ञानपणा थ की कांइ जूलपडे विपरीत प्ररुपणा करे तेवारे कोइ शुरू मार्गानु सारी जीव तेने कहे के छा तमे सिद्धांत विरोद्ध वोलोबो तमे जू लोबो एवुं सांजले तेवारे तेने हठ छावे तेथी कुमति कदायह कु युक्ति करीने पोतानुं वचन राखवानी छपेक्ता करे पोते जुबो पडे तोपण नमाने ए पुरुष विराधक बहु जव च्रमण करनारो जाणवो ए ज्रीजो छाजिनिवेश नामे मिथ्यात्व जाणवो.

ध जे जिनवाणीमां संशय राखे एने पोताना छाङ्गान दोष थ की सिर्ऊातना गहनार्थमां खवर पडे नही त्यारे मगमगतो थको रहे जे ए केम हरो ए संशयिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

थ जे छजाए पएाने लीधे कांइ समजे नही ते छनाजोगिक मिथ्यात्व छायवा एकेंडियादिक जीवोने छनादि कालनो लागो र ह्योठे ते पए छानाजोगिक मिथ्यात्व जाएवो. ए वद्धा मलीने पू वेला दश जेद साथे मेलवता पंदर जेद मिथ्यात्वना थया.

हवे वीजा ठ जेद लखेठे. एक लोकीक देव, वीजो लौकीक उ रु, त्रीजो लौमीकपर्व, चोथो लोकोत्तरदेव, पांचमो लोकोत्तरग्ररु, श्रने ठघो लोकोत्तरपर्व. ए ठ जेद ववरीने कहेठे. १ जे देव राग देष थकी जरेलाठे,एक उपर मेहेरबान थाय ठे, एकनो विनाश करेठे तथा स्त्रीयादिकना विलाशमां मग्न रहेठे, छनेक जातना हथीयारो हाथमां धारण करेलांठे, पोतानी प्रजु तमां कांइ न्यूनता नथी, हाथमां माला धारण करेठे, सावद्यजोग पंचेंडिय वधादिकनी चाहना करेठे एवा देवोने माने, पूजे, छने तेमना कहेला मार्ग यज्ञ याग छनेक प्रदृत्ति हिंसामयी करे, तेने प्रथम लौकीक देवगत मिथ्यात्व कहिए. एना छनेक जेदठे ते मि थ्यात्व सत्तरी प्रमुख यंथो थकी विस्तारे जाणवा.

१ जे छढार पापस्थानकथी जरेलांडे, नवविध परिग्रहधारी, ग्रहस्थाश्रमी, एवा ढता ग्रुरुनाम धरावे ते जाणवा. तथा बीजा कुलिंगी जे नव नव प्रकारना जेष बनावीने छार्मबर करे, बाह्य प रिग्रह त्याग करे, पण छज्यंतर ग्रंथी ठोडी नथी, छनादिनी जूल मटी नथी, ग्रुद्ध साध्यनी उंखखाण थइनथी, एवाने ग्रुरु करी मा ने, तेनो बहुमान करे, एवाने ग्रुद्धदान छापे, तेमां परमपात्र बु द्धि धरे, ते बींजो लौकीक ग्रुरुगत मिथ्यात्व जाणवो.

३ छा लोके पुजलिक सुखनी इहाथी छनेक मिथ्यात्व क ब्पित लौकीकपर्व दिवश जेवांके दिवासो, रक्ताबंधन, गणेशचोथ, नागपंचमी, सोमप्रदोष, सोमवती, बुद्धाष्टमी, होली, दशेरा, प्र मुख शतपर्वने लाजदायी जाणीने श्रद्धायेंकरी छाराधे, डव्य व्यय करे,कुपात्रने दान छापे,तेत्रीजो लौकीक पर्वगत मिथ्यात्व जाणवो.

४ देव श्रीश्चरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, परमेश्वर, परमपूज्य, सकलदोषरहित, ग्रुद्ध निरंजन, तेनी स्थापना जे मूर्त्तिसा धिष्ठायक प्रतिमां तेने आ लौकिक पुजलिक सुखनी इडा धारणकरी माने के माहरुं कार्य थरो तो महोटी पूजा करीश, ठत्रादिक चडा वीश,दीवाकरीश,रात्रि जागरण करीश,एवीरीते श्रीवीतरागनी मा नता करे छहीं चिंतामणीना दातार पारोथी काचना कटकानी मांगणी करवी तेकांइ युक्त नथी पण जेने कर्मोदयनी प्रतीत न थी ते व्यर्थ जूला जटकेढे पुखोदय विना कांइ पण थतु नथी व्यर्थ निरंजन देवने पुजलिक सुखनी घ्याशा धारण करी माने ते चोथो लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवो.

नी मतिकल्पनायें करी अर्थनी देेज्ञनाना प्ररूपक, सूत्रार्थना सं ताडनार, एवा उत्सूत्र जाषण करनारां लिंगीर्ड तेमने गुरु बुद्धि यें करी बहुसान करे तथा जे सुसाधु,सङ्ग्रणी,तपस्वी,सदाचारी, बहुक्रियावंत होय तेने आलोकना सुखनी चाहनाधरीने बहुमान करें अने एम विचारेजे एवाग्रुणीनी अत्यंत सेवा करीद्युं तो एम नी मेंहेरवानी थकी धन इद्धि पामीशुं एवी इंडिय सुखनी इष्ठा धा रण करीने तेसने माने ते पांचमो लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व. ६ कखाणीकादिक पर्वदिवर्शे पुत्रादिकनी वांढनाए करीनें श्र रिहंत देवनुं आराधन करे ते ठठो लोकोत्तर पर्वगत सिथ्यात्व. एप्रमाणे सर्वमलीने मिथ्यात्वना एकवीश जेद थया तेने हुं परिहरुं परंतु एसां देवतत्वमां एटलो छागार के जे कुलनी परंपरा चाली आवीठे एवी जे गोत्रज कुलदेवतादिकनी पूजा, अने दीप पूजा प्रमुख विवाहादिक करणीने विषे जे करवी पंडेठे तेनी ज यणावे परंतु तेने झुत्र करणी जाणु नही.

छने गुरुतत्वमां कुगुरु जे अन्यलिंगी वाहमणादिकठे जे वि वाहादिक जोडावे पराणावे तेना अधिकारीठे जेमनी परंपरानी वृत्ति लागेलीठे ते आवीने आसिरवाद आपे तेवारे तेमने लोकीक व्यवहारने अर्थे प्रणाम करवुं पडे, कांइ उचित्त आपवुं पडे. तथा कोइ मिथ्यात्वी राजवर्गींने घेर गया थकां त्यां तेमना गुरु आवे तेवा रे ते राजवर्गी पोताना गुरुनुं वहुमान प्रणामादिक करे तेवारे तेनी आदवथी आपणने पण सलाम प्रमुख बहुमान करवुं पडे. तथा जेणे नामा खेखादिक ऋंकविद्या प्रमुख ऋाजीविका चलाववानो हु न्नर शिखाव्यो होय एवो उस्ताद ब्राह्मणादिक होय तेनुं बहुमान करवुं पडे, जक्ति करवी पडे, छन्न वस्त्रादिक छापवुं पडे,तेनुं छागार ठे. उचित्त व्यवहार जाणी ए सर्वे करुं पण धर्म बुद्धियें नकरुं.

तथा मिथ्यात्वीना कोइक लौकीक वार तेवार आवे तेवारे ते ना उन्नवादिक कारणे ते कांइ डव्यादिक मांगवा आवे तथा ते मि थ्यात्वी कूप सरोवरादिकनुं खनन करवानी जे लौकीकरीती के तेने धर्म बुद्धि करी माने के तोतेवाकार्यों ने अर्थें कांइ डव्यादिक मांगवा ने आवे तेवारें ज्ञासननी निंदा मटाडवानी बुद्धि धारण करीने डव्यादिक आपुं पण तेमां सुक्रतनी बुद्धि धारण करंनही.

बीजा पण कोइ कुलिंगीने कोइ लज्जा दाकिणता जय प्रमुख कारणने लीधे बहुमान करवुं पडे, अथवा दान आपवुं पडे, ते के वल लोक व्यवहार तथा शासननी हीलना मटाडवाने अर्थें त था देष मटाडवाने अर्थें लोकचाल करुं पण तेमां धर्म बुद्धि ध रुं नही. छने ते खरच संसार खाते लखुं.

तथा स्वलिंगी हिनाचारी केवल वेषधारी जेखधारी होय तेने शा सननी निंदा मटाडवाने ऋर्थें तथा तेमनो खेद मटाडवाने ऋर्थें प्रणा मादिक बहुमान करुं तथा कुल परंपरागत वृत्ति जाणीने छन्न वस्त्रा दिक छापुं केमके जिनमार्गनो लिंगी तथा दर्शनी पण याचना करे नही ए पण एक गुणढे तो त्यां ए गुण छागलकरीने छापवो.

तथा तेवा हीनाचारीमां पए जे ग्रुऊ प्ररुपकठे. अने जेएे आपएने जएवा सुएवानुं उपकार कीधुंठे, जेएे आपएने सुबुऊि आपीठे, आपएी जूल मटाडीठे, तो तेवाने ए आपएं उपकारीठे एवी बुऊि धारए करीने वंदन नमन सन्मानसन्मुख गमन प्रमु ख मनमां हर्ष धारए करीने करुं, माहारी शक्ति प्रमाणे सेवा क रुं, मोहोटा उपकारी धर्माचार्य करी मानु, पए तेने सुसाधु ग्रुऊ ग्रुरु तत्व करी सर्दहुं नहि मात्र उपकारी सरद हुं.एरीते मिथ्या त्वनुं त्याग करुं झुऊ समकेतने धारण करु.इति व्यवहारसम्यक्त्व. हवे निश्चय सम्यक्त्व बिखेठे.

निश्चय सम्यक्त्वतेजे पूर्वे निश्चय देव, गुरु छने धर्म तत्वमां लखेलुंठे ते तत्वनी विचारणा करतां निष्पन्न स्वरूप संग्रह स त्ताग्राही नय गवेषतां, निश्चय देव ते ए छापणो छात्माजठे त था निश्चय गुरुपण छापणो छात्माज ठे जे कारण माटे स्वरू पोपयोगीजीव ते पोतानी छात्माने सन्मार्गी करे जावाश्रवनुं त्या ग करावे एमाटे छात्मा एज गुरु तत्वठे.

तथा निश्चय 'धर्म पण आपणो आत्माजठे जे कारण माटे धर्म जे वस्तु स्वजाव तेने जे पामे ते धर्मि कहेवाय. एटखे धर्म जे तत्व रमणता पोताना स्वरूपमां खीनता नयमागें जे जेटखी वखत जेमां अन्नेदोपयोगी होय तेने तेटखी वखत तट्मयीज क हिए, जेम पुरुषने स्त्रीनी आशके करी खीनता उपयोग स्त्रीनोज थाय, तेने शुद्धनय स्त्रीज कहेठे माटे स्वधर्मे अन्नेदोपयोगी आ त्माज धर्मरूप कहिए. अने वस्तुगते शुद्ध स्वरूप रमणता ते स्व शुण्ठे अने स्वग्रुण तेधर्मठे तेमाटे धर्मपण आत्माज ठे. एटखे शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धाग्रुण ते निश्चयथी देवदर्शनठे एटखे निश्चय देवठे, तथा सम्यक् शुद्धात्म विज्ञान ते निश्चय धर्मठे, तथा तत्व रमणता, आत्मस्वरूपे मन्नता, ते निश्चय धर्मठे.

जे कारण माटे जेम देवदर्शन थकी अग्रुज मटेठे, मंगलीक थायठे, यह पीडा मटेठे, मनकामना सिद्धि थायठे तेम छंहीं सम्यक्त्व पामवाथकी मिथ्यात्व अने अनंतानु वंधिरूप परम अग्रुज मटेठे अने अपुनर्वंधकरूप अद्धान प्राप्तिरूप मंगलीक थायठे तथा कुमति कदाग्रहरूप ग्रह पीडा टलेठे अने सकाम निर्क्तरारूपमन कामना सिद्धि थायठे माटे ग्रुद्धसम्यक्त्वदर्शन प्राप्ति ते देवठे. तथा जेम गुरु मलवा थकी जूल मटेठे, हितबतावे, रहस्या पामे. तेम छंहीं आत्मविज्ञाने करी पण विविध परजाव च्रमण रूप जूल मटी जायठे, तथा तत्वरमण रूप परमहितने पामेठे, अने निश्चय समता सहेज उदाशीनतानो जे रहस्य तेने जाणवा ने छार्थे तो ज्ञान तेज गुरुठे.

तथा जेम धर्मनी संगत थकी छुर्गतिमां पडे नही, दिवसेंदिव सें छाधिक सौजाग्यनी इद्धि थाय, तेम तत्वरमणरूप धर्म थकी पण परजाव धसणरूप कुगतिमां पडेनही, दिवसेंदिवसें छासंख्य उण निर्क्तरा थाय तेथी छानेक उण प्रगटरूप सौजाग्य पामे, माटे जे स्वरूपोपयोग तेज धर्म जाणवो इति निश्चयसम्यक्त्व संपूर्णम्.

हवे ए सम्यक्त्वनी जे करणी ठे ते लिखेठे नित्यप्रत्ये ठती जोगवाइयें अने ठती शक्ते वाट घाटविना श्रीजिनप्रतिमां जुहारुं, परंतु जो प्रतिमांनुं योग नमखे तो पूर्व दशा सन्मुख श्री वहेर मान प्रजुने सन्मुख उपयोग राखीने चैत्यवंदन करुं, रोगादिक कारणे नथाय तेनो श्रागारठे.

श्रीदेराशरनी दश आसातना मोहोटी हे ते नकरुं ते दश आ सातनना नाम कहे हे. देरासरमां तंबोल पान फल प्रमुख नखावा, पाणी नपीवुं, जोजन न करवुं, पगरखा प्रमुख चैलनी छंदर न लइ जवा, मैथुन सेववुं नही, चैल्यमां शयन नकरवुं, थुकवुं न ही, लघुनीत नकरवी, वडीनीत नकरवी, जुगटु रमवुं नही ए दश आसातना श्रीजिन मंदिरमां नकरुं. अने बीजीपण चोरासी आसातना जे हे तेने टालवानी मनमां चाहना राखुं के जे थकी मोहोटी चैत्यनी आसातना मने नलागे.

मासप्रत्यें त्र्यमुक सेर प्रमुख फूल चडावुं, मासप्रत्यें त्र्यमुक प्र माण पूर्वक फलादिक चडावुं, मासप्रत्यें घृतादिक त्र्यमुक सेर प्रमुख चडावुं, वर्ष प्रत्यें त्र्यंगलुठणा पांच त्र्ययवा दज्ञ चडावुं,

Ę

वर्षमध्ये केसर, चंदन, बरास जीमसेनी प्रमुख प्रज्ञ पूजानिमित्ते जाइए तेमां माहारी शक्ति प्रमाणे डव्य खरचुं, देरासर निमित्ते वर्षप्रत्यें धूप श्रगरबती कर्पूर प्रमुख श्रमुक रकमनुं चडावुं, वर्षे प्रत्यें श्रमुक श्रष्टप्रकारी पूजा तथा सत्तर प्रकारी पूजा करुं करावुं.

वर्षप्रत्यें साधारण डव्य अमुक रकम सुधी खरचुं, वर्षप्रत्यें ज्ञा न देतुए ज्ञान सामग्रीमां अमुक डव्य खरचुं, दिनप्रत्यें नवकरवाली दश अथवा पंदर आत्महिते ग्रणु, नग्रणाएतो आगल पाठल ग्रणीने प्ररण करुं, परंतु रोगादिक कारणे नग्रणाए तो तेनी जयणाठे.

दिनप्रत्यें ढती समर्थाइए प्रजाते नवकारसी अने संध्याका के छविहार पच्चखाण करुं, परंतु वाटघाटमां अथवा रोगादिक का रणे नथाय तो तेनो आगारढे. वर्षप्रत्यें सामीवत्सल एटके अ मुक संख्या साधर्मिकोनी जमाडुं. एवीरीते समकेतपाछुं.

ए समकेंतना पांच अतीचार जे हे ते टाखुं ते खिखेहे.

१ पहेलुं संकाञ्चतिचार तें श्रीजिनवचनना गंजीर गहनजाव सांजलीने पोताना मनमां संका संदेह धारण करे जे श्रा केमह हो मने वरावर वेसतो नथी एवो मनमां मगमगाट रहे.

१ वीजो आकांकातिचार ते जे कोइ अन्यमती पाखंमीनी क एकिया देखीने कांइ चमत्काार जुए तथा आलोकमां पण पूर्व ज न्मना अज्ञान कप्रक्रियाना फल थकी अन्य मतिने घणोज सुखी दोलतवान देखीने मनमां विचार करे के अन्यमतिर्जनो धर्म पण सारुंठे एमनु ज्ञान धर्म सहु सारुंठे एपण धर्म करेठे एवी चाह ना धरे ते आकांक्ता नामे वीजो अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो वितिगिछानामे श्रतिचार कहेंठे जेकोइ पोताना पूर्व कृत पापोदय ने लीधे छुःख पामे तेवारे एवुं विचार करे के जे धर्म करिए ठेए तेनुं फल छुं जाणीए क्यारे पामीछुं एटखुं फल थरो के न थाय तेकरतां तो जे धर्म नथी करता ते घणाज सुखी देखा यत्रे श्वने श्वमे तो जेम जेम धर्म करणी करिए ठैए तेम तेम छुःखी थैये ठैए एधर्मतो ग्रुं जाणीये क्यारे फलरो किंवा नहीज फलरो एवी विचारणाकरे तथा साधुना मलमलीन शरीर श्वने वस्त्र देखीने छ गठा करे जे ग्रुं श्वा कांइज नही श्वावा गंदा हालमां रहेवुं सारूं नथी ए बापडा ग्रुं तररो एजो फाग्रु पाणी थकी स्नान करे तो तेथी कयोवत जंग थायत्रे ? एवी छुगठा करेतेत्रीजो श्वतिचार जाणवो.

ध चोथो मिथ्यात्विनी प्रशंसानुं श्रतिचार कहेते. एटले मिथ्या त्विर्चना गुरु जे ब्राह्मण तापसादिकते तेनी प्रशंसा करे ते श्रावीरीते के ए मोहोटा तपस्तीते, महापुरुषते, मोहोटा पंक्तिते, एना ब रोबरीर्ड कोइ नथी एमनी ग्रुं वात करिए एवी एवी तेमनी प्रजु ता वखाणे अने कहेजे एतो पोतानुं श्रवतार सफल करेते, तथा कोइक मिथ्यात्वी व्रत याग यज्ञ करे त्यारे तेनी घणीज खुसाम तीने खातर श्रत्यंत तारीफ करीने कहेके माहाराज तमे रुडुं कार्य किधुं तमे तो तमारो जन्म कृतार्थ करोत्रो इत्यादिक क हेवुं ए पण समकेतनो चोथो श्रतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो अतिपरिचयनामा अतिचार कहेंठे जे मिथ्या त्विसाथे घणोज परिचय राखवो एकत्र जोजन संवास करवो, अत्यंत प्रीति वधारवी ते पांचमो अतिचारठे. केमके एवुं अत्यंत परिचय कस्त्रा थकी पण कोइ दिवसे मन बिगडे, चित्त चलित परिचय कस्त्रा थकी पण कोइ दिवसे मन बिगडे, चित्त चलित थाय, पाप लागे तेमाटे परिचय न करवो ए पांचे अतिचार जा णवा पण आदरवा नही. एरीते ठ हिंनी तथा चार आगार सहित सम्यक्त्व पालुं तेमां प्रथम ठ हिंनीना नाम कहेंठे.

र प्रथम (रायाजियोगेणं) एटले कोइ राजा नगरादिकनो मा लक होय अने ते बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तो तेथकी माहारो सम्यक्त्व जांगे नही.

१ बीजी (गणाजियोगेणं) एटले जाति ज्ञाति श्रयवा पंच

(२०)

एटले लोकनो समुदाय तेमना इठने लीधे कांइ विरुद्धाचरण करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व जांगे नही.

३ त्रीजी (वलाजियोगेणं) एटले बलवंत चोर म्लेझादिक ने वश पने थके ते लोको बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व जांगे नही.

ध चोथी (देवाजियोगेणं) एटले केत्रपाल माता व्यंतर विं जासणी अने पितरादिक प्रमुख तेमना आवेश अकी जीव परव श थइ जाय तेवारे कांइ विरुद्ध कार्य थइ जाय तेथी माहारूं स म्यक्त्व जांगे नही अथवा देवता मरणांत कष्टमां पाडे अत्यंत इष्ट आपे तेथी चेतना सिथिल पणे कायर थाय तेवारे दंग जरण न्याये कांइ विरुद्ध करवुं पडे तेथी माहारुं सम्यक्त्व जांगे नही.

थ पांचमी (ग्रुरुनिग्गहेणं) ग्रुरु एटवे माता पिता उस्ताद प्रमुख तथा पूज्य इत्यादिक महोटाना केवा थकी कांइ विरुद्धवात कुचाल कार्य करवो पडे तो तेथी महारो सम्यक्त्व जांगे नहीं.

६ ठठी (वित्तिकंतारेणं) वृत्ति एटले छर्जिकमां आजीविका निमित्ते कोइरीते पेट जराइनो धंधो ज्यम नमले घणीज आपदा पडे तेवारे कांइ विरुद्धाचरण करवो पडे तेथी सम्यक्त्वने दूषण लागे परंतु तेमां अजीविका चलाववा निमित्ते छर्जिक्तमां कांइ आ नाचार करूं तो तेथी माहारुं सम्यक्त्व नजांगे ए ठ हिंनी कही.

हवे चार आगार लिखेठे.

र प्रथम (अन्नरूणाजोगेणं) एटले कोइ कार्य अजाण पणे उपयोग दीधाविना कांइ एकनो वीजो थइ जाय परंतु जेवारे यादगरीमां उपयोग आवी जाय तेवारे तेज वखत आगारने पाले परंतु दूषण नलगाडे ते प्रथम आगार जाणवो.

१ वीजो (सहस्सागारेणं) एटले सहसात्प्रकारे एका एकी जाणेठे परंतु उपयोगनी चपलता थकी श्रथवा नित्य वहुल श्र ज्यास थकी जाएते जाएते पए कांइ विरुद्ध थइ जाय तो तेथी माहारी प्रतिज्ञा जंग नथाय. ए बीजो आगार जाएवो.

३ त्रीजो (महत्तरागारेणं) एटले कोइ कार्य विशेष थकी लाजालाजनी शैली थकी (महत्तर के॰) महोटा ग्रुणवंतनी श्रा का थकी कांइ कमवेश करवो पडे ते त्रीजो आगार जाणवो.

४ चोथो (सबसमाहिवत्तियागारेणं) एटखे सर्व समाधि व्य त्यय अंहीं कोइ महोटा सन्निपातादिक रोगनी विक्रिया थकी ज त्पन्न थयुं जे प्रथिल पणु तेने लीधे बेग्रुऊ थइ जाय एवी अ वस्था प्राप्त थयेथी कांइ विरुद्धता करवी पडे तेथी पण माहारी सम्यक्त्वनी प्रतिज्ञा जंग नथाय ए चोथो आगार जाणवो.

ए ढ छिंनी अने चार आगार सहित समकित पाखुं अंहीं दिवसनो नियम दिवसमां नकरी शकुं तो बीजे दिवसे करी पो होचाडुं अने महीनानु नियम बीजा महीनामां करी पोहोचाडुं तथा वर्षनुं नियम बीजा वर्षमां करी पोहोचाडुं एरीते जेवीरीते पोतामां पाखवानी शक्ति होय तेवीरीते ढूट राखवी.

ए ढ हिंमीने चार आगार जेम अहीं समकेत वतमां लख्याढे तेज नियमनी रीतें यथायोग्य शैक्षी प्रमाणे अंहीं लखवा थकी आ गल पण बीजा सर्व बारे व्रतोमां समजी लेवां फरी एकेका व्रतमां नहीं लखीशुं बधामां अंहीथीज धारणा करवी श्रंहीं सर्व प्रति कानुं रहस्य लिख्युंढे अंहीं सम्यक्त्व मार्गना कथननी गाथा नी चे लखियेंढेए गाथा ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवंसु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तंतत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥

> इतिश्री स्याद्वाद शैली पूर्वक सम्यक्त्व, श्रंगीकार करवानो विधि तेनी पीठिकासमाप्त थइ.

(११)

प्रथम स्यूल प्राणातिपात विरमणवत.

११

हवे आग्रंथमां केहेवाना बार व्रतोना नाम कहेते.

प्रथम प्राणातिपातविरमणवत, बीजो मृषावाद विरमणवत, त्रीजो श्रदत्तादान विरमणवत, चोथो ब्रह्मचर्यवत, पांचमो स्यूल परियह परिमाणवत, ठठो दिग् परिमाणवत, सातमो जोगोपजो ग परिमाणवत, आठमो अनर्थदंग विरमणवत, नवमो सामा यकव्रत, दशमो देशावगासिकव्रत, अगीआरमो पौषधोपवाशरूप व्रत छने वारमो छतिहिसंविजागव्रत ए बार व्रतना नाम जाएवा. ॥ अय प्रयम स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रत प्रारंजः॥ ए प्रथम थूलप्राणातिपात विरमण व्रत तेना वे जेदते. तेमां एक डव्य प्राणोतिपात वीजो जाव प्राणातिपात लां डव्यप्राणा तिपात विरमण व्रत ते एके परजीवने पोता सरखो जाणीने ज यणा पाले. एना दश ज्रव्य प्राणोनी रक्ता करे, जगारे. ए ज्रव्य प्राणातिपात विरमण व्रत कहीए. एमां व्यवहार दयावे. श्रने जावप्राणातिपात विरमण व्रतते आपणो जीव कर्मने वरा पड्यो थको छुख पामेठे. श्रापणा जाव प्राण जे ज्ञान दर्शनादिक तेनुं मिथ्यात्व कषायादिक श्रशुद्ध प्रवर्तनरूप शस्त्रथी प्रतिक्तणे घात थायने, प्रतिक्तणे हणायने. ते आपणा जीवने कर्म रूप शत्रुथी ठोडाववानी फिकर करीने तेनो जपाय जे आत्मगुण रमणता तेने धारण करे, परनाव रमणता वारे, शुद्धोपयोगे वर्त्ते, उदये श्रव्यापक रहे. एक स्वजाव मगनता तेज समस्त कर्म रिपुने जहोद वा त्रमोघ शस्त्रवे. एटले सर्व परनाव इप्ता निवारीने. स्वरूप सन्मुख जपयोगते जाव प्राणातिपात्त विरमण व्रत कही ए. छने निश्चय दयापण एजरे.

छंहींयां थूल प्राणातिपात विरमणवत ते थूल एटले जे मो टा नजरमां श्रावे, फरे, पडे, एटले त्रसजीव एमने संकल्प करी

प्रथम स्यूल प्राणातिपात विरमणवत.

ने नहणुं. ए हनन क्रियापण चार प्रकारनीठे. एक श्राकुटी करी ने हणवुं बीजुं दर्प्पे करीने हणवुं १ त्रीजुं प्रमादे करीने हणवुं श्रने चोथो कब्पे करीने हणवुं ए चारेना श्रर्थ लखेठे.

१. प्रथम अक्रुट्टी एटले जे निषेधिवस्तु तेनुंज फरी उत्साह थकी सेवन करे जेम आखो सराई वस्तुनो फल तेनो जडथो न करवो जे निलोत्री मोकली राखी होय तोपण तेनुं जडथो करीने खा बुं नही ढतां तेनी चाहना धरीने जडथो करे ते आक्रुट्टि दोष.

१ दर्फश्चाकुद्दि एटले जन्नक पणाथी जन्मत्तपणे मान श्चने गर्व धरीने दोड करे ने तेथी हिंसा थाय तेने दर्प्पश्चाकुद्दि हिंसा कहीए, जेम गाडी, वहेल घोडा प्रमुखने परस्पर एकेकथी श्च जिमान धरीने दोडावे ए श्चाकुद्दी दर्प्प हननक्रिया जाणवी.

३ त्रीजी आकुटि प्रमाद एटले काम जोगने विषे तीव्र अजि खाषथी जे हिंसा करे, तेम कामो द्दीपन करवा माटे त्रसादिजी वनी हिंसा करीने पट्टी, गोली, माजम प्रमुख बनावे ते आकुटि प्रमाद हनन किया जाणवी.

४ चोथी कब्पहिंसा एटले पोताना घरकामने सारुं रंधनादि क करे तेने जाणवी. ऋहींयां श्रावकने प्रथम हिंसा तो बीलकु ल नज करवी जोइए. जोरती करे तो पण जयणाथी करे ते माटे छंहींयां संकब्प करी श्राक्ठद्दी तथा दर्प्प करी त्रसजीवने न हणुं. ए चीटी जाती ठे एने मारुं एवो संकब्प करीने जीवने हणे हणावे एने श्राक्ठद्दी संकब्प कहीए.

एवो संकब्प करीने निरापराधी जीवने कारण विना न हणुं, न ह णावुं कारणे, आरंजे, रंधनादि ग्रहस्थ करणी करतां तथा पुत्रादि कना शरीरे जीवोत्पत्ति थइ होय तेना औषधादि कारणे करवुं पडे तेनी जयणाढे. घोडा, बलद प्रमुखने चाबकादिक मारवापडे तेनो आगार. तथा पेटमां करमीया, गंमोल पगमां नारु अथवा हरस, श रीरमां चम्म श्रने जुं प्रमुख उपजे, तथा मित्रादिक अथवा बीजा स जनादिकना शरीरने विषे उपजे तेनो उपचार करवानी जयणा. जे कारणे साधुने तो सूझ अने वादर ए बंने जातीना जीवनी, त्र स अने थावर बंने जेदना जीवनी नवकोटि विद्युद्ध पच्चखाणथी हिंसानो त्यागढे. एकारणे साधुने वीश विश्वानी दयाढे, श्रने य हस्थने सवा वश्वानी दयाढे. ते केवीरीते तेनो विवरो खखीए ठेए.

॥ गाहा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारंजाजवेछविहा । सा वराह निरवराहा । साविकाचेवनिरविका ॥ १ ॥ अर्थ-जग तमां जीवना वे जेद कह्याठे. एक थावर, वीजा त्रस, तेमां थावरना वली सूक्स, वादर ए वे जेदठे, तेमां पए सूक्सनी हिंसा नथी कार ए अति सूक्स जीवना शरीरने वाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने खकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पातठे. पए बा दर नथी एमाटे अहींयां सूक्स शब्दथी पए जाएवुंके थावर जीव, प् थ्वी, पाएी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तीमने सूक्स कहीए. अने थूल एटले वेंडि, त्रेंडि, चौरेंडि, पंचेंडिरूप जा एवा ए जीवना मूल जेद वे ठे तेमां सर्व जीव व्याव्या. तेर्ज सर्वनी त्रिकरए शुऊ साधु रक्ता करे ठे. तेमाटे वीशविश्वानी दया, मुनिनेठे.

पण श्रावकथीतो पांच थावरनी दया पत्नी शकाय नही. सचि त छाहारादि कारणथी छवश्य हिंसा थायढे. माटे दश विश्वागया छने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश विश्वा रह्या तेना पण वत्ती वे जेदढे. एक संकल्प. वीजो छारंज. तेमां छारंजे करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते ठोडी न जा य तेमाटे वे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग छने छारंज हिं सानी तो जायणाढे, एम गणतां फरी दशमांथी छडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं. एमां पण जीवना वे जेदठे. एक सापराधी जीव छने वीजा निरपराधी जीव ठे. तेमां जे निरपराधी जीवंठे तेमने न इणुं, अने सापराध जी वने हणवानी तो जयणा ठे. जेथी करी सापराधीनी दया, श्राव कथी सदा सर्वरीतेंथी पक्षे नहीं.

जेम के घरमां चोर पेठा हे. तेर्ड आपणी चीज लइ जा हे ते मास्ता कूट्या विना ढोडे नहीं. वसी बीजुं दृष्टांत एके झापणी स्त्री साथें कोइ अन्य पुरुषने अनाचार सेवतां देखियें तो तेने तस्दी दीधा विना ते ढूटे नहीं. ए प्रमाणे सापराधी कहीएं. बीजुं पण क्यारेंक रा जानी आज्ञाश्री युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारें त्यां आ गलथी रास्तादिक चलावियें नहीं.सामो रात्रु प्रथम रास्त्रनो मारो करे, त्यार पढी आपणे करीएं. ए माटे सापराधीनो संकल्प पण न ढूटे. त्यारें बाकी रहेेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, बाकी छाढी वशा रह्या. एटले संकल्पीने"निरपराधी जीवने न मारुं" एट **क्षुंज फकत रह्युं. एमा प**ण वक्षी बे जेद **ठे. एक सा**पेक्त, अने बीजो निरपेक्त, तेमां सापेक्त निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पखे नहीं तेनुं कारण द्युं ? ते कहेबे. श्रावक पोतें घोडा, घोडी, वेल, बलद, रथमां, गाडीमां, के इत्यादि बीजा वाहनोपर बेसे छे. त्यारें घोडा प्रमुख बलद विगेरेने चाबका के आर लगावे हे,पण विचारतो नथी के, घोडाएं के वलदें शो अपराध कस्त्रोढे? एमनी पीठ उपर तो चढी बेठो ठे.ए जीवना शरीरसामर्थ्यनी तो कांइखबर ठे नहीं.जे आजीव, बलवान् हे,के छुर्बल हे. पोतें उपर चढी बेठो हे,ने वली तेने गा ल प्रमुख दइने मारे हे! पण एतो निरपराधीज हे. वली आपणा अंगमां तथा आपणां पुत्र, पुत्री, नाती, गोत्री, आदिकना मस्तक मां ऋथवा कानमां कीडा पड्या हे, ऋथवा आपणाज मोढामां के, दाढमां के दांतमां, के जडबामां कीडा पड्या ठे, तेवारें ते मने मारवाना जपायें करीने कीडानी जग्याएं ओषध लगाडवुं पडे, प ए एजीवोएं शो अपराध कस्त्रो हे ? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति

प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमणवत.

स्थान पामीने कर्मने आधीन आवीने अहीयां उपजे ढे, पण क्यारें कशी छुष्टताथी उपजता नथी, तो ए अपराधी नथी. ते कारणमाटे निरपराधी जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावक थी तजी जाय नहीं. वली वाग बगीचामां गया थका फूल, फ ल, पांदडां, गुहा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देवी, अथवा फल, फू ल, तोडी लेवां; ते माटे अही वज्ञामांश्री अडधो गयो त्यारें सवा वशानी दया रही. एटली सवा वशानी दया शुद्ध श्रावक ने ठे.ए टले त्रसजीव संकल्पीने निरपराधीने कारणविना हणुं नहीं. एवी प्रतिज्ञा थइ. ए प्रतिज्ञा ज्यारें ग्रुऊ रहे. त्यारें ते श्रावक व्रती कहेवाय. ज्यां लगी पोतानी शक्ती पहोचे त्यां लगी ठगाइ न करे, छने निर्ध्वंसपणे न रहे. रखेने कोइ जीवनी विराधना थाय! एवो उपयोग न ठांने. तथा घरमां आरंज कारणे ला कडानां गाडां प्रमुख लावे, ते सारां लाकडां होय, सडेलां होय नहीं, ते लाकडां घणा दिवस रहे तो पण तेमां जीव न पडे एवां पाकां, छने सुकां होय तेवां लावे. तेपण ज्यारें रसोइनुं काम पडे त्यारें पूंजी करी, छने जाटक जूटक करीने वाले. तथा घी, तेल, मीठुं, तथा श्रथाणा प्रमुख रसन्नरी चीजनां वाशण, ज तनथी राखे, मोढुं वांधी करीने राखे, उघाडुं राखे नहीं. वसी चुला जपर, अने पाणी राखवाना ठेकाणा जपर चंदरवा वांधे, तथा अनाज खावाने लावे ते पए शुद्ध, अने नवुं लावे. अथवा वर्षनी जपरनुं अनाज लावे, पण ते सडेखुं होय नहीं. कोइ त्रस जीव नजरमां न आवतो होय तेवुं लावे. पाणी गालवानुं ग रणुं पण जाडुं मजबूत जोड्ने राखे. एक प्रहर वीत्यो के पा णी गाली नाखे. वली वर्षाकृतुमां वहुजीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी ते रुतुमां गाडी, रथ, घोडानी खारी न करे. कारणके, ज्यां रथनुं के गाडीनुं चक्र फरे, त्यां छसंख्य जीवनी घात याय. वली

१६

प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमणवत.

हरिकाय बहुबीज त्रसकाययुक्त पूर्वक जेमां अति आरंज हो य, एवी हरिकाय प्रमुख लावे नहीं. खाटला प्रमुखमां जीव होय, ते माटे खाटला प्रमुखने तडकामां नाखे नहीं. सडेलो दा णो तडकामां नाखे नहीं. एतुं पाणी अनाजना संसर्गवालुं मोरी मां नाखे नहीं. काचुं दूध, मग तथा मठथी विदल खाय नहीं. फागण वदिश्री आरंजिने आठ महिना पर्यंत शाक, पत्र, जाजी, प्रमुख खाय नहीं. मीठाइनो काल पूर्ण थया पढी मीठाइ पण खाय नहीं. मणशील चलितरस, तथा वाशी अन्न अनद्य मधु प्रमुख, विषप्रमुख ऋादर करी खाय नहीं. घरमां बुहारणी पण शण प्रमु ख घांसनी छने ते पण कोमल राखे, कारण के कठोर राखवाथी जीवनी हाणी थायढे. माटे कोमल राखे. बे चार जण मली, एक थालमां जेलां जोजन करे. स्नानादिक बहु पाणीथी न करे, जे टलुं प्रयोजन होय तेटलुंज पाणी वापरे. तडकामां, मेदानमां, श्रयवा मोरीनी जगायें चोकी उपर बेसिने नहाय. न्हावानुं पा णी वासणमां लझ्ने बुटुं बुटुं ढोले. ज्यां सुधी निरारंजी व्या पार मले, त्यां सुधी खर कठोर कर्मादिक बहु आरंजी व्यापार न करे. कोइनो हक जांगे नहीं. घरमां एठा, छन्ननुं धोवण बे घडी जपरांत राखे नहीं. पूजन प्रमार्जन कस्त्या विना कशी पण किया करे नहीं. मोठी मोरीमां पाणी चलावे नहीं. दीवाबत्ती प्रसुख लगाडे, ते पण यत्नवडे करी जीवरक्ता थाय तेवीरीतें करे. जे आ बखोरा प्रमुख वासणथी पाणी पीधुं होय, तेमां मोढानी लाल पडी होय, अथवा वलगी होय, ते कारणे ते पात्र पाणीमां बोलीने फरी जरे नहीं. पाणी जरवानुं पात्र दांनीवालुं होय, तेना वडे आबखोरो के लोटो जरे. इत्यादि व्यवहार शुद्ध उपयोगें प्रवर्त्ते. एवा श्रावकोने सवा वशानी दया पूरी कहीते. ए प्रमाणे प्रथम वत शुद्धवे, तेना पांच अतिचारवे. ते हवे लखीयें वैयें.

प्रथम स्यूल प्राणातिपात विरमणवत.

१ प्रथम वधनामा अतिचारठे. ते एके,कोध करीने पोताना बल वड़े निर्दयपणे गाय,घोडा,प्रमुखने मारे,चलावे,ते पहेलो अतिचार. १ वीजो बंध अतिचार.ते ए के, गाय बलद, वाठरडां प्रमुख जी वोने गाढ बंधनथी बांधे,ते छाकरा बंधनथी जीव अतिछुःख पामे, नीचुं माथुं राखे. बिचारां, अवोलानी जेम मनमां कहपे. कदापि ए जानवरोने गाढबंधने करी बांध्यां ठे; एटलामां अग्नि जय थयो, त्यारें तेउं उतावले ढूटी शके नहीं. तेथी ए जीवनी विराधना थइ जाय. ते वास्ते गाढवंधन पण अतिचारठे. वास्ते जानवरने ढीला वंधनथी बांधे. अने कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण निर्द्य तथा नि पट गाढ वंधथी बांधे तो त्यांपण वीजा बंधअतिचारनुं दूषण लागे.

३ त्रीजो ढविढेद छतिचार, ते ए के,बलद प्रमुखना कान ढे दावे नाथ घाले,खासी करे, पुरुषत्वपणुं मटाडे. बीजुं पण ढेदन नेदन करे, करावे. ते त्रीजो ढविढेद छतिचार जाणवो.

४ चोथो अतिजारारोपण अतिचार हे. ते ए के, जे बलद प्रमुख उपर जेटलो वोजो अनुमान प्रमाणे जरवानी रीती होय, तेना करतां वधारे जरे तो, अतिजारारोपण अतिचारनो दोष लागे. आवकने तो हकडा बलद प्रमुख जे जारथी जरे, ते हमेशां जरवानी जेटली चाल होय, तेना करतां पण पांच शेर दश शेर ठंहो जार जर वो, तो व्रत शुद्ध रहे. एमां पण जानवरनी चालवानी शक्ति एटली नथी तो विवेकथी चलावे. जार ठंहो करे, जानवर निर्वल होय तो तेना खावा पीवानी तथा घांस, दाणा, पाणीनी खवर ले, तथा लेव रावे,परंतु एवुं न विचारे के, लोक सर्व जे प्रमाणे जार नाखे हे तो आ पणे पण तेटलो जार एना पर नाखीयें. ते व्यवहार शुद्ध हे, एमां कां इ हरकत नथी. एवुं न विचारे. वती होय तो ते वीजो बलद करे ए व्यवहारहे. ए प्रमाणे चोथो अतिजारारोपण अतिचार जाणवो. 4 पांचमो अतिचार जात पाणीनो विहेद करे. ते ए के,वल

दितीय स्थूल मृषावाद विरमणव्रत.

द, घोडानी मरजी माफक खाणुं बंध करे, हमेशना खाणामांथी कांइ उंढुं, करे,ऋथवा असूर करीने श्रापे, वखत वटावीने आपे. त्यारें ते अतिचार लागे.वली कोइ मनुष्यनी वृत्ति तथा आजीविका बंध करवी, ते पण एमां आवी गयुं. अने श्रावक तो दास, दासी, चाकर, ढोर प्रमुख पोतानी पाठल जेमनी आजीविका बांधी हो य, तेमनी खबर लइने पठी पोतें जोजनादिक करे. तो व्रत शुरू र हे. ए पांचमो जातपाणी विह्रेदनो अतिचार जाणवो. ए पांचे अ तिचार श्रावकने जाणवा, पण आदरवा नहीं ॥

इति द्वादशव्रतविवरणे प्रथमस्यूलप्राणातिपातविरमणव्रते पं

कित श्री जद्योतसागरगणिनाक्वतजाषा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ ऋथ ॥

॥ दितीयस्थूलम्षावादविरमणवत प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥

हवे स्थूल मृषावाद वत एटले, स्थूल कहीयें मोटुं, छने मृषा वाद एटले जुठुं बोलवुं,तेनुं विरमण कहेतां त्याग करवुं, तेने स्थू लमृषावाद विरमण वत कहियें. एटले घणुं जुठुं बोलवाथी जगत् मां अप्रीति वधे,अपयश थाय, धर्मनी निंदा थाय. माटे कोइ जीवने छःख थाय,हानी पहोचे, एवुं जुठुं न बोले. पोताना मतलबनी वात अनेक तरेहथी बनावी बनावीने अनेक गुणी वधती कहे, अने गेर मतलवनी वात होय ते अनेक गुणी ठंठी करीने कहे, पण जेवुं होय तेवुंज न कहे. एवा छर्गुणनो जे त्याग करवो,तेने स्थूल मृषा वाद विरमणवत कहियें.एना बे जेदठे.एकडव्य मृषावाद, अने बी Zo

जो जाव मृषावाद. तेमां झव्यमृषावाद एटले जाणतां अजाणतां विपरीत कहे, जुठुं कहे,ते डव्य मृषावाद. वीजो जावमृषावाद ए टले सर्व परनाव पुजलादिकने आत्मत्वबुद्धियें करीने पोतानां जा णे, पोतानां कहे, रागद्वेषयुक्त कृष्णादिक ऋग्रुऊलेझ्याथी आगम विरुद्ध वोले,त्र्यागमार्थ तुपावे. उत्सूत्र प्ररुपे,कुयुक्ति लगाडे, ते नाव मृषावाद कहियें.ए सृषावाद जाएतां ठतांज थाय. आ व्रत सर्वव्र तमां मोटुं ठे. जो पालवामां अतिशुद्ध उपयोगी थाय, त्यारें ज ग्रुऊ रहे, छने व्रत पखे. जे कारणे बीजांव्रत इव्यलेश विषयीवे ते देखाडेंठे. एक मात्र जीवनीज ग्रुद्ध र्वलखाणथी जीवदया पलेठे.त था परनिष्टागत पुजल पर्याय, एटले पोतानी निष्ठानी वस्तुश्री बीजी कोइ जे त्रणमात्र प्रमुख चीजठे ते परनिष्ठा कहेवाय हे. ते तेना मालेकना दीधा विनान लहे, एटले छादत्तव्रत पत्ने. तथा मात्र स्त्रीना संयोगनो त्याग, मन वचन कायाथी करे, एटले व्रह्मचर्य व्रत पले. त था धन धान्यादिक नवविध परिग्रह त्याग करे,मूर्छा न धरे,एटले परिग्रहविरमण व्रत पले. एम एक एक डव्य देशथकी र्वलखाण थ वाथी चारें व्रत पलेठे. अने जे मृषावाद विरमण व्रतवे तेतो ज्यारें पटडव्यनी डव्यगुण पर्यायथी, डव्य देत्र काल नावथी,त्र्योलखा ए थाय. एवो तीव्र केहतां जोरावर उपयोगी थाय. त्यारें झुद्ध पाले, तो तो ठीक, नहीं तो एकपर्याय मात्र विरुद्ध वोलवाथीव्रत त्रंग थाय. ए माटे साधु पए प्रायें वहु जापा वोले नहीं. तथा साधु पण प्राणातिपातव्रतादिक चार महाव्रतमां श्चन्यतर जांगे, त्यारें एक चारित्र गुणनो जंग थाय, पर्ण ज्ञानदर्शननी जजना, अने तेथी आगली गति वगडे. अने ज्यारें मृपावाद व्रत जांगे त्यारें रतन्त्रची समूलीज जाय, छुर्गतिमां रोखे अने अनंत संसारी याय छुर्ह्वजवोधी थाय. ए माटे ए व्रतने ग्रुद्धरीतें पालवाने अयें वए डव्यनी समज वरावर जोइयें, सावधानपणुं राखवुं जोइयें.

दितीय स्यूल मृषावाद विरमणवत.

तथा छा जगत्मां डव्य असत्यना त्यागी तो ढए दर्शनमां जोइएं ढैयें. पण जाव असत्यनो त्याग तो एक श्रीजिनागमरुचि द्युद्ध अद्धावंत पुरुषनेज थाय. बीजाने नहीं थाय. त्यां स्यूलम् षावाद त्याग व्रतनां पांच मोटां जुठ ढे. ते व्रती श्रावर्के अवच्य ढांमवां जोइएं. ते पांच जुठ हवे लखियें ढैयें.

१ प्रथम कन्यालीक एटले आपणा मेलापीनी कन्या हे. तेनी सगाइ थती होय, खारें कन्याना प्राहक पूठे के कन्या केवीठे?तो पोताना मेलापीनी प्रीतिएं करीने ते कन्यामां जे दोष होय, ते हु पावे. गुण होय, न होय,तोपण जुठुं वधारीने कहे के, ए कन्या निर्दो ष हे.एवी सारा कुलनी अने सारां लक्त्णनी मलवी मुश्केल हे. आ तो साक्तात् पार्वती ढे. एवुं रागथी कहे. अने जो कांइ परस्पर देषत्राव होय तो, जोके ते कन्या निर्दोष अने सुलक्तणवंती हो य तोपण कहे के, ए कन्या कुलक्तणी हे. नठारां पगलांनी हे. ब हु बोलकणी ने वढकणी ठे. एवा एना छुर्गुण, ए ठोडीना पाडोशी लोक कहेने ते अमे सांजल्या ने. एनाथी जे संबंध करशे, ते पस्ता हो. एवी रीतें छाठता दोष कहे, पण श्रावक जे व्रतधारी छे तेने तो कोइनी सगाइ सादी आरंजना जुठ कामने माटे जुठुं बोलवुं पण यु क्त नथी. जे कारण माटे स्त्री जरतारनो संबंध कराववो ते संसा रभ्रमण बीज, वाववानुं ठे. एम करतांय आपणो संबंधी ठे, घरनी वात ठे,दाक्तिप्यताथी पण ठुटाइ शकाय नहीं, एवुं होय तो पण ञ्र ति जुवुं अग्रुऊ न बोले. अने गुए होय ते कहे. वली कहे के, जाइ ! तमे तमारी में वें पोतानी खातर जमा करी खो. कारणके जन्म सुधी नो संबंध हे. एम केहेवुं, ए व्यवहारहे. वली कोइ चाकर राखतो होय, तथा जे कोइ जाग, पांती के, व्यापारनुं खातुं नामुं कोइनी सा थें जोडाववा मेलववानुं चाह्य,त्यारें ते पण कोइ एक ञ्यावीने पुढे के, ए केवोडे ? सारो डे के नठारो डे. त्यारें व्रती श्रावक होय, ते तो राग

दितीय स्थूल मृषावाद विरमणव्रत.

देषनी वात न करे. तेथी लां पए कन्यालीकनी परें कम वेश न वोले, पए गुए होय ते कहे अने वली कहे के, जाइ ! मनुष्यना मनोगत जावमां कोए साहितगारढे ? तमे शाहाणाढो. पोतें पो तानी तजवीज करी ल्यो. ए प्रमाणे कन्यालीक जुठ जॉएवुं.

१ वीजुं मोटुं जुठ गवालीक ठे. ते केहेठे. जेम कोइ रीतें कोइ एक सलतीया दोसदार स्नेही साणसनी गाय वेचाती होय, त्यारें तेनो स्नेही पुरुष लेनार धणीने कहे के, आ गायने खुझीथी ल्यो. आ गाय घणुं दूध देनारीठे, सुलक्तणी ठे, लात प्रमुख दूजती वखतें चलावती नथी, आ गायनी मानी पण अमने खबर ठे. ते पण बहु दूध देती हती. एवी वातो कहीने ते मित्रनी गायने वेचावी आपे. अने ते गाय तो घणा अपलक्तणवाली ठे, तथा थोडा दूध नी देवा वाली ठे, अने दोहोती वखत लात प्रमुखनी मारनारी, इत्यादिक दोषनी जरेली हे. पए त्यां जे वती श्रावक होय, ते तो राग देषथी ते दोषने निदोंष ठे एम कहे नहीं, परंतु यथार्थ जा षा वोले. एमां सहु चोपगां जानवर हाथी, घोडा, सूतर, वलद, गाय, जेंपनो एवो विवरो जाणी लेवो. प्रथम तो ए हाड विक्रय कराववोज योग्य नथी, तेम करतां कदापि स्नेह संवंध होय ने तेने लीधे वोलवुं पडे, तो छापणा वतने दोष न लागे एवुं वचन वोलवुं. ए रीतें ए गवालीक जुठ त्याग करवुं जोइएं.

३ त्रीजो मृषावाद, जूम्यालिकठे. ते एके, जमीनने लगतुं जुठुं वोलवुं ते एवी रीतें के जमीन कोइनी होय ने श्रापस श्रा पसमां कद्दे के श्रा जमीन मारीठे, एवो बुद्धिप्रपंच करीने ते जमीन श्रापणी ठरावे श्रथवा वीजा कोइ वे जण जमीन वास्ते लडता होय, त्यां राग देपनी परणतिथी युक्ति कुयुक्ति करीने ते जमीन पोताना रागी मलतीयानी ठरावे, श्रने देपीने जुठो ठरावे. एम होय कोइनी, ने श्रपावे कोइने. जग्यातो कोइ वी

दितीय स्यूल मृषावाद विरमण वत.

जानीज होय तो कहे के,आतो अमुक धणीनी जग्या वे ए पण महोटो मृषावाद हे. प्रथम तो वती श्रावकने जमीनना कजी यानी वातमां पडवुंज नहीं. केम के, जमीननो कजीर्ड महोटा उत्पात आरंजनी खाण ठे. तोपण कदापि आपणो तेनाभी कांइ संबंध हे, ने तेथी ए वातमां पड्या विना हुटको न थतो होय तो जेवुं होय तेवुं यथार्थ कहीएं. पण जूवुं कहीएं नहीं. पेहेलांथीज एकांतमां आपणा मलतीया संबंधीने समजावीएं के, जाइ! ए वा तमां हुं नहीं बोहुं, साटे मने ए वातमां वचें नाखशो नहीं. एवी रीतें करतां पण कोइ पंच मलीने आपणी पर ए कजीयाना ठरावनी वात नाखे, तो ते वखतें चतुराइथी पहेलां तो नज बोले; अने ए वुं कहेके, माराथी तो बीजा महोटा भहोटा पंच वे. ते पंच मली जे อराव करशे ते खरो.वली बीजा पण माह्या घणाठे. इत्यादिकवि नय वचन कही ठानो मानो बेसे,पोताना व्रतनो जय राखे अने कदा चित् ए वातनो ठराव करवा बधा मली तेने बहुज आग्रह करे लारें कहे के, मने वारें वारें हुं कहोढो ? हुं तो ए जमीननी वातमां पूरो माहितगार पण नथी, एवं कहे, पण जूमिसंबंधी जूवं कदापि न बोले. एमां घर, हवेली, बाग, बगीचा विगेरे सर्व जमीन संबंधी नी वात आवी गइ. कोइ एमानुं कांइ खरीदतुं होय, त्यारें ते सारुं वे के नवारुंवे. ते न कहे. धन धान्यादिक परिग्रहनो मृषा वाद पए एमांज आवी गयो. ए त्रीजुं जूतुं जूम्यालिक बे. तेनो व्रती श्रावक होय, तेेेेेेे त्याग करवो.

४ चोथो थापए मोसो,व्रतधारी श्रावकें न करवो. जे कोइ छना मत ऊव्य, जूषणादिक वस्तु, जलो ग्रहस्थ जाएी साक्ती राख्या वि ना मूकी गयो होय, ते केटलाएक दिवस वीत्या पठी ते धएी मा गवाने छावरो त्यारें हुं नहीं छापुं. एवो कांइ बुऊिप्रपंच करी तेने पंचमां जूठो ठेरावीश ! ए ज्यारें मागरो त्यारें हुं एवुं कहीश के, छ

मारी पासें तमो थापण मूकी गया ते संवंधीनो कोइ श्रमारा हाथ नो लखेलो दस्तावेज ठे?श्रथवा कोइ साक्ती ठे?बीजा जे कोइ थाप ण कोइने घेर मूके ढे,तेनी पासेंथी लखावी करीने राखे ढे. एवुं कही तेने दवावी पाडवानी युक्ति रचे, ने विचारे के हुं नगरमां मात वर हुं. ने एतो आव्यो गयो परदेशी हे. एनी कोए पक्त खेंचशे ! मारी मरजी तोडीने एनी तरफ कोए बोलरो! एवी इव्यनी चीज शा वास्ते ढोडीएं!! श्रने हुं मारीश्चकलथी बधाने जवावश्चापीश. कोइना पण दाव पेचमां हुं नहीं छावीश. एवा कुविचारमां पडे. एट लमां पेलो थापण मूकनार छावीने मागे के जाइ! मारो माल छापो. ते वखतें तेने गुस्सो करीने कहे के जाइ! माल केवो ? अने तमे कोने सोंप्योठे ? आते ग़ुं बोलोठो वारु आते कांइ ठीक कहेवाय? अमें तम ने उंलखता पण नथी,के तमे कोण्ठो?नोलपणमां कोइने त्यां मूक्यो होय तो त्यां तेनी तजवीज करो. अमे तो परिचय र्जलखाण विना कोइनी थापण राखता पण नथी. तेमां तमे तो वली परदेशी ठो,तो तमारीचीज शा वास्ते राखियें? एटली तेनी वात सांजलीने थापण मूकवा वालो कहे के, अरे साहेव !हुं देवावालो, ने तमे लेवावाला. ञ्चापण वंने जीवता ठैएं. कांइ घणां वरस पण थयां नथी. चार पांच मास थयां तमारा पासें चीज मूकीठे. तो एटली थोडी मुदतमां तमे आवा शाहुकार थइने, आम जीवती माखी गलवा जेवी वात करोठो ते वात सारी नथी. जूठा ऊगडामां सारुं नथी. एम करतां वन्नेने कजीर्ठ थयो, ने वढवा लाग्या. शाहुकार, पोताना जाइवं भोने कहेके,आ दगाखोर गले पछने कोइ समजावो.पठी कहेरो कह्युं नहीं. नहिंतो वहु दिवस याद करशे, एवी तस्दी पामशे. त्यार पठी समजरो, आज पैठी कोइ साथें जुठो जगडो न करे,ते माटे एने स मजावो. नहीं तो पठी फोजदारीमां मोकली दीयो. श्रमारी पासें थी सहु डव्य के चीज गणीने लेवा करतां एटखुं कद्देवाथी जो समजी

दितीय स्यूल मृषावाद विरमण व्रत.

ने पोताने घेर जाय तो सारुं; व्यमाराथी जूठो कजीन नहीं करे!एवा जोरावरीनां वचन तेने संजलावे. हवे बापडो थापण मूकवावालो विचारे के, हवे हुं शुं करुं ! छरे हुं क्यां ! ने क्यां छा सहु लोक !!! व धाए एनी मरजी प्रमाणे बोखेंठे. हुं एकलो परदेशी माटे एनाथी पहो ची शकीश नहीं.एम विचारी ते छबोलो थइ रहे. एवी छर्बुद्धि करी ने पोतें साचो थाय,श्चने ञ्चागला साचाने जूठो ठेरावे; ञ्चने पारको । माल हजम करी जाय. ए थापए ठेलवी राखवानुं महा पाप ढे. **ञ्चा लोकमां कदापि पापना उदय**थी कोइ दिवस वेचतां, के कोइ **ठेकाणे मूकतां जाहेर थाय तो राजा तरफ**थी महोटो दंग पडे,लोको मां अपयश थाय, अप्रतीति वधे, साख जाय, अने परनवे, कूडां कलंक चढे, छुर्गतिमां पडे, डारिडजाव कदी पण न मटे. जिनेश्वर जाषित धर्म पण जदय न आवे. ए माटे व्रती श्रावक होय, ते पर नी थापण अथवा हरकोइ अनामत वस्तु कोइ मूकी जाय, ते सर्वथा र्वेखवे नहीं. शास्त्रमां तो कोइनी व्यनामत चीज राखवीज नहिं.एवी आज्ञाबे, तेम बतां कदापि मूलजांगे दाक्तिण संबंधी जोगजोंगें रा खवी पडे तो जाइबंधनी के कोइ बीजानी साक्ती लखावीने तथा तोल, मुख्य करावीने राखवी. कदापि घणा दिवस ते चीज ञ्रापणे घेर रहे, तो तेने उंठी वधती न कहेवाय. अथवा आपणी चेतना पर्णं,बगडे नहीं. कदाचित् पोताना मरण पडी पुत्रादिकनी पण बुद्धिं बगडे नहीं. ते माटे लखत सा**द्ती करावीने खत** करीने राखे; के तेथी तेर्जने पाठी आपवानी जरूर पडे, अने मनमां बीक रहे. धणी मागे त्यारें खुशी थइने थापण मूकेली चीज हो य ते पाठी आपे. एमां सहु वातनां ठिझो जाणी लेवां. कपट व्रत्ति, विश्वासघात, ए सहु व्रतीश्रावकें थापण मोसो न करवो.

५ पांचमो मृषवाद जूठी साक्ती. ए वती आवक होय, ते क दी न पूरे. तेनो विस्तार लखीएं ठैयें. कूडी साक्ती तेने कहीएंके,

३६ दितीय स्थूल मृषावाद विरमण वत.

वे जणा कजीर्ड करवा लाग्या, तेमां कोण साचो ने कोण जूगे ! तथा कोनो वांक हे ! हवे जे साचो हे ने जेनो वांक नथी, तेनापर नगरवासी लोकोनो देष हे. ते पुरुषोयें पोताना दिलमां धारी रा ख्युं होय के क्यारें पण श्रमे श्रवसर पामीने एने उपर जबरज स्ती करशुं. ए वातनो श्चवसर जोइने साचाने कगाववानुं वल वांधे, ते एम के देवपोषणने माटे पोते कजीयानी झंटर तत्पर थाय छने मातवर थइ लोकोने कहे के, ए वातथी हुं माहित गार हुं. एनी साक्ती हुं पूरीज्ञ. कदापि राजघारमां कोइ काम पडरो, अने मारी साक्तीनी जरूर हरो तो त्यां पण हुं साक्ती पूरीश. एनी खातरदारी साक्ती सर्वरीतेंथी मारी पासेथी खेजो. एवी रीतें जुठानो पक्त करे. उपर प्रमाणेनी वात करीने जुठी साक्ती पूरे. प ण कूडी साक्तीनुं महापाप वे. आ जवमां पण जूवो पडे तो आ वरु जाय, राजदरवारमां खवर पडे के, आ जूठो माएस ठे. रोहेरमां जेनी तेनी साथें जगडो कस्वा करे वे. एवुं जाए थतां नी साथें धन धान्य सर्व राजा खूंटी जाय. जूठी साझीवालो मार खाय. ऋने परजवमां तो एवां पापें करी ए छुःखश्री पए वली वहुज डुःख जोगवे, डुर्गतिनो साथी थाय, पगले पगले अणचिंतवी आप दा छावीने प्राप्त थाय, ए माटे श्रावकने सर्वथा जूठी साक्ती कोइनी पूरवी योग्य नथी. ए पांच तो महोटां जूठठे. जेश्रावक नाम धरावे तेणे ए पांचे जूठ त्याग करवां. तथा वीजुं पण जे वोलवाथी राज नच उपजे, दंग जरवो पडे. जीज, कान, नाक, हाथ आदिक ऋंग जे वोलवाची ठेदाय. एवी जापा वोलवी नहीं. एवी रीतें वीजुं मृपावाद विरमण वत लीधुं ठे.एमां श्राजीविका निमित्तें पोता ना परिणामनी कचाइथी कोइरीतें जूनं वोलवुं पडे, तो तेनो आ गार वे. छहीयां कोध, मान, माया, लोज, राग, देष, रति, छरति, कीडा, लजा, विकथा, जय, हास्य इत्यादिक जूठुं, वोलवानां का

दितीय स्यूल मुषावाद विरमण वत.

रणो ठे. छहीं हास्यादि वात विनोदमां तथा कोइ निमिन्नें क षायादिकने परिणम्यो, छात्मा मूढ चेतनामां रद्यो थको कांइ छालपंपाल बोलाय. तेनी जयणा, तथा कोइ चाडीयो प्रमुख छ ष्ट मनुष्य, निष्कारण बहु छुःख देतो होय, कोइ रीतें छुःख देतो रहे नहीं, त्यारें ते सापराधीने शिक्ता देवराववानेसार कांइ उ तुं वत्तुं बोलवुं पडे; तेनो छागार ठे. एटले संकल्प करीने विना प्रयोजन निरपराधें हास्यादि कारण विना निरपेक्त जूठुं न बोलुं. वली पांच महोटां जूठमां पण खसंबंधी कन्यालीक, गवालीक, जू म्यालीकमां न चालतां जूठं बोलवुं पडे, तेनो छागार ठे. एना पांच छातिचार ठे. ते जाणवाने लखेठे.

१ प्रथम सहसात्कार अतिचार ठे. ते एके, कोइने एका एक अण विचाख़ुं कहे, अयुक्त कलंक चढावे. जेमके, तुं चोर ठे, व्य जिचारी ठे, जूठो ठे, इत्यादि विना तपास कस्त्रे कहे, ते पहेलो अतिचार ठे. आवकने तो साक्तात कांइ विरुद्धवात जोइ होय तो पण प्राणांत सुधी तें जाहेर न करवी. वली न कहे तो जूठुं बोलवानो दोष लागे, त्यारें विचारे जे ए वात कहेवाथी महोटुं पाप लागहो. एम विरुद्ध वातने जाहेर करतां कांइ दोषादिक उपजे, छने तेथी आवकने अतिचार लागे. माटे ए विरुद्ध वात ठे. तेथी पोतानी मेलें जाहेरमां आवहो पण पोतें कहे नहीं.

१ बीजो रहस्यजाषण अतिचार. ते एके, कोइ वे जण पोताना घरनी सुख छःखनी वात करेठे, ते जोइने तेमने कहे के, खब रदार रहेजो! तमे बन्ने मलीने राजघार विरुद्धनी वात करोठो पण तमे महोटो तमासो देखशो, आगल विचार करवो पडशे, माटें आ ज पठी एवी वात न करशो. एवुं कहीने ते बन्नेने छःख जपजावे. बीजुं पण स्त्रीजननी, मित्रनी, पोताना मेलापीनी तथा बीजा पण कोइनी ठ्रानी वात अथवा कांइ एबनी वात, आपणे जाणीने ते वात लोकोनी आगल प्रकाहो, ने तेनी चरचा चलाव्या करे. पढी रहेते रहेते ते वात, राजद्वार जइ पहोचे. त्यारें राजदंकनो जय जपजे, कांइन्रुं कांइ थइ जाय. ते रहस्यजाषण अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो दारमंत्रजेद अतिचार. ते एके, आपणी स्त्री तथा जाइ प्रमुख घरनां माणस तथा आपणो मित्र के कोइ हितेह्यु ते मनाथी कोइ जूलचूकथी अथवा नादानबुद्धिथी कांइ ठानी विरुद्ध वात थइ गइ अने पठी पस्तावो करी ते दोष तेणे ठां डी दीधो होय, ते वहु दिवस वित्या पठी कोइ प्रसंगोपात ते गइ गुजरी वातने फरी प्रकाश करीने केहे; त्यारें ते लाजनो माख्यो आपघात करी जीव काढे. ने तेथी आपणने पण मोटी एव लागें, बहु वेदना तथा छःख थाय, लौकीकमां अपयशनी वृद्धि थाय, ए दारमंत्रजेद त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मृषाउपदेश अतिचार ठे. तें एके, पोतें मापणवालो थवानेसारु पापोपदेश जे मंत्र, यंत्र, जडी, बुद्दी, बतावे. ने कहे के, फलाणी बुद्दीनुं मूल कहाढो. ते अमुक बुद्दीना रसमां मेलवीने आटली चीज वाटो. तेनी गोली करीने खार्ड. तेथी वहु जोगशक्ति थरो. वली त्या मंत्रनो जाप करो, मद्य मांसनी आहुति आपो, जे थी करी देवता प्रसन्न थाय, वली जेनी चाहना करो तेनी प्राप्ति थ शे. वली कहे के,सांजलो! अमुक जानवरना लोहीथी अमुक औषधि नां पांदडा पर यंत्र लखीएं, घुअडना पग साथें वांधीएं तो शत्रु जा गी जाय अथवा मरण पामे. वीजुं कहे के, जनावरना इंमाना रस थी पारा प्रमुखनो खरल करो. अने पठी तेपाराने अग्निमां राखछुं. शोल प्रहरनी अग्निएं करी पारो सिद्ध थरो. एवा उपदेशनो देनारो थाय. वली कहे के, ढुं कामशास्त्रमां महा निपुण ढुं, तमोने चोरा शी जोगासननो विधि शिखवाडुं,ते तमे शीखो. एथी करी विविध प्रकारनी रतीविलास किया ने बहुवार वीर्थ इऊि रहेशे. काम जा

दितीय स्थूल मृषावाद विरमण व्रत.

गरो, कामदेवना वासानुं स्थानक जाणरो.तो तमारो जीव बहु खुराी मां रहेरो. अंधारा पक्तमां तथा व्यजवाखीया पक्तमां स्त्रीने कामनो वासो जूदे जूदे ठेकाणे रहेठे.तिथि तिथिनो विवरोठे.ते बधुं तमने बतावीश, इत्यादि बहु पापोपदेश करे. बीजां पण ओषधादिकनां शास्त्र बतावे, जणावे अथवा कोइने छःखमां नाखवाना उपाय वतावे. एना प्रतिपक्ती होय तेने पण कुबुद्धि बतावे, शीखवाडे, तथा विषयकषाय जागे, एवी नवी वात उठावे, ते पापोपदे शकथन चोथो अतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो क्रूटलेखन अतिचारते. ते एके, कोइनो जूगे लेख लखे, नामामां जूतुं लखे, ठंगे वधारे अक्तर लखे, प्रथम झिखित अक्तर ठरी प्रमुखना प्रयोगें करी ठेकी नाखे, पर वाना उपर जूठी मोहोरकरे, खोटुं खत बनावे, तेमां रुझनाइना जेद पए सहु आव्या. ए पांचमो क्रूटखेखन अतिचार जाएवो. अहींयां आजीविका निमित्तें चित्तद्रढताना योगथी आडतिया प्रमुख व्यापारमां अधिक लाजनी प्राप्तिथी कांइ धारएा प्रमाणे ठंढुं वज्जु लखवानो आगारते पए एने मूलमां तोटो आवे, ए ढुं न करवुं. वली बीजुं पए आजीविका निमित्तें ठंढुं वज्जु मर्यादा धिक धारएा प्रमाणे लखवानो आगार. ए पांचे अतिचार मृषावा द उपदेशनाते. आ पांचे अतिचार महाछर्गतिना सहायकते. ते माटे ए आतिचारने जाएवा पए आदरवा नहीं.

॥ इति श्रीद्वादशवतविवरणे द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणवते पंक्तिश्रीज्योतसागरगणिना क्वतजाषा संपूर्णा ॥ १ ॥

३ए

तृतीय स्यूल अदत्तादान विरमण व्रत.

॥ अथ ॥

॥ तृतीयस्थूलच्प्रदत्तादानविरमणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

सज़ुरु पदपंकज नमी, कहिद्युं विवरण द्युद्ध ;

तृतीय अदत्तादान व्रत, न कहुं शास्त्र विरुद्ध ॥ १ ॥ हवे स्थूल अदत्तादानविरमण लखीएं वैयें.प्रथमस्थूल जे महोटी चोरी जे संकल्प करीने देवाल फोडी खातर पाडे, छेथवा मार्गा दिकें मुसाफरना डव्यने लूटवानी इज्ञा थइ. ते एम के, आ ए काकी है. बीजो कोइ एनी साथें हे नहीं. लारें जाणी जोइने को <mark>इ नवो प्रपंच करी,एनुं झ्</mark>व्य होय ते लइ **सेइएं** छ्रथवा वलात्का रें करीने पारकी चीज लेवी तथा नजर चूकावीने कोइनी चीज उ ठावी लेवी तथा आपणे घेर कोइ अनामत चीज मूकी गयो हो य ने ते ज्यारें पाठी मागे त्यारें नामुकर जवुं तथा खरुं जवाही र प्रमुख लइने घरमां मूकवुं. छने पांढुं ते मांगे खारें खोढुं छाप वुं, तथा वीजा कोइएं हींरा मोती वेचवाने आप्यां होय, तेमाथी नंगनो फेरफार करी सारुं नंग होय, ते पोतें लइ लिये, अने उंठी कि म्मतनुं नंग होय,ते तेमां मेलवी आपे.ए सहु अदत्तादाननो दोष क हीएं. जे कारणे क्यारें पण तेनी जाण पडे, प्रगट थाय, खारें राज दंग देवो पडे, अपयश थाय, अप्रतीति उपजे, ए माटे स्थूलअद त्तादानने जे त्यागे, ते अदत्तविरमणवत वे. ते अदत्तवतना वे जे दते. ते कहेते. एक डव्यव्यदत्तव्रत, वीजुं नावव्यदत्तव्रत.

र डव्यअदत्तविरमण एटले पारकी चीज पूर्वोक्त प्रकारेंगएली पडेली, विसरी गएली लीये नहीं. ते डव्यअदत्तविरमणवत जाणवुं. १ तथा जे पर पुजलडव्य, तेनी चीज वर्ण गंध रसादिक रचना रूप त्रेवीशविषय तथा आठे कर्मनी वर्गणा ते पण पराइ चीज

Яa

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत.

ठे. ते वस्तुगतें जीवने अग्राह्य ठे. एनी जे वांह्या ठदयिक जा वमां धसण, ते जावव्यदत्त ग्रहण जाणवुं. तेने श्रीजिनागमोक्त तत्व सांजलीने, पुजलानंदी पणुं मटाडे, ग्रुद्ध उपयोगें दिलशी उदय अव्यापक रहे. निर्जराना बहुल परिणाम ते जावव्यदत्तवि रमणवत कहीयें. जेटली जेटली कर्म प्रकृति ठेतेनो बंध मट्यो. ए टखुं जावव्यदत्तविरमणवत कहीयें. त्यां सामान्य व्यदत्तना चार जे दठे; ते कहेठे. १ प्रथम सामिव्यदत्त, १ बीजो जीवव्यदत्त, ३ त्री जो तीर्थंकरव्यदत्त, व्यने ४ चोथो गुरुव्यदत्त.

१ तेमां प्रथम कोइनी चीज आप्या विना लिये, ते खामिअदत्त. १ बीज़ुं जे सचित्त बीज फलादि गुन्ठा प्रमुख तोडे, अथवा बे दे, जेदे, ते जीवअदत्त कहीएं. जे कारणे फलना जीवोएं एवी कांइ आज्ञा दीधी नथी के; अमोने तमे बेदन जेदन करो. ते हे तुएं ए जीवअदत्तनो बीजो जेद जाणवो.

३ त्रीजो श्रीतीर्थंकर देवें जे चीजनो निषेध कह्योढे. ते चीज ने यहण करे. जेम के, साधुने आधाकर्मी आहार निषेध कह्यो ढे. श्रावकने अजद्म्य वस्तु निषेध कही ढे; तेने आचरे त्यारें ते तीर्थंकर श्रदत्त केहेवाय. ए त्रीजो नेद तीर्थंकरत्यदत्तनो जाणवो.

ध चोथो गुरुञ्चदत्त. ते एके, कोइ साधु, आगमोक्त ग़ुद्ध व्य वहारपूर्वक निर्दूषण आहार लावीने पठी तेने गुरुनी आज्ञा वि ना खाय, ते गुरुञ्चदत्त कहिएं.

ए चारे श्रदत्त, संपूर्ण रीतें तो साधुथी तज्या जाय, श्रने ग्रह स्थथी तो कांइ अंशें तज्या जाय. श्रहींयां श्रावकने चारे श्रदत्त मां खामिश्रदत्तना त्यागनी मुख्यता ठे. ए माटे पराइ चीज पू वोंक्त जपाय करीने न खेउं. जे चीज खेवाथी चोर नाम ठरे, रा जदंग जपजे, एव खागे, माटे एवी चीज न खेउं पण सूझ तृ ण काष्ठ प्रमुख, जेनी कोइ बहु मनाइ न करे, ते चीज खेउं ते नी जयणाठें. कोइनी चीज पडेखी पामुं तो ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी खेउं नहीं. कदापि बहु मूख्यवान् चीज जोइने परि णाम शिथिल थाय, त्यारें ते जीज खेउं. पठी खेइने केटला एक दिवस, पोता पासें राखुं. एटलामां जो ते चीजनो धणी ठतो था य, तो तेने आपुं अने धणी ठतो न थाय, तो धर्मस्थानकमां त था धर्मना काममां खरचुं. एम पण परिणाम न रहे, तो तेमां थी अर्ध जाग धर्म स्थानकमां खरचुं, अने अर्ध हुं पोतें राखुं.

वली पोतानी जमीन खोदतां डव्यनो जंडार निकल्यो, तो तेने लेवानो च्यागार ठे. एमांथी पण ऋर्ध छाथवा चोथो हिस्सो धर्म करुं. पठी पण जेवी धारणा ?

तथा पारकी जमीनमांथी डव्य निकले, त्यारें पण ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी ते डव्य लेउं नहीं. अने परिणाम शि थिल होय तो, अर्धुं हुं राखुं ने अर्धुं धर्ममां खरचुं.

तथा कोइ वारस विनानो माएस कोइ चीज अनामत मूकी गयो होय, पठी ते देशांतर गयो त्यां मरए पाम्यो त्यारें तेनी चीज पंचमां, जला अने सारा रुचिवाला मनुष्य आगल जाहेर करीने जे पंच कहे, ते करुं; कदापि देश कालनी विषमताथी जाहेर करतां ज लटुं लफरुं लागे. ते एम के, छुष्टराजादिक होय तो ते लोजना मा स्वा थका कहे के तारे घेर, मरनारें घणुं डव्य मूक्युंठे ? तुंतो पो तानी शाहुकारी जाहेर करवाने थोडुं देखाडे ठे. एवी जपाधि जागे, ते माटे कोइने न कहुं तो पण ते डव्य, धर्मस्थानकं खरचुं. ते खरच तां ते धन आपणुं पोतानुं केहेवुं पडे, तेनी जयणा.

तथा घरचोरी एटले घरमांनी सर्व चीजना मालिक तो पोताना पिताठे, व्यथवा माताठे. एमने पुठवा विना वस्त ऊव्यादिक लेखुं, तेनी जयणाठे. वल्ली जेनी साथें महोवत होय, जे संवंधी होय, जेने घेर जवा आववानो,खावा खवराववानो व्यवहार होय, ते तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत. ४३

ने घेर गये थके कशुं पुठ्या विना फल पान प्रमुख लेवुं; तेनो आगारढे. परंतु तेनो जीव कचवातो होय तो न लेवुं.

तथा कोइनी चाकरी करतां व्यापारमां कांइ कसुर करीने इव्य मेलववानी जयणा. ए रीतें त्रीज़ुं व्रत पाले, ते व्यवहार शुद्ध व्यदत्तादान विरमणव्रत जाणवुं. व्यने निश्चयथी तो जेटलो त्रात्मानो व्यबंधक परिणाम थयो, गुणस्थाननी वृद्धि थइ, व्यने बंधविग्ठेद थयो, ते निश्चय व्यदत्तविरमणव्रत कहीएं. एना पांच व्यति चार ठे, ते कहे ठे.

१ प्रथम "तेनाइड" अतिचार कहेंचे. स्तेनाहृत् त्यां स्तेन एटले चोर, तेणे आहत् एटले हरण करी लीधेली एवी जे चोरीने कांइ चीज,तेने स्तेनाहृत्कहियें. एटले चोरें चोरेली चीजने खरीद करवी. कारण के, चोरीनी चीज सोंघी मखे, ते जोइ ञ्रात्मा खोजमां पड्यो थको ते वखतें विचारे के मोरे तो पारकी चीज हाथमां लेवी नहीं. पण आतो चोर पोतें चोरी लाव्यो हे. ते लेवामां मने शो दोषठे ? एवी मूढ विचारणाथी ले, पण एम न विचारे के, आ अ शुद्ध डव्यें करीने मारी चेतना बगडरो. वली कदाचित् कोइ वख तें जाहेरमां आवे. त्यारें ते पकडाय. त्यारें राजवाला पूर्व के, शेहे रमां जेमनी चीज गइ होय ते सर्व लोक, चबुतरें आवी बतावो.ते वखतें चोरने तस्दी आपे. त्यारें ते चोर जेनुं तेनुं नाम तथा पत्तो बतावे के, ऋमुक जग्याएं चीज राखीढे, किंवा ऋमुक जग्याएं वेचीढे. एम करवाथी सर्वे जग्याएंथी चीज जाहेरमां आवी. शाहुकारोएं पण सोंघी जोइने लीधी इती, ते पण संहु पकडवामां आव्या. खारें तेमने पण उलटो दंग पर्ने, ने वली जे चीज चोरपा सेंथी क्षीधी हती, ते पण जाय, पोतें खराब थाय, लोको वात करे के छा लोक, चोरोने पैशा प्रथम देुंढे ने चोरी करावेढे. एवी वात जला एहस्थने सांजलवी पडे. माटे ए धंधो केम करीएं ? वली लौ

किकमां अपयश वधे,ते तो आ जवनुं छःख, अने परजवनुं छःख जोइएं तो चोरीनो माल संगरनाराठ छर्गतिने जोगववा वालाठे ज. परंतु अर्हीं कदापि अजाए पणे एटले चोरीनो माल ठे. एम न जाए्युं होय ने लीधो होय, तो तेनो आगार. परीक्ता विना बहु मूली वस्तु थोडामां मले, तो तेनो आगार ठे. तथा परंपरायें आवी तेनो आगार. पए एने जूठी साची कल्पना दे खाडीने तेनी पासेंथी लेवी. ए पेहेलो अतिचार जाएवो.

१ वीजो तस्कर प्रयोग ऋतिचार. एटले जे चोरने चोरी कर वानी प्रेरणा करे के, तमे झाज काल नकामां बेशी रह्याबो प ए उद्यम कस्वा विना ग्रुं खाशो ? श्रा पेटने तो रोज जरवुं जोइ एं ? ते माटे घरमां बेठे तो कांइ नहीं थरो. अमे तमारा मोहोब तीया ठैएं. ते माटे कहीए ठैएं. बीजों पण त्र्यमुक, फलाणे ठेका णे गयो हतो, ते थोडा दिवसमां चार पैशा सारी रीतें लाव्यो; माटे तमे पण रोजगार सर थार्ड. तेथी माथा परनुं करज पण ठे तररो. नहीं तो आगल तमने फरी करजें कोए रूपैया देरो ? दी धा लीधाथी सहुनुं काम चालेढे, माटे जाइ ! धंधो करो. अमारुं पण तमारी जपर लेणुं हे; ते पण आपो. कारण के वहु दिवस थया हे. नहीं तो पांच सात वीजा पए आपीयें, परंतु ग्रुं करीएं ? जे तमने आवा हाले देखीए छैएं. तेथी वहुज खीज आवेठे. आ वा वलदार ठो, पण सर्वदा कमाया विना एमज निजाव केम थ **इो ? ते माटे व्यापार रोजगारमां तमने नफो न होय तो, को**इनी नोकरी करो. हथीयार लइ झीपाइगीरी करो. तमारी पासें हथी यार हाजर न होय तो जेटला जोझ्यें तेटला श्रमारी पासेंथी लइ जार्ड, पण रोजगारसर थार्ड. एवी एवी खोटी प्रेरणा करे. ते प्रयोग कहीएं. चोरने प्रेरणा करे, संवल आपे, लोढानां शस्त्रादि क अधिकरण आपे. तेने तत्वड्र ष्टिएं देखतां चोर तुख कहीएं.

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमण वत.

जे कारणे नीतिशास्त्रादिकमां चोरना सात प्रकार कह्या ठे. ते एके, प्रथम चोर जे आप चोरी करे १, बीजो चोरनी पासें रहे १, त्रीजो चोरनी साथें आलोच करे ३, चोथो चोरना जेदमां माहितगार थाय ४, पांचमो चोर साथें व्यापार सहीयारो राखे ५, ठठो चोरने अन्नपाणी आपे ६, सातमो चोरने घरमां राखे ९, ए सातेने चोर कहेवा. हवे आहीयां आदत्तनो त्यागी होय, ते विचारे के मारे पोताने तो पराइ चीज खेवानुं पच्चखाण ठे, पण बीजो कोइ लइ आवे, तो ते चीज खेवामां मने शो दोष ठे? ए माटे प्रयोगआतिचारव्रत पण आवक न धरे. कारण के ते सापेक्तठे. ए माटे ए प्रयोगआतिचार बीजो जाणवो. १

३ त्रीजो "तप्पडिरूव" व्यतिचार. ते एके, कोइ सारी वस्तुमां तेना सरखी मलती बीजी हलकी चीज मेलवीने वेचे, ते तत्प्रति रूप कहियें. जेम केशरमां केशरना जेवो तार, छने एवाज रंगने मलतुं एवुं कोइ डब्य लावीने कत्रिम करी वेचे, वली मठा प्रमुख ने मथीने घृतमां मेलवी वेचे. एटले जे चीजठे तेना सरखी बीजी चीज बनावीने मूलडज्य शुद्ध होय तेमां मेलवीने वेचे तथा बना वटनी कस्तुरी करीने वेचे, गुंदर प्रमुखनो बांधो करी तेने हींगमां मेलवीने वेचे. तथा जे यवादि सुगंधिक डव्य थायढे, ते कर्पूरसाथें मेलवीने वेचे. अफीणनो जोडो करी वेचे, तथा जूनां वस्त्रने रंगावीने नवाने ठेकाणे नवाने जावे वेचे. रुने पाणीमां जींजवी वजनदार करीने वेचे. सूतली प्रमुखनी पिं **निमां छंदर महोटा गाजा घा**लीने उपरथी सुतलीने जीजवी करी लपेटीने वेचे. लोकमां सारी जोइने वधारे मूल आवे, तो य पण विचारे नहीं के, हुं खोटो व्यापार करुंढुं. पाणीमां छुध ए कतुं करीने छुधना जावें वेचे. गहुं प्रमुख दाणामां जुसो, कांकरी, श्रने चूनो प्रमुख मेलवीने वेचे. ए सहु प्रतिरूप कहीएं. छहीं यां छापणी चीज व्यापारनी होय, तेने परिकर्म करी वेचवानो छागारढे. ए त्रीजो छतिचार जाणवो.

४ चोथो विरुद्धगमन अतिचार. लखीए छेएं. ते एके, आ पणा गामना राजाएं फरमाव्युं के, फलाणे गाम जशो नहीं. ते गामनी चीज लेवी नहीं. तेमनी साथें व्यापार,खातुं,लेणुं,देणुं,कांइ पण करवुं नहीं. एवो सरकारनो हुकमढे. केमके, सरकारना कोइ मुद्दाइ गुनेगारढे, ते त्यां जइ कोइनुं शरण लइने रह्याढे. माटे त्यां थी तेमने कोइ दिवस पकडी मंगाववानोठे.त्यां सुधी तेगामवाला कोइ सरकारनी चीज वेचवा आवे, ते खेशो नहीं. ए प्रमाणे राजा एं हुकम कस्योढे. हवे आ माएस तो लोजने वश पड्यो, ते गाम मां जइने सोंघी वस्तु जाणीने ठानो मानोजइ त्यांथी लइ आवे अने पोताना गाममां ढानी मानी लावी वेचे. एवामां कोइ चुग लीखोर ते वात जाणे अने राजाने जाहेर करे के अमुक माणस, आपणा गाममां परराज्यनी चीज, त्यहांश्री लावेवे. ने अहीं वेचे **हे. अथवा राजसंवंधी कांइ हानी वात** विगत होय, ते करे. लारें ते कप्टमां पडे. दाणचोरी पण एमां ऋवी गइ. ए माटे एविरुद्धग मनत्र्यतिचार थाय. छहीयां दाणचोरी तो सर्वथा तजवी. कदा पि लोजने वश पड्यो थको न रही शके, तो वर्ष प्रत्यें प्रमाण करी राखे. तथा श्रावक होय, ते चोथा विरुद्धगमन वतनो आगार राखे.

थ पांचमो कूडां तोल तथा कूडां माप करण अतिचार कहें छे. ते एके, लेवानां तोल माप जृदां राखे. अने देवानां तोल माप पण जृदा राखे. एवी रीतें गज पण लेवानो जूदो राखे अने देवानो प ण जृदो राखे. कोइ देशमां अनाज जरवानुं पण मापछे त्यां पाली माणुं प्रमुख, लेवानुं जूछं राखे अने देवानुं माप छंठुं, ते पण जूछं राखे. वली त्राजवानी मांनीमां अंतरकोण राखे. मापमां' पण एवी दगलवाजी करे. जरती वखत पालीने मगावीने आपे. बेवानी वखतें माथा सुधी संपूर्ण दाणो जरीने लिये. वखी वस्त्र ले, त्यारें पण गज अथवा हाथ सरकावीने खे, तथा आपे. तेवारें अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार, जे विरति श्रावक होय, ते जाणे, पण ते अतिचार लागेढे. एम जाणी आदरे नहीं.

छहीं छाजीविकाने माटें वर्त्तमान लोक व्यवहारनी रीतिएं उंदूं वधतुं देवा लेवानी मने जयणाठे. छजाण पणे कोइ खोटां तोल माप थइ जाय, तेनो छतिचार नहीं. विरति व्रतनीठे. ते प्र माणे पालीश. छाधिक लोजने वश पडीने नहीं करीश. छा पांचे छतिचार, छादत्तादानविरमणव्रतना जाणवा.

इति श्रीद्वादशवतविवरणे पंक्तिश्री ज्योतसागरगणिना कृत तृतीयस्यूल अदत्तादानविरमणवतन्नाषा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थस्थूलब्रह्मचर्यव्रत प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥

आद्यक्तर उँकारकूँ, मंगलरूप मनाय;

चोथे व्रतके जेद सब, जाषा करुं बनाय ॥ १ ॥

चोथू ब्रह्मचर्यव्रत. एटखे मैथुननो त्याग करवो. त्यां मैथुनत्या गना बे जेदढे, एक डव्यमेथुन त्याग, छने बीजो जावमैथुन त्याग.

१ डव्यमैथुन एटले परस्तीनो तथा परपुरुषनो परस्पर संगम जाएवो. त्यां पुरुषें परस्तीनो त्याग करवो. अने स्त्रीएं पए परपुरुष नो त्याग करवो. रतिक्रीडा तथा कामसेवन करे, ते डव्यमैथुन क हियें. तेने जे पुरुष, तथा स्त्री,त्याग करे. तेने डव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहीएं.

१ बीजो जावमैथुनरूप ते एके, चेतनरूप पुरुषने विषया जिलाष परपरएति रूप, तथा तृष्ठा ममतारूप इत्यादि निश्चय

चतुर्थ स्यूल ब्रह्मचर्य व्रत.

परस्तीं हे तेनी साथें जे मलवुं, तेने रीफ मोज आपवी, तेनी साथें वांठित विलास करवो, ते जावमैशुन जाणवो. एने जिनवाणी ना उपदेशें तथा जे सज़ुरु हितशिक्तानो उपदेश करे. त्यारें पो तें परपुजलादिकने जेलखी, जातिहीन जाणी, आगामिक कालें एने महाडुःखदायी जाणी, पूर्वें गतकालें अनेक मरणांत डुःख परंपरा एनाथी पाम्यो, ए माटे मने ए विजाति स्त्रीर्ठ तजवानुं क द्युंवे, माहारे तो मारी खजाति, परमजक्त, जत्तम, सुकुक्षीन शमता रूप सुंदरीनो संग करवो सारोबे. विजावपरणतिरूप परस्तीएं मारी सर्व विजूति खेंची लीधी. हवे सज़ुरुनी सहायताथी ए छ ष्ट परिणाम स्त्रीसाथें हुं लाग्यो ढुं. तेने थोंडे थोडे नियह करुं. त्य जवानो जाव श्रादरुं, के जे थकी महारी शमता सुंदरी, शुरूखजा व घटरूप घरमां आवी रहे, तो घरनुं तेज वधे. एवी समजए पा मीने परपरणतिमांथी मन्नता ठोडे. जदयें कर्म व्यापे नहीं. द्यु ऊ चेतनानो संगी थइ रहे. ग्रुऊ परिखामथी दूर न रहे. ते जाव मैथुनत्यागी कहीएं.

छहींयां डव्यमैथुन त्यागी तो षट् दर्शन मांहे मले पए जा वमैथुन लागीतो श्री जिनदर्शननेत्यांज श्री जिनवाएी सांज लतां ज्ञानजेद, जेना हृदयमां प्रवर्त्तायोठे, ते सहज जदास ज पायथी जावमैथुननो त्याग करे. ते वीजा दर्शनोमां न मले.

छहींयां स्थूल परस्तीगमनवत. ते एके परस्तीनो त्याग कस्त्रो. परपुरुषनी परऐसी तथा पारकानी राखेली जे स्त्री होय, तेनी साथें छनाचार सेवन न करुं. एवो पचरकाए करे, तेने परदार गमनविरमएवत कहीएं. वीजुं जे खदार केहेतां पोतानी स्त्री, ते नाथी संतोप धरुं. एवुं जे व्रत धरे, तेने खदारसंतोपव्रत कही एं. त्यां देवसंवंधी देवांगना, तथा तिर्यंच संवंधी स्त्रीजाति, त या मनुप्य संवंधी स्त्रीजाति, एनाथी मेथुनसेवा निपेध. एकेकी विधिना जाग करीने, एटले कायायें करी परस्ती साथें सोइमां दो रो परोववो, ए न्यायें संयोग करवानो निषेध छने मने, तथा वचनें छने खप्तमां जोग थाय, तेनी जयणा. सहज स्पर्श करवानी जयणा. वर्त्तमान स्त्री टालिने बीजी स्त्रीसाथें विवाह न करवो, तथा दिवसें ब्रह्मचर्य पाल्लं, न पलेतो प्रमाण राखुं, नववाड पालवानो खप क रुं. स्त्रीजनने पण एवी रीतें परपुरुषनो त्याग जाणवो. हवे ए व्र तना पांच छतिचारठे, ते लखीयें ठेएं.

र प्रथम अपरिएहीतागमनअतिचार. ते एके, नहीं परऐसी स्त्री, जे कुमारी तथा विधवा स्त्री,तेने अपरिएहीता स्त्री कहीएं. जे कारऐ कोइ एनो स्वामी केहेवातो नथी. ए कोइनी स्त्री केहे वाती नथी. तेने जोइ, कोइ मूढमति विषयाजिलाषी थइ. जडक जावथी विचारे के, में तो परस्त्रीनो त्याग कस्त्रोठे अने आ तो को इनी स्त्री कहेवाती नथी माटे एनी साथें मेलाप करवाथी मने शुं दोष ठे? एवुं विचारीने ते कुमारीनी साथें के विधवानी साथें जोग विलास करे. एज प्रमाऐ व्रतधारी स्त्रीने पए परपुरुषनो त्यागठे. ते पए अपरिएहीत पुरुष ढुंवारो होय अथवा जेनी स्त्री परलो क पहोंची होय तेनी साथें पूर्वोक्त न्याय मनमां धरीने संग क रे, तो ते स्त्रीने पए प्रथम आतिचारना दोष लागे.

१ बीजो इत्वरपरिग्रहीतागमन आतिचार. ते इत्वर केहेतां घोडो काल जाणवो. एटले मास, ठमासनी मर्यादा करीने वे झ्यादिकने खरची आपी पोतानी आस्नाव स्त्री करीने राखे. आ हींयां कोइ आज्ञान पणाथी एम विचारे के, मारे तो पर स्त्रीनो त्यागढे. पण आने तो में महारी करीने राखीढे, तो एमां मने छुं दूषण ठे ? एम जाणी करीने आज्ञान पणे ते वेझ्याने सेवे, तो तेने बीजो आतिचार लागे. एवी रीतें आविकाने पण बीजो अतिचार लागेढे. ते एम के, बे शोक्यो होय तेमां शोक्यनो वा रो धणी पासे जवानो होय ते दिवसें जरतार ने पोतें सेवे, ने मनमां विचारे के, पोताना खामीने सेवतां द्युं दूषण्ठे ? मारे तो परपुरुषनो त्याग ठे. पण एम न विचारे के, छा दिवसें तो ए द्योक्य नो जरतार ठे. मारो तो छा दिवस धणीपासे जवानो वारो नथी. तेम ठतां पण ठल करीने खामीने सेवे, तो ते स्त्रीने बीजो छतिचार लागे.

३ त्रीजो छनंगकीडा छतिचार. एटले छनंग कहेता कंदर्प, तेने जारत करवासारु आलिंगन, चुंवन, नख प्रमुख अथवा नेत्रना हाव, जाव, कटाक्तादिक हास्य प्रमुख ठठामिश्करी विगेरे पर स्त्री साथें करे. दिलमां एम विचारे के मेंतो सोइमां दोरो परोववा नो जोग त्याग कस्त्रो हे. परस्पर एक शय्यामां सुइने जोग कर वानो मारे त्यागढे बीजानुं तो में व्रत लीधुं नथी पण ते, कामांध थवाथी एम न विचारे के, चेतना तो वन्नेमां वगडेठे एनाथी पण वत वेहेलुंज जांगेढे, मन चलेढे. तथा पोतानी स्त्री साथें चोराशी ञ्चासने करी काम जाग्रत करे. जोगविलास करे. तिथि प्रमाणे कामनिवासनी जग्यायें हाथनो स्पर्श करे. श्रंगमईनादि करीने काम प्रगट करे. अथवा परम अजिलाष थये थके, पोतानी स्त्री हाजर न होय तो न चालते कार्य हस्तकर्म करे. स्त्री पण कामव्याकुल थये थके पोताना ऋंगुठाशी सुखवासीया प्रमुख करे, अथवा स्त्री स्त्री मलीने, अधिकरण्यी गुह्य स्थाने संचारण करे. अनें पोतानी इहा संतुष्ट करे, त्यारें पण तेने अतिचार ला गे. ते माटें श्रावकने ज्यां त्यां कामसंज्ञा घटाडवानी चाहना क रवी जोइएं. जेम लोजी माएस पोताना व्यापार धंधामां मंग्न हो य एटलामां जूख लागे, तोपण सह्या करे. धंधाना वचमां जूख ने गणकारे नहीं. एम करतां पण ज्यारें जूखथी रह्युं न जाय,त्यारें त्यांधी उठी करीने उतावलें उतावलें रसोइनी जग्यामां जे रसोइ हाजर होय, ते खाइ लिये, पण सुखादनीके कुखादनी कांइ पण

चतुर्थं स्थूल ब्रह्मचर्य व्रत.

<u>પર</u>

तजवीज न करे, फरी पए सांथी उठीने पोताना धंधामां वलगे. तेवी रीतें समकेती, देशव्रत धारी पुरुष, परलोकना सापेक्त धंधामां मग्न रहेंठे.एवामां कामसंझा उदय थइ, त्यारें छंतरत्ताव लाज म र्यादा छगंठादिकने छनुसरतां ते कामसंझाने गएतीमां न गएे. एम करतां छतिवेदोदय थाय,त्यारें व्याकुल थाय तो तत्काल ज तावलथी कंदर्प्परोग निवारए करीने, फरी पोताना स्वकार्यमां प्रव तें तो ते व्रती, कामसंझा वधारवानी इछा शा माटें राखे? शुऊ अद्धावंत श्रावक तो मैथुनसेवानी जग्याने जेवु जांजरुखानुं होय, तेवुं करी जाएे. छने कहे के ए मलीन जग्याठे, तेनी इछा ते वडि नीतिनी वेलाशिवाय बीजे वखतें न रहे. तेवी रीतें मैथुन पए नि षेध ठे. दोषनुं स्थानक ठे.छा प्रमाणे त्रीजो छतिचार जाएवो.

४ चोथो परविवाहकरण अतिचार. ते ए के, जे पोताना संताननो अथवा परजातिनो अथवा अपणी नात जातमां पोता नुं नाहापण जणाववाने ऋर्थे ऋागल थइने विवाह करी छापे. कोइ वस्तु वानुं अथवा डव्यादिकनी सहायता करे, अथवा प्रेरणा दिक करीने कोइनी पासेंथी ऋपावे. तेणे करी ते विषयी प्राणी ने स्त्रीनो लाज थयो त्यारें ते पुरुषतो तेनुं सारुं कहे. बीजाउने कहे के फलाणाने त्यां फलाणे मारुं घर वसाव्युं.जो एवा हता,तो आ विवाह थयो. नहीं तो मारा शा हाल थात ? एवी रीतनी अ र्थीं जनना मोढाथी पोतानी प्रशंसा सांजलीने बहुज खुशी थइ जाय. तेने जोइने बीजा पण जेने विवाहना अर्थी होय, तेन आवीने ते नी खुशामद करे,स्तुति करे, ने कहेके, आप साहेव जेवा परोप कारी थोडाज नजरे आवेठे ? एवां वखाणनां वचन सांजलीने तेने कहेके,कांइ काम काज होय, तो मने कहेजो. सजान सम्मत करजो. आमारो तमारो एक वास्तो हे. एवी रीतें विवाहादिकनो सज्जनसंवंध, संसारमां जग्याए जग्याएं कराववो, ए अनर्थनुं वी

चतुर्थ स्यूल ब्रह्मचर्य व्रत.

ज वाववा जेवुं हे. तेवुं करवाथी व्रत ग्रुद्ध न रहे. अने काम श्र धिकरण वधारतां संसार वधे. आवकने तो पोताना घरमां पण कोइ एवुं कार्य करवुं होय,तो ते बीजाने जलावीने पोतें न्यारो ने न्यारो रहे.तो जे व्रती थइने परायो विवाह जोडावे, तेने चोथो श्रतिचार लागे. अहींयां पोताना घरसंबंधी तथा जेनाथी हटा य एम नथी, एवा संबंधीनो विवाह करवानी जयणा, ते पण प रिमाण राखी खेवुं. एमज स्त्री पण पारका विवाहमां मोड प्रमुख वांधे, ने आगल थइने कुलधर्म वजावे. लारें अतिचार दोष लागे.

थ पांचमो तीव्रानुरागञ्चतिचार. ते एके जे कोइ, स्त्रीउपर ती व श्वजिलाष धरे. पारकी स्त्रीने जोइने मनमां बहुज चाहना करे. ते स्त्री विना क्रण्मात्र पण रही शके नहीं. हरतां, फरतां, जीव, तेनामांज वलग्यो रहे. तथा देहमां काम वधारवाने तथा संजोग सामर्थ्य करवाने माटे छफीए, माजम, जांग, छने बीजी पण धातु हरताल, पारा प्रमुख पट्टी, बंधेजनी गोली शोधे. इत्यादि तीत्रकाम रागथी करे; त्यारें ते पांचमो छतिचार लागे. छने स्त्री पए काम वृ ऊिकरवानी छनेक योजना करे.जेम के योनिसंकोचन छौषध,मांयां फलक,शीश,त्रिफलां,लोदर इत्यादिक छंगमां गोली करीने संचरावे छत्यंत छत्त्वं वेष जोवे.वहु हावजावादिक विषय लालसा करे,त्यारें तेने पांचमो छतिचार लागे.ए पांचे छतिचार जाणुं,पण छादरुंनहीं. छहीं स्वदारसंतोपव्रत वालाने ठेवटना त्रण छतिचार ठे.छने छाग लना वे छतिचार ते तेने छनाचार ठे. तथा परदारविरमणव्रतवाला ने तो ए पांचे छतिचार ठे.स्त्रीने पण एज प्रमाणे छतिचार लागे.

॥ इति श्रीद्वादरावतविवरणे चतुर्थ स्थूलव्रह्मचर्यवत पंफित श्री ज्योतसागरगणिना कृतजापा संपूर्णा ॥ ४ ॥

पंचम स्यूल परिग्रह परिमाण व्रत.

॥ अय ॥

॥ पंचमरुधूल परिग्रहपरिमाणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

सुमति दइ श्रीशारदा, ताके पद पणमेव ; पंचम परिग्रह व्रत तणी, जाषा करुं शुजेव ॥ १ ॥

हवे पंचम स्थूलपरिग्रह परिमाणवत,विगतवार सहित करीने लखी एं ठैएं.परिग्रह एटले जे समस्त पणे बीजां डव्य नाना प्रकारनां ग्रहण करवां, ते परिग्रह जाणवो. तेना बे जेदठे. एक बाह्यडव्य परिग्रह अधिकरणरूप. ते नवविध परिग्रह ठे. बीजो जाव परिग्रह. ते ए के, चौद श्वज्यंतर ग्रंथिरूप जे परजावनुं ग्रहण, समस्त आत्मप्र देशथी सकषाय पणे बंध, ते जावपरिग्रह जाणवो. शास्त्रमां मूर्छा मुख्यवृत्ति तेने जावपरिग्रह केहेठे.तेमां चौद ग्रंथिनां नाम. ते कहीयें ठेयें. १ हास्य, १ रति, ३ श्वरति, ४ जय, ५ शोक, ६ छुगंठा, ७ कोध, ७ मान, ए माया, १० लोज, ११ स्त्रीवेद, ११ पुरुषवेद, १३ नपुं सकवेद, १४ मिथ्यात्व, ए प्रमाणे चोद अज्यंतर ग्रंथिठे.

छहींयां संसारी जीवने केवल छविरतिना बलथी इहा छा काश समान छनंत छपरिमितबे. ए छविरतिना जदयथी इहा, छने इहाथी कर्म बंधमां पड्यो थको जीव,चारे गतिमां जटकेबे. एमां कोइछविराधक जीव, पुख्य प्रकृतिना जदयथी मनुष्य जवादिक सर्व सामग्री जोग पाम्यो, छने सज़ुरुनी संगति पाम्यो. जेथी करी श्रीजिनवाणी सांजली त्यारें चेतना जागृत थइ, चेतना सुधरी. त्यारें ते जीव, विचार करे के छहो ! ढुं समस्त परजावथी न्यारो, छ बंधी, छवेद्य, छजेद्य, छदाह्यधर्मी एवो बतो इहावश पड्यो. सम स्त बेदन, जेदन, परिच्रमणादि छःखनो जोगी, परधर्मी थयो; तो ह वे हुंसमस्त परजावनुं मूल जे इहा, तेने दूर करुं, एवी चेतना थइ त्यारें समस्त परजाव त्यागरूप चारित्र छादरे छने जेने वहुज र सिक छविरतिपणाना वलथी समस्त परिग्रह मूर्ह्या एका एक ढूटे नहीं. तथा दोषथी पण करे, त्यारें ते लघुमार्ग जे देशविरति पणुं ते छादरे. इहा परिमाण व्रत धरे. ते इहा परिमाण व्रत नव प्रकारेंठे.

१ तेमां प्रथम धनइह्यापरिमाण. ते धन, चार प्रकारनुं जाण तुं. तेमां प्रथम गणिम धन कहीएं. ते एके जे वस्तु नंग गणीने वे चाय. ए श्रीफल प्रमुख जाणवां. १ वीजुं धरिम धन. ते ए के जे वस्तु, तोलथी वेचाथ. ए गोल, साकर, करियाणा प्रमुख. ३ त्री जुं मविधन. ते एके जे मापथी वेचाय. जेम दूध घृतादिक. ४ चोथुं परिठेच धन. ते एके, जे परिक्तायें वेचाय जेम सोनुं, रूपुं, जवाहीर अने वस्तादिक, नाणांप्रमुख परीक्तायें वेचायठे. ए चारे धन कहीयें. तेनुं जे परिमाण करवुं, ते धन परिमाण व्रत जाणवुं.

१ वीजुं धान्य परिग्रह, ते चोवीश जातिनुंठे, ते लखीएं ठैएं, १ शाति, १ गहुं, ३ जुवार, ४ वाजरी, ८ जव, ६ मग, ९ मठ, ७ श्रडद, ए तृट, १० वोडा, ११ मटर, जवनी साथें थायठे ते. ११ श्ररहड एटले तुवर, १३ किसारी, १४ कोडा, १८ कांग, १६ चणी, १९ वाल, १० मेथी, १ए कलथी, १० मसूर, ११ तल, ११ मंक्वो, १३ वाल, १० मेथी, १ए कलथी, १० मसूर, ११ तल, ११ मंक्वो, १३ कूरी, १४ वंटी. ए चोवीश धान्यनी जाति व्यवहार मां सदा खावा लायकठे ते लेवां. वीजां पए १ धाणा, १ जींडी, ३ सुवा, ४ व्यजमो, ८ जीरुं, एपए धान्यनी जातिमां ठे ते त्रौ पधादिकमां कोइ प्रकारें काम आवेठे, वली वीजां पए धान्य. जे वांके, १ सामो, १ मएकी, ३ जूरट, ४ चेकरिया, छा धान्य मार वाड देशमां प्रसिद्ध ठे.वीजुंपए चिरिया,मोठ,छडकधान,खडधान, जे वाव्या विना जगे छने जे काल छःकालमां खावा लायकठे. ए सर्व जातिनां छनाजनुं जे परिमाए, ते धान्यपरिमाएत्रत कहीएं. ३ त्रीज़ुं क्तेत्रपरिग्रह व्रत. क्तेत्र एटले खूद्वी जूमी, अथवा वा ववानी तथा बगीचो करवाती जग्या. तेना त्रण जेद ठे. एक एवी जातिनी के, जेमां वरसादना पाणीथी धान्य नीपजे. एक जमीन एवीके, जेमां कुवाना पाणीथी धान्य नीपजे छने एक जमीन एवी के, जेमां वरसादना पाणीथी पण धान्य नीपजे. अने कुआना पा णीथी पण धान्य नीपजे, तेनुं परिमाण ते क्तेत्र परिमाण व्रत.

ध चौथुं वास्तुपरिमाणवत. एटले जे घर,हवेली. डुकान प्रमु ख. तेना त्रण जेदढे. तेमां ए खातवास्तुक ते जोयरां प्रमुख. बीजो डह्रित वास्तुक ते ए के जोयरुं,तहखानुं,ए विना उंची एक मालनी,बे मालनी, त्रण मालनी. एम यावत् सात मालनी हवेली जाणवी. एनुं जे परिमाण राखे, ते त्रीजो जेद खातोड्रित वास्तुक. ते ए के, जोयरां, तहखाना,कूवा,टांकां, एसौ हवेलीनी छंदर होय, तेने खातोड्रित कहिएं. तेनुं जे प्रमाण राखे,ते वास्तुकपरिमाणवत.

थ पांचमुं रूप्यपरिग्रहपरिमाण व्रत. ते ए के, शिका विना काचा रूपानो तोल, तेनुं परिमाण करी राखे, ते रूप्यपरिमाण व्रत. ६ ढठुं सुवर्णपरिग्रह परिमाण व्रत. ते एके रूपानी जेम अघड, शीका विनाना सोनाना तोलनुं परिमाण करी राखे, ते सुवर्ण परिमाण व्रत.

७ सातमुं कुपदपरियह परिमाणवत. ते ए के, कुपद केहेतां त्रांबु, पीतल, रांग कांसुं सीसुं, जरत लोढुं, ए सौ धातुना वास णनां परिमाणनो तोल करीने राखे, ते कुपद परिमाण वत जाणवुं. ज्ञाठमुं छपदपरिमाण वत. ते ए एके,मूल्य व्यापीने वेचातां लीधे लां,दास,दासी,ते छपद कहिएं.पण चाकर ग्रमास्ता प्रमुख ए वर्गमां गणाय नहीं. एनुं जे परिमाण करी राखे, ते छपदपरिमाण वत. ए नवमुं चोपद परियह परिमाण वत. ते ए के गाय, ज्ञेंष, घो डा, बलद, सूतर, बकरी, गामरी प्रमुख चोपगा जीव तेमने केट लां राखवां तेनी गणतीनुं परिमाण करी राखे, ते चोपद परियह યદ્

परिमाणवत जाणवुं. हवे पोतानी इन्ना प्रमाणे केटलो परिमह राखवो, तेनो विवरो लखीयें ठैएं.

१ प्रथम धन परिमाणमां रूपुं,सोनुं, श्रण घड्युं, तथा घड्युं, श्रटखुं राखुं त्यार पठी रोकडा रूपैया श्रसरफी तथा जवाहीर प्रमुख श्र टला श्रमुक हद्द पर्यंत राखवानी तो जयणा ठे परंतु प्रमाण जप रांत पुण्ययोगथी वधे तो धर्म प्रीतिएं करीने धर्मस्थानकमां खरचुं.

१ धान्य प्रमाणमां एम के, वर्षमां आटला मण धान्य राख वानी जयणा. तेनो विवरो कहेंढे. आटला मण घर आश्रित खर चसारु तथा आटला मण बाहार वीजा कोइ प्रकारना खरच माटें वापरवामां आवे, तेनी जयणाढे. जपरांत नहीं. अने व्या पारनी विगत तो सातमां गुण व्रतमां लखवामा आवशे.

३ केत्रपरिमाणमां छाटला विघा जमीन राखवानी मने ज यणा. उपरांत नहीं. केत्र, वाडी, वाग,वगीचा प्रमुखनी जमीन संबंधी पण सर्व एमांज छाव्युं.

8 वास्तु परिमाणमां खडकीवंधघर अमुक हद्द सुधी राखवां. तेनी जयणा. तथा ढूटी छुकान, तथा तवेला, आटला गोखानां, तथा आटली वखार. वली जो पुखना उदयथी लक्की वधे तो हाथी प्रमुख वांधवानां स्थल राखवानी जयणा. तथा परदेश सं वंधी व्यापारनी छुकानो अमुक हद्द सुधी राखवानी जयणा. तथा आटलां घर जाडे देवानी जयणा. आटला जाडे राखेला घरने सम राववानी जयणा. तथा कुटुंवसंवंधिना घरोना आदेश उपदेशनी ज यणा. तथा पोताना संवंधी परदेश गया होय; तो तेना घर प्रमुख स मराववानी जयणा. कोइ स्नेही ग्रमास्तो अथवा चाकर परदेशगयो होय, त्यारें तेना घरने समारवानी जयणा. तथा आजीविका हेतुयें कोइनी चाकरी करवी पडे,त्यारें ते धणी घर अथवा हवेली कराव वानुं काम सोपें त्यारें ते काम करवा तथा कराववानो आगार ठे.

पंचम स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत.

 ५ रूप्प परिमाणमां रूपुं आटला शेर अथवा आटला मण पर्यं त राखवानी जयणा. अने जवाहिरने तो धनपरिमाणमां गणेखुंठे. ए सहु पोतानी निष्ठाना घरमां घरनी अजनाशठे.

६ सुवर्ण परिमाणमां सोनुं, आटला तोल सुधी प्रमाण करी राखवुं. अने ए सोनुं, रूपुं, जवाहिर प्रमुखना व्यापार आश्रि तो सातमा व्रतमां लखीद्युं.

७ कुपद परिमाणमां त्रांबु, पितल, रांग, लोढुं, कांसु तथा जर त. ए सर्व मलीने धातुनां वासण आटला शेर अथवा आटला मण पर्यंत राखवानी जयणा अथवा बीजा कोई जातना घडेला घाट आटला तोल प्रमाणें राखवानी जयणा, जपरांत निषेधवे.

ण्डपद परिमाणमां दास, दासी वेचातां खेवां, ते व्रत माफक रा खवानी जयणा. उपरांत राखवानो निषेधंेंडे. तथा गुमास्ता के चाकर प्रमुख राखवानी तो जयणा.

ए चोपद परिमाणमां गाय, जेष, वरस सहित, तथा सांढ सहित श्रमुक संख्या प्रमाणे करी राखवानी यजणा. वली तेमनी जे ठेलाद वधे, ते राखवानी जयणा, घोडा, घोडी, ठेलाद सहित एटलां रा खवानी जयणा. वलद एटला राखवानी जयणा. बकरी ठेलाद सहि त एटली राखवानी जयणा. सूतरी एटली राखवानी जयणा. हा थी एक, चार, दश अथवा अमुक संख्या सुधी राखवा, तेनी जय ण. ए शिवाय वीजा पण कोइ जातनां चोपद जनावरो पोताना जोग निमित्तें अमुक संख्या सुधी घरमां राखवानी जयणा. उपरांत कोइ लेणामां अथवा कोइ बीजी रीतीएं शिरपाव, नजराणा प्रमुख वक्तीश दाखल आव्या होय,तेने राखवांनो आगार.वीजानो निषेध. एम वीजां पण घरवखरीनां एटले घरमां वपरातां राठ पीठ मोटां आथवा ठोटां तथा वस्त्र प्रमुख ए सहु अधिकरण सर्व मलीने आट ला शेंकडा रूपैयानां अथवा आटला हजार रूपैयानां राखवानी ५० पंचम स्थूल परिग्रह परिमाण वत.

जयणा, उपरांत निषेध. वर्षमां श्राटला मण घृतनी जयणा. वर्ष प्रत्यें तेल मण श्राटलानी जयणा. वर्ष प्रत्यें परचुरण करियाणां मण श्राटलां घरखरच सारुराखवानी जयणा, एटले घरमां श्राटलुं राखीश तेनुं प्रमाण करी राखे, तेनी जयणा, उपरांत निषेध. व र्ष प्रत्यें श्राटला मण लूण एटले मीठुं राखवानी जयणा. उपरांत निषेध. वर्ष प्रत्यें गोल, मिशरी, खांफ, चीनी साकर विगेरे श्राटला मण घरखरच सारु राखवानी जयणा, उपरांत निषेध.

एवी रीतें बीजी पए कोइ चीज, घरसंबंधी वापरवा सारु आट ली हद पर्यंत राखवानी जयएा. ए सहु एवी रीतें पांचमा व्रत मां घर संबंधी इडाठे अने व्यापार संवधी तो सातमा व्रतमां क हेवीठे. हवे ए इडापरिमाए व्रतना पांच आतिचारठे, ते लखेठे.

१ तेमां प्रथम धनपरिमाएातिकम ऋतिचारहे. ते ज्यारें धन, इन्नापरिमाणथी वधारे थाय त्यारें लोज संज्ञाथी मनमां मनसुवा करे के छा पांच हजार तो ढोकराना जमे करीएं, केमके ढोकरो पण महोटो थयोठे एने पए जोइरो, छने एने आपवुं, ते पए मने योग्यठे. एवा कुविकब्प करीने दीकराना पांच हजार रूपेया जूदा करी राखे; अने वली अनाज चावल प्रमुख इहा प्रमाणे तो घरमां तैय्यार पड्युं वे तो पण फरी बीजुं ऋधिक, जरी राखवामां लाज जाणे, त्यारें धान्यनो शोदो करी राखे, छने जेनी साथें ते धान्यनो शोदो कस्वो होय, तेने कहे के ए अनाज अमे लीधुंठे, ते तमे तमारा घरमां हमणां राखो, अमारे जेम जोइरो तेम अमे लेता जइराुं. एवी रीतें ठराव करीने जेम जेम घरमां धान्य जोइएं, तेम तेम ते धान्य तेनी पासेंथी लावे अने पोताना अज्ञानथी मनमां एम जाणे जे मारे तो इहापरिमाथी अधिक धान्य, घरमां राखवानो लाग ठे, छने ए धान्यतो बीजाना घरमां रह्युंठे ; एमां मने द्युं दूपण ठे ? एवा मनमां कुविचार करे. श्रयवा पूर्वें नियम लेवा वखतनो

पंचम स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत. 👘 🗸 ५७

काचो मण मरिमाण करी राख्योठे अने देशांतर गये थके त्यां पाका मणनी चाल होय, तो पण ते मणने काचा मण परमाणे गणी राखे. एवा जे कुविचार करे, ते प्रथम व्यतिचारठे.

१ बीजो केन्नप्रमाणतिकम अतिचार. ते ए के जे, वास्तु परिमाण राख्युं होय, तेनाथी वधारे वास्तु थाय, त्यारें बेहु घर नी वचेनी दिवाल होय ते तोडी पाडे ; अने ते बे घरनुं एक महोटुं घर करे. केन्न, बगीचा, वाडी प्रमुख तोडी नाखीने महो टो बगीचो करे. तेमज केन्न पण महोटुं करे ; अने मनमां एम विचारे के में जे परिमाण राख्युं ठे, ते तो अखंग् ठे. जे कारण माटे गणती तो एक अथवा बेनी राखी हती, ते गणती प्रमा णे तो बराबर राख्युं ठे अने महोटुं करवामां शो दोषठे? गण ती तो तेटल्लीने तेटलीज ठे. एम जे करे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो रूपुं अने सुवर्णप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के, इडा परिमाणथी ज्यारें वधारे थाय, त्यारें पोतानी स्त्रीनां घरेणां प्रमुख जारे तोलनां बनावे, अथवा तेर्डनी निष्ठायें करीने राखे. कोइ जाजन एटले वासण प्रमुख सोना रूपानां होय, ते पण तोलमां जारे घडावीने राखे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कुपदपरिमाणातिक्रम अतिचार. ते एमके, त्रांबु, पीतल अने कांसा प्रमुखनां जाजन, अथवा बीजां राढ रचीलां जे गणतीमां प्रथम राख्यां होय अने ज्यारें संपदा मल्ली, त्यारें यद्यपि ते जाजन, गणतीमां तो प्रतिज्ञापरिमाणनी संख्यानांज राखे, पण तोलमां बमणा त्रमणा शेरनां बनावे. अने मनमां एम धारणा धारे के, मारुं वत तो अखंग ढे. जाजननी गणती तो में जांगी नथी !! अथवा व्रत तेती वखतें काचो तोल राख्यो ढे, अने कोइ पर देशांतर गये थके त्यां पाका तोलनो व्यवहार ढे. हवे पोताना अज्ञानदोषथी विचा रे के, काचा पाकानी शी चर्चा ढे ? अमारे तो सर्व जणशनो संम त, रोर अथवा मणना प्रमाणथी ठे. अमे कांइ रोर वधास्त्रो नथी. अथवा अमारी खातरदारीने माटे पण कोइएं बनाव्यो नथी. अ मारे तो रोरथी प्रतिज्ञाठे. काचा पाकानो अमे कांइ हिशाब राख ता नथी, एवुं करे. ते चोथो अतिचार जाणवो.

५ पांचमो द्विपद चतुष्पदपरिमाणातिकम अतिचार. ते एम के दास, दासी, घोडा, गायो, वलद अने बीजां पण चोपद प्रमुख जनावरो पोताना प्रमाण्यी अधिक थयां जाणे, त्यारें तेउंने वेची नाखे अथवा गर्जयहण विलंबयी करावे, गणतीमां ठे तेमांना वेचे, त्यारें गर्जयहण करावे अथवा जाइ के पुत्रनी निष्ठायें करीने राखे. एटखे पोताना परिमाण माफक कहेवामां राखे. एवी कुटिलता पोतानी अज्ञानताएं करे, ते प्राणीने पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं. पण अहींयां केन्न, वास्तु, चतुष्पदादिक, कोइ मागणा लेणामां आवे, ते ज्यां सुधी वेचाय नहीं त्यां सुधी अधिक राखवां पढे, तेनो आगार.

॥ इति श्री द्वादशवतविवरणे पंचम स्थूलपरियहपरिमाणवते पंक्ति श्री उद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ५ ॥

एटले पांच ऋणुव्रत थयां ; हवे त्रण गुणव्रत लखेठे

॥ अथ ॥

॥ षष्ठदिशिपरिमाणवत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमुं गणधर पदकमल, गौतम लव्धिनिधान ; अब गुणवत विवरण कहुं, पष्टम दिशिपरिमान ॥ १ ॥ हवे त्रण, गुणवत कहेठे, ते ठठुं. सातमुं अने आठमुं. ए त्र णने गुणवत कहीयें. तेमां ठठा व्रतमध्यें दिशिनो विचार कहीशुं, ए माटें ए व्रतनुं नाम दिक्र्परिमाण व्रतठे, ते लखेठे. जे कारण

षष्ठ दिशि परिमाण व्रत.

माटे पूर्वें जे पंचाणुं व्रत कह्यां, तेने ए गुणकारीढे. ए त्रण व्रत श्री पंचाणुं व्रतनी पुष्टि थायने एमाटे गुणवत कहेवाय ने. ते केवी रीतें ? तोके ज्यारें दिशिपरिमाण कखुं, त्यारें दिशिनियम केत्रथी बाहेर जे जीव रहे, तेमने अजयदान दीधुं तो पहेखुं प्रा णातिपात वत, तेनी पुष्टिं यइ. तथा ए केत्रगत जीवोधों जूतुं बोलवानो त्याग थयो, एटले बीजुं मृषावाद व्रत, तेनी पण पुष्टि थइ. तथा ते केत्रनी चीज, दीधा विना खेवानो त्याग थयो, एट **के त्रीजुं व्रत जे अदत्तादान, तेनी पुष्टि थ**इ. तथा ते केत्रगत स्त्री थी काम जोगाजिलाष मटगो, एटले चोथा ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ, तथा ते केत्रगत वस्तुना ऋयविऋयना निषेधथी परिग्रह मूर्जा कमी थइ,एमाटे पाचमा परिग्रहपरिमाण वर्त्तनी पुष्ठि थइ.तथा ते केत्रना व्यापार संबंधी छाढार पापस्थानकनो त्याग थयो. ते माटे ए व्रत, पांचे व्रतने गुएकारी हे. तेकारएमाटे एने गुए व्रत कहेंडे. त्यां दिक्परिमाण ते चारे दिशि, तथा चार विदिशि अने जर्ध्व तथा अधोदिक्परिमाण व्रत हे. ते दिक्परिमाणव्रतना बे जेद हे. एक व्यवहारची, छने बीजो निश्चयची.

१ तेमां एक व्यवहारश्री दिक्रपरिमाण. ते स्वकायाएं दिशिएं तथा विदिशियें जावानो छाने माणस मोकलवानो तथा व्या पार प्रमुख करवानी इहा तेनुं परिमाण करीने राखे, ते व्यवहार दिक्रपरिमाण व्रतठे.

१ तथा बीजुं निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत. ते जे गतिगम नठे ते सर्वकर्मनो धर्म ठे. कर्मवरों पडयो जीव, चारे गतिमांहे जटके ठे.परानुयायी चेतना थइ त्यारें जीव,परस्वजावने अनुसर तो थयो, तेथी गतिच्रमण करेठे,पण जीव तो शुद्ध चैतन्यरूप अ गतिस्वजाववान् ठे तथा स्थिर निश्चल स्वजाववान्ठे; एवुं श्री जिन वाणीना उपकारथी जाण्युं त्यारें चेतना, शुद्धस्वरूपानुयायी थ

षष्ठ दिशि परिमाण व्रत.

इ त्यारें पोतानुं ऋगति स्वरूप जाणीने सर्वक्तेत्रथी उदास रहे, एटले सर्वक्तेत्रसाथें ऋप्रतिवंधक जावें वरते; ते निश्चयदिशिव्रतवे.

१ अहींयां दश दिशिपरिमाणना वे जेद ठे. एक जलवटनो, अने वीजो स्थलवटनो. त्यां प्रथम जलमार्ग एटले वहाणमां वेशी जवुं छने स्थलमार्ग एटले खुशकीने मार्गें जवुं ते.तेमां जल मार्गें छमुक दिशियें फलाणावंदर सुधी जवुं,एम राखे. कारण के जलमार्गनी कोशगणती संख्यामां न छावे, तेथी बंदरनो नियम करी राखे. तेमां पण पवन तथा मेघ छांधी प्रमुखना तोफानमां वहाण क्यहांनुं क्यहां लेइ जइ नाखे,छने वली छजाण पणे जूल चूकथी छधिकवतासथी गणती,जे बंदरनी हती तेथी दूर वीजा वंदरमां लइ जइने नाखे. तो तेनो छागार ठे.

१ तथा बीजो स्थलमार्ग.ते स्थलमार्गें आपणे पोतें जे केत्रें वत जचास्वां होय त्यहांथी चारे दिशि, चारे विदिशि सुधी योजन, गाउ,कोश प्रमुख.एम जेटलुं जवानुं परिमाण कखुंंगे,तेटली हद सु धी झमने जवानी जयणा हे. तेमां पण चोर झथवा कोइ म्लेहा दि कना चंधनमां पडवाश्री ते धारेला नियमथी अधिकगाज,कोश ज पर लेइ जाय तो, तेनी पए जयएा. कारए के परवश पडयाथी नियम उपरांत जवानुं थइ जाय, तो तेनो दोष नथी. तथा ऊर्ध्व दिशिएंवार कोश जवानी जयणा. श्रधोदिशिएं श्राठ कोश सुधी जा वानी जयणा. तेमां पण उंचुं चढीने नीचें उतरवानुं थाय, ते गणती मां नहीं. तथा नियमकेत्रथी वाहेरनुं कोइक र्वलखाखवालानुं पत्र आवे,ते वांचवानो तथा फरी तेनो उत्तर लखवानो आगार. पण पोतानी तरफथी विना कारणे पत्रादिक न लखुं. परदेशनी विकथा सांजलवानो आगार.कोइ लेहेणादिक महोटा प्रयोजने आजीविकाना जयथी हक लेवाने अर्थे आदमी प्रमुख तगादो क रवामाटे मोकलवो पडे,तेनो मने आगार.वली दिशि तथा विदिशितुं

षष्ठ दिशि परिमाण व्रत.

परिमाण, पांचरो पांचरो कोश प्रमुख जेटढ़ां राख्युंछे. हवे आगल कोइपापना उदयथी तथा राजजयथी अथवा आजीविकाना जयथी जे गाम अथवा नगरमां वसता हता, ते नगरथी शो बरेंा कोश दू र जइ रहेंदुं पडे; तो पण पूर्वद्तेत्र परिमाण जे राख्युं हतुं, तेज राखे, अने तेटढीज हदमां जइ रहे, पण ते परिमाणथी दूर जवुं नहीं. आगलथी जे पोताना निवासना गामथी आगार, राखी ली धो होयठे, त्याथी शो अथवा बशो कोश दूर जइ पोतानो निवा स नवो कस्त्रोठे, तो पण पूर्वें जे पांचरों कोशनी गणती जे गा मथी राखी हती तेज राखे पण ठोडे नहीं. जे पूर्व प्रतिज्ञा करी होय तेज पाले. एवी विगतें करी ठठुं व्रत ठे. ए ठठा व्रतना पांच अतिचार ठे, ते लखियें ठेयें.

१ तेमा प्रथम, ऊर्ध्वदिक्**प्रमाणातिकम अतिचार. ते एम के,** अनाजोगथी बेसुरतिने लीधे तथा कोइ पण बीजा कारणथी प्र माण करतां विशेष गमन करे, त्यारें तेने प्रथम अतिचार लागे.

१ एवीज रीतें बीजो अधो दिशिप्रमाण पूर्वरीतें अतिक्रमे, लारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ तेमज तिर्छि चारे दिशिविदिशिप्रमाणातिकम छतिचार ठे. ते ज्यारें छनाजोगादिकें करी एना प्रमाणने छतिकमे, त्यारें ते त्रीजो छतिचार जाणवो. छहीयां छनाजोगें पोतें दिशिप्रमाणा तिकम करे छाथवा नियमनो जंग थरो, एवा जयथी गुमास्ता प्रमुखने मोकले, त्यारें त्रीजो छतिचार जाणवो.

४ हवे चोथो अतिचार. ते एमके, जे एक दिशियें शो योज न परिमाए राख्युंढे, अने एक दिशिएं पचाश योजन परिमाए राख्युंढे. तेमा कदाचित कोइ दिशियें दोढशो योजन जवानुं का म पडे, लारें पचाश योजन बीजी दिशिएं जवाना परिमाएना हता, ते जे दिशिएं जवुं पडे, ते दिशिना योजन, परिमाएमां जेल वी क्षे अने छज़ाने करी एवुं विचारे के, शो योजन पूर्व दिशिना मोकला राख्यां हता, तेमां पचाश कोश दक्तिणदिशिना हता ते, छामां छाज गणी केंज. एटके दोढशोनी गणती थइ. अने छाज ने दिवसें दक्तिण दिशि तरफ नहीं जाउं, मात्र एकज दिशे जइश. एमां मारुं वत पण नहीं जांगशे. एवा कुविकल्प करे, पण एक दिशिएं जवानुं काम पडवाथी त्यहांनुं त्यहां काम करे नहीं. जेटलो जे दिशिएं जवा आववनो नियम राख्यो होय, तेवीज प्रतिज्ञा न पाले, पण पोताना कार्यनी गरज पड्याथी उलट पालट करे अने एवी कुविकल्पना करे, ते वारें तेने चोथो छतिचार लागे.

थ पांचमो स्मृतिञ्चंतर्ध्यानातिचारढे. ते एमके, दिक्परिमाण करी ने केटला एक दिवस वीत्या पढी ते विसरी जायके, में तो अमुक दिशिएं जवानुं शो योजन परिमाण राख्युं हतुं, अथवा ए अमुक दिशिनुं ज्ञाटलुं राख्युं हतुं. एवा विस्मयमां जीव पडे अने तेणे करी दिशिपरिमाणमां ते कमवेश करे, अधिक न्यून करे अथवा नि यम लइने कागल प्रमुखमां लखी राख्युं न होय अथवा बुद्धि विलास मंद पणे थयो, तेणे करी घणा दिवस वीत्या पठी चित्तनी ज्रमत्ववृत्ति थइ जाय, त्यारें परिमाणनी वधारे के योडी गणती करे. तेथी पांचमो श्रतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

॥ इतिश्री द्वादशवतविवरणे शष्टदिशिपरिमाणगुणवते पंक्ति श्रीज्योतसागरगणिना इतजापा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ ऋथ ॥

॥ सप्तम जोगोपजोगविरमणवत प्रारंजाः॥ ॥ दोहा ॥ श्रव सप्तमकी विधि रचों, पाले जविजन लोग ;

यह है गुणव्रत दूसरा, नामे जोगोपजोग ॥ १ ॥

ુ દ્વય

हवे जोगोपजोग गुएवत बीजुंठे, जे कारणे, ए वत आदरवा थकी सचित्त चीजनुं खावानुं ठोडे, अथवा परिमाए करी राखे. तथा जेमां घणोज आरंज होय तेवो व्यापार न करे, एटखे जेमां बहु हिंसादिक अवस्य करवां पडे, एवा व्यापारनो त्याग करे, श्र ने अजस्यनो परित्याग करे. एटला नियम, आ वतमा लीधा जाय ठे. ते माटे ए वत, पहेलां पांचे वतने सफल करनारुंठे अने ए माटे एने गुएवत कहीयें. हवे ए वतनी शैली सर्व लखेठे, तेमां जोगोपजोगवतना बे जेदठे.एकव्यवहारथी,अने बीजो निश्चयथी,

र तेमां प्रथम व्यवहारथी ते जक्त्य अजक्त्यनी समजए पामीने तथा बीजी आश्रव संवरनी समजए पामीने, खानपानादिक जे इंडियसुखनां कारएठे, तेमां शक्ति प्रमाऐ बहु आरंज त्यागीने अल्पारंजी थाय. ते व्यवहारजोगोपजोग विरमए व्रत कहीयें.

१ तथा बीजो निश्चयथी. ते एमके, जे श्रीजिनवाणी सांजली वस्तुतत्वनुं खरूप पामीने विचारे, जे जगत्मां परवस्तु लेइने खावी, ते हराम कहीएं. जे पारकी चीज खाय, ते हरामखोर कहेवाय. ते माटे जे नेकीवाला लोको ठे, ते पोताना हक्कने ठेलखे छने ते रीतें चाले. पण पारकी चीज प्रहण करवा माटे खन्नमां पण इष्ठा न राखे. एम ढुं पण ग्रुऊचैतन्य जाव धारी, श्रने पर म सत्पुरुषनी जाति थइने, जे वस्तु सडे, पडे, श्रने जती पण रहे; एवा पर पुजलना पर्याय ठे, जगत्नी जे जूठ ठे तेवा पदार्थों नो जोग मने हरामठे. परवस्तुनो जोग करवाथी यश नथी, श्रने सामर्थ्य पण नथी, एवुं विचारी परजावनो परित्याग करुं, तेणे करी खग्रणवुऊि थाय, एवी समजण पामीने पोताना आत्माने जगाडी ने खरूपानंदी करे, चेतनविलास श्रनुजवे. ते निश्चय जो गोपजोगविरमणवत कहीयें.श्रथवा जोग शब्दनो श्रर्थ वसीलखेठे. सातमा व्रतना वे जेदठे. एक जोग, श्रने वीजो उपजोग,

सप्तम जोगोपजोग विरमण व्रत.

ते कर्म व्यापारादि क्रियारूप एम ठे, त्यां जोगना वसी वे जेद ठे. एक उपन्नोग, अने बीजो परिनोग, तेमां जे चीज एकज वार जोगमां आवे. जेम आहार, पुष्प अने विसेपनादिक, ते उप जोग. अने परिजोग एटसे जे वारंवार जोगमां आवे ते, जेम जवन, वस्त्र, स्त्रीप्रमुख तथा कर्मथी एमठे एना जेद घणाठे, ते आगल ल खर्शु, इवे एक, ए जोगोपजोग ते जोजन वस्त्र स्त्रीयादिकथी तथा बीजो, कर्म व्यापार क्रियाथी. तेमां प्रथम जोजनादिकथी कहेठे. त्यहां आवकने उत्सर्गमार्गें निरवय आहार सेवो, तेनी शक्ति न होय तो सचित्त वस्तुनुंपरिहारी थवुं, कदापि ते पण न थाय तो स चित्त वस्तुनुं परिमाण करी सेवुं. अने वावीश अजक्त्य, वत्रीश अनं तकाय प्रमुख ऊर्गतिना हेतु जाणी, अवस्य त्याग करवा. एमां पण

पूरी शक्ति न होय तो, पोताना मंदवीर्यनो पश्चात्ताप करीने परि माण करी लेवुं. तेमां प्रथम बाबीश श्वजद्म्यनां नाम लखेबे.

१ वडनी पीपु, १ पींपलानी पीपु, पारस पींपलीनी पीपु, तथा ३ छक्त ए पए पींपलनी जातिविशेषठे, ४ उंवरनी, पीपु, ५ अने कालुंवरनी पीपु, ए पांचे इक्तनां फल अजव्य ठे, ए पांचे फलमां मरकी सरखा मरकी जीव ठे. आकारथी ते जीव, सर्व सरखा थाय ठे. ए माटे ए पांचे फल अजव्य ठे. वली ६ मध, ७ मदिरा, ० मांस अने ए माखण, ए चार वस्तुर्ठ जेवो ए वस्तुर्ठनो रंगठे तेवाज रंगना तेमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे ठे. वली ए चारे वस्तुर्ठ महा विगयठे. ए जक्तए करवाथी घएोज विगाड करे, का मादिक दोषोने वधारे. प्रथम तो ए वस्तुर्ठ हिंसा कस्त्रा विना थती नथी, श्रने पठी पए चेतनाने वगाडे, ए माटे ए वस्तुर्ठ अजव्यठे. वली पुराणादिक वेखवमार्गमां तथा कुराणादिक म्लेठशास्त्रमां पए मदिरा, मधु, मांसना घणा दोप कह्याठे, ए माटे ए चीजो तो, स्वपरदर्शनमां पए त्याग करवानी कहीठे. वली जांग प्रमुख ले

सप्तम जोगोपजोग विरमण वत.

वाथी ते चेतनाने बिगाडे,माटे एने पण श्रज्ञद्दय वस्तुमां गणवी. एमां पण शरदी रहेेंडे,ते कारणे एनाथी त्रसकाय जीवोनी घणी उत्पत्ति थाय,माटे एनो पण त्याग करवो.

१० तथा हिमना कांकरा एटले बरफ,ते पण अजद्युंठे. कारण के,एमां अपकायना असंख्य जीवठे.खाधाथी ते चेतनाने मंद करे. शरदी करे. वल्ली ए चीज खावानी कांइ जरुर पण नथी. ए बहु आरंजिक ठतां स्वादिष्ट पण नथी. ए बलादिकनी वृद्धिकारक पण नथी, अने वल्ली श्री सर्वेज्ञ परमेश्वरें पण प्रतिषेध कस्त्रोठे.एमां प्रसंगदोष तथा संगदोष घणाठे, ए माटे ए पण अजद्युंठे.

११ तथा विष जे ऋफीए प्रमुख चीज.ते छनद्दयढे. जे कार णे श्रफीणादिक विषवस्तु खावाथी पेटना जे कृमि गंमोलादिक जीवठे ते सहु मरी जाय.वंसी चेतना मुंजाय, छने ए चीजनी खा वानी टेव पर्डी, ते ढूटे नहीं. महोताद एटले मिजाज वधे.वख तें वखत जो ए विषवस्तु, खावा माटे न मखे तो घणो कोध उप जे; शरीर शिथिल थाय. वली व्यमली माणसने व्रत करवानुं छ ष्कर थाय, छने सारो स्वजाव होय ते बदलाइने नठारो थाय. ज्यारें छमल करे,त्यारे एक रंग होय, छने फरी उतरे त्यारें वली पडवुं थाथ. वली ए चीज खावामां पण बहुज बेस्वादने. तथा अफीणादिक विषवस्तुने खावावालो,ज्यहां वढीनीति अने लघुनी ति करे,ते देत्रमां त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा थाय.ज्यां सु धी पेशाबनी शरदी जाय,त्यां सुधी पृथ्वीकाय प्रसुखना जीव एना गंधथी मरी जाय.ए माटें ए पण छनद्त्यमां गणायहे. सोमल,वज्ञ नाग,हरताल प्रमुख जे विषचीज ते पण एमांज गणवामां आवे. १९ वली जे मेघना करा एटले रोयडा,ते काचो गर्ज मेघनो ग ले,तेना कराना कटका पृथ्वी उपर गलेबे,तेपण श्रशुद्ध झब्यंबे,

एमां पण वरफना जेवो महा दोषठे. जिनआज्ञा विरुद्धठे. ए माटे ए करा पण अज्ञद्यठे.

१३ तथा खडी माटी, पृथ्वीमां बहुजातिनी थायठे, ते श्रज इयठे. कारए ए माटीमां पए असंख्य जीवठे. वली ए चीज खा वाथी पेटमां घएा जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेमज पांकुरोग, आम वात, कवजीयत, पित्त, पथरि प्रमुख घएा रोग थाय, घएी मा टी खाय, तेना मुखनो चेहेरो पीलो थइ जाय, मुखनी सुरखी ए टखे तेजी जती रहे, कोइ जातनी माटीमां मिंग्रक प्रमुख जीव नी योनिठे, त्यां शरदी पामीने जीव सूझ उपजता होय एवामां ते माटी जक्तए करे तो पंचेंडिय जीवनी पए हिंसा थइ जाय. माटी खावानुं जिनाज्ञा विरुद्धठे, ए माटे ए श्रजद्यठे.

१४ तथा रात्रिजोजन तो प्रत्यक्त दोषनिधानवे, अने आ लोक तथा परलोकने विषे ए छुःख हेतुढे रात्रीना चारे आहार श्र जद्युंगे, जे कारण माटे रात्री जोजनमां जेवो आहार होय, तेवा रंगना तेमां तमस्काय जीवो उपजे.वली त्राश्रित जीव संपातिम तेमां घणा आवी मले. रात्री जोजन करवाथी तेमां कांइ जेलसेल होय, तेनी खवर न पडे तथा प्रसंगदोप पण घणा लागे केमके जो रात्रीयें जोजन करवानी टेव होय तो, नित्य रात्रें रसोइ करवी पडे, त्यहां अग्निना योगें जीवोनो संहार थाय, श्रावकना कुलनो श्राचार पंखे नहीं, सूझ्म त्रस जीवो नजरें न आवे अने जो नजरें आवे तो पण यत्न न थाय. वली रसोइ करतां जे आग्नि वले त्य हां पासेंनी ठत तथा दीवाल प्रमुखमां आश्रित जीवो रात्रीने वि पें जे बहु वेठा होय,ते सर्व तापना योगें व्याकुल थवाथी अग्निमां जङ् पडे तथा पतंग प्रमुख जीवो चक्तु इंडियना विषयें व्याकुल घइने अग्निमां जंपापात करी वली मरे. ठत के उपरमां रात्रीने विपे सर्प, घरोली करोलीया, महर प्रमुख घणा जीव वसता हो

सप्तम जोगोपजोग विरमण व्रत. ६७

य, एवामां ताप लागे तेणे करी ते सर्पादिक जीवो व्याकुल थइ मुखमांथी गरख नाखे, ते गरख कदापि जोजनमां पडे अने ते जोजन छजाएतां खाधामां छावे एटले छात्मानो घात थाय. व सी जे **जोजन, दिवसें रांधी करीने राखी मूक्युं होय,** ते पण रा त्रे न खावुं, कारण एमां पण चीटी प्रमुख जीव चढे; तेनी ख बर रात्रीमां न पडे. ते जीववालुं जोजन खावामां आवे लारें बु दिनो नाश थाय, एवुं शास्त्र मध्यें पण कद्युंढे " मेघां पिपीलिका हंति " ए माटे रात्रीयें जोजन करवुं निषेध कह्युं ढे. वसी वासए मेलतां पण रात्रीयें कोइ जीवनी रक्ता पखे नहीं. वली रात्रीयें जोजन करवावाला, परजवें *उ*ऌूक, मंजार, मूषक, सर्प, वागु ल, चामाचेडीया प्रमुखनो जव पामे. धर्म छुर्ह्वज पामे, अने पो तें रात्रीजोजन करे तो तेना पुत्र पोत्रादिक पण एज ढंगें पडे. ते पण तेवीज कुचालचालें चाले. एथी अग्रुऊ परंपरा चाली जाय. छने जो पोतें प्रथमथीज सारी चालें चाले तो, एटले रात्रीजोजन न करे तो, पाठला पण सुचालें चाले. रात्रीजोजन मां प्रत्यक्त जीवहिंसाढे ते जोइने अन्यदर्शनीना जल वीजल आ गल धर्म पाम्या हता, ए जिनाज्ञा विरुद्ध रात्री जोजन हे. ने मु नि पण पंचमहावततुख ढहुं रात्री जोजन त्याग वत उचरावे हे. ए माटे रात्रीनोजन सर्वथा त्याज्य वे छने छनद्यवे.

१५ तथा बहुबीज ते जेसां गर्ज थोडो अने बीज घणां होय ते तुष्ठफल कहीयें. रींगणु, वनस्पतिजातिविशेष, पटोल, खसख स, पंपोटा प्रमुख ए फलोमां जेटलां बीज तेटला जीवो ठे. जे म नवटांक जर तिलमां, तेरशें जीवोठे तो खसखसमां तो एना थी केटलाएक गुणा वत्ता होयठे ए माटे खावुं थोडुं ने जीवघात घणोज थाय, एनाथी कांइ जदरवृत्ति तो थाय नहीं, तेमज रींगणा प्रमुख बहु बीजवाली चीज, खाय तो ते पित्तादिक रोगनी हेतुठे. वसी एवी चीजो खावी ते जिनाज्ञा विरुद्ध ठे. एमाटे अनद्युठे.

१६ तेमज आचार एटले वोलानुं अथाणुं जे जातजातनुं थाय ठे जेमके, आंववेलीनुं, पामलनुं, लींबुनुं, केरीनुं, केरडानुं, किरमदानुं, आंवलीनुं, काकडी प्रमुखनुं अने आछं नीली हलदर, जमी कंद, ग रमर इत्यादिनुं अथाणुं अथवा राइतुं त्रण दिवस उपरांत अजस्य ठे. ए सर्व अथाणां तुझ्ठे, त्रस जीवोनी खाण्ठे. वीलां प्रमुख तो प्रथमथीज अजस्य ठे, तो तेनुं फरी अथाणुं तो थायज केम ? वि प तो हतुं ने पठी वली तेमां फेर मेलवीने तेने वधाखुं एटले तेनुं केवुंज ग्रुं ? चोथे दिवसे एमां नियमा बेंडिय जीव उपजे, अने जो एठे हाथे स्पर्श करे तो पंचेंडिय जीव पण उपजे. अ न्यदर्शनीर्जना शास्त्रमां पण अथाणुं, नरकद्वारतुव्य गण्युंठे. ए माटे ए पण सर्वथा अजस्यठे.

१७ तथा बिदल जे घोलवडां ते अन्नद्दयंग्रे, जे कारणे ते वडां दालनां थाय. ते बिदल धान्य जे कलाइ, वूट, वोडा, मग, मग, तु वर प्रमुखनां थाय. ए वडां ज्यारें काचुं गोरस जे दहिं मठो, एमां नाखे त्यारें ते खावां अनद्दयंगे. जे कारण माटे बिदलमां दहिं म ठाना संयोग मात्रें तत्काल वेंडिय जीव उपजे. माटे जे कोइचीज वि दलनी होय, ते मठानी साथें मले तो ते अनद्दयंगे. जे अगजनी नीरस दाल होय, अने जेमां चीकणास न होय ते बिदल जाणवुं. पण राइ अने शरशव प्रमुख तेमांनी जे दाल होय तेमां विदल दोष नथी. कारण, तेमां चीकणाशंगे. अहींयां गंश प्रमुख गर म करी बिदलमां मेलवे, तो दोप नथी. तथा छुध पण जो उनुं न कखुं होय तो बिदलनी चीज साथें खावुं अयुक्तगे. कारण, तेमां वेंडिय जीवनी उत्पत्ति थाय. ए माटे बिदलने काचा गो रसनी साथें खावुं ते अनद्यगे.

रठ तथा वेंगण जाति अजद्यते. कारणके, वेंगणमां बहु ती

जठे. तथा एना बीजमां सूक्ष त्रस जीव रहेठे. वली ए वेंगण काम संज्ञाने वधारे. निद्धाने वधारे. मति धीठी करे. ए द्रव्य,अति अग्रु ऊठे. ए वेंगणनी जाति सर्व पण एवीज अजक्य जाणवी, बीजी लीलोतरी प्रमुख तो सुकी करीने पण खावानी आज्ञाठे. अने ए ने तो सुकां करी खावानो पण निषेधठे. ए माटे ए अजक्ष्यठे.

१ए तथा अजाएयुं फल, ते पण अजस्ये. जे कारण माटे अज़ाए्युं फलठे. तेनी तरेह, गुए, दोषनी मालम नथी. तो ते केम खाधुं जाय ? कदाचित् विषफल होय, तो आत्मघात थाय. व्यग्र चेतना थाय, ए माटे अजाए्युं फल अजस्येठे.

20 तथा तुइफल एटले वनबोर, जेने चणीबोर कहेंडे. ते तथा पीलूडां, पीचू प्रमुख तथा अत्यंत कोमल फल, फली, ते पण अजद्याडे. जे कारणे एवी जीज घणी खाए तो पण तेणें करी तृप्ति थाय नहीं. वल्ली पठीथी घणा दोषो लागे अने जे फल खाइने तेनी गोटली ज्यां नाखे, ते जग्यायें ते गोटलीमां संमूर्डिंम पंचेंडिय जीव असंख्य उपजे. वल्ली घणां तुइण्फल जे खाय, तेने सद्य एटले थोडाज वखतमां रोगोत्पत्ति थाय ए मा टे एवा तुइ फलफलादि अजद्याडे.

११ तथा चबितरस पण अजस्यठे. जे चीजनो काल पूरो थ यो, खाद बदढ्यो,तेनी मर्यादा पूर्ण थइ ते चबितरस कहीयें. कोद्धुं, सड्युं अन्न, बीजुं वासी रोटली, सीरो, कचोरी, तरकारी, खिचडी, वडां, नरम पूरी इत्यादिक अनेक रसोइ, जेमां पाणीनी सरसाइ र ही होयठे, ते चीज वच्चें एकरात व्यतीत थये वाशी थइ एटबे ते अजस्यठे. तथा मिठाइ वर्षाकालमां सारी उत्तम प्रकारनी बेश ब नी होय तो, उत्कुष्ट पंदर दिवस सुधी जस्यठे, पठी अजस्यठे. अने जो तेनो वर्ण, गंध, सीताबी बदलाइ गइ तो काल परि माण पहेलां पण अजस्यठे. तथा उसकालमां मिठाइनो का ल वीश दिवसनोठे उपरांत अजस्यठे. तथा शीतकालमां एक मास काल उपरांत अजस्यठे. तथा दहिं, शोल पहोर पठी अज स्यठे. पण एकरात वीतेली जस्य जाणवी. तेमज मठानो काल पण ए प्रमाणेज जाणवो.ए रीतें जेटलो जेटलो जे जे वस्तुनो काल शास्त्रमां कह्योठे, तेटलो तेटलो काल पूरो थया पठी, ते चीज च लितरस थाय; ए माटे अजस्यठे, जे माटे चलित थाय, त्यारें असं ख्य वेंडिय जीव तेमां उपजेठे.ए माटे ए चलितरसनो त्याग कह्योठे.

तथा बत्रीश अनंतकाय पए अजस्यठे. जे कारणे, सोइनी अणी उपर जेटलुं कंद मूल रहे, एटलामां पए अनंत जीवो ठे. ते सहु सूक्ष, वादर, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, ए सूक्ष बाद रना जेदें करी आठ प्रकार थया अने नवमुं, प्रत्येक वनस्पति ए नव जातिना सर्व जीवोथी पए अनंत गुएा जीव, सोइना अग्रमा गमां कंदनी जेटली जग्याठे तेटली जग्यामां एटलां जीवोठे.एमाटे सर्व अनंतकाय अजस्यठे ॥११ ॥ इति वावीश अजस्य विवरएं॥

हवे वत्रीश अनंतकायनी जाति खखेठे. १ जे जूमिमध्यें कंद थाय, एवी सहु कंदजाति, अनंतकाय जाणवी. १ सूरण कंद ते ज मीकंद केवायठे, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ८ नीलु आएं कंद, ६ लीलो कचूरो, ९ सतावरी वेली ओषधि, ० विराली लता विशेष सोफाली, ए कुआंर, १० थोहरी कंद जे सीज तथा लंका सीजनी जाति ११ गिलो एटले गुलवेल, ११ लसण, १३ वंस करेला एटले वंस संवंधीनी कारेली, १४ गाजर, १८ लूणी एटले साजी वृक्त, १६ लोढीपद्मनीकंद, १९ गरमर कछदेशमां प्रसिद्ध, १० किसलय कोमल पांदडां जे नवां उगतां सर्वे गुठानां पांदडां, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना श्रंकूर होय. ए सहु आ नंत कायठे. एटले सर्व वनस्पतिनां जगतां पांदडां, आने जगता श्रंकूर, प्रथम आनंतकाय होय, पठी ज्यारें महोटां थाय,त्यारें कोइ

सप्तम जोगोपजोग विरमण व्रत.

93

प्रत्येक वनस्पति थाय अने कोइ अनंत कायपणे पण रहे, १७ खीरसूत्र्याकंद कसेरु अनंतकाय, १० थेग ते थेगीनी जाजी, मो थनी जाति, ११ हरिमोथ, एटले लीली मोथ, ११ लूंणवृक्तनी बा ल, १३ खिलोडा कंद विशेष,जेने टींमोरुं कहेंग्रे, १४ अमृतवेली, १५ मूलानी पाड प्रसिद्धहे, १६ जूमिरुहा ते जूमिफोडा कहीएं, वत्राकार देशजाषाएं सापनुं बेसवुं, १७ वत्रूलानी जाजी, १० व रुहार प्रसिद्ध विदल धान्य, जेने अंकूर आव्या होय ते, १एसुअर वर्ह्वी जे रोहिमां महोटी सीम जेवी थायढे, ३० पह्वंकानी जाजी शाक विशेष, ३१ कोमल आंबली ज्यां सुधी मांहे बीज संक्रमे न हीं, त्यां सुधी अनंतकाय जाणवी, ३१ आलुकंद ते रतालु, पिंगाबुविशेष ए प्रमाणे बत्रीश अनंत काय जातिनां सामान्य नामने ते कह्यां अने विशेष नाम तो अनेकने. ते एम जे, कोइ वनस्पति तो पंचांग छानंत कायढे, कोई वनस्पतिनां मूल छानंत कायढे, कोइ वनस्पतिनां पत्र अनंत कायढे, कोइनां फूल अनंत कायढें, कोइनी ढाल अनंत कायढे, कोइनुं काष्ठ अनंत कायढे, एम कोइनुं एक छंग छनंत कायते, कोइनां वे छंग छनंत का यहे, कोइनां त्रण अंग अनंत कायहे, कोइनां चार अंग अनंत कायढे, कोइनां पांचे छंग छानंत कायढे.

हवे अनंतकायनां लक्तण लखेठे. जेणे करी अनंत काय ठेल खाइ जाय, ते लखेठे. जे वनस्पतिनां पत्र, फल, फूल प्रमुखनी शिरा एटले नस ते मालम न पडे ग्रप्त होय, जेना संधिनी मा लम न पडे, जेनी गांठ पण ग्रप्त होय, जे जांगी थकी बरोबर जांगे, जे ठेया पठी फरी जगे, जेमां पांदडां महोटां ग्रज सरखां होय, के ठेया पठी फरी जगे, जेमां पांदडां महोटां ग्रज सरखां होय, सचिक्कण होय अने जेमां घणां फल,पांदडां प्रमुख कोमल होय, ते सर्व लक्तण, अनंत कायनांठे. ए वत्रीश अनंत कायनां नाम कह्यां. अहींयां अजक्यवस्तुर्जमां अफीण, जांग प्रमुखनो जो प्रथमश्री

90

खावानो चाल होय, जेना विना चाले नहीं, ते खावा ढूट राखे, तेनी जयणा. रात्री जोजन. मासमध्यें चार छाथवा पांच छाथवा दश, तिथिना दिवस टाले. छाथवा जेवी शक्ति होय, ते प्रमाणे राखे के एटला दिवसें रात्रीयें छाहार करवानी जयणा. उपरांत निषेध. वीजा दिवसोएं त्रिविहार, छुविहार करुं छाथवा चोविहार करुं छाने वीजी पण छात्रद्य वस्तु, जे उंशड वेशडमां कोइ दिवसें खावामां छावे, तेनी जयणा. छाने वत्रीश छानंतकाय निषेध करे, परंतु रोगादिक कारणें छोषधमां लेवानी जयणा तथा छाजाण पणे कोइ छ्व्यमां जट्यां थकां छावे तेनी जयणा ठे.

हवे चउद नियमनुं विवरण लखे ठे॥ गाथा ॥ सचित्त दव विगइ, वाणह तंबोल वठ्ठ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, वं त्रं दिसि न्हाण त्रत्तेसु ॥ १ ॥

श्चर्थः-आवकें यावत् जीव, पंचाणुं व्रतमां इहा परिमाणमां को इश्चागली अनेक तरेहनी कर्म परिणतिनी संजावनायें करीने,पोता ना निर्वाह समर्थनो उदय अति छस्तर विचारीने घणी वस्तुउंनुं परिमाण राख्युं होय,तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारणने माटे संदेप करवाने अर्थें चौद नियमनी दिनप्रत्यें धारणा राखे,ते कहेंठे. १ त्यहां प्रथम सचित्त परिमाणमां मुख्यद्दत्तिथी तो श्रावकने

र पहा अपन सापत परिमार्थना मुख्यद्दातजा ता आपनत सचित्तनो त्याग करवो जोइएं,जे कारण माटे अचित्त वस्तुना आहा रमां चार ग्रुणठे. प्रथम तो प्रासुक जलादिक पीधाथी वीजा सर्व सचित्तनो त्याग थयो. ज्यां सुधी अचित्त थयो नथी, त्यां सुधी मुखमां प्रकेष न करे. वीजो ग्रुण ए के रसनेंड्रियनुं जीतवुं थयुं. गमे तेवो खाद सचित्त वस्तुमां होय, तो पण खाय नहीं. केटलीक चीज तो रांध्या विनानी पण खादिष्ट लागेठे. परंतु सचित्तत्यागें करी, ते सर्वनो त्याग थयो. त्रीजो ग्रुण ए के अचित्त जलादिक पीधे थके कामचेष्टानी ज्ञांति थाय. घडी घडी उपयोगमां जीव रहे के, रखे सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय. चोथो ग्रेण ए के, जेटखुं जखादि ऊव्य अचित्त कखुं होय, तेनाथी जेटखा जीवोनी वि राधना थइ, तेटखी बंधकजावें चेतना थइ एटखामांज चेतना रही, पण वसी प्रतिक्तणे ते वस्तुर्डमां असंख्य अनंत जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेर्डनाथी विरोधिजाव मटयो. इत्यादिक बीजा प ण घणा ग्रेणडे; माटे ते केटखा खखियें?

जे अचित्त करवामां ठकायनी विराधना थायठे, ए माटे एक ज कायनी विराधना सारी. एम कही ने जे सचित्तनो त्याग नहीं करे, ते जिनशासननुं रहस्य नथी पाम्यो. जे सचित्त परिहारमां आत्मदमनता, जत्सुक्यनिवारणता अने मंदविषयकषायपरि एति प्रमुख अनेक गुए थाय ठे, ते नथी जाप्सा एटखुंज नहीं, परंतु जेणे करी खदया घणी थायठे ते गुए तेणे न जाप्सा; ए माटे सचित्तत्यागमां घणो खाज ठे. एवुं आगममां घणुं सूझ्म र हस्य ठे. ते कोइ पण ठद्मस्थ जीवथी आगमनो पार पामवो बहु मुश्केख ठे. जो हठ ठोडी करीने बहु बुद्धिनो खरच करे, तो कांइ क रहस्य पामे, ए माटे बाहेर अह्पमतिनी कुयुक्ति सांजलीने मुंजावुं नहीं. जैनशैत्वी अति गंजीरठे; ए माटे मुख्यपणे सर्व सचि तपरिहारीज थवुं; अने तेम नहीं बनी शके तो सचित्तनुं परिमाण करी खेवुं के, आटखा सचित्तनी मने बूटठे. इति सचित्त नियम प्रथमः

१ बीजो डव्यनियम. तेमां धातुमय शिलाकापात्र प्रमुख तथा पोतानी अंगुलि प्रमुख विना जे मुखमां खाए, तेने डव्य क हीएं. "परिणामांतरापन्नं डव्यमुच्यते" ए लक्त् डव्यनुंढे. त्य हां खीचडी,मोदक,वडां अने पापड प्रमुख वस्तु,घणां डव्य नि ष्पन्नढे तो पण परिणामांतरथी एक डव्य कहीयें.घणां डव्य वि ना एक डव्य निष्पन्नढे.तो पण घउंनी रोटली, तथा वाटी, घुघ री, पोली, ढोकलां प्रमुख ए सर्व, जिन्न डव्य कहीएं. जे कारण माटे नामांतर, खादांतर अने रूपांतर तथा परिणामांतरथी झ व्यांतर थायठे. अथवा अहींयां कोइ आचार्य, बीजी रीतें पण डव्यविवक्ता कहेठे; परंतु बहु इद्यपरंपरासंमत एहज ठे ए मा टे डव्यपरिमाण राखे के, आटलां डव्य, आजना दिवसमां हुं खाइश. ए डव्य नियम बीजो जाणवो.

३ त्रीजो विगयनियम. तेमां दश विगयठे, तेमां चार महा विगय ठे, एक मधु, १ मांस, १ मांखण, ३ मदिरा, ४ ए चारनो तो वावीश अज्ञक्त्यमां त्याग कस्त्योज ठे बाकी ठ विगय ठे; ते जक्त्यठे. दूध, १ दहीं, १ घृत, ३ तेल, ४ गोल, ४ अने सर्व मि ष्ठ पकवान, ६ ए ठए विगयमांश्री एक, बे, त्रण ठोडे, बीजानी जयणा राखे. एना निवित्र्याता, पांच पांच जातिना एक एक विगयना कह्याठे. ज्यारें विगय त्याग कस्त्या, त्यारें ते नीवित्र्याता पण त्याग करवा जोइयें. अने जो न ठोड्या जाय तो, तेज व खत धारी दे के मने विगयनोज त्यागठे पण नीवित्र्यातानी जयणा ठे. इति विगयनियम तृतीयः

४ चोथो उपानह नियम, एटखे जोडानो नियम. पगरखांनी जाति एटखे जूती, खडाज, मोंजा, बूट प्रमुख, ए जीवहिंसानां महो टां श्रधिकरणढे. त्यां श्रावकने जिनपूजादिक कारणविना खडा उ पहेरवां नहीं छने जोडा विना तो चालवाने समर्थ नथी; ए माटे एनुं परिमाण करी खेवुं के, झाजन दिवसमां झाटला जूती ना जोडा पहेरीश, वीजानी जूती पगमां पहेरुं नहीं. झ ने जूखे चूक्ये वीजानी जूती पगमां पडे, तो तेनी जयणा. ए जपानह नियम चोथो.

उद

अने पींपर प्रमुख करियाणुं जेनाथी मुखशुद्धि थाय, पण जदर पूर्ण न थाय. ते चीज खादिम आहारविशेष तंबोल कहीयें. ए नुं परिमाण करी खेवुं के, आजना दिवसमां आटलां तंबोल, मु खवास, ते शेर अथवा अर्द्धशेर, मारे खावां. एवी रीतें परिमाण राखे, अथवा संख्यायें राखे जे, आटली चीज तंबोलमां खावी, ए पांचमो तंबोल नियम.

६ ठठो वस्त्रनियम. ते स्त्री पुरुषना पांचे छंगोनां जे वस्त्र, ते वेष कहेवाय. एउंनी संख्या राखे जे छाजना दिवसमां एटला वेष मारे पहेरवा छने छाटनां ढूटां वस्त्र वापरवां. जे कारण माटे रात्रीएं पहेरवानुं तथा स्नानादिक करती वखत पहेरवानुं वस्त्र वेषमां गण्युं जाय नहीं. ए माटे ते वस्त्रने जूदां राखे, छ थवा वेष न गणे तो समुच्चय वस्त्रनी संख्या राखे के, छाजना दिवसमां छाटली संख्यायें मारे वस्त्र वापरवांठे. बीजां नहीं छ ने जेल संजेल पणे छजाणधी बदलाइने पहेरवामां छावे, तेनी जयणा. ए ठठो वस्त्र नियम.

७ हवे सातमो पुष्पन्नोगनियम कहेंठे. ते एमके, मस्तकमां राख वा लायक, गलामां पहेरवा लायक फूल तथा फूलनी शय्या, फूल ना तकीश्चा, फूलना पंखा, फूलना चंदरवा, छने जाली प्रमुख जे जे चीज नोगमां छावे. फूलनी ठडी, फूलना सेहेरा, फूलनी कलंगी, फूलना तोरा इत्यादिक. छने फूलनी जातिमां जे सुगंधि फूल जो गमां छावे, तेनी छाटली डव्यगणतिमां इच्चापरिमाणे ठूट राखे, तथा एटलां फूल, नाकें करी वास लेवानी धारणा प्रमाणे ठूट रा . तथा छाटली जातिनां देहना नोगमां लेवां मोकलां राखे, ते ना तोलनी गणती राखे. एवो नियम, उपयोग राखीने करे. जेट लुं पले, तेटलुं तोल, वजन, गणती, जाति,व्यापार प्रमुख जेवी पो तानी शक्ति होय, तेवी रीतें राखे. ए पुष्पनियम सातमो. ए हवे आठमो वाहननियम. ते रथ, गाडी, गज, घोडा, पा लखी, उंट, वलद, नावप्रमुख. जे उपर वेशीने ज्यां जवुं होय त्यां जवाय, ते वाहन कहेवाय. ते वाहन सर्व त्रण जातनां ठे, ए क तरतां, वीजां फरतां अने त्रीजां वरतां. एनी संख्या परिमा ण करी राखी खे. ए नियममां कोश खेडवो, केत्र समारवुं, चक मोल तथा हिंमोखे चढवुं, शेरडी प्रमुखना चक्रमां वेसवुं, ए स हु आवे. ए माटे तेर्जनी संख्यापरिमाण राखी खेवुं के, आटली संख्यानां वाहन उपर आजना दिवसमां महारे चढवुं. ए वाह न नियम आठमो.

ए नवसो शयननियम. ते एम के, शय्यानो नियम राखे. शेज, खाट, ते न्हानी मोटी तखत, इत्यादि लाकडाना तथा तखता, चोकी तथा ज्रूसिउपर तूलनी तथा रूनी जरेबी सुखशय्या, एट लानुं परिमाण राखे. जे आजना दिवसमां मने आटलानो जोग करवो. एवो नियम राखे,आटला आज दिवसें महारे विठानां, उप रनां अने पलंग पोस प्रमुख अने आसन खुरशी उपर वीठाववानां, चोकीनां, पटा प्रसुखना. ए सर्व न्हाना महोटानो सर्व उपयोग धा रीने परिमाण करी राखवुं अने ज्रूला चूक्यानी जयणा राखे. एवी रीतें शक्ति प्रमाणे परिमाण राखी खे. ए शयन नियम नवमो.

१० हवे दशमो विलेपननियम. ते एमके, जोगने अर्थें आट लो केसर, आटखुं चंदन, आटलो चूवो,अत्तर, जवादिक, तेल फ़्र लेल, कमरी, कस्तूरी, अवीर, अरगजा प्रमुख जे जे अंगने लगा ववानुं तेल के अत्तर, ए सर्वनां नाम धारीने गुलावनुं अत्तर अथवा अंवरनुं, फितननुं खसखसनुं इत्यादिकना अत्तरनी संख्या करीने परिमाण राखे. अथवा जवटणा पण सहु एमांज आवे. ते सहु आजना दिवसमां आटला तोलनुं मारे जोइशे एटखुं राखी ले. एथी बधारेनो नियमते. बीजा पण विलेपननो सहु नोल परि

सप्तम जोगोपजोग विरमण वत.

माण राखे. छहींयां पूजादिक धर्मकरणी करतां हाथ प्रमुखने विषे धूपधाणुं के छगरबत्ती खेवी पडे ते. तथा पोतानां छंग के मस्तकें तिलक करवुं पडे तथा परमेश्वरना छंगें तिलक प्रमुख क रवां पडे, तेनाथी महारो नियम न जांगे, एम नियममां करेली धारणाथी धर्मने माटे जे कांइ विरोष छधिकरण जोइयें तेथी नि यमजंग थाय नहीं. ए विलेपननियम दशमो.

१९ ऋगीआरमो ब्रह्मचर्यनियम. ते एसके, श्रावकनें दिवसें ऋ ब्रह्मसेवा तो प्रायें निषेधने. अने रात्रीनी जयणाने. अथवा परि माए करे के, आजनी रात्रीमां आटली वार अब्रह्मचर्यनी ज यणा. छहींगां स्त्री साथें हास्य, विनोद छने छालिंगनादिक, ते सर्वमांई मैथुनकिया लागेढे, ए माटे जेवी शक्ति तेवा जांगा राखे. कोइ आवकनें रात्रीयें चतुर्विध आहार करवानो त्याग होय अथवा रात्रीएं एकांतध्यान करवानो चाल होय, जप जापनी रुचि तेने घणी होय. ते मनमां एम जाणे के, रात्रीयें विषयसेवा करी ऋग़ुद्ध थइने जप केम करुं ? वली विषयरूप रोगनी लगन लागीहे, ते पण परिणामने बगाडेहे, ए माटे दिवसने विषे विषय विकब्प मटाडीने पढी ग्रुऊ थइने रात्रीयें निश्चिंत पणे खस्थचित्ते जप करुं. एवी बुद्धिश्री दिवसने विषे विषय सेवे, रात्रीयें न सेवे ए माटे कोइनें दिवसमां निषेध छने रात्रीनी जयणा, कोइने दिवसनी जयणा अने रात्रीयें निषेध, अने कोइने रात्री तथा दिवस ए बंनेनी जयणा. पण गणती राखे के, रात्री दिवस मलीने आटली वार स्त्रीसंगें जोगसेवा करवी, ते पण पोतानी जेवी शक्ति होय, ते प्रमाणे नियम राखे. इति ब्रह्मचर्य नियम एकादश.

रेश बारमो दिसि केण दिशिनो नियम. ते दरो दिशियें जवा आववानुं परिमाए. ते जेवी शक्ति अने जेवुं प्रयोजन, ते प्रमाणे राखे. अहींयां आदेश, उपदेश, आदमी मोकलवानुं, कागलनुं वा चवुं, लखवुं. ए सर्व एमां व्यावे. माटे जेवुं पले, तेवुं राखे. इति दिशि नियम द्वादश.

१३ तेरमी स्नाननियम. ते एमके दिवसमां तैलादिक छन्यंग पूर्वक स्नान करवुं तथा छन्यंग कस्ता विना स्नान करवुं, तेवुं परिमाण राखे जे दिवसमां छाटली वार स्नान करीश. छहिंया देवपूजा निमित्ते छधिक स्नान करवुं पडे, तो पण नियमन्नंग थतो नथी. एवी रीतें सर्वव्रतमध्यें धर्मदेतुयें जे कमवेश करवुं पडे, तो तेनाथी नियमन्नंग नथी. इति त्रयोदश स्नाननियमः

१४ चौदामो जात पाणीनो नियम. ते एमके, चारे आहारमां स्वादिमनुं तो तंबोलना नियममां परिमाण राख्युंढे अने वाकी त्रण आहार रहा, तेमां प्रथम खादिममां मीठाइ मिष्ट मेवा अ थवा मिष्टान्न, पान, मोदकादिक. छ्यशनमां जात, रोटली, कचोरी, शीरो, तेनुं परिमाण प्रमुख राखे के, दिवसमां आटला होरनी जयणा. छहींयां घरमां घणो परिवार होय, तेर्जने माटे छशना दिक घणुं करवुं करवावुं पडे, तेनो ग्रहस्थने ढूटको नथी ए मा टे एनी जयणा राखे तथा पारके घेर, जाति प्रमुख संवंधें जम वा माटे जवुं परे, लहां तो केटलाक मण जात प्रमुखनी रसोइ वनावी होय, पण नियम धारीने एनो दोष नथी, जे कारण मा टे नियम धारीएं तो खनिष्टाएं खावानुं परिमाण कखुंठे; अने घ रसंवंधी ज्ञाति संवंधीथी बूटातुं नथी; ए माटे पोतें खावानुं परि माण करी राखे के, आटला तोलथी वधारे खावुं नहीं. एटलुं प **खे. छने जो परिणाम हढ करीने सर्व संवंध ठो**मीने स्वनिष्टा परि माणयी अधिक पचन पाचनमां न जमे, तो ते वहुज सारुं; पण सर्व ग्रहस्थयी एवुं पले नहीं. ए माटे यथाशक्तिएं परिमाण राखे तथा त्रीजुं पानत्राहारनुं परिमाण राखे के, दिवसमां आटला कलरा, पाणीना वावरुं. छहींयां पण घणा परिवार वा

लाने पाणीनुं प्रमाण ते खनिष्ठत्रोगनिमित्त जूडुं राखवुं, समुदा यना जेल संजेलनी ढूट नथी, एमाटे ते जूडुं राखे तो बहु सारुं. इति जात पाणी नियम चतुर्दश.

छहींया जे कोइ अधिक जाववंत साधक होय ते सचित्तादि परिमाणमां तथा डव्यपरिमाणमां जूदां जूदां नाम खेइ खेइने राखे तेने महोटी निर्जरा थाय, अने अशक्तने तो सामान्य क रवुंडे. ॥ इति चतुर्दश नियमाः समाप्ताः ॥

हवे पंदर कर्मादाननुं खरूप लखे ठे. कर्मादान एटले जे व्यापार करतां गाढां पापकर्मोनुं बंधन थाय, एवुं व्यापारकर्म ते पापक र्म, तेनुं श्रादान एटले ग्रहणठे जे व्यापारमां तेने कर्मादान क हीएं. छहींयां संसारमां पाप तो सर्वे व्यापारमां थायठे, तोपण बी जासर्व व्यापारथी ए पंदरे कर्मादान व्यापारमां घणुं पाप छने म लिन परिणाम पणुंठे. ए व्यापारें करी पापनी परंपरा बहु चाले, ए माटे श्रावकने ए व्यवस्य लाज्यठे. कदापि ए कर्मादान व्यापारमांज पोतानी ज्ञाजीविका लागी होय ने तेथी करी तेन ढूटे तो परिमा ण करी लेवुं ॥ हवे ए पंदर कर्मादाननुं जूडुं जूडुं विवरण कहे ठे ॥

१ प्रथम इंगालकर्म. ते लाकडां बाली कोयला करीने वेचे अ ने तेखे करी पोतानी आजीविका उपजावे, ते इंगालकर्म. तथा कोइ तरेहनी जठी करे, इंट नीपजावे, कुंजार कर्म, लोहार क मे, सोनार कर्म, अंगारा कर्म, बंगडीकार, सीसकार, कलाल, ज नियारो, जाडजुंजो, हलवाइ, धातुगालक प्रमुख जेटला अग्नि विद्यारो, जाडजुंजो, हलवाइ, धातुगालक प्रमुख जेटला अग्नि वडे व्यापार थायते, ते इंगालकर्म. ए व्यापारमां घणा दोषते, जे कारणे अग्नि, सर्वशस्त्रमां मुख्य शस्त्रते. चार दिशि, विदिशि, जर्ध्व, अधो, ए सर्व स्थलें ठकायना जीवने अवस्य हणे ए मा टे ए कर्म, अनाचरणीय ते. इति इंगालकर्म प्रथमं.

१ बीज़ुं वनकर्म. ते एमके, ढेयां श्रण्डेयां वन वेचे, बगिचा

and the first of

על

नां फल, पत्र वेचे. पत्र, फूल, फल, कंद, मूल, तृए, काष्ट, लक डी, वांसादिक व्यापार तथा लीली वनस्पति हरिवीज वस्तुनो जे व्यापार, ते पए सर्व वनकर्म जाएवुं तथा खेती कृषीनो व्यापार करवो, ए सर्व वनकर्म आजीविका निमित्तें करतुं तथा खेकुतने आगलथी पैशा आपीने पठी धान्य नीपजे तेवारें ते धान्यमां वधतुं ले, ते पए वनकर्म तथा धान्य दलावे, खंमावे, जरडावे, ए पए एनाज व्यापारठे, ए वनकर्म व्यापारथी, ते वनस्पतिना जीव अने वनस्पति आश्रित वनना त्रसजीवनी अवस्य विराधना थाय, ए माटे वनकर्म अनाचरएीय ठे. इति वनकर्म.

३ त्रीज़ुं शाडीकर्म. ते शकट एटखे महोटां गामां, वहेेख तथा श्रसवारीनो रथ, इका गाडी एटखे ठोटी गाडी तथा नाव जाति श्रथवा वजरा, पखवार, महिलगिरी, उलाक, जमलीश्रा प्रमुख. तथा हलदंताल, चरखा, घाणी प्रमुख. एनां नानां महोटां श्रंग धोंस रां चक्की एटखे घंटी प्रमुख. उखली, मुशली ए सर्व नवां बनावी ने वेचे तथा उपर रही वेचावे, ते सर्व शकटकर्म. ए महा हिंसा नुं कारणठे, श्रनाचरणीयठे. इति शाडीकर्म.

ध चोथुं जाडीकर्म. ते गाडी, वेल, पोठीयो, उंट, पाडो, गऊो, वेसर, घोडो, नाव, रथ, सुखपाल, नोली प्रमुख पोतें राखे अने वीजाने जाडे आपे, वीजानो जार वोज, ते कहे त्यां पहोचाडी आपे तथा घर, छकान, वस्त्र, वखार प्रमुख पोतानी होय, ते पार काने नाडे आपे तथा सार्थवाहनो व्यापार, हुंना जाडानो व्या पार. ए सर्व जाडीकर्ममां आव्युं. जे पोतानी चीजनुं जारुं लइने पोतानी चीज वीजाने सोंपे, ते पण जाडीकर्म जाणवुं. एमां वल द, घोना प्रमुख जीवने ताडनादिक महा छुःख उपजे अने चलाव तां थकां मार्गमां त्रसादि जीवोनी हिंसा अवद्य थाय, ए माटे ए जाडीकर्म अनचरणीयठे. इति जामीकर्म. ५ पांचमुं फोडीकर्म. ते क्रूप खोदाववो तथा तलाव खोदाववुं, होद वावडी खोदाववी तथा नीक खोदाववी इत्यादिक. तथा हल खेडन करवुं, संगत्रास पासें पठर फोडाववा, हीरा रखनी खाण खोदाववी तथा तेने रगडाववां, ठीऊपडाववां परब कराववी, घाट कढाववा,तरसाववुं,जोयरां तहखानानुं बनाववुं,तथा जव धान्य बुंट प्रमुखनी दाल कराववी. शाखिमांथी चावल कढाववा इत्यादि व्या पार सर्व फोडीकर्ममां आवे तथा इंगालकर्ममां पण आवे. ए प्र थ्वी विदारवामां पृथ्वीकाय अने त्रसकायना जीवोनी हिंसा थाय ठे. अने बीजा जीवोनो पण अंगघात थाय ठे. किलामणादि बहु उपजे तेथी पाप लागे ए माटे ए कर्म त्याज्यठे, ए पांचे कुकर्म ठे, महा हिंसामय ठे, ए माटे ठोडवां. हवे पांच कुवाणिज्य लखेठे.

१ तेमां प्रथम दंतकुवाणिज्य. ते हाथीना दांत, जह्रूना नख, जीज, कलेजुं तथा पंखीनां रोम तथां पंखालिंगि प्रमुखनां अने गायना पुछनां चमर तथा हरणनां शिंगडां तथा गेंमाप्रमुखनां शिंगडां, तथा शंख, कोमा, कोमी, कस्तुरी, जबादि, मोती, वा घनुं चामडुं, वाघनी मूढना केश, सावरनां शिंगडां, कचकडुं, किरमजदाणा, रेशम, जन, तांत, नमूंम प्रमुख जे त्रस जीवनां ञ्चंग तथा जपांग, ए सर्वनो व्यापार दंतवाणिज्यमां आवे. ए वाणिज्यमां ज्यारें श्रंग लेवाने आगरमां जाय, लारें ते कुद जिह्वादिक लोक, तत्काल हस्ती, गेंमा, मृग प्रमुख जीवोनी हिंसा करवामां प्रवर्त्ते अने महा पाप अनर्थ करे. वली पोतानो परिणाम पण त्यां गये थके मलिन प्रवर्त्ते. लोजना हेतुयें व्याध लोकोने कदापि एवुं कहेवुं पडेके, अमारे वास्ते घणा सारा जारे अने मोहोटा दांत जो तमे आए। आपशो तो वली वधारे मूला पामशो. त्यारें ते व्याध लोको एना कहेवा उपरथी वधारे हिंसा कर्म करे. एवी रीतें सर्व डव्यमां जाणी लेवुं. ए माटे ए सर्व चीज, व्यापारी पासेंथी लेवी पण आग रमां जइ न लेवी. ते माटे आजीविका करवा सारु तो ए कुवा णिज्य तजवुं. एक हस्ती मरे, त्यारें मात्र बे दांत मले, एक गाय मरे, त्यारें मात्र एक पुछ मले. ए प्रमाणे सर्व चीजमां विचारी लेवुं. इति दंतकुवाणिज्यं प्रथमं.

१ वीजुं लाखकुवाणिज्य. ते लाख, धाउडी, गली महुडां, साजी खार, साबू, मनशील, लोह, सोहागो, पडवास, कसुंबो, कपिला, तूरी. ए संवे खारनी जाति, एउनो जे व्यापार, ते लाखवाणिज्य कहेवाय. ते लाखमां प्रथम त्रस जीवोना समूह विना माली ज पजे नहीं. पढी पए ज्यारें रंग काढे, त्यारें छन्न देइने सडावे वे, त्यां पण तेमां त्रस जीवो उपजे वे. महाछर्गंध रुधिरना जेवो ज्रम उपजे. धाउडीमां पए त्रस जीवोनो आश्रय हे. एमां कुंयुआ घणा रहेवे. वली ए मदिरानुं छंगवे. गली पण प्रथम सडावे, त्यहां त्रस जीव उपजे, तेर्जनी ज्यारें हिंसा करे, त्यारें गत्नी जप जे. पठी पण गलीना कुंकमां त्रस जीवोनी घणी हिंसा थाय. केव ल गलीनां वस्त्र पहेरे तेमां पए त्रस जीवो जु, लीख प्रमुख उपजे. एमाटे ए ज्यहां त्यहां हिंसानां हेतुवे. तथा हरताल मनशिला दिकनी वासनाथी घणाज माखी प्रमुख त्रसजीव मरे. हरताल, मनशिलने वाटतां जो जतन राखे नहीं तो तेनी वासनाथी त्रस जीवो मरे. तूरी, उंस, पडवास प्रमुख पण ज्यहां ज्यहां जे जे काममां आवे, त्यां त्यां पण घणा जीवोनो घात थायते. एमां त्रागल पाठल त्रस जीवोनी हिंसा थायठे. एमाटे ए वस्तुर्ज त्या ज्यवे. इति लाखकुवाणिज्यं.

३ त्रीज़ुं रसकुवाणिज्य. ते मध, मदिरा, मांखण, मांस, ए चारे महाविगयनो जे व्यापार, तथा छध, दहीं, घी, तेल, गोल, खां म प्रमुख रसवाली जे नरम चीजो तेर्डनो जे व्यापार, ते रस वाणिज्य कहेवाय. छहींयां रसवाणिज्यमां चारमहाविगयवे. ते तो सदा अशुद्धवे. जे माटे सदा ते वस्तुर्व त्रसजीवोयें करी संयुक्त थायने. आगल पानल हिंसा घणीने. तथा दहीं, छुध, घृतादिक स चिक्रण रसवाली चीजो मध्यें ज्यहां ए चीजोथी जरेलां पात्रो पण खुद्धां रहे, तो त्यां पण नहाना मोटा जीवो आवी पडे ; ते जीव, कोइ पण जीवे नहीं. बे दिवस उपरांत दहींमां असंख्यात जीवो त्पत्ति थायते. तैल घृतादिकना गंधथी घणाज कीडी प्रमुख जीव आवे अने जे आवे ते तरतज तेमां लपटाइ जाय, ते बचे नहीं. वली ज्यां घृत तैलादिकनां जाजन एटले पात्र रहेतां होय, ते जमीन ची कणी अने मलिन थइ रहे. त्यां फरनारा त्रस जीवो होय, ते लप टाइ रहे. तिलनो व्यापार ज्यां होय अथवा ज्यां तल, टीसी, काब रा प्रमुखनुं सदा पीलाववुं थातुं होय, त्यां ज्यांरें फागण मास उप रांत मास थाय लारें अवस्य तिलादिकमां त्रस जीवो घणाज ज पजे, त्यारें ते जीवसंयुक्त तल पीखा जाय. ते वारें ते जीवो प ण ते तलनी साथेंज पीलाइ जाय. तेलनो दीवो करे, त्यां पण छनेक त्रस जीवोनो घात थाय. एम छागल पाठल घणी जीव हिंसा थाय. तथा गोल, चीनी मिश्री प्रमुखमां पण मिष्टताना योंगें करी मांखी, कीडी, मंकोडा प्रमुख घणा जीव आवे ते माटे तेनो संहार थइ जाय तथा सादी चीनी चोमासामां अजद्य थाय. जे कारण माटे आर्जा नक्तत्र लागे, त्यारथी सादी चीनीमां असंख्य जीवोनी जत्पत्ति थायहे.एमाटे चार मासतो अशुद्धहे. अने ज्या रें व्यापार थाय, लारें तो एथी बहु त्रसजीवोनी हिंसा थाय. ते मज मीए पए घएा जीवोनो घात यया विना नीपजे नहीं. आ ने पठी पण बहु हिंसानुं कारणठे. ए वस्तुनो मीणवती तथा रं गारा प्रमुखना काममां अधिकार होयने माटे तेनुं अधिकरण कार्यंठे. तथा मुरब्बो, पाक, रोगान, अत्तर अने अर्क प्रमुखनो

व्यापार पण सर्व एमां आवे. केटला एक रसवाणिज्यमां इंगोल कर्म, यंत्रपीलनकर्म, विषकर्म अने रसवाणिज्य. एटलानो दोष, ए कर्ममां लागे. ए माटे रसवाणिज्य निषिद्ध्वे. इति रसकुवाणिज्यं.

४ हवे चोथुं केशकुवाणिज्य. ते द्रिपद मनुष्य दास, दासी, गुखाम, ए आजीविकाने कारणे लेइने खदेश परंदेशमां वेचे, तथा गाय, जेंष, घोडा, उंट, हाथी, वलद, बकरी, पाडा, गद्धा. तथा पंखीमां वाज, कुकडा, कुंही, बहिरि, सिकरा, लालमेनां, मरघां, तोता, मोर, सारस, सुरख, तेतर, ए पंचेंडिय पंखी जीवोने श्रा जीविका निमित्तें ले ऋथवा वेचे ; ते केशवाणिज्य कहेवाय. ए केशवाणिज्यमां दास, दासी, तिर्यंच प्रमुख जीवने तो प्रथम स्थानकुटुंबनो वियोग पडे श्वने जे लेइ करीने वीजाने छापे, त्यां तेने नित्य परवश रहेवुं पडे, पोताना मननी इन्ना कांइ सरे नहीं. वली तिर्यंच जीवतो कांइ मुखथी बोले पण नहीं, के अ मने छःखठे किंवा सुखठे. ते कोने कहे ? जन्मपर्यंत वीचारां वं धनमां रहे, मनमां घणां कढ़पे, घणी जूख, तृषा सहन करे, ते जपरांत वली जे माणस वेचातुं ले, ते निरंपराधें मारे, जार जरे, ए रीतें वहु वंधनादिक छनेक छुःख पामे, पंखी पण पांजरामां पडे, श्रने मनमां घणुं छुःख माने. वली शकरा, वाज, शिवरी, ए तो महा हिंसानां हेतुवे. एउंथीतो निस परमांस विना रह्युं जा य नहीं. ए माटे केशवाणिज्य पण, जे धर्मरुचि श्रावकठे ते श्रा वकने तो त्याज्यठे. इति केशकुवाणिज्यं.

थ पांचमुं विषकुवाणिज्य. ते सोमल, वठनाग, अफीण, म नशिल, हरताल, गांजो, जांग. चडस, तंवाकु प्रमुख. तथा हथी यार ते धनुष, तरवार, कटारी, वरठी, तोमर, फरशी, कुहाडा, कोदाली, तुरी, पेस, कवज, वंछक, ढाल, गोली, दारु, वक्तर, पा खर, जिलम, टोप प्रमुख जेना वलथी संयाममां मनुप्य, मजवूत था

सप्तम जोगोपजोग विरमण व्रत.

य, तथा हल,मुशल,जखल,कोश, कोदाली,दंताली,करवत,दावडा, दात्रा, ठीनी, नाल, गोला, हवाइ, कुहुक, शतन्नी प्रमुख सर्व हिं सानां ऋधिकरणढे. एउंनो जे व्यापार, ते विषवाणिज्य कहेवाय. छहींयां शिष्य प्रश्न करेढे के, छमल प्रमुख विषने तो विष क द्युं पण धनुष्यादिक हथीयारने विष केम कहोठो ? ते वारें गुरु क हेठे के सांजल,तुं तत्व नथी पाम्यो.जे विषथी काम थायठे, ते एनाथी पए थायहे. विषें करी मरता प्राणीने तो कोइ माएस, तेनुं विष उतारी पण शके, परंतु शस्त्रनो मास्त्रो तो कोइ बचे प ण नहीं. तथा ज्यारें हथीयार ले, त्यारें तेना विषरूप परिणाम थाय. जेम जेम जलद राम्न होय, तेम तेम खुश थइने तारीफ करी मूळा लइने वेचे, तेथी आगलानो परिणाम पण बगडे.एमा टे हथींयारने पण विषरूप कहीएं.ए विषवाणिज्यमां वठनागठे, ते तो एकेंडियादिकथी मांमीने पंचेंडिय पर्यंत जीवोनो घात करेंडे. सोमल तो वली एथी पण वधारे घात करनारोंगे.जे सोमल खाय, ते घणुं कष्ट पामे,मरीने छुर्गतिमां जाय. विष खाइने जे गतिमां उपजे, त्यां पण विषरूप थाय.जो कोधथी विष खाय, तो मरीने संप थाय, कां वींडी थाय, ऋथवा फेरी जीवोमां उपजे. ए माटे तेनुं फल पण विषरूप थाय हे. तथा विषवस्तुना गंधथी जीवनो नाश थाय. हरताल अने मनशिल ए पाणीमां वाट्यां होय, ते उपर आवीने माखी बेसे,तो ते संताप पामीने तत्काल मरे. झफीण पण ज्यारें खाय, त्यारें आत्मघात करे. अमलीना शरीरनुं मल मूत्र पडे, त्यां त्रस अने स्थावर जीवो हणाय.खानारनी चेतना मुंजाय, तेथी छ र्ध्यान थयो थको मरीने इंगीतिमां जाय तथा जांग प्रमुख पए चे तनाने मुंजावे. रात्री जोजनादिक अविरति पणुं वधारे, अब्रह्मचर्य घ णुं करे,तेथी ते श्रसत्यपणुं वधारे,वतनी दढता जति रहे, कषायनी वृद्धि करे,तुह्य पणुं आवे, निद्धा वधारे, मतिनी अज्ञानता करे, सा

री तवीयतने बदलावे, निरुवमी थाथ, परनिंदा अने वाचालपर्ण वधारे, मुखथी गमे तेम वचन बोलतो आघुं पाढुं न जुए, चित्त ज्रम थयेलानी पेठें अवस्था थाय, तेना आश्रित बहु जीवने हणावे. इत्यादि अफीण खाधाथी आलोकें डुःख अने परलोकने विषे गह न डुर्गतिमां पडे, ए माटे विष कहीएं. तथा सर्व हथीयार तो प्र गट पापना हेतुठे. ए माटे विषवाणिज्य निषिद्धठे. इति विषकुवाणि ज्यत्याज्यस्वरूपं ॥ एटले पांच कुवाणिज्य थयां. ए सर्व मली दश थयां.हवे पांच सामान्य कर्म कहेठे.

१ तेमां प्रथम यंत्रपीलनकर्म. ते घाणी, शेरडी पीलवानो शीं चूडो, चरखा, चरखी, लीसा, जखल, मुशल, कंगइ, सावरणी, वेगडीयंत्र, सराण, जलयंत्र, पातालयंत्र श्चाकाशयंत्र, कोलिकायं त्र प्रमुख यंत्रजाति, शतझीयंत्र प्रमुख जे जे काष्ट, पाषाण, लो ह, वस्तादि श्चनेक श्चनेक श्चंगमेलापथी जे जीवघातकारक प दार्थ होय ते यंत्रपीलनकर्म कहियें. ए यंत्रपीलनकर्ममां घ णो श्चारंज्रवे. घाणीयंत्रमां तिलादिमिश्चित जे त्रस जीवो होय, तेनो घात थाय. एवीज रीतें रक्तपीलनकर्मयंत्रमां पण श्चनेक जीवघात बे. एम जे जे यंत्रवे, ते मुकरर करीने जीवघातना हेतु बे, एमाटे श्चाजीविकाहेतुयें यंत्रपीलनकर्म निषिद्धवे.

१ वीज़ुं निलंठन कर्म ठे. ते एमके, वलदनुं नाक विंधावे, घोडाने माग देवरावे, गाय, वलदना कान कपावे, शिंगडां ठेदावे, पुछ ठेदावे, उंटनी पीठ उपर लदावे, गाल नासिका प्रमुखने विं धन करावे, बलद घोडाने खासी करावे, माम देवरावे, खोज क रे, करावे तथा कोटवाली खिजमत लेइने नवो कर वेसाडे. इजा रो लेइने आकरो कर वेसाडे, चोरधाडमांवासीनी पेरें दोडा दोडी करे, मनमा एम जाणे के मारुं नाम जगत्मां प्रसिद्ध थाय; ए माटे निर्दय शस्त्र चलावे. इत्यादिकनो रसिक थइ जे नरसां कार्य होय, ते, करे तेने निलंबन कर्म कहीयें. ए निलंबन कर्ममां घ णा पंचेंडियोने कदर्थना थाय; घात थाय. श्रापणा परिणामम ध्यें श्रतिनिर्दय पणुं थाय. श्रने एथी करी, डुर्गति प्राप्त थाय. ए माटे ए निलंबन कर्म श्रति निषिद्धते.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म. ते केटलाएक जीव मिथ्यात्व श्वने श्रज्ञानना जोरथी विपर्यास कहेठे के, आ वन घणुं मोहोटुं थ इ गयुंढे, जिह्वादिक लोको छुःख पामता हुरो; ए माटे ए वनने दव लगाडी दइयें तो बधुं वन बलीने साफ थई जाय,श्रने एथी महा धर्म थरो. फरी नवी कुंपल निकलरो, ते इक्तो ज्यारें फलरो त्यारें **लोको तेनां फल फूल खा**हो, ए**थी धर्म थ**हो. एवो उपदेश दे तथा देवरावे. वली वनमां दव लगाडवाथी धरती माताने बोजो उतरहो, ते जग्या खाली थरो, त्यारें तेमां धान्य निपजरो, खेती नवी निपज रो छने लोको सुखी थरो. वली जूनांतृए, काष्ठ, बली जरो छने नवां तृण रस जस्वां थशे, तो एने गाय,वाढरडां सहु सुखश्री चरशे. वली बलेली जूमिमध्यें धान्य पण सारुं नीपजरो. एवी रीतें मूढ पुरुष, पोतानी मातबरी देखाडे. लोजनी लगनथी पापकर्म करतो शंका पामे नहीं. वली चोर चखार जिल्लनो एमां वासठे,ए सौनो जय मटी जरो. एवी न्यायरीतीथी वनमां दव लगावे, वनकटी करावे तथा छाजीविका निमित्तें महोटां महोटां गहन वन, जेमां छाववुं जवुं डुष्कर पडे; ते माटे पण वनने अग्निसंस्कार करे, त्यारें त्रसजीवो वाघ, रींठ, चित्ता, गेंमा ए सर्व जागी जाय. पोताना स्थानथी ढूटे. सर्पादिक जुजपरिसर्प्प, वल्ली कीडी, मंकोडी प्र मुख तो सर्व हणाय. एवुं मनमां न आवे के, वनने अग्निसंस्कार करतां, ए जीवो हणायानुं पातक श्चापणने चढरो ? तेम तो क हेज नहीं पण कहे के, वनमां दव दीधाथी सुखें हरवुं, फरवुं त था आवंदुं जवुं थरो. रस्तो सारो थरो. पण एवी हिंसा निश्चयें

13

केहोर, पांच होर, अधमण अथवा मण पर्यंत सर्व धान्य होकाववुं प डे, तेंटखुं ढूट राखे. अग्निकर्मनी चीज खेवा देवामां आवे, तेने अ ग्निकर्म कराववुं पडे, तेनो आगार. तेने वेचवानो आगार. बीजुं सर्व निषिद्धे. कंसारा, ठंठारा तथा खोहार प्रमुख पासेंथी घर संबंधी वाशण कुशण प्रमुख करावे, तेनो आगार. खज्जा, दाह्ति ण्य,कुटुंबादि कार्यें सहाय आपवानी, आदेशादिक देवानी जयणा.

१ तथा वनकर्ममां घरसंबंधी बलद, घोडा, गौ, उंट प्र मुखने वास्ते घांस प्रमुख राखवां तथा मंगाववानी जयणा. पो ताना वगीचाने माटे उत्तर प्रत्युत्तर देवानो आगार.

३ शाडीकर्म मध्यें नाव, गाडी, ठकडा, वेल, रथ, बलद औ घरना होय तेने सुधारवा पडे, तेनो छगार. निकामां शकटादि क होय, तेने वेचवानो छागार, लहेणामां छाव्यां होय तेने राखे छाथवा वेचे, तेनो छागार.

ध चोथुं जाडीकर्म. तेमां पोतानां घर, हाट, नाव, गाडी, हरेक वाहन प्रमुखने जाडे देवानी जयणा. तेनो पण श्रागार.

थ फोकीकर्ममां पोताना घरसंवंधी कूर्ड, जोंयरुं, टांकुं, ताजखा नुं प्रमुख कराववानो आगार. घरनी खाल कराववानो आगार तथा घर कराववानो आगार तथा जवाहीरनो व्यापार, घरसंवंधी नंग, घाट घूटने माटें तोडाववुं, फोडाववुं तथा मोती विंधाववां, तथा घरने माटे पठरनी खाण कढाववी, तेपठरनो घाट घडाववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा, दाक्तिएयें, साहाय्य करवुं पडे तेनी जयणा. घर खरचमां फोडीकर्म जे जे आवे, तेनो आगार.

६ ठठा दंतवाणिज्यमां घरखरचने विषे पोताना जोगना श्रधि करणमां खेवा मंगाववानो आगार. आगल व्यापारनी विगतमां जे परिमाण करी हूट राख्युं होय, तेनी जयणा. खेणा देणामां आवे, तेनी सरजरा करवानो आगार.

सप्तम जोगोपजोग विरमण व्रत.

जयणा तथा घरखरचमां जे जंत्रपीलन आवे, तेनी जयणा.तथा पोताना श्रंगना जोगादिक निमित्तें श्रत्तर चूत्रा प्रमुखना यंत्र,त था रोगादिक कारणे कोइ औषध करवानो यंत्रकरवो, कराववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा दाक्तिण्यें तथा फरमारों नहीं ढूटतां जे करवो पडे, तेनो आगार. इति यंत्रपीलनकर्म.

११ बारमुं निलंजनकर्म. तेनो व्यापार करवो निषिद्धे. पण कोइ राजादि, आग्रह करीने अधिकार आपे, तेमां जे निलंजन कर्म आवे, तेनो आगार. तथा घरसंबंधी पद्यु वालकादिकने करवुं पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे तेनी तजवीज करवी पडे, तेनी जयणा. २ १३ तेरमुं दवदानकर्म. तेनो निषेधजठे, पण रस्ता वच्चें एटखे मार्गें जतां कोइ ठेकाणे रहेवुं थाय, त्यां रसोइ प्रमुख करतां वायुना प्रयोगें करी यत्न करतां पण अग्नि, वनमां पसरी जाय, ते ने जेलववानी शक्ति नथी तो मारुं व्रत एथी न जांगे. ए अग्नि जेलववानी शक्ति होय, तो हुं ते अग्निने शांत करवामां आलस करीश नहीं. वली घरखरचमां कोइ रीतें दवदान कार्य करवुं प डे, तेनी जयणा. इति दवदानकर्म.

१४ चोंदमुं शोषणकर्म. तेमां सरोवर, डह, तखाव प्रमुख जखाशयोने शोषाववानो निषेध, परंतु घरप्रमुखना कूवाने सुधार वा गखाववानो श्रागार, टांकुं धोवानो श्रागार. नदीमांवीरडो कर वो पडे, तेनो श्रागार. बीजा पण घरसंबंधी कार्यमां जे महोख्लामां रहेता होइएं, तेमांना उचित पंचनी सरासरीयें कूवाने निमित्तें कांइ खरच देवो पडे, पाणी सारुं पीवा माटे श्रागखना कूवाने शो षावीने नवो करवो पडे, तेमां तेना खरच निमित्तें पंचनी सरासरीएं कांइ खरच श्रापवुं पने, तेनो श्रागार. इति चौदमुं शोषणकर्म. १५ पंदरमुं श्रसतीपोषणकर्म. तेमां घर परिवार संबंधी न बूटे, तेनी जयणा.पण चाह धरीने, तेर्ठनुं पोषणकर्म न करुं. प ७ सातमुं लाखवाणिज्यकर्म तेमां पण दंतवाणिज्यनी परें जा णवुं. घरखरचने माटे कोइ कार्य पडवाथी खेवुं वेचवुं पडे, तेनो त्र्यागार. इति सातमुं लाखवाणिज्यकर्म.

ण् आठमा रसकुवाणिज्यमां घरखरच संबंधी जे परिमाण क री राख्युं होय, तेनो आगार. व्यापार संबंधी जे राख्युं होय,तेनी जयणा. बहेणामां आवे तेने वेचवानी जयणा. बज्जा दाह्तिखयी केफरमासथी सरजरा करवी पडे, तेनी जयणा तथा आपणी तैय्या र चीज कोइ सारा माणसें मागी तो यथायोग्य ते वस्तुनुं मूझ बेइने देवी पडे, तेनो आगार. इति रसवाणिज्य आठमुं.

ए नवमुं केशवाणिज्यकर्म. मूल छाजीविका हेतुयें आदरकरी व्यापार करवानो निषेध. घरसंबंधी पशु वेचवानो आगार. बहे णामां छावे, तेने राखवा वेचवानो आगार. घरमां पुत्रादिकना उपरोधें करी तोता, मेनां प्रमुखने खेवां पडे तेनो आगार.पोताना जोगनिमित्तें घोडा प्रमुख वेचीने, बीजां खेवां पडे, तेनो आगार. कोइ संसारीने स्नेहथी उचित घोडा प्रमुख खरीद करी देवानो आगार. राजादिकने प्रसन्न करवा माटे कोइ जातिनां चतुष्पद वे चातां खेइने नजराणो करवानो आगार. फरमासें करी केशवाणि ज्यनी न चालतां सरजरा करवी पडे, तेनो आगार. ए केशवाणिज्य.

१० दशमुं विषवाणिज्य. ते ए के, जे जे आगल व्यापारमां रांख्यां होय, तेनो आगार. तथा घर खरचमां जे विषचीज ओ पधमां आवे तेनो आगार. तथा पोतानी मोजने माटे घरवख रीमां जे जे शस्त्र खेवामां आवे, तेने राखवानो आगार. वसी ते कराववां, समरावां तथा मंगाववां पडे, तेनो आगार. बहेणामां आवे, तेनी जयणा. इति दशमुं विषवाणिज्य.

रर अग्यारमुं यंत्रपीलनकर्म. तेमां आगल जे जे व्यापारने अधें राख्यावे ते व्यापारमां जे जे यंत्रपीलन किया आवे, तेनी

सप्तम जोगोपजोंग विरमण वत.

रिग्रह्परिमाणमां पशु राख्यांठे, तेर्जने पोषण करवानो आगार. तथा म्लेखादिक राजानी साथें व्यापार आजीविका अर्थें, पोतानी गरजने माटें आहारादिकें पोषण करवुं पडे, तेनो आगार, पण पोतानी इछाथी ढूट नथी, तथा पोताना जदयिक जावथी मल्युं जे पाप कुटुंब, तेर्जनुं जरण पोषण करवानो आगार; पण एथी करी हुं महारो अवतार सफल थयो, एम जाणुं नहीं. तथा लहे णामां आवे तेनुं प्रतिपालन पोषण करवुं पडे, तेनो आगार. दया बुद्धियें श्वानादिकने पोषवानो आगार. एवी रीतें पंदरे कर्मादान दोष तजुं. ए पंदर कर्मादानमां जे जे चीज घरसबंधें, दाक्तिखता संबंधें, इत्यादि न चालतां लहेणा प्रमुखमां आवे, ते कारणें तेमां जे कर्मादान किया करवी पडे तेनी जयणा. अहींयां जे कर्मादान राख्यांठे, एमां एकेक कर्मादानमां बीजां बे, त्रण, चार, कर्मादान जलतां आवे, तेनी जयणा. इति पंदर कर्मादान राखवानी विगत.

हवे ए सातमा व्रतना पांच छतिचार लखेठे. सचित्तेत-

१ लां प्रथम सचित्त आहारनामा अतिचार हे. ते मूल जांगे तो श्रावकने सचित्तत्याप नियम होय. कदापि तेम नहीं तो, सचि त्तनी संख्या करी राखे. लहां सर्व सचित्तनो परिहार करे अथ वा सचित्तपरिमाणवंत थाय. वल्ली कोइ अनाजोग दोषथी स चित्त आहार करे, तथा अपरिणतोदक तो त्रण उकाला पाणी उपर आवे, लारें ग्रुऊ पाणी थयुं. तेमां एक, बे उकालानुं पा णी अपरिणतोदक कहेवाय. ते पाणी अचित्त थयुं, एवुं जाणी ने पीए तथा सचित्तने फासु करतां कहीं काचुं रही जाय, एने पण अचित्तबुद्विथी खाए. आवकने तो सचित्त चीज अचित्त करवाने अही तरेहथी शस्त्र लागे, त्यार पही अंतर्मुहूर्त वीत्या केडें लाए. त्यां अचित्तबुद्धिथी सचित्तने लाय, ज्ञथवा अना जोगादिकें खाय, तो ते प्रथमातिचार, सचित्ताहारनामा जाणवो.

सप्तम जोगोपजोग विरमण वत.

१ बीजो संचित्तप्रतिबंध अतिचार. ते जेने सचित्त नियम ढे, ते तरतनो उखाडेलो एवो जे खेरनी गांठनो गुंदर प्रमुख ते ने खाय. ते त्यहां गुंदर तो अचित्त ढे पण सचित्तनो स्पर्श ला ग्यो हतो, ते दूषणढे. तथा पाकी केरीना समुदायने वृसे, रायण बोर, समुच्चय सहित मुखमां मेहेले, अने मनमां उपयोग एवो आणे के में तो ए फल पाकुं चूग्रुंढे. ए अचित्त थयुं एमां शो दोष ढे ? पण एवो उपयोग न जाणेके ए फलनी अंदर, गोटली स चित्तढे. ए माटें सचित्त त्यागी होय, ते एवी चीज अचित्त बुद्धि एं खाय; त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपकाहारातिचार ते अचाबित आटो प्रमुख तेणे अग्निसंस्कार न कस्त्रो होय ने काचो आटो फाके. जे कारण माटे श्री सिद्धांतमां आटो, दखा पठी केटला एक दिवस, सचि त्रमिश्र रहेठे, पठी अचित्त थाय, एवुं लख्युंठे. आवण जाडवा मां आटो, दखा पठी पांच चिवस सुधी श्रणठाण्यो सचित्त मिश्र रहे, आश्विन मासमां चार दिवस सचित्त मिश्र रहे. कार्त्तिक, मा र्गशीर्ष अने पौष महीनामां त्रण दिवस, सचित्त मिश्र रहे. मा हा अने फागण महीनामां पांच प्रहर, सचित्त मिश्र रहे. मा हा अने फागण महीनामां पांच प्रहर, सचित्त मिश्र रहे. वैत्र वेशाखमां चार पहोर सुधी, सचित्त मिश्र रहे; पठी अचित्त याय. ज्येष्ठ आषाढमां आटो, त्रण पहोर सचित्त मिश्र रहे; प ठी अचित्त थाय. ए माटे काचो आटो अण ठाण्यो अचित्तनी बुद्धिएं खाय, तो तेने त्रीजो अतिचार लागे.

ध चोथो छुष्पकाहारातिचार. ते कांइ काचो, काइ पाको ए वो, जेम सर्व जातिना ठंखा, पोंक ठंवी, जुवारनो पोंक इत्यादिक सर्वजातिना खीखा पोंक वीजथी जरेखा ते श्रग्नि संस्कारमां केट सा एक दाणा श्रचित्त थाय, केटखा एक दाणा सचित्त रहे श्रने ते ने श्वचित्त बुद्धिश्री जाणे, केमके श्रग्निसंस्कार थयो त्यारें श्वचित्त थ या ; एवुं जाणी खाय, तो तेने चोथो छुष्पकाहारातिचार खागे.

८ पांचमो तुन्नोषधिजक्त शातिचारने, ते तुन्न एटले असार, जेना खावाथी कांइ तृप्ति न थाय अने आरंज तो घणोज थाय. जेम बोडा प्रमुखनी अति घणी असार ठीमी, जे बोडानी अंदर था यन्ने, एना खावाथी कांइ आत्मानी क्रुधा प्रबल जांगे नहीं अने प्रसंगदोष लागे. वली कोमल वनस्पतिमां कोइ रीतेंथी अनंतका यनी शंका रहेने. रसर दिपणुं वधे. कोमल फल फली प्रमुखने अचित्त करीने खावानो व्यवहार पण नथी. ए माटे बोडा प्रमुख नी कोमल फली खाय अने मनमां जाणे के, बोडानी फली तो मारे खावी योग्यने. एवं जाणी करीने खाय; पण एम न जाणे के तुन्नौषधिजक्तण दोष लागेने. इति पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

इति श्री द्वादरांव्रतविवरणे सप्तम जोगोपजोगविरमणनामा दि तीयगुणव्रते पंक्ति श्रीज्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा॥ ७॥

॥ अरथ ॥

॥ अष्टम अनर्थदंग विरमणव्रत प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥

दादश वतकी टीपमें, कहे सात निरधार;

अष्टम अनर्थ दंगका, जेद लिखुं सुविचार ॥ १ ॥

१ प्रथम अर्थदंग. एटले जे सप्रयोजन धन धान्य क्षेत्रादिक नव विध परिग्रह संबंधि हानि इद्धिरूप. जे कारण माटे धनष्ट कि निमित्त, संसारी जीवनें घणां पापनां कारण सेववां पडे, तेवारें साचुं जूठुं बोल्या विना रहेवातुं नथी. पापोपकरण मेलववां पडे डो, मनसुबा करवा जोइयें अनेक विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं पडे; जे कारणे धनादि परियह, छाजीविका हेतुयेंढे. ए माटे धनवृद्धि निमित्तें जे जे छाश्रवसेवन करवुं पडे, ते सप्रयोजन ढे, ते कारण माटे ए छार्थदंकढे.

१ बीज़ुं एमज ज्यारें धनहानि थाय, खारें पण एवुं कारण पामीने ग्रहस्थने ते धनहानि निवारवाने छार्थें छानेक निकल्प करवा पडे, पापनां स्थानक सेववां पडे, ते पण छार्थदंकडे, जे का रण माटे संसार संबंधी सुखनुं मूलकारण व्यवहारें तो धनजडे; ए माटे एने वास्ते छात्मा दंकाय, ते छार्थदंकडे.

३ तथा त्रीज़ुं पोतानां खजन कुटुंब परिवारादिकने वास्ते तथा आवरुना योगें जे जे अवइय, पापस्थानक सेववां पडे, ते पए अर्थ दंडठे, जे माटे ज्यांसुधी प्रबल कषाय निवाखुं नथी, त्यांसुधी खजनादि पाश ढूटे नहीं. संसारमां इंडियसुखनां पुष्टहेतु ए ख जनजठे, व्यवहारमां हेतु कहेवायठे. आपएा सुखें सुखी, अने आपएा डुःखें डुःखी. एमाटे एठने सारु पापस्थानक सेवे, ते पए एक अर्थदंम्हे. जे माटे संसारी जीव, पुजलविलासी, पुजला नं दीठे. ते प्रबल अविरतिकषायोदयथी एठने ठोडी शकतो नथी.

४ छने चोथुं पंचजोगना आसेवनथी केटली एक वेला इंडि यो तृप्त रहेठे. आत्मा प्रमुदित रहेठे, ते पण अर्थदंमठे. ए चार प्रयोजनमां कोइ पण प्रयोजन होय नहीं, अने जे पापदृत्ति करे, ते अनर्थदंम कहेवाय. कारणविना फोकट ज्यहां ज्यहां आत्मा दंमाय, तेथी जे जे डुष्कर्मनी वृद्धि थाय, ते अनर्थदंम कहेवा य. एना चार जेदठे, ते लखेठे.

१ प्रथम अपध्यान अनर्थदंग. १ वीजो पापोपदेश अनर्थदंग. ३ त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंग. ४ अने चोथो प्रमादाचरित अन र्थदंग. तेमां अपध्यान अनर्थदंगना वे जेद ठे. १ एक आर्त्तध्या न. १ वीजो रौडध्यान. त्यां वली प्रथम आर्त्तध्यानना चार जेदठे. तेमां १ प्रथम अनिष्टसंयोगार्त्तध्यान. १ बीजो इष्टवियोगार्त्तध्यान. ३ त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. ४ अने चोथो अग्रशोचनार्त्तध्यान.

१ तेमां इंडियसुखने विघ्नकारि ऋनिष्टशब्दादिक तेर्जना संयोगनी त्रणे काल चिंता रहे के,रखे मने ए अनिष्ट शब्दादिक मले ? आ मने नवविध परिग्रह जे मख्यांहे, तेर्ठनो रखे वियोग पडे ? अथ वा इष्ट एटले वाहालां माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने मित्र प्रमुख नुं विदेशगमन अथवा मरण थाय, तेणे करी घणी चिंता करे, खाय पीए नहीं. वियोगनां छुःखें करी आत्मघात करवानी चिंतव ना करे, आदरे, आखो दिवस गुस्सामां रहे, तथा घरमां आ कपुत वे, ए जाइ, बे दिलवे, ए बापनुं दिल मारा पर नथी, आ स्त्री न ठारी मली हे, ए स्त्री माराथी बेदिली करे हे, एनो कशो जपा य पामुं तो ठीकढे. एमज स्त्री विचारे के, मारी शोक्य मने जूंमी मलीने, जर्त्तारने जोलवे ने, कोइ दिवस जर्त्तारने माराथी जुदाइ करावरो, ए माटे एनो कांइ उपाय पामुं तो सारुं थइ जाय. सेव क होय ते एवुं विचारे के खामिना महोढा आगल फलाणो महा रो छुइमन चढ्यो ढे, तेमारो नाश करशे, मारी राह रीति ढे ते गमावी देशे, खामिने कांइ मारुं साचुं जूठुं कहेतो हशे, मारी चा करी बोडावरो, त्यारें हुं हुं करीश? एनो कांइ उपाय पामु तो सारुं ढे. एना निग्रहने मार्टे कोइ यंत्र,मंत्र,कामण,मोहन,वशीकरण शोधे. कोइ साचुं अथवा जूठुं तेनुं ठिद्र ताके,तेने अठतुं आल दे, लोकोना मुख आगल तेनुं बुरुं बोले. वली ते पूछतो फरे के, एनो निग्रह करवावालो कोइ हे? तेवामां कोइ धूर्त जटिल प्रमुख बो सी **उठे के, फ**लाणा त्रस जीवनो घात करीने बलिदान कर, तो श त्रुनियह होय. ते सांजली ते मूढ, ते जीवघात पए करे अने ते पुरुषनुं मरण वांग्रे, पण मूढ एम न विचारे के, जे पोताना ग्रुऊमागेँ अने साचे दिखें सेवा करशे, तो तेने कोण काढी मे

तरो ? पुष्पोदय ज्यां सुधी ठे, त्यां सुधी कोइ बुरुं करी शके नहीं. ए प्रमाणे जूठी श्रात्तिं विचारे. इत्यादिक सर्व संबंधें संसारी जीव, श्र नर्थें दंमायठे. तथा श्रागलथी पोतानी श्रातुरतायें श्रशुज कारण मल्या विना प्रथमज मनमां कुविकब्प करे, जे छुरमनना कुलमध्यें फलाणो सामर्थ्यवान् पेदा थयोठे, ते मने छुःख देशे; एमाटे राज्य द्वारादिकें एनी श्रावरु जाय, श्रने दंम पामे तो सारुं थाय. जो ए घणी तस्दी पामे, तो ए गाम ठोडी करीने जागी जाय; एनुं जो कोइ बिद्ध पामुं तो फलाणाने कहुं; श्रने ते राजदरवारमां जाहेर करे, एटले पोतानी मेले छुःख पामशे. एवी विचारणा ते मूढ करे, श्रने ते जेने वेरी गणतो होय, तेना दिलमां तो कांइ पण होय नहीं; परंतु ए श्रज्ञानी एवा श्रनर्थमां पडे.

वली बीजुं पण ते मूढ विचारे के, ए केत्रमां चोर घणा थया वे. एउने हाकेम, वानी फोज राखीने ए चोरो ज्यारें एना दावमां आवे त्यारें सर्वनो नियह करे, तो सारुं थाय. पण ते चोरोनो तो ज्यां लगी पूर्वपुष्योदय प्रवलठे, त्यांसुधी एउंनुं कांइ पण वगडे नहीं; परंतु ते कुविकब्पवालो जे चिंतवेढे तो तेने चोर मारवानी आर्त्तध्याननी हिंसाकिया बेठी. वली कोइ अमुक मातवर थयोठे ते, ए आपणी वरोवरी करशे, अमाराथी आगल पग धरशे, ए माटे ए इरामजादानो एवो उपाय करवो के, एने फरी उपर आ ववाने दाद फरियाद लागे नहीं. इत्यादिक अनर्थोंने वेठो वेठो विचारे, पण ते मूर्ख मनमां एवी विचारणा न विचारे के, मारे कह्ये द्युं चवानुंठे ? एनो पापोदय चरो, त्यारें पोतानी मेलें होण हार हरो, ते मटवानुं नथी; तो शा माटे ए विचारवुं ? इत्यादिक अपध्यानार्त्त छनर्थदंग ठे. विना मतलव एवी रीतें पापजाल पोतें वांधे, ए अनिष्ट संयोग अने इष्टविशोग वे आर्त्तध्यानना जेद कह्या. ३ तथा त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. जे रखे मारा शरीरमां कदा

श्रष्टम अनर्थदंन विरमण व्रत.

पि कोइ वखत रोग थाय ? सर्वरोग माराथी दूर रहे तो सारुं? एवुं विचारीने कोइने पूठे के फलाणो रोग केम करी थायडे ? त्यारें ते कहेके, फलाणी चीज खाय तो उतावलें रोग थायढे, अने फलाणी अजस्य वस्तु खाय, तो कदापि पण रोग थाय नहीं लारें ते अनद्यादिक खाए, वक्षी ते बीजाने बतावे. तथा ज्यारें शरीर मां रोग जत्पन्न थाय,त्यारें घणी हाय हाय करे, घणो आरंज करे. घणुं डव्य खरचे, अने विलाप करे के हाय हाय, आमारो रोग क्यारें जरो !!! वली ते पलें पलें अने घडीयें घडीयें ज्योतिषीने पूछे के, मारी दिनदज्ञा केवीडे ? आ रोगनी व्यथा क्यारें मटज्ञे? वली वैद्यने पूर्वके, हे महाराज ! मारा दिलमां महोटी शंकाते. तमाराथी कांइ कर्त्तव्य ढानुं नथी. मारा उपर कोइयें जाड कखुंह रो ? फलाणो माणस मारा उपर खुनस राखेठे. तेणे मारा उपर को इ पासें कांइ जाड़ कराव्युं हुन्ने, ते केवी रीतें जन्नो. कराव्युं होय तो हवे तमे साजो करो. एवी रीतें नवी नवी शंका धरे अने रोग जवा माटे कुलविरुद्ध धर्म आचरे, अनद्दय खावाने तैय्यार थाय छने छकरणीय करवाने पण लागे. एना मनसुबामां सदाय एम रहे. ने जे जे रोगढेदननी चीज जडी, बुटी, औषधि, यंत्र, मंत्र, उतारो, जाडो, हजराय. ए सर्वनी चाहना राखे के ए चीज कोइ वखत मारा काममां आवशे. नजरमां राखे के ए सर्व मारा काम नीडे. एने आपणी पासें अमलमां राखी होय तो सारुं, फरी एवी चीज हाथ नहीं चढरो. एवुं जाणीने ते जडी बुद्दी सर्व एकठी करवा लागे, ए सर्व रोगनिदानार्त्तध्यानढे.

४ तथा चोथो अप्रशोच आर्त्तध्यान, जे आगला कालनी चिंता करे के, आगली शालमां आ विवाहनुं काम करीशुं, एवी तरेहथी विवाहना ज्ञव सरनजाम करीशुं, तथा फलाणा साथें कज़ियो थाशे त्यारें आवी वातोथी अने आवा जुवापथी एने हरावीशुं. एवी रीतें काम करीग़ुं तथा एं मेहेल, हवेली एवी तो वनावी ग़ुंके, तेने देखी करीने सर्व अचंबो पामे, तथा फलाणा पुरुषें केत्र वगीचो बनाव्योठे, तेवो हुं पण बनावीश. अने ते एवो बनावीश के, बीजा सर्वना बगीचा एना आगल नाकार थइ जाय, अने सर्व डुइमननी ठाती बल्ने एवो बनावीश.

तथा वली आ शोदो जे आपणे कस्वोढे, ते आगल जतां ज्यारें घणो मोंघो जाव थरो, त्यारें अमें पोताने मोढे माग्युं मूट्य खेइर्शुं, बीजा कोइनी पासें ए माल नहीं मलरो, तो पो तेंज गरजना मास्या लइ जरो, एवां वचन, आर्त्तध्यानथी बोखे, अने विचारे के, एटला पैशानो हाथ मारी खेइर्शु. हवे शी फि कर ढे ! एवी रीतें दिलमां आगलथी मलकाय.

तथा थ्या चीजनवी ढे, कोइनी पासें नथी. माटे कोइ सारा शि रदार, राजा, पादशाहने ठेकाणे देखाडी शुं तो तेर्ड पण एने देखी, चा हना करीने खेशे, मने पण मान छापशे, प्यार करशे, उपर शिरपाव मखशे, श्रापणुं पण काम थइ श्रावशे, पेशा मोढे माग्या खेइशुं, श्रने तेणें करी सारी सारी मोज मारिशुं, श्रने खोको सर्व जोइ रहेशे. एवा एना मनोरथ प्रमाणे कांइ थयुं तो ढे नहीं, श्रने ते पहे खांज मनमां महामय थइ रहे, खोटां कर्म, श्रागलथी वांधे. श्रागलथी शुं जाणी यें के शुं थशे ? चीजमां नफो मलशे के नहीं मखे ? श्रथवा ते चीज, कांइ खोवाइ जशे के रहेशे? एवी तो खवर रहेती पण नथी, श्रने वातो करवा थकी कर्म तो साचां वांधेढे. ए पण श्रार्त्तध्यान.

श्रिथवा महारा घरमां अनाज संग्रह घणो ठे, अने आगला व र्पनां चिन्ह माठां देखाय ठे. अने ज्योतिपवाला पण एम कहेठे के आगलुं वर्ष वहु निषिद्धठे, ए माटे जो चार दाणा कोइ राखरो तो चार पेशा सारी पेठें मलरो, माटें अवस्य छष्काल पडरो, तो पण वेचीश नहीं, तो धान्यमां त्रगणो चोगणो नफो मलरो, तो पण नहीं श्रष्टम अनर्थदंग विरमण व्रत.

वेचुं. एम जतां जतां धान्यनो जाव श्रमारा मनमानतो थरो, त्यां रें आठ गणो नफो, अने ते उपर वली व्याज खाइग्रुं, त्यारें वेच वानी वात काढग्रुं. ते वखत पैशा घणा मलशे, त्यारें फरी वली दूर देशांतरथी बीजुं व्यनाज मगावर्शु, तेमां बीजा घणा पैशा मल रो. ए प्रमाणे डव्य वधरो, लाखो रुपैय्यानी मोज करहाुं, पढी वसी कोइ श्वनेक तरेहना व्यापार करद्युं, श्चापणी नजरमां सर्व व्यापार बे, सर्व व्यापारनी आपणने माहिती बे, कोइ व्यापारमां वगाइयें नहीं,कोइ रोहेरमां शाहुकार साथें साटुं शोदो लगावद्युं,कोइ जग्या यें आपणो गुमास्तो रहेँदो, त्यांनी हुंनी श्रमारा जपर लखी मोक लरो, अने वली त्यहांथी हुंमी विगेरे अमो मगावी लेहाुं. अथवा कोइ बंदरश्री श्रापणने गम पडे तेवी चीज मंगावी खेइग्रुं, तेमां पण चार पैशा मलता जरो. छने कोइ वर्षमां चार पांच रकमो सारी छा वरो तो लक्ताधिपति, कोटिध्वज नाम काढीने जना रहीशुं. तेवारें श्रापणुं पण नाम सर्वोपरि सर्वशिरोमणि थरो. सर्वरोतें श्रापण ने श्रासान थइ जरो, श्रापण कोइने पण खातरमां नहीं खावर्यु. एवामां कोइ ठेकाणे सगाइ सादीनो पण जोग बनी जाय, तो घणुंज सारुं. पढी घर, बार, हवेेेसीठं, छहीयांज फरी बनावडुं, श्रने ढोकरां, ढैय्यां सर्वनो योग मली जाय, मनना मनोरथ सर्वे फले.त्यारें छुर्मननी बाती जपर साहेबी करी मग दलीशुं,त्यारेंहैंडुं वरशे.ए शत्रुर्वपण दीन थइ रहेशे, एम वली राज्यदरबारमां पण प्रख्यात थइ्हां. त्यारें आपणा प्रिय मित्रोने उंचे अधिकारें चढा वद्युं, मुइइ्र्जने काढी मेलावद्युं. एटले जेम जेम आपणो जापतो थरो, एम एम मननी इन्ना प्रमाणे सर्वे करीद्युं. जोग विलास सर्व करशुं. श्रने जो छहींयां छमारी सादी थइ तो घणीज खु शवखती करीने कोइ समयें स्त्रीयादिक पोताना जीवश्री गुस्सो करी बेसरो, तो ते समयें तेने मनावद्युं, सारी सारी रीतें वस्त्र

जरीयान विगेरे सारी सारी वस्तु आपशुं, त्यारें ते राजी थशे, इत्यादिक मन कढपना जूठी साची बांधे, अने घणां कर्म जपा जें. ते माटे ए आर्त्तध्यान ढोडीने जो धर्मनी करणी करे तो सारी ढे. अने आगले कालें आ जवने विषे धन, समृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, मान, मरतवो चाहे, परजवने विषे देवत्व, इंडत्व प दवी चाहे, ते अग्रशोच आर्त्तध्यान कहीयें.

हवे रौडध्यानना चार जेद खखे वे.तेमां पहेलो हिंसानंदरौड, बी जोम्टषानंदरौड, त्रीजो चौर्यानंदरौड छने चोथो संरक्तणानंदरौड.

१ तेमां प्रथम हिंसानंदरौड. ते त्रस, स्थावरजीवोनी हिंसा क रीने पोताना दिलमां हर्ष करे, घणा आरंजनी चीज जे घर, हवे बी, वगीचा प्रमुख, ते बनावे. पठी तेनी तारिफ, लोकोना मुखेंथी सांजले, छने मनमां वहुज खुशी थायके, जूर्ड ! में पोतानी खबर दारीथी केवुं काम कहीने कराव्युं ठे ! के जे कामनी सर्व लोको तारिफ करे हे. अमरा जेवी अकलनो फेलावो थोडाज जणोनो हरो. मारा पैशा जे खरचाया, ते सर्व सफल थया. तथा रसोइ, खावा प्रमुखनी चीज वनावे, तेमां बहुजातिनो मशालो, तथा जदय वस्तु साथें अजदय वस्तु मेलवी⁻अनेक अग्निसंस्कार देइ ने खादिष्ट वस्तु वनावे. पठी सर्वने बोलावी करीने नात, जात, मिजमान प्रमुखने जमाडे, त्यारें ते रसिया लोक, जोजन करी करीने रसोइनी तारिफ करे, अने अहेके आवी वनेली वस्तु घणी वार खाधी हरो, पण जाइजी ! आजनी मजा तो रंजने. आज नी मजानी ग्रुं तारीफ करियें ? जेटला मशाला दीधावे, तेनी खुश वोइ घणी प्यारी लागे हे. एवी एवी वहु तारीफ सांजले, तेथी मनमां खुइी थाय. श्रने विचारेके फलाणे माणसें, मिजमानी क री हती, तेनी निंदा थायठे छने छमे केवुं जोजन कराव्युं ? जेणे करी, सर्व आमारी तारीफ करेठे. फरी वली आवो अवसर पामी

श्रष्टम अनर्थदंग विरमण वत.

204

र्गुं तो वसी एनाथी पण घणी सारी रसोइ वनावी ग्रुं,तया राजजोज न श्रज्ञद्त्य चीजनी नकल बनावीने, तेनो आशय धरीने खाय,खवरा वे, ज्यारें रसिया लोको जमणने वखाणे, त्यारें जाणेके सर्व सफल थयुं छने पोताना मनमां खुशी थाय. जुवो ! हुं केवी चीज बनावुं **ढुं ? मारा जेवो को**इ होंशवालो तथा जोगी जन नथी. **अथवा राज** विग्रह युद्धादिकनी वात सांजलीने खुशी थाय, अने विचारे के ए राजायें सारुं कर्छं, राजा महोटो शमसेर बाहादूरवे. आगल पण एना बाप, दादा, पादशाहीमां महोटा प्रख्यात हता अने शिपाइ गीरीमां घणा मजबूत हता, तेना वंशनो एढे. एना वडवार्डयें. आ जग्यायें फतेह मेलवी, किल्लो पण खाली कराव्यो, बडा श्रकल ब हादूर हता.महोटा मोहोटा संग्रामोमां छुश्मनोने जेर कस्वा हता, सर्वनां पोताने चरणे शिर नमावी करी, चोतरफ पोताना अमलनो डंको वगडाव्यो हतो, हमणां पण सर्वे जुवान एवाजठे, एउंनी ज्यहां ज्यहां चोकीढे,त्यहां त्यहांरस्तामां पडी चीजने कोइपण उपाडतो न थी;तो बीजुं ग्रुं कहीयें?फलाणो सुनट,एकज चोटमां सिंहने मारी ने पोतें एकलो निर्नय थइ तेने उन्नो चीरी नाखेंठे,बीजाथी एवं र्गु थरो? एम कहीने शाबाश, शाबाश कहे, तथा छुरमनने आप दा अथवा मूवो सांजलीने बहुज खुशी थाए, सीरणी वांटे, मुख म रोडे, मूठें हाथ फेरवे, हाथना पोंहोचा मसले, अने महोटेथी कहेके, ए हरामखोर ऋमारा पुखर्था मरी गयो, एवां एवां कूडां कर्म बांधे; पण एवी खबर न राखेके, तुं कोण मारवा वा लो ? एनी जवस्थिति आवीने पूरी थइ, एना जदयमां हती ते नोगवी, एक दिवस, तमे पए एज रस्तो पकडशो, एनो जूठौ गर्व करवो तेमां कांइ सारुं नथी, छने तुं मारनारो हतो, तो आटला दिवस द्युं काम ढील करी ? माटे एवी जे व्यर्थ विचारणा करवी, ते हिंसानंदरौडध्यान कहीएं. ए सर्वे मतलब विना कर्म वांधवुंहे;

श्रष्टम अनर्धदंग विरमण व्रत.

१ वीजुं मृषानंदरौडध्यान कहेंगे. ते एमके, जूतुं वोलीने हर्ष पामे, छने मनमा विचारेके में केवी केवी वात बनावीने कही के जे वात, सर्व लोकोयें कबूल करी? मारुं कपट कोइएं पण न जाण्युं. वीजा कोइने एवी कला आवडे नहीं.एटला महोटा महोटा अ कल वाला सर्वे मख्या हता पण कोइ बोली शक्या नहीं. में सर्व सवाल जूवाव कस्त्रा. वोलवामां तो घणी करामतडे. बोलवुं ए तो कांइ कामज आवेवे. आ वखतें अमें नहीं होत, तो खवर पडत ? ए सर्वेंनी शी गति थात ? एवी रीतें मनमां फूलाय. वली पोताना छुश्मनने माथे जूतुं तहोमत मेखे, अने ते छुःख पामे, खारें पोतें हरखायके में एने केवो जेर कस्त्रो वे? तथा पोताना फरजंदसंवंधी प्रमुखनी आगल वातो वनावी बनावीने कहेके, छरे मूर्खार्ज! तमे हुं करशो ? अमे केवां केवा फेल कस्त्रांठे? पण ते कोइने मालमज नथी. पोतानुं फेल कोइ जाणे, त्यारें ञ्यकल शानी? तथा दरवारमां जइने, चुगली करतां राजानो खार्थ करे छने मनमां हरखेके, में राजाने केवो वश कस्त्रोठे? एवा एवा मनमां कुविकब्प करे. इत्यादिक मृपानंदरौद्रध्यान कहीयें.

३ त्रीज़ुं चौर्यानंदरोडध्यान. ते एमके, जडक जीवोनी सायें कूड कपटनी वातो वनावीने घणा मूट्यनी चीज ठेक थोडामूट्यमां ले, तथा पारकुं डव्य,व्यवहारथी अधिक ले, तथा चोरी करीने को इनी गुमास्तीमां जूठुं साचुं नामुं मांनी दे, अने पैशा खाइ जाय. कपट कला वनावीने शेठने प्रसन्न करी, पठी मनमा हर्प पामे के, अमारी केवी कलाठे आटखुं डव्य पण खाधुं अने शेठने पण राजी राख्या. मारुं केवुं महापणठे?

तथा व्यापार करे, तेमां ज़्ठा ज़्ठा सोगन खांइने श्रने मीठुं वोक्षी करीने वीजाने प्रतीति करावीने श्रधिक मूखनी वस्तु, थोडा मूखमां के श्रने थोडा मूखनी वस्तु श्रधिक मूखमां वेचे, तोलमां उंढुं आपे, अने वधारे खे, तेथी पोताना घरनां संबंधी श्री वधारे क माय त्यारें मनमां हर्ष पामे अने घरमां फूलाय के, मारा घरमां ए जाइ प्रमुखढे, ते सर्व नकाराढे. कोइमां कोइ वातनी सलुकाइ नथी, तो व्यापारनी कला क्यांथी आवशे ? व्यापार करवो तो बहु मुश्केलढे, अने मोहोटी अकलनुं कामढे. अमे न होत तो ए सर्वनीशी गति थात ? जूर्ड ! आ चीजना शोदामां तमे केटलो न फो लीधो ? अने तेज चीज अमे वेची, तो सर्वनी हजूर आट लो नफो लीधो. ए अकलनुं कामढे. हमारी कलाने तमे नहीं पामो, एम पोताना जीव साथें फूले.

वत्वी राजद्वारमां पोतें जातो होय तो त्यहां साचां जूगं फेल बनावीने लोकोने कर देखाडीने राज्यमां पैशा लेवरावे, अने पोतें पण वच्चेश्री कांई लइने सुखेंश्री खाई जाय. चार वातो सारी तरेहश्री बनावे. कोइने त्यां विद्यानुं फेल बनावीने, इंद्रजाल प्रमुख चमत्कार बतावीने विश्वासघात करी, तेनी पासेंश्री पैशा ले, अने मुखश्री कहेके, अमे तमारुं ड्रव्य फोकट गमावनाऱ नश्री. तमे अमारी तरफनी खातर जमा राखजो. एवी रीतें कही ने पारकुं ड्रव्य, खाइ जाय अने वली खरचावे, अने लोकोमां महोटो विद्वान् कहेवाय, अने मनमां जाणेके जुर्ज ! मारा जे वो कोण अकलवान् बीजो हशे, के आवी रीतें पारकुं ड्रव्य खा य ? लोकमां पण हुं सर्व ठेकाणें विख्यातढुं,महाराज जेवा प्रख्यात तो मारा पिता पण न हता. हुं बालपणामांश्रीज कसाइ करीने लावुंढुं. एवी खोटी कुगतिनी सहायता बांधे, अने फेल करे.

क्यारेंक औषध, जडी, बुद्दी प्रसुख यद्दा तद्दा कंइकथीलावीने तेनी लोकोना सुख आगल घणी तारीफ करे, के हुं आजे औषध बनावुं ढुं, ते रसायनठे. ए औषध, खानारने वहु गुण करवा वा ढुं ठे. में ए औषध उपर घणो पैशो खरच्योठे. एना जपर रात

श्रष्टम अनर्थदंग विरमण व्रत.

दिवस घणीज मेहेनत थइढे. ए औषध, हुं तमनेज आएं हुं, तमे अमारा ढो माटे आएंढुं. वली तमने दररोज खरच पडे ढे, तो जे औषधनी तमे तारीफ करता हता तेज औषधि आज हुं तसने आएंढुं. तेनी तमारे अमोने एक दमडी पण आपवी पडरो नहीं, मात्र मोवतने खातर आएंढुं तमोने गरमी रहेढे, ते माटे ते गरमीने मटाडवाने आज, मने यादगिरी आवी. तेथी में तमने औषध आप्युंढे. ते सांजलीने ते औषध खेनार कहे के, मारी उपर आप साहेवें महोटी महेरवानी करी. तमे अमारी खबर न ढ्यो, तो बीजुं कोण खेरो ? एवी तजवी जथी वातो बनावीने पैशा खीए, महोटी खायकी वतावीने, आगखानी पासेंथी पैशा खेइने खुशी थवुं. इत्यादिक खराब वि कढ्पना करवी, ते पण चौर्यानंदरौड कहीएं.

४ हवे चोथो संरक्तणानंदरौड कहेवे. संरक्तणानंदरोड, एटले परिग्रह, धन, धान्य, घणुंज वधारे. वली अधिक वधारवानी इ डा करे, पाप कुटुंवनुं पोषण करवाने माटे परिग्रह वधारवानी वे हद्द कुंबुद्धि विचारे. अने तेवां कर्म पण आदरे. लोकविरुद्धादि कनी अपेक्तान करे. एमकरतां वली कोइ प्राचीन पुण्यें करी पाप परिग्रह पामे, अने घणुं डव्य मले, त्यारें मनमां घणो हर्प पामे अने कहे के, जुर्ठ ! आ सर्व में एक जीवें पेदा कखुंवे. एवो मारा जेवो कोण हुशीआर थशे ? अने मारा जेटली दोलत कोण मे लवशे ? एवा अहंकारें करी, मग्न रहे. अने तेज परिग्रहमां पो ताना मननी वृत्ति लागी रहे. रखे ए परिग्रहने कांइ नुकशान थाय ? एवी रात दिवस चिंता करे, अने डव्यने घणा यलथी जा लवी राखे, ताला प्रमुखनी खवरदारी राखे, रात्रे सुखें करीने स् ए नहीं. सगा पुत्रनो पण विश्वास करे नहीं. अने पुत्रादिकने क हेके, तमारामां शुं अक्कलवे ? तमारी बुद्धि जती रहीवे कारण

के, तमे निरुचमी ढो, माटे अकलवाला थार्ड. अमारी पर्वे ड्युं तमे क्यारें पण कमाशो? तमे तो धनने बगाडवा वालाठो. अमे ज्यारें नहीं होइशुं, लारें कोण जाणे पाठल तमारा शा हाल थशे ? तमारां लक्तण तो हमणांथीज जाहेर दीठामां आवेठे, जे तमोने श्रागल जतां मोहोटी आपदा पडरों. कमाववानी युक्तितो कोइमां पण नथी, तो आ पेट, केम जरशो ? अरे मूर्खाओ !!! धन कमा ववुं तो महा मुइकेलढे. कमाइ करीने सलुकाइथी एकठुं राखवुं. ते तो वली घणुंज मुश्केल हे. हमणां तमे सारी रीतें जूर्डके, हुं धन कमायो अने कमाउं पणढुं. आज सुधी लोकोमां प्रतीत, श्राबरु छने व्यवहार राखता आव्या वैयें, ते अमारी खबरदा री जाणवी. अने डुंइमनोने पण जेर करीने पग नीचें राख्या हे. मारा बतां कोइ दावो मुद्दो पण काढनार नथी. तमारा जेवा होत, तो धन कमाववुं तो दूर रह्युं, परंतु ते छुइमनो तमने खावा पण देत नहीं, एवा डुश्मनो लागी रह्याबे, ए माटे अमारी श्रकल शीखो, के जेखे करी तमारुं जलुं थाय, ए प्रमाखे परिय हमां चेतना लागी रहे, तेने संरक्तणानुबंधिरौडध्यान कहेंहे. ए सर्व अपध्यानाचरित अनर्थदंन कहेवायहे.

एटले प्रथम अपध्यान अनर्थ दंग. तेना पूर्वे बे जेद कह्या, ते मां एक अर्त्तध्यान, अने बीजो रौडध्यान. ए बेउ ध्यानना जेद, विस्तारथी कह्या. हवे बीजो पापकमोंपदेश अनर्थ दंग लखेठे.

१ बीजो पापकमोंपदेश अनर्थनंग. ते हरेक वखतें कोइने घर संबंधीने लज्जा दाक्तिप्यता बिना पापोपदेश करे,ते एमके तमारा घरमां वाढरडां महोटां थयांढे ते अमारे देखवामां आज आव्यां, ते माटे तमने कहीयें ढैयें के,तेडीने हवे समारो के जेम ए वाढरडां सुध रे. तो पठी गाडी, हल बिगेरे सर्वस्थानमां सारी रीतें जोतरी शकशो, नहीं तो तेडीना शरीरतुं बल वधशे. तेथी गायने जो इने जन्मत्त थरो, ने लोकोने माररो, ए माटे एने पलोटो, अने उतावलथी खासी करावो, पोताना मालने शा माटे बगाडो ढो ? हमणां एने नहीं पलोटो तो, पठी ए जूतमां जूपरो नहीं. अने फेरवशो तो चमक मटी जशे. नाथ्या विना तो चालेज नहीं, ते माटे नाथवो तो पहेलोज जोइयें. एवो पापोपदेश करे. वल्ली कहे के, आ घोडीनो वठेरो महोटो थइ जायठे. हवे एने फेरणीथी एटले दोरीथी फेरववो जोइयें जेथी करी ए वढेरो,सारी चाल शीखे एने चोकडुं, लगाम चढावो. हवे एना उपर काठडो विगेरे साज सांड्या करो.बांध्युंने वांध्युं राखवाथी जानवर खराब थइ जायढे. तथा वली एम कहे के, वरसादना दिवस आव्यावे माटे ञ्चापणा खेत्रमांथी गांठ, गुठ, घांस, खाडा विगेरे होय, ते कपावी नाखीने सुधारोके जेथी करी जमीन साफ थाय, अने वरसादनुं पाणी खेत्रमांज जरी जाय. पाणीएं पचीने जमीन तर थाय तो तेमां धान्य सारुं नीपजे. वली वरसाद पण आव्यो, माटे घरनी मरामत करावो. ए घर जाजरुं थइ गयुंढे, माटे फरी वंधावो. ञ्चा वखतठे. छने हंमणां मशालो मजुरी सो शस्ता थयांठे. हवे मूलथी नवी हवेली वनावो. ए वावत तमोने खबर न होय, तो मने पूठी खेजो. आमें जे मनसुवाथी कखु एवी तजवीजथी तमे पण वनावशो तो सर्व कोइ जोइने आश्चर्य पामरो. एवो उपदेश देइने खोटां कर्म बांधे; तथा फरी वसी एवुं कहेके, जाइजी ! त मारी दीकरी तो घणी महोटी थइठे. एनी फिकरमां तमे ठो के नहीं ? हवे विवाह करवा योग्य थइते. ए माटे तमारी पासें कोइ न होयतो, मारी पासेंथी लियो, पण वीजा कोइनुं करज करशो नहीं. जो करजें काढवा होय तो मने कहेजो, एटले मारी मात वरीथी तमोने कोइनी पासेंथी अपावीश; परंतु तमारे आ काम

करवुं जोइएं. ए धर्मनुं कामठे, माटे एमां ढील करो नहीं. एवी रीतें संसारने वधारनारो उपदेश करे.

वक्षी कहे के, हे जाइजी ! बगीचो समरावो. कोइ ठेकाणे जमीन सखत होय, तो त्यां त्र्याग लगाडो. एमां जंगलनी पठें घांस कुशनो घणो वधारो थयोठे, ते कपावी नाखीने ए जग्यायेंज बाक्षी ना खो एटले ते जमीन साफ थशे. एवी रीतें कहे.

वली बीजी प्रेरणा करे के, फलाणो माणस, तमारी साथें छ इमनाइ करेढे. तेने जेर करवानो हमणा तमारो वखतढे. राजद रबारमां तमारे तो वग ढे. ए माटे कोइ ठेकाणे कोइ पेचमां खेइने फसावी नखावो. आपणुं चालतुं होय, त्यारें तो छुश्मनने जेर करवानो जपाय कस्त्या विना रहीएं नहीं; मारी तो एवी झक्कलढे. आवो अवसर तमें फरी क्यारें पामशो ? पोताना चालता चलण मां सारुं नठारुं करवामां न आव्युं, तो जींदगीनुं फलशुं ? ते मा टे छुश्मननो नाश करी, तेने नाबुद करवो, तेज सारुं. ए तो त मारी बदगोइ लोकोनी आगल घणीज करेढे, एक बे वखत तो में पण सांजली हती. ते माटे तमे मूर्ख खेखाउं हो, ते छुश्मन शी र जपर चढतो जायढे. एटली पण तमोने कालजी नथी. छुश्मन ने तो जगतोज जड मूलथी कापी नाखवो, लोकोनी एवी कहे वतढे के, '' करतेसेंती कीजीयें, अथवा हणताने हणियें, एमां पाप दोष न गणीयें " एवो एवो उपदेश आपे.

वली बीजाने एवी रीतें कहेके आटलो बधो दिवस चढ्योठे तो पण हजी रसोइनी तो कांइ वातज नथी. उठो जइने रसोइनी कांइ तजवीज करो ! चोको प्रमुख देवरावो, स्नान करी रसोइ कखा पढी, सर्व काम थायठे. अमे तो उठतां वेत, महोटा परो ढीयामां रसोइ करी खाइयें तो पठी अमने कांइ काम काज सुजे. इत्यादिक उपदेश आपे, प्रयोजन विना जूठुं साचुं कहेवुं, तेमां शुं फायदो ? जलदुं एवुं करीने पोताना आत्माने बंधन करवुं. ए वीजो पापोपदेश अनर्थदंग कह्यो.

३ इवे त्रीजो हिंसाप्रदान श्वनर्थदंग कहेवे. पोताना संबंधी ने दाक्तिखताथी तथा कोइ पण गरज विना हरकोइने कहेवुं के, केम रसोइ करता नथी? अग्नि न होयतो अमारे घेरथी अग्नि **ले**इ जार्ज. वली ज्यारें जोइयें, त्यारें घेरथी सुखें छान्नि लइ जजो. छ मारे त्यां तो ज्यारें जोइयें त्यारें श्रन्नि रहेज हे, माटें सुखेंथी लइ जार्ड. वसी एवो उपदेश करेके, अन्नि देवानुं तो महोटुं पुखढे. वसी कहे के, आज वजारमां तरकारी एटले शाक जांजी घणुंज आव्युंढे, ते जलदी लेइ आवो, एक वे दिवस चाले एटलुं लेइ आवो, पती फलाणी तरकारीने तो चाकुयें करी, आपणे हार्थे ढोलीने सारी ब नावद्युं; पढी तेमां हिंग, हलदर, विगेरे मशालो, सर्व नाखीने रांध शुं, तो पठी खावानी वखतें तेनी मजा पामशो; त्यारें कहेशो के, शावाशवे. वली आगल पण तमे निरंतर एज तरकारी खा शो, जे खावानी चीज हे, ते सारी रीतें वनावीने खाइयें, कारण के कोइ जुए तो पण कहेके, ए घणा चतुर पुरुषोवे. एवी रीतें कोइना पुठ्या विना कहे तथा माग्या विना छन्नि प्रमुख आपे, श्रधिकरण कियानी श्रकल शिखवाडे, ते पण श्रनर्थदंन.

तथा वीजा यंत्र. जेवा के घंटी, खारणीर्ड, सांवेख़ें, गाडी, रथ, वाहाण, चरखो, चरखी, घाणी, सूडी, दाव, दूरी, चीपीया, कात र, पावडो, तरवार, खंती, कुहाडो, फरशी, बीजा पण सर्व हथी यार नाना मोहोटा जेटला होय. ते तरवार, वंटूक, कटारी, कवा ण प्रमुख तथा वली वीजां अधिकरणमां सावरणी, पावडी, पं खो, घांसनी टट्टी, जीडवुं आदि दइने तथा वीजां मंत्र, साप वींठी उतारवानो तथा तीड वर्षादना दिवसमां केत्र खायठे, ते मनी फाड मंत्रथी उतारे तथा खिलावणी करे, तथा माकिनी,

अष्टम अनर्थदंग विरमण वत.

व्यंतर, चूडेल, जूतडी प्रमुख. जूत, प्रेत, जोड, व्यंतर, यहीत एटले एउंथी पीडाताउंने ढोडाववाना जाडा प्रमुख उपचारो करा ववा, तथा धूणाववां, खेलाववां, ज्ञीशामां उतारवां तथा मा रण, मोहन, मुखबंधन करवानां, तानां, तुनां, जाडु प्रमुखना करवां, तथा काष्ट कपावीने नवां उखल, मुशल, चक्की, मांची, खाट, चोकी, छने खडाउ प्रमुख जे थकी जीवहिंसा थाय, एवां **श्रधिकर**ण बनावे. बीजा पण जे थकी हिंसा थाय, एवां सर्वे उपाय एमां जाणी लेवां. तथा मूलगर्ज एटले गर्जादि थवानी जडी, उंषधि, यंत्र, मंत्र प्रमुख करे, करावे तथा कोइ स्त्रीने कुकर्म थकी गर्ज रह्यो होय, तो ते स्त्रीने ते गर्जपात यवाना उषध प्रमुख करी खवरावें, ऋथवा कोइ शातन, पातनना इलाज योनि प्रमुखमां बत्ती अथवा गोली चढावीने गर्जपात करे, अथवा बीजानी पासें करावे तथा मोहन वशीकरणनी जडी, बुद्दी, तो डावे, होम करावे, त्यां बलि प्रमुख जीवनो आपे, अथवा अ पावे, तथा बीजा पण उंषध करवानां पत्र, मूल, कंद, फूल, फल प्रमुखनो हुन्नर ज्ञीखवाने तेने जमीनमांथी तोडाववां, कोइ उपा य करीने खोदी कढाववां, कोइक चीजने पीलावीने तेनो रस कढा ववो, ते पण अधिकरणकिया अनर्थदंग जाणवो.

तथा बीजी रसायननी किया करवाने आठ प्रहर, शोल प्रहर सुधी छन्नि आपे, ए रीतें हरताल, पारो, सोमल, त्रांबुं, रूपुं, सोनुं, तथा लोहने मारवानो हुन्नर करे, करावे, बीजाने बतावे. ए रसायन करवानो विधि, ए पण सर्वअधिकरण पापोपदेशनां ठे. तथा बीजी तेलकिया, ते अनेक जडियोना रस काढे, अथ वा अजस्यादिक कोइ चीज उकलता तेलमां नाखे, अग्नि निचें आपी ठे, तेनी तो गणती पण न राखे. एवा आरंज करे. नारायणी तेल, लाद्त्यादिक तेल, विषगर्जतेल, तथा शतपात श्रष्टम श्रनर्थदंन विरमण व्रत.

सहस्रपातादिक तेल प्रमुख, तेनुं कराववुं तथा बीजां जे जे जडी, बुटीथी औषधकिया, जाडुकिया, वशीकरण कराववुं श्रथवा वि रोधकरण, उच्चाटन, श्रागीयो, कतरीयो, रगतीयो, प्रमुख तथा वीरोने चलाववुं. इत्यादिक क्रियामां पोतें कुज्ञलढे, तेवारें कोइ ने संवंध विना दाक्तिखताथी पोतानी सिद्धाइ देखाडवानें ऋर्थें ष्प्रथवा पोतानी बाबु, बुजरगी वधारवाने ऋर्थें लौकिकमां यशनी वृद्धि थाय एवा कारणे तथा महोटाइनो फांको राखवानुं विचा री ते मूढ पुरुष, धर्मसंझाथी मंत्रादिक प्रयुंजे, मंत्रादिक पोतें करे, अथवा वीजो कोइ तेनी सेवना करे, तेने शिखवाडे अने हिंसानी परंपरा वधारे, परंतु ए बद्धां, कृत्यो, परंपरायें पापवंधन करवाना ज पायरूपठे. तथा बीजुं पण घणा श्चारंज रूप विविध प्रकारनी जडी, हुट्टी मंगावीने तेनुं तेल काढी,घरमां राखे. श्रने वली लोकोने कहे के, श्रमारा घरमां एटली चीज हाजरढे, जेने जोइयें, ते सुखेंथी मं गावी लेजो. अमें तो लोकोने आसन थवाने अर्थें बनावीते, एवी पोतानी प्रजुता वधारवी तथा वली वीजुं कहेके, फलाणा माणसजी! आज काल तमे फिकरवान् केम रहोठो ? अमारी पासें आवजो जे कहेशो, ते तमारी फिकर, अमे मटाडी आपीशुं. तमारुं कार्य करी आपशुं. अमे आ अमुक चीज, राखींवे ते वर्द्धी परोपकारने अ र्थेज राखीते, एवी वातों करे, पण ते मूर्ख एवुं न विचारेके एथी महोटो अनर्थ थाशे. पोतानीतुष्ठ वुद्धिनां प्रमाणथी सर्व पापयोग करी आपे, त्यारें आगलार्डना पुख्योगें करी धारेलुं कार्य थाय, तेवारें ते वखाण करीने कहेके तमारी द्युं तारीफ करियें ! तमे तो महोटा परोपरकारी ठो, लायक माणस ठो. परलोक सुधारो ठो, तमारा जेवो वीजो कोइ पए आ रोहरने विपे अमारी न जरमां आवतो नथी. तमारा जेवो कोए थरो. तमें तो रलरूप ठो, वर्द्धी वातोथी आप दयाना सागरठो. सर्वलोक, पठवाडेथी

528

तमोने धन्य धन्य कहेंडे. ते वारें एवी रीतनी पोतानी तारीफ सां जल्लीने पोतें घणोज खुराबखत थाय. छने मनमां फूलायने जा णेके महारी बद्धाने चाहना रहेेंबे. फरी एवी पोतानी घणी ता रीफ सांजलीने आगल करतां वधारे अधिकरण मेलववानो उद्य म करे. वल्ली बीजाने पण ऋधिकरण पोतें आगल थइने बनावी कोइ शिष्यने महारी विद्या बद्धी शीखवाडुं, हवे हुं वृद्ध थयो हुं माटे आ किया, सर्व शीखो, ए हुन्नर रूडोढे, एमां कमाइ पण ठे, छने बहुज शोजा, यश, कीर्त्ति हे, जीवदया पण पलेहे. वली अमारुं, पण् नाम कायम रहेरो. तमें लोकोमां कहेरोो के, अमुक माणस पासेंथी ऋमे ए विद्या पाम्या ढेयें. तेथी महारो पण लोको मां यश वधरो. वली ए क्रिया शिखीने कोइनी उपर उपकार करशो, तो तेने आराम थशे, तेथी तमारुं पण नाम थशे. एवी वातो करे, पण ए समयकिया पाप रूपने, तेनी खबर छज्जानना प्रबलश्री तेने रहेती नथी. इत्यादिकने हिंसा प्रदान अनर्थदंग कहियें.

8 चोथो प्रमादअनर्थदंग कहेंगे. ते एमके, ग्रता सामर्थ्य अ ने ग्रता योगें जयणा करे नहीं. चालतां चाले. तेटलामां खाली गडवड करे, कारण विना पाप लगाडे, ए केवल, पोतानी छड़ान ताथी तथा धिठांइ पणाथी लागे. जेम घणी जातिनां तेलमईन करावीने जपर ज्वटणा, पीठी अपने सुगंध डव्य निष्पन्नथी तेलनी चीकणाश मटाडे, ते पीठीमां कडवी, तींखी, घणी गरम चीज आ वे तेथी अंग्रुठणा करावीने, पग्नी जीवोयें करी परिपूर्ण एवी जूमि होय, ते जग्या जपर बेसीने स्नान प्रमुख करे, त्यहां ते पीठीना पाणीनो रेलो चाले, तेथी करी त्यां जे जीवो होय, तेर्ज कडवा रसना गंधथी विनाश पामे, तथा ज्यां थोडा पाणीनुं काम होय, त्यां घणुं पाणी रेडे. अहींयां तजवीज करी शुऊ जूमि जोइ

करीने स्नान मज़न करे, तो दया पले. प्रमाददोषथी धर्मनी कोइ किया गडबडनरी करे तथा कौतुक, नाटक, पेषणा प्रमुख, पोते जोवाने जाय अने बीजाने साथें लेइ जइने देखाडे, त्यारें ते दो डा दोडीथी चालता आवे, तेणे करी घणा जीवनी विराधना था य. त्यां जइ तमासो जुए; खुज्ञी थाय, बीजार्डनी पासें तारीफ करे. पोतानो आलोक परलोकनां साधननो जे व्यापार, जप पूजादिकनो उगरेलो वखत पण थइ जाय, तेथी ते काम पण वगडे. फरी ते, घणा तमासा जोइ ने घेर आवीने परिजनोनी श्रागल वर्णन करे. तेणे करी पोतें चीकणां कर्म बांधे. बीजाना पण परिणाम बगाडे तथा कोइ सती, सत करवाने माटे काठ खेवा चाले, ऋथवा कोइ चोरने मारवा माटे लेइ जता होय, खहां जोवा माटे दोडे. जोवा उनो रहे, त्यां एना मनमां ए परिणाम रहेके हवे ए चोरने क्यारें मारशे ? अने सती एनी महुलीमां क्यारें पेस र्शे? श्रग्निमां केम बेसरो? वली ते शिवाय बीजुं पण मिथ्यात्वीनी श्रनुमोदना, तारीफ करे. चोर मारे, लां चोरना पापनी निंदा करे. त्यहां चीकणां कर्म वांधे. फरी फरी ज्यारें ते वात काढे, खारें तारीफ करे, ते वखतें पण चीकणां कर्म वांधे. एम केटला एक वखत वारं वार कर्म वांधे. तथा काम शास्त्र जे कोकशास्त्रा दिक तेनो घणो परिचय करे. चोराशी जोगासन शीखे तथा वीजाने शिखवाडे.पडवादिकथी मांमीने पूर्णिमा तिथि सुधी शुदि तथा वदिमां चढतो उतरतो कामदेवनो वास तेने पोतें धारे, छने वीजाने धरावे. नखशिखनां वर्षनादिवालां शास्त्रने जणे अने जणा वे तथा जावजेद झंग उपांगने वतावे. वली नदीने तट, जलकी डा करवाने जाय. वीजाने वोलावे. ते नदीमां ज्यां सुधी पोतानो परसेवो मेल धोवाइने ते मेलनुं पाणी चाले, त्यां सुधी सर्व जल जीव जे सूक्स होय, तेर्ठनो नाश थाय. वली होशें करीने पोतानी

अष्टम अनर्थदंग विरमण व्रत. ११७

कामसंंज्ञा वधारवाना हेतुएं केफी वस्तु जे माफम, गोली, चूर्ण प्रमुखढे, ते खाय. वली पंचेंडियवधोत्पन्न एवी, मलमनी पट्टी ल गाडे,बंधेजनुं औषध करे. बीजाउने शिखवाडे, तथा जे वचने करी पोताने तथा पारकाने कामसंज्ञा वधे, छने चेतना बगडे, एवां वच न बोले, बीजा पासें बोलावे, तथा हाथना, मुखना, नेत्रना, छने च्रकुटीना चाला करे. जे चाला देखीने बीजाने इसवुं छावे. वल्वी कोइनी महकरी पोतें करें, बीजा कने करावे, तथा छत्यंत मर्मनां वचन बोले.

१ तथा राजकथा, ते राजानी दोखत वखाणे, राजानी ल ढाइ वखाणे के एवी रीतें फोज चढी अने एवी रीते लढाइ थइ. ते अमे पण उजा रहीने दीठीठे. एवी रीतें मनसुबो करी ने छुइमनने जेर कस्त्या. ए महोटो शमसेर बाहादूर कहेवाय ठे. वल्ली राजाना जाग्यने वखाणे. कहेके ए राजानी बराबरी कोण करे? आजे तो, ए बीजो इंडतुखाठे. अने राजाना काम जोग, व खाणे ने कहे के, आटला शेर अत्तर तो नित्यजोगमां आवेठे, व ली राजाना आंगबलनुं वखाण करे.

१ तथा काम काज विना देशकथा तजत जे इंडियसुख जे खान पानादिक, तेने वखाणे, अथवा वखोडे. ते सांजलीने बीजार्जनी प ण चेतना तेवा विषयो उपर राचे. पोताने आरंजनी अनुमोदना थाय, तेथी ते केत्रविपाकी कर्म बंधाय.

३ तथा स्त्रीकथा जे स्त्रीनुं रूप, रंग, चतुराइ, तेना बदफेलनी निपुणता, तथा ग्रुकबहोत्तेरीनां दृष्टांत संजलावे, जारी विजारी क री जाणे. ते महोटो चतुर केहेवाय, ते वातो सांजलीने कइक पु रुषवुं परिणाम बगडे, स्त्री सांजलीने फेल शीखे, पोताने विषय कर्म जूदी जूदी जांतिनां बंधाय.

४ तथा जक्तकथा जे खावुं पीवुं झरानादिक चारे प्रकारना आ

श्रष्टम श्रनर्थदंग विरमण वत.

हारनी कथा कहे, वखाणे, तथा वखोडे. कोइ रसवतीना संस्कारनी वात तरेह तरेहनी करीने तेने वखाणे, ते रसवती बीजाने शिखवा डे. अने कहेके फलाणी रसोइ, फलाणी तरकारी आ रीतें बना वीयें तो ते एवी खादिष्ट थायके देवता पण पोतें आवीने आरो गे, परमेश्वरने पण तेनो जोग चढे, एवी वनेढे. छहींयां निष्क लंकने पण कलंक लगाडे. वली एणे करी गाढ, मिथ्यात्वनुं पो षण थाय. केटला एक जीव, ते सांजलीने एवा आरंजमां प्रवर्त्ते. तथा एक दिवस बहु झारंज करीने खाधुं, ते फरी फरी याद करी ने वखाणे, त्यारें वारंवार चीकणां कर्म बांधे. ए चार विकथा क स्वाथी लाज, मर्यादा, नीति तथा धर्म अने गंजीरतानी हानि करे, एथी लवाड कहेवाय. वली ए चार विकथा न करे, तो तेथी कांइ पोतानुं काम बगडे नहीं, ऋने कांइ इंडियसुखमां पण हा नि न थाय, केवल नकामुं चीकणुं कर्मवंधन थाय. ए प्रमाद थी थायते. ए कुचाल जो मटाडीदे तो मटे, ए रीतें कामकाज विना फोकट आत्मा दंनावे, ए प्रमादाचरित अनर्थदंन कहीयें.

हवे ए वतना पांच अतिचारठे, ते लखेठे.

१ प्रथम कंदर्प कुचेष्टा छतिचार. ते एमके मुखविकार, ज्रकु टीविकार, नेत्रविकार छने हाथनी संज्ञा वतावे, पगना विकारनी कुचेष्टा करे, छने ए चेष्टा करतां थकां वीजाने इसवुं छावे. कोइ ने कषाय उपजे, तेथी क्यांनी क्यां चाली जाए, ए कारणे पोता नी लघुता थाय, धर्मनी निंदा थाय, एवी कुचेष्टा करे, तेने प्र थम छतिचार जाणवो.

१ वीजो मौखर्य ऋतिचार.मुखयी ऋतिशय वाचाल पणुं करे, एटले ऋसंवंध वचन वोले; जेणे करी वीजानी एव प्रगट थाय, छने ते कप्टमां पडे. वल्ली पोतानी लघुता थाय, वेर वधे, धिठा इ, लबाड, चुगलिउ, इत्यादिक नाम पडे. लोकमां लाज गमाडे. एवी रीतें घणुं वधीने बोलवुं, ते बीजो छतिचार.

३ त्रीजो जोगाधिक आरंज अतिचार. ते एमके जोग, उपजोगमां, स्नान, पान,आहार,धोवन,विंखेपन, इत्यादिक शौचता प्रमुख आ रंजनी कियाउंढे,ते पोताना खप करतां वधारे करे. नकामो आरंज करे,एण्रेकरी डव्यनो व्ययथाय. घण्रो इशकधरे,तेत्रीजो अतिचार.

ध चोथो काममर्भकथन छतिचार. ते एमके, कामनां मर्भ बोखे जेना बोखवाथी पोतानी तथा बीजानी चेतना काम कोध मय थइ जाय. एवुं बे तरेइनुं बोखवुं तथा विहरनी वात छुहा, साखी, रेखता, छुखणा, कवित्त, परजीया, श्लोकमां श्रं गाररसनी कथा कहेवी. ते चोथो छतिचार.

४ पांचमो अधिकरणदोष अतिचार कहेंठे. ते एमके पोताना काम काज करतां अधिक अधिकरण मेलवीने तैय्यार करी राखे. सर्व अंगोपांग मेलवीने सुधारीने राखे. ते अधिकरण कहीयें. जे णे करी हिंसादिक पापस्थाननी पुष्टता थाय एवा रथ, ठखल, युशल, घण, चक्की, ठरी, तरवार, कटारी, बंदूक, कमान, तीर, त रकस, ढाल बरठी, सूडी, ठिनी, फरशी, पावडो, कोदाल, केची, आरा, सांडसी, दांती, कोदाली प्रमुखहथीयार पोताने जरूर जोइयें तेथी सर्व वधारे बनावे. अने ते हथियार, विना संबंधें अने मा ग्या विना दाद्तिष्खताथी बीजाने चाहीने आपे. ए पांचमो अ धिकरण दोषनो अतिचार. ए आठमा व्रतना पांच अतिचार जा णवा. पण आदरवा नहीं. समजु आवकठे, तेतो त्याग करे. ए एमने महोटो लाजठे.

इति श्री द्वादशवतविवरणे अष्टमअनर्थदंगविरमणनामा तृती यगुणवतेपंगित श्रीज्योतसागरगणिनाकृतजाषा संपूर्णा ॥ ७ ॥

॥ স্বয় ॥

॥ नवम सामायकनामक प्रथमशिक्ता व्रत प्रारंजः ॥ ॥ दोहा ॥

श्रव चो शिक्ता वत कहुं, नवम सामायिक नाम; दोष वतीसे ठांनि करि, वैठे एकंत धाम ॥ १ ॥ द्वादश कार्याके प्रथम, पुनि दश वचन प्रमान;

मनके दश दोष जु मिली, सब बत्तीस सुजान ॥ १ ॥ एवी रीतें ठठुं, सातमुं, अने आठमुं ए त्रण ग्रण वतो कह्यां. हवे पूर्वोक्त आठे वतने अने आत्मग्रणने पुष्टिकारक, अविरति विषय कषायमां तदात्मजावें मल्यो, अनादि अशुरुता जे विजाव परिणामनी टेव ते मटाडवाने, अने आत्मिक ग्रणानुजव करवाने, सहजखरूप रसाखादनी मजा पामवाने, नवमुं सामायिक करण रूप पहेंखुं शिक्ता व्रत लखेठे.

खहां सामायिक ते जघन्य वे घडी प्रमाण, ते आर्त्तरौड ध्याननी परिणति रूप किया ते आग्रुज सावद्य व्यापार कहीएं; तेनो त्याग करीने अत्माने समता परिणाममां राखे, ते सामा यिक कहीयें. आधवा सम आय सामायिक एटखे सम के॰ सम्यक् प्रकारें रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप सहज रूप उदासीनवृत्ति मुक्तिनो मार्ग, ते सम कहीएं. तेनो जे आय के॰ बाज याय जेने विषे तेने सामायिक कहीयें. ए सामायिक व्रत, वे घडीनी मुनिना जावनी वानकी आधवा निशानीठे. अने ध्रनादि कालना संसार परित्रमण थकी विश्राम करवानो रूडो जपायठे. हवे जे साधक होय, ते वे घडी खरूप सन्मुख चेतना करीने अने सहज खरूपनी चाहना धरीने आने सकलसावद्य त्रिकरणयोगें तजीने सामायिक करे. ते वत्रीश दोष टालीने करे त्यारें शुऊ थाय. तेमां प्रथम कायाएं करी वार दोष थायठे, ते वतावेठे. े १ प्रथम दोष.सामायिक करती वखतें पग पर पग चढावीने उंचे आसने पलांठी वालीने बेसे, ते माहात्म्य पर्यायथकी विनय गुणनी वृद्धिनी हानि करे, अथवा वस्त्रवडे जानु एटले गोठण बांधी करी बेसे,ते प्रथम दोषठे,माटे जेणे करी विनयगुण रहे, उद्धता न जणाय, अजयणा न होय, एवा आसनें बेसे.

१ बीजो चलासनदोष.ते आसनने स्थिर न राखे,वारंवार आ गल पाढल चलायमान करे, पोतें चपलता घणी करे, मूलमार्ग तो एवोढे के,आवक एकज आसनें बेसीने सामायिक पूरुं करे. अनगपणे रहे, कदापि रोग निर्बलतादिक कारणे एकासनें टक्युं न जाय ने फेरववुं पडे, तो उपयोगसंयुक्त जयणापूर्वक उठी उठीने चरवलाथी पुंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरावे.पण एम कीधा विना चपलता राखे,तो बीजो चलासनदोष लागे.

३ त्रीजो चलदृष्टिदोष. ते सामायिक खेइने पढी दृष्टिने ना सिका जपर राखे, अने मनमां शुऊ श्रुतोपयोग राखे, मौन पणे ध्यान करे. तथा जे सामायिकवंतने शास्त्रज्यास करवो होय, तो जयणायुक्त थइ मुह्पत्ति मुखें बांधीने पुस्तक जपर दृष्टि राखीने जणे तथा सांजखे. तथा सामायिकमां काजसग्ग करवो होय, तो चार श्रंगुल आगल अने साडा त्रण अंगुल पठवाडे एटली बन्ने पगनी वच मां मोकलाश रहे, एवी योग मुद्धायें ज्जो रहे, बन्ने बाहु उंप्रलंबित रा खे अने दृष्टिने नासिका जपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा ज पर राखे, ए शुरू सामायिकनी शैली हो. ते शैलीने ठोडी करीने चपल पणे चारे दिशाउं चे चित मृगनी परें नेत्रो फेरवे, ते त्रीजो दोष. ४ चोथो सावयक्रियादोष. तेमां कायायें करी कांइक साव दक्तिया करे, अथवा सावयक्रियानी संझा करे, ते चोथो दोष. ५ पांचमो आलंबनदोष. ते जे सामायिकमां दिवालप्रमुख नो आशरो ठोडीने निरवष्टंज एकासने वेसवुं, एवी रीतठे; ते रीत

٩Ę

नवम सामायिक व्रत.

त्यागीने दिवाल अथवा थांजलाने पीठ लगाडीने बेसे, अथवा वीजा कोइ पदार्थनो आज्ञारो लइ बेसे, तो आलंबननामें पांचमो दोष लागे, कारण के, पुंज्या विनानी दिवाल उपर घणा जीवोनो विश्रामढे, त्यहां पीठ लगाडतां घणा जीवोनी विराधना थाय, तथा निद्यादि प्रमाद वधे, एमाटे आलंबन नामें एपांचमो दोषठे.

६ ठठो आहुंचनप्रसारणदोष. ते एमके सामायिक खेइने नकामो कारण विना हाथ पग संकोचे, अथवा लांबा करे, अने सामायिकमां तो पुष्ट कारण विना हालवुं चालवुं कांइ कद्धुं नथी. जरुरथी लाचार थये थके, चरवला प्रमुखथी पुंजन प्रमार्जन करी हाथ पग हलावे. मनमां आहुंचनस्थिति न सहवानो खेद धरे. एवी शैक्षीविना नकामा हाथ, पग, हलावे, तो ठठो दोष लागे. 9 सातमो आलस्यदोष. ते एमके, सामायिकने विषे अंगें आलस मोडे, टाचका फोडे, करडका करे, कम्मर वांकी करे. ए प्र माणे प्रमादनी वहुलताथी व्रतमां खेद जत्पन्न थाय; त्यारें श

रीरमां अरतिनाव[ँ] जागे, ते वखत आलस मोडीने असुहाम णो उठे, ए सातमो दोष.

उ आठमो मोटनदोष. ते सामायिकमां श्रंग्रुखि प्रमुखने वांकी करीने करडका काढे, ए पण प्रमादनी प्रवलताथी थाय. ए आठ मो दोषठे. ठठो, सातमो श्रने आठमो, ए त्रण दोष, निद्धाप्रमा दनी उपाधिथी थाय श्रने दर्शनावर्णी कर्मना जदयथी थायठे. ए नवमो मलस्यदोष. ते सामायिक लेइने श्रंगमां खस थए ली होय, तेने वलूरे, मूल जांगें तो सामायिक लीधा पठी खसप्रमुख नी उपाधि थइ तो समजवुं के, चेतना ठीक पणे रही नहीं, विक ढप थवा लाग्या. ए प्रमाणे ग्रुज आलंवनमां चेतना स्थिर रहे नहीं, त्यारें लाचार थइने चरवला प्रमुखथी जयणा प्रूर्वक पुंजन प्रमार्जन करीने मनमां पोतानुं झखण मन न रह्युं, तेनो पश्चा

नवम सामायिक व्रय.

ताप करतां, महा पुरुषनी धीरजता मनमां जावतां, धीमे धीमे

खसने वलूरे, एवी शैक्षीढे. तेम न करे, तो नवमो दोष लागे. १० दशमो विमासणदोष. ते सामायिकमां छंग वीमासण क रावे, एटखे हाथनो टेको दे, गखे हाथ देइने बेसे, ते दशमो दोष. ११ छगीयारमो निडादोष. ते सामायिक खेइने निडा करें. ते सर्व घनघाति कर्मनी प्रकुतिउंढे; ते सामायिकने निष्फल करेढे. ११ बारमो दोष एके, सामायिकमां टाढ प्रमुखना प्रबल्धी पोताना समस्त छंगें सारी पेठें वस्त्र उंढे.

्ए बारे दोष, सामायिकमां कायाथकी उत्पन्न थाय डे, ते त जवा. हवे वचनना दश दोष डे. ते कहेंडे.

१ प्रथम कुत्सित बोलनो दोष. ते एम के, सामायिक लेइनें कुवचन बोले. जला उत्तम पुरुषने कुवाक्य बोलवां लायकज नथी. तेम ठतां जे वचन सांजली कोइने लज्जा, जय, कषायादिक उपजे, तेवां वचन बोले, ते कुवचनदोष कहीयें. ए प्रथम दोष.

१ बीजो सहसात्कारदोष. ते सामायिक लीधा पठी जे वचन बोले, ते आगल पाठल उपयोग दीधा विना बोले तथा अवि चाखुं बोले, अने जेम मनमां आवे तेम कहे, ते बीजो दोष.

३ त्रीजो ऋसदारोपणदोष. ते सामायिकमां कोइनी उपर खोटुं तोहमत आपे, नकस्वांने कखुं कहे, ते त्रीजो दोष.

ध चोथो निरपेक्तवाक्यदोष. ते सामाथिक खेइ शास्त्रनी अपे का विना पोताना ढंदें बोखे. जैनसार्गीने तो निरंतर सापेक वच नज बोखवुं जोइएं, निरपेक्त वचन न बोखवुं; तेम ढतां सामाथिक खइने पोताने जावे तेम बोखे. ते चोथो दोष.

५ पांचमो संक्षेपदोष. ते सामायिकमां सूत्रपाठें वचन संक्षेप करी बोबे, अक्षर पाठादि हीन करीने कहे, यथार्थ कहे नहीं.

६ ठठो कलहकर्मदोष. ते सामायिकमां साधर्मीसाथें क्वेश करे.

त्र्यने सामायिकमां तो कोइ मिथ्यामति गाख पण दे, छाथवा जपसर्ग करे, कुवचन कहे, तो पण तेनी साथें कखह न करवो. छुऊ जैनमार्गी तो विना सामायिकें पण कोइ तेना जपर कुवचननी प्रेरणा करे, तो पण तेनी साथें कखह न करे, जेम तेम करी क खहने समाववानी चिंता करे, तो ते साधक, सामायिकमां सा धर्मीनी साथें क्वेज्ञ केम करे ? छार्थात् नज करवो जोइयें, छाने जो करे, तो ठठो दोष लागे.

5 सातमो विकथादोष. ते सामायिक खेइने राज्यादिक विगेरे नी चारे विकथा करे, सामायिकमां तो सिझाय अने ध्याननी मु ख्यता कहींडे, कदापि ते न करे तो बेठो वेठो धर्मकथा करे अथ वा महापुरुषनां चरित्र अथवा तीर्थादिकनो महिमा कहे,पए जेवी तेवी कर्मवंधनी विकथा न करे, जो करे तो सातमो दोष लागे.

ण् छाठमो हास्यदोष कह्यो ठे. ते एमके सामायिक खेइने बी जानी मइकरी करे नहीं. कारणके, हास्यरूप मोहनीना उदय थी हास्यरसवडे व्या लोकमां कोइनी मरकरी करे, ते लघुताने पामे, वल्ली लोकमां पण कहेवतठे के "व्यनर्थनुं मूल हांसी, व्यने रोगनुं मूल खांसी" वल्ली परलोकमां तो, ते हास्यरसकर्मठदय व्या वे त्यारें ते कर्म, रुदन करतां पण ठूटे नहीं. ते कारण माटे साध के, सहेज महकरी पण कोइनी करवी नहिं, त्यारें सामायिक खेइने कोइनी महकरी करायज केम ? जो करे, तो ए दोप लागे. नीति ज्ञास्त्रमां पण उत्तम पुरुषने हास्य करवुं निपेध्युं ठे, माटे ए हास्यदोष त्याग करवो.

ए नवमो ऋग़ुद्धपाठदोप. ते जे सामायिक खेइने सामायिकना सूत्रादिक ज्चार करे तेमां मुखथी संपदाहीन, ऋथवा हुस्व रने ठेकाणे दीर्घ वोलावे, दीर्घने ठेकाणे हुस्व

नवम सामायिक व्रतं.

काणे मात्राहीन, अधिक उच्चरे. एम अग्रुऊ पाठनो उच्चार करे, यद्या तद्या सूत्राक्तर कहे. ते नवमो अग्रुऊपाठदोष.

१० दशमो दोष, मुणमुण बोले, एटले जे सामायिक लेइने जतावलें पाठनो जचार करे. स्पष्ट प्रकट अक्तर न जचारे. पदनुं गा यानुं, ठेकाणुं कांइ मालम पडे नहीं, मुख थकी अक्तर कांइ ठीक पडे नहीं. कोइ जाणे माखी बण बणाट करेठे ? एम गडबड क रीने पाठ पूरो करें, ते दशमो दोष जाणवो.

ए दश दोष वचनना जाएवा. हवे मनना दश दोष कहेंछे.

१ प्रथम अविवेकदोष. ते सामायिक खेइने, सर्वक्रिया करे पण मनमां विवेक नहीं, एटखे सामायिक ग्रुं चीजठे. विवेक सहित सामायिक करीने कोण तस्त्रा ठे ? एनाथी ग्रुं फखठे ? ए कोनुं सा धनठे ? एमां कोण परसाध्यठे ? व्यवहार सामायिक कयुं ? अने निश्चय सामायिक कयुं ? समायिकनी ग्रुं शैढीठे ? एवा विवेक विना जे सामायिक करे, ते अविवेकनामा प्रथम दोष.

श् बीजो यशवांठादोष. ते सामायिक करीने यश एटखे की र्त्तिनी इड़ा करे. सामायिक तो निर्जरानुं हेतुठे, झने शिवपदनुं मु ख्य साधन ठे. ते सामायिक करीने यश इड़े, ते बीजो दोष.

३ त्रीजो धनवांडा दोष. ते सामायिक करतां धनादिकनी इ डा करे के आ सामायिक कस्वाथी मने धन मलजो. अथवा सा मायिक करतां मनमां विचारे के, कोइ एक जव्य प्रांणी, धर्म जा णीने अथवा सामायिकना प्रसादें मने धन आपे. ए त्रीजो दोष.

४ चोथो गर्वदोष. ते सामायिक खेइने मनमां गर्व आणे के, हुं धर्मने जाणनारो हुं. वढी जाणे के, छहो ! हुं केवुं सामायिक करुंहुं ? बीजा मूर्ख लोको सामायिक करवामां शुं समजे ? हुं तो संसारी कामकाजमां पड्योहुं, तोपण सामायिक करुंहुं, एटलें महा रा जेवुं सामायिक वीजो कोण करी शके ? वीजा तो वद्या विचारा

नवम सामायिकव्रतं.

पेट जरवावालाबे, बत्रीश दूषण टालीने शुरू सामायिक तो हुंज करुंडुं, एवो गर्व करे. ते चोथो दोष.

५ पांचमो जयदोष. एटखे जय पामतो थको सामायिक करें, ते एमके, खोकमां हुं मुख्य श्रावक कहेवाउं हुं, माटे जो हुं सा मायिक नहीं करुं, तो खोक कहेरोके श्रावककुखमां उपज्यानुं फल ग्रुं ? एवी सहु कोइ मारी निंदा करशे. वखी खोक कहेरो के जूर्ड ! फलाणो श्रावो वृद्ध थयो ठे, तो पण कांइ धर्मनी नि ष्ठा तेना मनमां त्र्यावतीज नथी. बीजुं तो सर्व रखुं, पण दररोज एक सामायिक करवुं, तो ते पण करी शकतो नथी. एवुं ते ग्रुं ठे ? नाम तो महोटुं धरावेठे, पोसह पडिकमणां करवानी तो हालज वखत ठे, ते पण नथी करतो, एवो लोक ठवको देरो, माटे मनमां सामायिक करवानो जाव नहीं, पण श्रपवादजयथी सामायिक करे, ते पांचमो जयदोष.

६ बठो निदानदोष. ते सामायिक करीने, धनादिकनुं श्रयवा वीजी कोइ पोतानी इहित वस्तुनुं नियाणुं करे के, आ सामायि कनुं फल होय, तो आ लोकमां घणुं धन पामु, परलोकमां पण दे वतानां सुख पामु, एवो आशय राखीने करे, ते कोडीने अर्थें को डनी चीजने हारेठे, सामायिकनुं फल महोटुंढे, तेम बतां निया णुं कस्वाथी ते वेची नाख्युं, एवुं करे ते बठो दोष.

७ सातमो संशयदोष. ते एमके जे सामायिक करे, पण संशय मटे नहीं, संशय जखुं ते सामायिक करे, पण तेने तत्वनी प्रतीति नहीं. मनतां एम विचारे के कोण जाणे सामायिकनुं शुं फल मल शे ? करीयें ठैयें तो खरा, पण त्रागल जपर एनुं फल यशे के नहीं ? एवो संशय धरीने करे, ते सातमो दोष.

ं ज्ञाठमो कपायदोप. ते एमके कपाय जच्छं सामायिक करे. छायवा कोइने साथें रोप वर्त्तेंठे तेथी तेने जवाव देवो नथी, तो तेटला वास्ते सामायिक करी बेसे. एवी रीतें कषाय जख्रुं सामायिक करे, तेमां ग्रुं फल मले ? सामायिकमां तो पूर्वें जे कषाय कच्चो होय, तेनो पण परित्याग करे; एवुं रहस्यढे तेम ढतां जो ते क षाय सहित सामायिक करे, तो तेने त्र्याठमो दोष लागे.

७ नवमो अविनयदोष. ते एमके, विनय रहित थको सामा यिक करे. विनय ते गुरुनो अथवा थापनाचार्य प्रमुखनो जाण वो. जैनशैस्तीमां तो सर्वधर्मनी करणी, विनय विना नथी. धर्मनुं मूल पण विनयते, विनयें करीने बहुमाननी पुष्टताथी अगणित फल थायते, थोडी घणी धर्मकरणी करे, त्यहां पण जो विनय, बहुमान अति घणुं होय, तो एथी करी ते महाव्रत जेवुं फल पामे. ए माटे सामायिकमां तो विनयसहाय सामायिक सफल ते. ते विनय जे न करे, ते नवमो दोष.

१० दशमो श्रबहुमानदोष. ते एमके, बहुमान रहित सामा यिक करे, पण जक्तिजावथी न करे. सामायिक उपर तो घणुं बहुमान राखवुं जोध्यें जेमको छुःखी जीव,रोग,शोक,डुःख,दरिड तामां पची रह्यो थको महा छुःख जोगवे ठे, एटलामा को इ कृपावंत महोटो उपकारी सुजन होय, तेने जोतांवेत तेना उपर दया उप जे. त्यारें ते दरिडीने पोताना घरमां लावीने श्रौषधादिक करी स वैछुःख मटाडे, धनादिक श्रापी दरिडता मटाडे, बीजी पण सर्व रीतें सहायता करे. ए प्रमाणे पोतानी बरावर करी बेसाडे, लारें ते दरिडीने ते उपकारी पुरुष उपर केवुं बहुमान श्रने केवी जक्ति रहे ? मनमां विचारे के ए उपकारी उपर मारां प्राण पण कुर वान ठे. हवे ए तो एक श्रा लोकना पुजलिक सुखनो उपकारी ठे, तेनी उपर एटलुं बहुमान रहे ठे, लारें सामायिक, तो श्रा लोक श्रने परखोकने विषे पुजलिक तथा मोक्त, ए उत्तय सुखनुं दाता ठे श्रने . बाह्याज्यंतर छुःखनुं मटाडवावालुं ठे, ए माटे

नवम सामायिक व्रतं,

ते सामायिक उपर तो एना करतां पण महोटुं बहुमान श्रने श्रधिक जक्ति राखवी जोइयें.ते प्रमाणे न करे,तो दशमो दोष लागे.

एवी रीतें मनना दश दोष, तेम वचनना दश, अने कायाना वार, ए सर्व मलीने बत्रीशदोष थाय. तेउंने टालीने जे शुरू सामायि क करे, ते सुखनुं कारण कहीयें. बत्रीश दोष रहीत एक सामायि कनुं फल श्री जैनागममां व्यवहारथी तो आ प्रमाणे कखुं हे, जे वाणुं करोड, उंगणशाठ लाख, पचीश हजार, नवशें पचीश, एट ला पट्योपम अने वली एक पट्योपमना नव जाग करवा, तेमांना आठ जाग उपर एटला पट्योपम देवतानुं आयुष्य बांधे, अने नर कगति कापे, ए माटे श्रावकने प्रतिदिन सामायिक करवुं, जेणे क री जन्म सफल थाय. ए व्यवहारशुरू सामायिक करवुं, जेणे क री जन्म सफल थाय. ए व्यवहारशुरू सामायिक हुं, पटले ते यावत् सिद्धिस्थानकें पहोचाडे. ए माटे सामायिक हे, ते एकांत ज पादेय हो. ते सामायिकना पांच श्रतिचार हे, ते कहेहे.

१ प्रथम कायछःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, पोताना श रीरना अवयव जे हाथ पग प्रमुख, ते अणपुंजे, अण प्रमार्जे हलावे. जींतने पीठ लगाडीने वेसे, निडा प्रमुख करे, ते कायछःप्र णिधाननामे प्रथम अतिचार.

श्वीजो मनछुःप्रणिधान छतिचार. ते एमके, मनमां कुव्या पार चिंतन. ते कोध, लोज, डोह, छजिमान, ईर्षा,छसूया प्रमु ख दोपसहित कार्यव्यासंगासक्तसंज्रमचित्तसहित सामायिक क रे, ते मनछुःप्रणिधान नामे वीजो छातिचार.

३ त्रीजो वचनछःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, सामायिक मां सावद्य वचन वोले, अथवा पद छक्त्रादिक अग्रुऊ वोले, ते उच्चारतां थकां सूत्रनी स्पप्टता मालम पडे नहीं अने अग्रुऊ सू त्र उच्चारे, अर्थनी पण मालम पडे नहीं. अतिशय चपलपणा

दशम देशावगाशिक व्रत.

यें गडबडथी कही जाये: ते वचनछःप्रणिधान त्रीजो छतिचार. ४ चोथो छनवस्थादोषरूप छतिचार. ते एम के, सामायिक जे वखतें करवुं जोइयें, ते वखते करे नहीं; छने करे तो यदा तदा करे, छथवा इठथी पांखे छथवा उतावलथी पांखे, छादर विना करे, स्वेछायें किया करे, ते छनवस्थादोषरूप चोथो छतिचार. ५ पांचमो स्मृतिविहीन छतिचार. ते एमके, सामायिक खेइ ने जूली जाय. कियादिकमां च्रांति पडे. सामायिकदंगक सूत्र उच्चास्वां के नथी उच्चास्वां ? छथवा पाढ्युं के, नथी पाढ्युं ? एवी च्रांति, प्रबल प्रमादना उदयथी थाय. सर्व साधननुं मूल तो स्प ष्ट यादगिरिजे. जायतनो उपयोगठे ते तो विसरी गयो, त्यारें सा मायिकना फलमां बद्दो लागे. ए विस्मृतिरूप पांचमो छतिचारठे. इति श्री द्वादशव्रतविवरणे नवम सामायिकनामा प्रथम शिक्ता व्रतकथने पंस्ति श्री ज्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ए ॥

॥ ऋष ॥

॥ श्री दर्शाम देऱाावगाशिकनामा दितीय ॥ ॥ शिक्ताव्रत प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपारस पदकमलयुग, वंदू बडे जमेद;

देशावगाशिक दशम वत, तिसका कहों सुन्नेद ॥ १ ॥ हवे देशावगाशिक एटले देशावगाहीनो तो,ढठा व्रतमां राख्युं जे दिशिपरिमाण, ते तो यावज्जीवनुं कखुं ठे. ते दिशिक्तेत्र घणां ठे, ते ठेनुं कांइ नित्य काम पडतुं नथी, एमाटे दिनदिन प्रत्यें तेमां संक्तेप करे, के श्वाजना दिवसमां दश कोश, वा पन्नर कोश, वा पांच कोश श्वयवा नगरना दरवाजा सुधी, श्वयवा कोश, श्वर्ऊकोश, बाग बगी

74

दशम देशावगाशिक व्रत.

चा सुधीनी जग्यानी दिशि राखे. अथवा अमुक घरनी हद सुधी इ त्यादिक हद्दपर्यंत जवुं घ्याववुं उपरांत जावानो नियम करे. एवुं करवुं, ते देशावगाशिक व्रतने. ए न्छा व्रतनुंज विशेषने, तेतो याव ज्जीव संवंधनो नियम कस्त्रोढे छने एतो चोमासुं,वीश दिवस, दश दिवस, पांच दिवस, छहोरात्री, छाथवा दिवस सुधी छाथवा प्रहर श्रयवा मुहूर्त्त सुधीनुं पण. एटला वृतमां पूर्वें बहु दोत्र रह्यां हतां तेर्जनों दोष छहीं संद्येप कस्त्रो. किया जतारी, एटबे दिग् व्रतनुं देशावगाशिक नित्य प्रत्यें परिमित केत्रगमननुं परिमाण राखे जे, हुं कायायें करी फलाणे गाम, फलाणी जग्यायें, देवलें, दरगाहें छ यवा देवीना गामें, छथवा कोइ वीजी जग्यायें जइज्ञ. ते जपरांत जवानो मने निषेध हे. एमां जे दिग्वती प्राणीने देश परदेशनो व्यापारठे, ते व्रती एम कहेके, मारे कायायें करी श्रमु क केत्रश्री उपरांत जवानो निषेधहे. पण दूर संबंधनो कागल प्र मुख लखवो ने वांचवो ते ऋथवा कोइ माएसने मोकलुं ते मने माफ वे तथा ते देश संबंधी वात प्रमुख सांजलवी पए माफवे अने जेने दूरनो व्यापार नथी, ते तो परिमाए उपरांतनी हइनो आवे लो कांगल पण वांचे नहीं, कोइने कागल लखीने मोकले पण नहीं. अने जो चित्तनी प्रकृति संकल्प विकल्पमां न होय तो ते दूर देशनी वातो पण सांजले नहीं अने वात करे पण नहीं. परंतु जो एवी रीतें न रही शकाय तो वतना जांगामां बूट राखे अने जा णतां थकां परिमाणमां दोप लगाडे नहीं. ए देशावगाशिक नि सवत करे, ते सदा सर्वदा सवारना पहोरमां चौद नियमनी याद गिरीमां सर्व संजारीने राखे. वली पण एने संदेपीने रात्री संवंधी जुदां राखे, छने जे छहोरात्रनां करे, ते सवारना पहोरमांज याद • करे. एवी रीतें गुरुपासेंथी विधिसहित वत धाखां होय, तेम पा ले. ए देशावगाशिक वतना पांच श्वतिचार हे. तेनां नाम लखेहे.

दशम देशावगाशिक वत.

१ पेहेलो आणवण प्रयोगातिचार. ते नियमनी जूमिका बाहे रनी कोइ चीज होय, तेनी गरज पडे, खारें विचारे के मारे तो नि यम जपरांत जूसियें जावुं नथी अने जीवनी चाहना तो ते चीज मांज लागी रहींहे. लारें कांइ पोतानी बुद्धि जपार्जे अने ते जूमि जणी जनारा कोइने देखीने कहेके हे जाइजी! फलाणी जग्या सुधी जाशो तो श्रमारुं पण कांइ कामने, ते पण तमे करता श्राव जो. ते सांजली ते माणुस कहेके हाजी, हुं जइंश. ते समयें ते व्रती कहेके,त्यारें तो अमुक चीज मारे माटे जरूर खेता आवजो त्यारें ते तरफ जनाराने ते जणश, तेनी महोबतें करी खाववी जोइयें. एवी रीतें ते चीज, नियमबाहेरनी जूमिंथी मंगावी ले छने पोताना शाणपणाथी ते व्रती विचारे के, में मारुं व्रत पण राख्युं, अने मारे कामें जे चीज जोइती हती, ते पए आवरो, अने एतो पो ताने कामे जायने तेनाथी हुं महारुं पण काम करावुं हुं, एनो बोजो मारा माथा पर नथी. एवी रीतें बुद्धिनुं छज्ञानपणुं करे, पण एम न विचारे के, एथी करी जलटो तोटो थाय हे. केम के, जेकार णे देशावगाशिक व्रत जे कखुंठे,तेमां तो जातां आवतां हिंसाप्रमु ख दोष बहुज लागे.ते दोषनी किया मटाडवा माटे कखुंवे. छने जेवारें बीजा माणस पासें नियम केन्नश्री बाहेरनी चीज मंगा वे, ते वारें ते आजाखो पुरुष, अजयणा करतों जइने ते चीज लइ आवे, तेनाथी तो पोतेंज जइने लइ आवे तो सारुं? कार एके पोतें तो धर्मरुचियुक्तवे, तो तेथी जयणाथी जवाय, ते नाथी हिंसा केम थाय ? अने ते अज्ञानी तो अनेक हिंसादि दोष लगावीने ते चीज लावे, फरी तेनी पापकियानी अनुमोदना क री जाय. जुर्ज ! फलाणो अमुक केत्रें गयो हतो तेथी सारुं थयुं अमारुं पण काम थयुं. ए माटे वतधारी थइने एवा कपटवत. नो जांगो न करे.वतधारी तो गुरुनी आज्ञायें अने शास्त्रनी रीतें

जे कह्युं होय,तेज करे,ते माटे नियम लेइने बाहेरथी बीजानी पा सें कोइ चीज मंगावे,ते श्राणवणप्रयोग प्रथमातिचार जाणवो.

१ वीजो पेसवएप्रयोग छतिचार. ते एमके जे नियमजूमि काथी वाहेर कोइ चीज मोकलवी होय. त्यारें पहेलांथी मन सुवो करे के छा चीज तो मारे जरुर मोकलवी ठे.पठी नियमजूमि कानी बाहेर कोइ छादमी जतो होय, तेनी साथें ते चीज मोकसे ने मनमां खुशी थायके मारुं व्रत पए छखंम रह्युं, हुं पए नियम जूमिकानी बाहेर गयो नहीं, छने में मारुं कार्य पए साध्युं. एवी रीतें करे, तेने तेमां उलटो तोटो पडे. छने वसी एम करवा थी तेने बीजो पेसवएप्रयोग छतिचारदोष लागे. ए माटे जे स मजु श्रावक होय, ते छतिचार न लगावे.

३ त्रीजो सदाणुंवाय अतिचारते, ते कहेते. शब्दानुपात श्रति चार.ते एके, पोताना नियमक्तेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष जतो होय, तेनी साथें कोइ काम नियमकेत्रनी बाहेरनुं होय त्यारें व्रती श्रा वक विचारे के माराची त्यां सुधी जवाय एमतो नथी;माटे तेने नाम देइने बोलावीश, तो मारा व्रतनें दाग लागशे. एवी शंका थी जरूखे अथवा अगाशीनी वत उपर जइने उनो रहे, के, जेम मार्गें जता आवता सर्व लोकोने ए जुए, श्रने मार्गें जता श्रवता सर्व लोको, एने पण देखे. ते वखत एवी रीतें उनो रहीने मार्गें जता त्र्यावतानें देखे,त्यारें ते व्रती खुंखारो करे, श्रथवा नाकमां दोरो घालीने श्रयवा तमाकु लेइ नाकमां सुंधीने उंचा सादें करी ठींक करे, तेवारें मार्गे चालतो माएस, खांसी ठींक प्रमुखनो शब्द सां जलीने जपरनी तरफ जूए, एटले ते बन्नेनो हिमिलाप थाय. सारें पठी ते सां चलावीने आवे. एवी रीतें मेलाप करे, तेवारें ते वन्ने जणा पोताना कामसंवंधी एकांत वातचित्त करीने व्रती श्रावक, मार्गें हालवावालाने विदाय करे; त्यार पठी ते व्रती

दशम देशावगाशिक व्रत.

पोताना मनमां छज्ञानना विलास करे के, जूर्ठ ! में कोइ उत्पा तनी बुद्धि रची तो तेथी करी मारुं व्रत पण में निर्मलताथी राख्युं, छने बीजाने बोलावीने जे कार्य करवुं, इतुं ते कार्य संबंधी पण वातचित्त करी लीधी. एवी रीतें मूढ,छज्ञानी, क्रियानी जूलवणी करे, तेने त्रीजो शब्दानुपाति छतिचारदोष लागे. ए माटे समज्ज शुद्धव्रती थइने छने बुद्धिमान् थइ, ते छतिचार न लगावे.

४ चोथो रूपानुपाति ऋतिचार कहेेंडे.ते एमके कोइ व्रतीएं पोताना घरना आंगणा सुधी क्षेत्र मोकलुं राख्युं, श्रने बाकी बी जुं बधुं त्याग कखुं. हवे एवामां कोइ पोताना कामनो माणस घरना आंगणानी पासेना रस्तायें चाल्यो जायते, तेने व्रतीयें घर श्रंदरनी खडकीना रस्तायें अथवा जाली प्रमुखमांथी जोयो; लारें व्रती विचारे के, ए माएस साथें मारे जरूरनुं कामढे; ने ए माणसनुं घरतो अहींथी घणुं दूरने; खहां सुधी तो माराथी जवाय नहीं. कारण के, जो जाउंतो वतजूमि परिमाण उदा घ्यानो दोष लागे. वली छहीं पण एने बोलावुं तो व्रतमां खोंच लागे ए माटे एवुं करुं के जेम ए उलटो मने बोलाववाने पोतें ज चाल्यो आवे. एवो अज्ञाननो मनसुबो धारीने पोतें पोताना घरमांथी नीकलीने दरवाजा उपर आवी उनो रहे. ते माणस पण चाख्यो चाख्यो त्यां आगल आवीने नीकले; एटले ते बन्ने नी नजर एक थइ तेवारें ते चाली जनारो माणस पोतेज, व्रतीने बोलावे छने परस्पर मली जूहार विगेरे करीने पठी ते व्रतीयें जे वात, पोताना मतलबनी चिंतवी इती, ते करी लीधी. लार पढी पेलो माणस, पोताने ठेकाणे गयो अने व्रती पण घरमां आव्यो; अने मनमां अज्ञानपणे विचार करवा लाग्योके, में महारा शाणपणे करीने मारा वतने पण खोट न लगाडी, अने मारुं कार्य पण साध्युं. एवी में बुद्धि करी, पण एवुं न विचारे

दशम देशावगाशिक व्रत.

के एमां अज्ञानपणुंढे. जे जाणीबूजीने पोतानुं कार्य चतुरताथी करे, तो तेने चोथो रूपानुपाति अतिचार खागे.

५ पांचमो पुजलप्रकेप अतिचार कहेंबे. पुजलप्रकेप अतिचार ते नियमना क्तेत्रनी वाहेर कोइ पुरुष, पोताना कामने माटे जतो होय, त्यारें तेने जोइ वती छज्जान दोषथी खोटी माया केलववा ने तत्पर थयो, जे हुं ए जता माएसने साद करी बोलावी लजं, अथवा हुं तेनी सामो जइने उनो रहुं तो महारा व्रतने दूषण लागे. माटे साद कस्या विना अथवा एनी सामु जवा विना कोंइ बीजी क **लायें करी एने बोला**वुं. के जेथकी ए पोतें छावी महारी छागल जनो रहे. एवो विचार करीने आवनार पुरुष जपर कांकरी फेंके समस्या करे; कपडानो ढेडो बतावे. त्यारें ते कांकरी ते माणस ना देहने लागे एटले ते पए पाहुं फरीने तेनी सामुं जुए. त्यारें वती माणसनी अने तेनी दृष्टि एक थाय तेथी ते पोतेंज चाल्यो श्रावे,पठी तेवती मोहोबतथी पोतानुं कार्य करी तेने विदाय करे, सारें विचार करे के, में केवी बुद्धिंवापरी ? जेम लौकिक मौनि वोलता नथी अने संज्ञा चेष्टा करीने कार्य करे वे, तेम में पण बुद्धि बलथी मारुं व्रत राख्युं छने कार्य पण कखुं, एवी छज्जानकिया ते पांचमो पुजलप्रक्षेप अतिचार जाएवो. माटे समजु व्रती होय, ते एवी छज्ञानपणानी वात जो न करे, तो ते महोटा वाजना हेतुने पामे. अहींयां पहेला वे अतिचार अज्ञानताथी थाय, अने पांग्ला त्रण अतिचार, कपटपणे थायते; ते माटे ए अतिचारन आदरवा. ए वीजुं शिकावत थयुं. अहीं ठठा वतना जेदथी दशमुं व्रत संदेप ठे. ए थकी कहेवामां एवुं जाएी लेवुं के जेम ए वतमां संदेप वे. तेम परियहाँदिक सर्वव्रतमां संद्रेप थायवे. इति तत्वं. इति श्री द्वादशवतविवरणे दशम देशावगाशिकनामा दितीयशिका त्रतकथने पंकित श्री उद्योतसागरगणिना इतजापा संपूर्णा ॥१०॥

एकादश पौषधोपवास व्रत.

॥ श्रय ॥

॥ श्री एकादुद्रा पोेषधोपवासनामा ऌतीय ॥ ॥ हािक्ताव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

तिहां पोसह व्रतना चार जेदठे,ते लखे ठे.तेमां प्रथम आहार पोसह, बीजुं शरीरसत्कारपोसह, त्रीजुं अव्रह्मपोसह, अने चो थुं अव्यापारपोसह. ए चारें पोसहना प्रत्येकें बे बे जेदठे. एक देशथकी पोसह अने बीजुं सर्वथकी पोसह.

१ तेमां प्रयम आहारपोसह. ते देशथी जे त्रिविहार उपवा स करीने पोसह करे, छाथवा छायंबिल पोसह करे, छाथवा त्रि विहार एकाशना करी पोसह करे. ए त्रणे प्रकारनां पोसह करे, ते देशथी पोसह कहेवाय तेनी शैली कहेवे. पोसह लीधा पहेलां पोताना घरमां कही राखे जे हुं पोसह करीश ने आयंबिल अ थवा एकाशणुं करीश. ते माटे जोजन कार्ले हुं आ्राहार करवाने आवीश; अथवा तमे पोसहशालामां आहार लेइ आवजो, एवुं कहीने पठी पोसह लीए, त्यां पोसह लीधा पठी जेवारें मध्यान्ह ना देववंदन करी रहे, तेवार पठी चरवलो, मुहपत्ति अने पोंठणुं, ए त्रणे उपकरण, साथें खेइ पढेडी उंढीने साधुनी रीतें उपयोगी रहेतो थको मार्गमां जयणा सहित चाखो जाय. अने जोजन स्थानकें जइने इरियावही पडिकमे,गमणागमण आलोवे, अने प ठी पोंठणुं बीठावीने बेशीने आहारनुं पात्र पडिलेहे. पठी पोताने बेवा योग्य जे आहार,ते बीये अने ते बेइने साधुनी रीतें अग्रऊ थको आहार करे. मुखथी आहारनुं वखाण न करे, आहारने

एकादश पौषधोपवास व्रत.

वखोडे पण नहीं, आहारनी जुठ, गीरावे नहीं, आहार करी रह्या पठी गरम पाणीथी आहारतुं वाशण धोइने ते पाणी पी जाय. पठी पात्रने शुद्ध करीने नितारी पाणी प्रमुख सूकाइ जवा देइ, ते पात्र कोरुं करीने पाढुं आपे. त्यार पठी फरी उपयोगी थको पूर्व नी पेरें पौषधशालामां पूर्व स्थानके जइ बेसे. मार्गमां कोइ जता आवतानी साथें वात करे नहीं. ए प्रमाणे खस्थानकमां आवीने इरियावही पडिक्कमे, चैल्यवंदन करी धर्म कियामां प्रवर्त्ते. अथ वा जो कोइ संबंधी तथा सेवक सामो आहार, पोसहशालामां लावे, तो पण पूर्वोक्त रीतें आहार करीने पात्र कोरां करी तेने पाठां आपे, अने पठी धर्मकियामां प्रवर्त्ते. जो त्रिविहार उपवास होय तो एकख़ं पाणीज मात्र पूर्वनी पेरें जइने लइ आवे, एवी रीतें आहारपोसह करे, तेने देशथी पोसह कहीएं अने चौविहार उपवास करी पोसह करे, तो तेने सर्वथी पोसह कहीयें.

१ बीज़ुं शरीरसत्कारपोसह. ते सर्वथा शरीरनो सत्कार एट के धोवन, धावन, तैलमईन, वस्ताजरणादि शृंगार प्रमुखथी को इ रीतें शरीरनी ग़ुश्रूषा न करे. साधुनी पेरें अपरिकर्मित थको रहे, ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह कहीएं. तथा देशथी शरीर सत्कार पोसह ते पोसहमां हाथ पग प्रमुखनी ग़ुश्रूषा करवानी बूट राखे, ते देशथी शरीर सत्कारपोसह कहीयें.

३ त्रीज़ुं श्वव्रह्मचर्य पोसह. ते जे त्रिकरण शुर्द्धे पोसहमां व्र ह्मचर्य पाखे, ते सर्वथी व्रह्मचर्य पोसह जाणवुं श्वने जे मन, वचन श्वने दृष्टि प्रमुखनी दूट राखे श्रयवा परिमाण राखे, ते दे्शथी व्रह्मचर्य पोसह जाणवुं.

४ चोयुं सर्वसावद्यव्यापार त्याग करे ते सर्वची श्रव्यापार पोस इ कहीयें, श्रने जो एकादि श्रने जो एकादि वस्तुनी श्रयवा उघरा यवा श्रादेशादिकनी दूट राखे, ते देशथकी श्रव्यापार पोसहकहीयें.

ए प्रमाणे चार प्रकारनां पोसह हे. ते दरेकना बे बे जेदहे. ते प्रथम ज्यारें आगमविहारी गुरु विद्यमान हता, त्यारें ते जव्य जीव श्रावको पण द्युद्ध जपयोगी घणा पापजीरु हता; स्रने तेर्ड पोतें जे जे प्रतिक्वा करता हता, तेवीज द्युऊ पालता हता, तेवीज रीतें उपयोगमां राखीने चालता, पण विस्मृति कर ता न हता, तथा तेमां कमवेश करता न हता त्र्यने गुरु पण श्चंतिशय ज्ञानना प्रजावथी योग्यता जाणी खेता हता के आ देश थकी पोसह करवा लायकजठे, ऋथवा सर्वथकी पोसह करवा लायकने. वली नद्मस्थ जावश्री कदापि कमवेश श्रह जाय तो ते तरत जाणीने विचारता के मारी प्रतिज्ञामां आटली खोंच लागी श्राटलुं अविरति पणुं लाग्युं. एवुं जाणीने तेनी तरत आलोय णा लेता, अने पडिकमतां पण महोटी जूल न पडवा देता. अ ने हमणां तो एवा उपयोगी जीव नथी. काल दोषना प्रजावथी वक्र जडढे, ए माटे पूर्वाचार्यायें उपकारने अर्थें लाजालाजनी तुख्यता विचारीने श्रा मुजब जीतव्यवहार बांध्योढे. तेमां प्रथम जे आहारपोसहढे, तेना बे जेद कीधाँढे. ते आहारपोसह दे शथी पर्ण करे छने सर्वथी पण करे. एम जेवी पोतानी शक्ति होय ते प्रमाणे करे. अने बाकीनां जे त्रण पोसहवे, ते तो स र्वथीज करे. देशयकी तो थायज नहीं. ए व्यवहारशैली वांधीवे. एवी रीतें वर्त्तमान कालें पोसहनी प्रवृत्तिठे. हवे पोसहनो प्रजाव आगममां जे कह्योंहे, ते लखेंहे.

जे, पापना समूह तेणे करी जारयुक्त थयेला एवा बहुसावयव्या पारी ग्रहस्थने आरंजनो बोजो उतारवाने पोसह, ते विश्रामनुं स्था नकडे. विश्राम करतां अख्प बोजो थाय. जेम जार उपाडनारो पोताना मस्तक उपर मोहोटी गांसडी उपाडी बे, चार कोश चा बे एवामां कोइ विश्रामनुं स्थानक आवे, त्यारें ते प्रसन्न थइने

वोजो उतारे, जे माटे शीतल ढाया विश्रामनुं स्थानक होय तथा घडिवार जलाशय होय त्यां वेसें, त्यारें आनंद थाय, थांक मटे, शरीर हलवुं थाय, फरी बोजो उपाडीने चालतो थाय. ए प्रमाणे वे, चार विश्राम खेतो थको सुखें धारेखे ठेकाणे पहोची जाय, तेम श्रावकें पण दररोज सावद्य व्यापारनो बोजो घणो उपाड्यो हे. ञ्चने तेवो सहोटो जारे बोजो उपाडीने चालेठे, ते ज्यारें पांखी प्रमुख पर्वना दिवस आवे, लारें प्रसन्न थइने घरनो जे सावय कर्मरूप वोजो, तेने जतारी घरमांज राखीने विश्रामरूप केत्र पो षध शालामां जइने वेसें, छने पोसह धारे त्यारें, सावद्यरूप बो जानो परिश्रम एटले थाक उतरी जांय. छने जावना उपदेेशरूप शीतल पवन अकी विषयकषायरूप गरमी, विकब्प पशीनो मटी जाय, आत्मा शीतल थाय. अने जिनशासनरूप कल्पतरुनी ढा यामां वेसीने पोताना खरूपचिंतवनरूप जलें करीने घणा का लनुं पाप धोइ नाखे. आत्माने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप जा वजोजनथी पोषे. ए प्रमाणे वचमां वचमां पोसह करण रूप वि श्राम लेतो थको आराधकजावना स्थानकें जइ पहोचे. अहींयां आठे दिवसें अथवा पंदरे दिवसें पोसह करे, तो पण फल एक पोसहनुं एटलुं कह्युं**वे. शास्त्रमध्ये एक**ंपोसहनुं फल कह्युंवे, ते जाणवुं, जे प्रजुनी आज्ञापूर्वक एक अहोरात्री पोसह करे, ते जीव वे हजारने सातरों कोडी तथा ते उपर सीत्तोतेर कोडी सी चोतेर खाख, सीचोतेर हजार, सातरों ने सीचोतेर. एटखा पख्योप म तथा एक पत्योपमना नव जाग करीयें तेवा सात जाग उपर एटखुं देवतानुं आयुप्य वांधे; अने एटलीज नरकगतिथी वृटे. अहों ! एक पोसह कस्वाधी जीव, एटलो लाज उपार्जे ? तेना अंकसंख्यानी स्थापना. (१९९९९९९९९९ अने 🖁) एटलुं फल, एक ग़ुरू व्यवहारपोसहनुंठे. छने वली जो व्यवहारपोसह क

एकादरा पौषधोपवास व्रत.

रतां थकां चेतनाने निश्चयपोंसहनी खीनता लागी,तो ते पोसह ना फलप्राप्तिनुं तो परिमाण पण न थाय,तेनो व्यगणित लाजठे. यावत् रतन्रयी क्वायकजावें थइ जाय.त्रणे लोकनां जव्य जीवने पूजनीय थाय.ए माटे पोसहठे,ते यहस्थने व्यवस्य करवुंज.ए पो सहठे, ते कर्मरूपी जावरोगनुं व्याषधठे. माटे यहस्थें पर्वदिवस व्यावे लारें जरुर पोसह करवुं.हवे ए व्रतना पांच व्यतिचार लखेठे.

र प्रथम अप्पडिलेहिअ, छुप्पडिलेहिअ, सिझासंथारक अति चार. ते जे स्थानकने विषे पोसह संथारो करे, ते जूमिनी तथा सं थारानी पडिलेहणा करे नहीं. एटले संथारानी जग्या पोतानी आंखे थी सारी पेठें निगाह करीने जूए नहीं अने कदापि जूए तो प्रमाद थी कांइ दीठी कांइ न दीठी, एवी रीतें जूए, ते पहेलो अतिचार.

१ बीजो छप्पमझिय, छप्पमझिय, सिझासंथारक छतिचार. ते एम के, ते संथारो, रजोहरे प्रमुखथी पुंजे नहीं. कदापि पुंजे, तो जेवो तेवो गडबडथी संथारो पुंजे, पए वस्त्रांचलें दंमाशएथी पुंजे नहीं, छने कोइ जीवनी रक्ता करे नहीं. ते बीजो छतिचार. जे प्रमाणे श्री जैनशासननी शैली एवी ढे, ते प्रमाणे मार्गी जीव किया करे, ते छावी रीतेंके प्रथम तो हरेक कियामां ट्रष्टिपडिलेहए करे. सारी रीतें सर्व स्थलें चीज ने निगाह करी जोइने पढी पुंज एा प्रमुखथी पुंजे, पढी ते वस्तु वापरे, एवो तो सहेज ज्यल ढे. लारें पोसहादिक कियामां तो निपट जपयोग धरीने पडिलेहएा प्रमुख करवी जोइयें. छने एवी रीतें जयणाथी जो न करे, तो तेने बीजो छतिचार लागे.

३ त्रीजो अप्पडिलेहिअ, छप्पडिलेहिअ, उच्चारपासवण जूमि श्रतिचार. ते एमके लघुनीति अथवा वनीनीति परठवानी जूमिने सारी रीतें दृष्टियें करी अवलोकन न करे, अने अवलोक न करे, तो जेम तेम काम चलावी दे. जीवयल कीधा वीना लघु नीति प्रमुखनी परठवणा करे, ते त्रीजो व्यतिचार.

धचोथोञ्ञप्पमद्यिय, छुप्पमद्यिय, उच्चार पासवण जूमि ञ्रति चार. ते मात्रानी, तथा पोसहज्ञालनी जूमि ञ्रप्रमार्जित देखीने न पुंजे.ञ्रने पुंजे तो यद्वातद्वा करीने काम करे. एम वडीनीति, लघुनीति प्रमुख यत्नथी परठवे नहीं;ते चोथो ञ्रतिचार.

थपांचमो पोसहविधि विचरीए अतिचार. ते आहार त्याग पो सह कीधे, क्रुधादि परिसह जागे,त्यारें पारणुं करवानी चिंता करे, के प्रजातें फलाणी रसोइ अथवा फलाणी चीजनो अहार करशुं तथा एम चिंतवे जे अमुक काम सवारें करवुं ठे, ते त्यां जइश अने तेनी जपर तागादो करीश. तथा प्रजातमां पोसह पालीने पठी सारी रीतें तेलमईन करावीने खुब गरम पाणीथी स्नान करीश. तथा अ मुक पोशाक पहेरीश, अने कुलस्त्रीनी साथें खूव तरेहथी आवी री तनो जोगविलास करीश. एवुं सावद्य चिंतवे, तथा संध्यासमये स्थं मिलशोधन न करेपोसहमां विकथा करे, निद्धाकरे अने नीचें लखेला अढार दोपोने टाले नहीं. ते अढार दोपोनां नाम लखीएं ठैयें. १ पोसहमां त्रती विनाना वीजा आवकनुं आणेलुं पाणी न पीतुं.

१ पोसह निमित्तें सरस आहार खेवो नहीं.

३ पोसेह करवाना आगल दिवसें उतर पारणामां विविध

प्रकार संयोग मेलवीने छाहार करवो नहीं. धपोसह छथवा पोसह निमित्त छागले दिवसें देह विजूषण न करतुं. ४ पोसह निमित्तें वस्त्रादिक धोवराववां नहीं.

६ पोसह निमित्तें छाजूपण घडावीने पहेरवां नहीं, वस्त्र लेवां नहीं, छंगें घरेणां पहेरवां नहीं.स्त्रीने पण नय तथा कंकण प्रमुख जे सोजाग्यना छुशल चिन्हठे, ते पहेरवां परंतु ते वि ना पोसहमां वीजां नवां घरेणां घडावीने स्त्रीयें पहेरवां नहीं.

॥ दोहा ॥ अब बारम वत हे "अतिथि, संविनाग" यह नाम; कहुं दोष आहारके, युनि अतिचार हे ताम ॥ १ ॥

স্মম্ব ॥ श्री घादरा अतिथिसंविनागनामा चतुर्थ ॥ शिक्तावत प्रारंजः॥

ए छहार दोष पोसहना हे. ते त्याग करीने पोसह करे, ते शुद्ध पोसह कहीयें. तेथी जो विपरीत करे, तो पांचमो अतिचार लागे. इति श्रीद्वांदराव्रतविवरणे एकादरा पौषधोपवासरूप तृतीय शिक्ता त्रते पंक्ति श्रीज्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ११ ॥

१७ पोसहमां चोरनी कथा न करवी. १० पोसइमां स्त्रीनां ऋंगोपांग दृष्टि लगावीने जोवां नहीं.

१५ पोसहमां बीजानी निंदा करवी नहीं. १६ पोसहमां स्त्री, पिता, माता, पुत्र. नाइ विगेरे सर्व संबंधी साथें वार्तालाप करवो नहीं.

ठे, एवां देशकथानां वचन, बोलवां नहीं. १४ पोसहमां पुंज्या विना जूमिए लघुनीति ऋशवा वडीनीति परठ वी नहीं, छने परठवे तो पोताथी वोसिरावे. इरियावही पडिक्रमे.

११ पोसहमां सारीवा नठारी राजकथा तथा युद्ध कथा करवी नहीं. १३ पोसहमां अमुक देश आवो रूडोठे अयवा अमुक देश हूं नो

११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.

१० पोसहमां सारी वा नठारी स्त्री सबंधी कथा करवी नहीं.

ए पोसहमां शयन करवुं नहीं. निद्रा करवी नहीं.

७ पोसह निमित्त, वस्त्र रंगावीने पहेरवां नहीं. ण पोसहमां शरीरथी मेल प्रमुख उतारवो नहीं.

द्वादश ऋतिथिसंविजाग व्रत.

हवे छतिथि एटले जेने लौकिक पर्वोत्सवादिक दिवसोनुं प्र योजन नथी, ते ऋतिथि कहीयें. एटले लोक व्यवहारमां जे संसा र वृद्धिनी हेतु तिथि,तेहेवार, विवाहादि लग्नतिथि इत्यादिक सर्व जेणे ठोडी दीधांठे.सर्वे दिवसोमां जेनी धर्माराधनकरवानी एक निष्ठाढे.तेने ऋतिथि कहीयें. ऋथवा जेम ऋतिथि एटले प्राहु णो, मिजमान माणस कोइने घेर आवे, ते कांइ तिथि तेहेवार नो दिवस जोइजे न आवे, गमे ते दिवसें पंथेंथी चाल्यो आवे. ते **उनो रहे; तेम साधु प**ण निमंत्रणादि कीधा विना नोजन कालें ञ्चावी हाजर थाय. प्रायें साधु ञ्चमथो तो गुरु ञ्चाज्ञा विना ग्रह स्थने घेर कदापि जाय नहीं, अने जोजन कालें मधुकर एटलें च्रमरनी वृत्ति करे. निमंत्रण विना ग्रहस्थने घेर विचरता जाय. ते पण ग्रहस्थने श्रकलामण न उपजावे. एवी रीतें आहार **बिये, ते ऋतिथि जिना**ज्ञाकारी ग्रुऊ साधु तेनो जे संविजाग क रे. एटलें न्यायोपार्जित ज्ञुद्ध व्यवहारें कमाएलुं जे डव्यादिक ते मांथी पोताना जदर जरणने माटे जत्तम कुलाचार पूर्वक जे द्यु ऊ निर्दोष आहार नीपजाव्यो अने ते पण पूर्वकर्म पश्चात्कर्मा दि दोष रहित होय, एवो ग्रुऊ अने निर्दोप आहार ते वहुमान सहित जाग्ययोगें ग्रहने विपे साधु आव्या थका अतिहर्पवंत थ यो थको आहार आपे. अने ते पण दानना पांच गुणें करी युक्त दातारनी शुद्धता धरी आपे. ते दानना पांच गुणनां नाम लखेठे.

१ प्रथम जे जेनमार्गी दातार. ते झुऊ पात्रनी प्राप्ति पामीने प्रथम पोताता घरना आंगणाने विपे मुनिनां दर्शन मात्र थयां अने तेणे करी घणा दिवसनी अंतरंगनी चाहनाना उद्वासथी आनंदनां आंसु आवे,जेवी रीतें कोइ आपणो प्रिय अने परम हित कारी प्राणप्रिय एवो वह्वज सज्जन दूर देशांतरें गयो होय, तेने कदी

रेश्वर

द्वादश अतिथिसंविजाग वत. १४३

पण मनथी विसारतो नथी; मनमां एज वांढा लांगी रहे के ते श्रापणने क्यारें मलरो ? एवी चाहना राखतां राखतां घणो काल वीला पठी लांबी मुदतें कोइ वखत ते सज्जन ऋणचिंतव्यो एका एक छावी उनो रहे, लारें तेपरम वह्यजने जोइने छंतरंग रागनी धारा जह्वासथी आंखमांथी हर्षनां आंसु पडे. ते शीतल होय जे कारणे वियोगना आंसु गरम होयढे अने हर्षना आंसु शीतल होयठे. तेम श्रावक पण साधुने आवतो देखी करी प्रशस्त रा गंजक्तिना उद्वासें उठे; अने मनमां विचारे के अहो ! आज हुं महोटो जाग्यशाली के जे हुं छनादिनो जूखो, खडव्य संबलरहित, जाव दरिझें पीडित, ज्ञानलोचन रहित अंधजावें पीड्यो, अपारसंसारचक्रमां पड्यो जटकतो हतो, एवो जे हुं,ते बहु छकथनीय छुःख पामतो छने कशी गणतीमां नहीं हतो, एवो महाछःखी मने जोइने श्रा महारा मोहोटा हितकारी मुनि राजे महोटो करूणाजाव धारण करी मारा उपर महोटी मेहेर वानी कींधी, जे प्रथम तो मने ज्ञानांजनशलाका फेरवीने मा रां सम्यक्ज़ान लोचन खोली दीधां छने ए मुनियें त्रण तत्वसे वारूप छाजीविकानो व्यापार शीखवाड्यो, तथा मुजने रतन्त्रयी धारणरूप नियमा करी दीधी. एवी रीतें महारो श्रनादिनो दरिझ त्ताव मूकाव्यो, मने सारा आदमीनी गएतीमां आखो. एवा नि ष्कारण ञ्रने गरज विना महोटा उपकारी महामुनिराज ते मारा घर छांगणाने विषे छाव्या, ए जावनानी पुष्टिची, प्रशस्तरागना जाव उह्वासथी हर्षानंदनां आंसु आवे, ते दाननो पहेलो गुए.

१ बींजो जेम संसारी जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुनों संयोग पा मवाथी रोमावबि जजी थाय, तेम महोटी जक्तिना प्रजावथी मु निने जोइने ते श्रावकनी सर्व रोमावबि ज्व्वसित थाय, अने हृदयमां हर्ष समाय नहीं, ते दाननो वीजो ग्रुण.

द्वादश अतिथिसंविजाग व्रत.

३ त्रीजो मुनिने देखीने मुनिप्रत्यें बहुमान उत्पन्न थाय. जेम कोइ संसारी सामान्य गरीव यहस्थने घेर राजा पोतें चाली आवे सारें ते ग्रहस्थ, ते राजाने केवुं मान आपे ? अर्थात् घणुंज मान आपे. मनमां घणोज आश्चर्यमय थइ उमेद जस्वो हर्ष त्रस्तो थाय. अने मनमां विचारेके छहो ! आज महारे घरे महा राज ऋाव्या, माटे घरमां कोइ सारी छने नवाइ जेवी चीज होय ते हुं एमने जेट करुं, फरी फरी एवा महोटा लोको मारे घेर क्यां थी आवे ? आवो संयोग फरी क्यारें मलवानो हे ? आ ऊर्लज यो ग तो मारा महोटा जाग्योदयथी मखोबे. एवो विचार करी घर मां जे सर्व करतां सारी अने नवाइनी चीज होय, ते राजाने जेट करवा माटे काढे. वसी विचारेके आ महारा घरनी चीजने महा राज कबूल करे, तो महारां महोटां जाग्य हुं मानुं, एवा उल्ला सथी ते यहस्थ, राजाने पोतानी वस्तु जेट करे, तेम आवक पण साधुने पोताने घेर आव्या देखीने तेन प्रत्यें घणुं वहुमान करे. ऋने विचारे के एवा निस्पृहीमां शिरोमणि, जगद्वंधु, जगत् हि तकारी, जगद्धत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, आत्मारामी, करुणा निधि, परमोपकारी, परमपात्र, करुणासागर, संसारजलधिज ऊरण, परमठपकार करवामां दक्त, क्रोधादिकषायजक्तक. पोतें तरेला, परने तारनारा, एवा महामुनिराज चालीने महारे घेर छाव्या, तो छाज महारां महोटां जाग्य जाणवां. छाज रूडो सुवि हाण थयो, आज महारे आंगणे कामधेनु, कल्पवृक्त, चित्रावेली अने चिंतामणि ए अणचिंति चाली आवी अने आज महारी जा गृत द्ञा सफल थइ. एवो हर्प जस्वो ससंच्रम होतो थको ते मुनि नी सन्मुख जाय अने त्रिकरण गुऊ प्रणाम करीने कहे के हे खा मि ! दीनदयालुजी ! पधारीयें. महारा घरनुं त्र्यांगणुं पावन करियें. एवुं वहु मान दृइ करीने घरमां पधरावे, पठी मनमां विचारे के,

द्वादरा श्रतिथिसंविजाग व्रत.

श्रहो ! महारां ञतुल जाग्यनो उदय थयो होय तो ञ्याज ञ्या साधु महारां श्राहार पाणीनो श्रनुग्रह करे जे कारण माटे साधुजीने आ हार खेवामां महोटी तजवीजवे. आहारनी गवेषणा करे, गुऊनिदों षनी प्रतीति आवे, त्यारे तो साधु आहार ले. ए कारण माटे रखे कोइ दोषमाराश्री उपजे ? एवो विचार करी त्रिकरण योगें बहुग्रुऊ, मान जस्वो उपयोगी थको विधिपूर्वक आहार लावे, अने मौठां व चनोथी ते साधुनी विनति करे के हे खामिजी ! हे गुरुजी ! आ ग्रु ऊ निर्दोषी आहारते, ए माटे हे कुपानिधान ! मुज सेवक ज पर परम शुज दृष्टिनो पसाय करी सपात्रकर पसारीयें. महारो निस्तार करीयें. एवां मीठां छने परम जक्तिवंत वचनोयें विनति करतो थको आहार आपे, त्यारें ते मुनिराज, ते योग्य आहार जाणीने ले, छने श्रावक पण जेटली दानलायक निर्दोष वस्तु होय, तेज सर्ववस्तुनी निमंत्रणा करे. एवा विधियें करी दान त्र्यापीने फरी ते मुनिप्रत्यें हाथ जोडी,नीचो नमी, पृथ्वीपर मस्त क लगावीने नमस्कार करे. पत्नी वस्ती मीठां वचनोचें विनति क रे के हे खामि ! क़ुपानिधान ! मुज गरीबनी एक विनतिबे, ते सां जली लेइयें. सेवक जपर मोहोटी क्रपा करी मने महोटो कस्वो, मारी पर महोटो उपकार कस्त्रो, ऋाज महारुं घर पावन थयुं. उत्क्र ष्ट जाग्योदय विना मुनिना चरएकमलनी रज घरमां क्यांथी पडे ? (गुणिपदकजधूलरजकंचन सेवहुं मूल मेरा) आजनो दिवस सफल थयो. फरी पण हे खामिजी ! अज्ञान, पान, खादिम, खादि म, श्रोषध, जेषज, वस्त्र, पात्र, सिझ्ना, संचारकादि प्रयोजन उप जे, लारें सेवक उपर कृपा करी ऋवश्य ऋनुग्रह करवोजी. स्वामि जी ! आप तो महोटा मुनिराजढो, गुणवान्ढो, निस्पृहीढो. आपने कोइ चीजनी कमती नथी, कोइ वातनो प्रतिवंध नथी, वायुनी पेरें श्रप्रतिबंधवो. तो पण हे करुणानिधान ! मुज सेवक उपर

٩٩

રપ્રય

ेसंविजाग वत. छादरा अतिथिसंविर्

कृपा करीने फरी व्यनुयह करवो. ए प्रमाणे ^{रहुमान} जत्पन्न थाय. जेम नी हद्दसुधी ते मुनिश्रेष्टने पहोचाडवा जाय. राजा पोतें चाली आवे

8 चोथो गुए एके, त्यांथी ते मुनिने वंदना के अर्थात् घएंज घेर आवी, जोजन करे. पए तेने मनमां हर्ष समादे^व जस्त्रो हर्ष रो मुनिना आगमनरूप जाग्योदय थयो, तेए करी ह^{17रे} घरे महा यको विचारे के आज कोइ माहारे जवी वात थइ गइ^{चीज} होय होटो कोइ लाज थयो. कारए, जे मुनिराज निस्प्रही तथारे क्यां रहित, गतप्रतिबंधी, सहजजदासी निरीह, एवाने में विनर्ति यो धी एटले तरत महारे घेर आव्या. वल्ली में जे आहार आप्यो, रा पए सर्व लीधो. वचमां कोइ छंतरायरूप विन्न न थयुं. एथी करी महारो कोइ सारो वखत प्रगट्यो जएायठे. फरी आवो योग क्यारें मले ? अने जो मले, तो जाएं जे महारे अतुद्ध पुष्पनो प्रसाद थयो. एवी अनुमोदना वारंवार करे.

थ पांचमो ग्रण. ए जे जेम कोइ मंदजाग्यवान् पुरुष, व्यापार क रतां करतां थोडुं कमाय, तेने कोइक दिवसें एकज शोदामां लक्त डव्यनी प्राप्ति थाय, त्यारें ते फरी व्यापारनी छनुमोदना केवी चा ही चाहीने करे ? तेवी रीतें एना करतां पण छाधिक दाननी चाह ना समकेती जीव राखे. ए पांचे ग्रणोयें युक्त दान छापवुं, ते ग्रु ऊ दान कहेवाय, ए ग्रुऊदानथी छातिथिसंविजागव्रत थाय.

छहींयां आवकें साधुने दोप रहित आहार आपवो, अ ने साधुयें पण दोपरहित आहार खेवो. त्यां दोपनी विचा रणा करतां प्रथम शोख दोप आवकथी खागे. अने शोख दोप साधुथी खागे, तथा दश दोप साधु अने आवक वन्नेथकी उपजे, ए प्रकारे वद्धा मखी वेंताखीश दोपनो त्याग करीने सा धु आहार खीये, ते वेताखीश दोपमांथी प्रथम आवकथी शो ख दोप खागे, ते खखे ठे.

१४६

फ्रादश ईश व्यतिथिसंविजाग वत. १४७

श्रहो ! महारां श्रतुल्याकर्मी दोष. ते साधुने वास्ते ठकायनो आरंज महारां आहार पानीपजावे, ते आधाकर्मी दोष.

हार बेवामां मन् जद्देशिकदोष. ते जेवारें रसोइ करवा मांने, तेवारें षनी प्रतीति ई करनारने कद्देके, रसोइ घणी करजो. कारणके,साधु कोइ दोषआवझो, तेमने सारी रीतें आपद्युं. जो रसोइ घरमां पुष्कल मान जग्तो कोइने देवाय. कदापि रसोइ कमती होय, तो देवाय न चनोई त्यारें साधुने द्युं अपाय ? ए माटे रसोइ वधती करजो. एवी ऊ.तिं साधुनुं नाम खेइनी वधारे रसोइ करावे, ते जदेशिकदोष.

३ त्रीजो पूतिकर्मदोष. ते आधाकर्मी प्रमुख हर कोइ दोषे दूषित एवो अग्रुद्धाहार होय, ते ग्रुद्धाहारनी साथें जेलवे, ते पूतिकर्मदाष.

४ चोथो मिश्रजातिदोष. ते घरमां कह्या करे के, रसोइ ज तावलें बनावो. वखत थयोढे माटे जो वेलासर रसोइ बनावो, तो कांइ आपण जमीयें अने कांइ साधुने पण आपीयें. ए माटे ताकीदथी रांधो. एम कही कहीने जे आहार बनाव्यो, ते मिश्र जाति दोषें दूषित आहार जाणवो.

थ पांचमों थापनादोष. ते जे ग्रहस्थ. जोजन वखतें एम क हे जे आज आ रसोइमांथी आटलो आहार वाशणमां जूदो काढी राखो. ते जेवारें साधु आवशे, त्यारें देवो पडशे. एवी रीतें व्यवहार करीने आपवुं, ते पांचमो थापनादोष.

६ ठठो पाहुडीदोष. ते साधुने आव्या जाणी चीज वस्तु आ गल पाठल खडजड करे, धका धकीमां सावद्यक्रिया करीने सा धु आगल लावीने आहार आपे, ते पाहुडीदोष.

७ सातमो प्राडुःकृतदोष. ते साधुने छाव्यो जाणीने जो घरमां छंधारुं होय, तो तेने मटाडवानो प्रयत्न करे, खडकी,जाली, वारी, वारणां, ए सर्वने तरत उघाडी नाखीने छजवाल्लुं करे. मनमां जाणे जे अंधारुं हरो तो साधु आहार बेरो नहीं. एम करी आ हार आपे. ते प्राडुःकृतदोष.

ण् त्राठमो कीतदोष. जे साधुने आव्यो जाणी करी बजार मांथी मूख आपी करी आहार वेचातो लावी साधुने आपे, ते कीतदोष.

ए नवमो प्रामित्यदोष. ते कोइनुं उधार ज्वीनुं खेइने आपे, करज करीने आपे. ते प्रामित्यदोष.

१० दशमो परावर्त्तितदोष ते साधु आव्या जाए। मनमां वि चारे जे, महारा घरमां तो नीरस आहारठे; ते साधुने केम दी धो जाय ? वास्ते पडोशी अथवा संबंधीने घेर, ते नीरस आहार आपीने तेने बदले साधुने सारु सारो सरस आहार थोडो लावे, ते साधुने आपे. ए दोष, जक्तिथी अथवा अजिमानथी अथवा लोकलाजथी थाय. एटले लोकोमां वात चर्चा थाय, जे आवो मा तबर ग्रहस्थ थइने एवो आहार साधुने आपेठे, अथवा कोइ नीर स आहार देतां थकां पाडोशी जोशे, तो आपणी निंदा करशे, ने कहेशे के ए एवो आहार साधुने आपेठे ! एमाटे लोकला जथी सारो आहार लावीने आपे, ते दशमो परावर्त्ति दोप.

११ अगीयारमो अज्याहतदोष. ते पोताना घरमां जे आहार वनेलो होय, ते जडकपणाथी आहारने सामो लइ साधुने स्था नकें जइने आपे, ते अज्याहृतदोप.

११ वारमो उझिन्नदोप. ते कोठीमां तथा संजीरा प्रमुखमां चीज राखेली होय,ते चीजनो छाहार, ते कोठी संजीरा प्रमुखनुं तालुं उघाडीने तेमांथी छापे, ते उझिन्नदोप.

१३ तेरमो मालाहृत दोप. ते छाहारने मेडी माल जपर, छ यवा ठीका जपर, छायवा ठत जपर, छाथवा वीजा कोइ स्थानक जपर उंचो राखेलो होय, ते निसरणी प्रमुख मांनीने लां पहोची

द्वादश अतिथिसंविजाग व्रत. १४७

ने पठी उतारी लावे. अथवा नोंयरामां नीचें उतरी तेमांथी आहार लावे, ते आहार, साधुने आपे, ते मालाहृतदोष.

ं १४ चौदमो आहिंद्यदोष. ते ए के पारकाना हाथमां जे ची ज होय,ते तेनीकनेथी ठीनवी खेइने साधुने आपे, ते आहिद्य दोष. ,

रें पंदरमो अनिस्टष्ठ दोष. ते एके घणा माणसोनी कोइ साधारण चीज, वेंची खीधा विनानी होय, तेमांथी उपाडीने साधुने आपे, ते अनिस्टष्टदोष.

१६ शोलमो अध्यवपूरकदोष. ते कलकलता पाणीमां बीजुं पाणी पूरे. अथवा जात प्रमुख चूला उपर चडेलांडे, तेमां वी जा चोखा नाखे, एम तैय्यार थता आहारमां बीजी पूरणी करे, अने मनमां विचारे के आज गाममां साधु घणा आव्याढे, तेर्ड मांची हरकोइ पण आहार लेवा माटे आपणे घेर आवी चडशे, ए माटे रसोइमां घणी पूरणी करी रसोइ वधारे कराविये. एवुं क रीने पठी ते आहार साधुने आपे, ते अध्यवपूरकदोष. ए शोल दोष, आवकची साधुने लागे डे. एमां केटलाएक दोष अजाण पणे लागे, केटलाएक जक्तिथी लागे, केटलाएक दोष उजाण पणे लागे, केटलाएक जक्तिथी लागे. ए शोल दोष टाली तजवीज करीने आवक, द्युद्ध आहार साधुने आपे जे साधु पण लारें निर्हूषित आहार जाणीने ले.

हवे साधुथी शोल दोष उपजे, ते कहेंठे.

१ प्रथम धात्रीदोष. जेम धात्री उदरपूर्णार्थे ग्रहस्थना वाल कने रमाडे, तेम साधु पण ग्रहस्थना वालकने रमाडे, तरेह तरेहनां वचनोयें करी बोलावे, चपटी वगाडी रीजवे, तरेह तरेहनां चाटु क वचन बोली करीने बालकने, हसावे, घणो प्यारा देखाडे. तेवुं जोइने ते बालकनां माता पितादिक जाणे के साधुजी झ मारा ढोकरा जपर वहु हेत करेडे. तेणे करी ते वालकना नि मित्तें ते साधु जपर दृष्टिरागनो जह्वासी थाय, तेवारें साधुने आहार आपे. ते आहार साधु ले, त्यारें धात्रीदोष लागे.

१ बीजो दूतीदोष. ते जे साधु विचरवा गया थका आवक आविकाने कासीदनी पेठें परगामना समाचार अथवा कागल आणीने आपे पीयरनी इकीकत लावीने वहूने कहे. वली वहूप्र मुखने बीजी मुखचातुरी बनावीने कहे के, तमारी माताजी सुख चेनमांठे, अने तमारा जाइजी पण साजा ताजाठे. बीजा पण सर्व कुटुंबीयो कुशल केम ठे. वली कहेके फलाणातुं सगपण ययुं, फलाणाने ठोकरो थयो, ते तमोने अमुक चीज मोकलझो, तेमणे अमुक चीज तमारी पासेंथी मंगावीठे. इत्यादिक संदेशा कही करी ग्रहस्थने राग उपजावी आहार ले. अहींयां कोइ ग्रहस्थें धर्मसंबंधी संवरवृद्धि कारणरूप संदेशो कह्यो होय, तेपण जिक्ता अवसरें न कहे, बीजे अवसरें कहे पण संसार संबंधी संदेशा तो कदापि कालें कहेज नहीं, एवी रीतें गोचरी जायने संदेशा कहीने जिक्ता लियें, ते वीजो ढूतिकर्मदोष.

३ त्रीजो निमित्तदोष. ते गोचरी गये थके ग्रहस्थने, निमित वतावे, ग्रहगोचर, ग्रुजदशा, अग्रुजदशा वतावे, तमोने आटला दिवसनी पीडाढे, तमोने वारमो वा आठमो शनिढे, एवुं कहे; तथा आटला वर्षनी तमोने पनोतीढे, माटे अमुक दान आपजो, जाप करावजो, एथी करी सुख थशे. आगल घणा सारा यह आ वशे; त्यारें घणुं सुखचेन पामशो. तमारा दिलमां अमुक वातनी चिंताढे. एवी मनमानी वातो कहे, तेथी ते ग्रहस्थ खुशी थाय. चमत्कार पामे अने सारो आहार आपे, ते साधु लीए, तेवारें तेने निमित्तदोष लागे.

ध चोथो छाजीविकादोप. ते वहोरवा गये थके त्यां ग्रहस्थ नी पासें पोतानी जाति ज्ञाति जाहेर करे ने कहेके, रोठजी !तमे

द्वादज्ञ अतिथिसंविजाग व्रत.

श्रमने नथी उंलखता? अमे फलाणा शाहना बोकरा, फलाणा ना जत्रीजा, फलाणो अमारो जाइ थायबे, तमारी साथें पण अ मारे संसारनो नातोबे. तमे अमने उंलखता हशो के नहीं उंलखता हो? पण अमे तो सर्व जाणीयें बैयें. एक अहारार्थें एटला संबंध प्रगट करे, ते वारें ते ग्रह स्थने संबंध संबंधी राग उपजे. तेणेकरी ते खुशीथी आहार आपे, ते आहार साधु लीये, ते आजीविकादोष.

५ पांचमो वणीमगदोष. ते जे छाहारने अर्थें साधु दीन पणुं बोखे के, आज संसारमां सर्व खार्थींढे, परमार्थी कोइ नथी. तो छमारी खबर कोण खेठे? तमारा जेवो कोइ धर्मरुचि, धर्मिंष्ट, उपकारी छने उदारचित्तवान् होय, ते जाणे, बीजो कोण जा णे? छमे तो निराधार, निराखंबनवृत्तिवाला ठैयें. छमारो कोइ वालो सगो नथी. छा नगरमां तो एक तमारुंज घर धर्मात्माठे, जे छाटली पण खर खबर तमे लीयो ठो. तमे छमारी तजवीज राखवावालाठो. तमे तो साधुना मा बापठो तमेठो, तो छमारो छाटलो पण निर्वाह थायठे. इत्यादि दीनतानां वचन निर्वाहने छार्थें कहे, त्यारें ते ग्रहस्थने कांइ छानुकंपा छने कांइ छजिमान तथा कांइ राग उपजे, तेवारें छाहार घणो छापे, ते साधु लीए, तो पांचमो वणीमगदोष लागे.

६ डठो तिगंडादोष. ते आहारने अर्थे ग्रहस्थने घेर गये थ के ग्रहस्थनी नाडी जूए, रोगना आदान, निदान प्रमुख कहे, औ षध, गोली, चूर्ण, काथ प्रमुख बतावे, रोगनुं मूल कारण कहे के फुलाणी चीज खावाथी व्याधि उत्पन्न थयोठे; ते माटे जो गोली खाउंतो आ, रसनी गोलीठे ते खाउं, नहीं तो चार पांच दि वस ओषधिनो काथ कूटावीने खूव तरेहथी उकालो करावी पीउं. एवुं ग्रहस्थ सांजले, त्यारें खुशी थाय; अने मनमां जाणे जे ए साधु सर्वरीतें खबरदार ठे. एने बीजुं कांइ आपद्युं तो ए खेशे नहीं.माटे खूब तरेहथी आहार तो आप्या करो ? एवुंवि चारी घरमां स्त्रीयादिकने पण ते साधुने सारी रीतें आहार आ पवानुं कही राखे. एवी रीतें यहस्थने रागवान् करीने आहार खेवो, तेथी ठठो तिगंठादोष साधुने खागे.

9 सातमो कोधपिंग्दोष. ते जे आहारने अर्थे साधुजन कोइ रहस्थने घेर जाय अने ते रहस्थ तो महाकृपणढे, एवं साधु यें जाखुं. อती जोगवाइयें पण ते यहस्थने क्रपणतायें करी साधु ने आहार आपवानी सामर्थाइ नथी; तेथी ते मुखथी नाकारो के रे. ते समयें साधु कोध करीने एवी शापनी जापा बोलेके ठती श क्तियें पण साधुने आहार आपवानी ना कहोगो तो तमारे घेर लझी नहींज रहेशे. जे हे ते पण नष्ट थई जशे. आ नवविध परिग्रहनी जे जे वस्तु हे, तेनी सत्ता रहेशे नहीं. एवा आ शयश्री वोले, त्यारे ते ग्रहस्थ शापना जयश्री एम जाणे क, ए साधुंबे, तपस्तीबे, माटे तपश्चर्याना वलथी आवुं कहेतो हरो. द्युं जाणीयें एना कह्या प्रमाणे थइ जाय तो ? माटे थोडाने माटे ग्रुं करवा एवुं करीएं ? एम विचारीने साधुने आहार देवानी समर्थाइ करीने आहार आपे, एवो कोध करी साधु आहार ले, ते कोधपिंगदोष. अथवा साधुने आहार आपवा माटे घरमां कोइ तरेहनो कषाय करवो कराववो पडे, ते पण दोष एमांज लेवो.

5 आठमो मानपिंमदोप. ते जे साधु, ग्रहस्थने घेर आहार बेवाने माटे जाय, त्यारें ग्रहस्थने जोइने तेनुं महोटुं मान तथा सत्कार करे. तेनी इ्छिने जोइने कहेके तमे महोटा धर्मात्मा श्रने इ्छिमान् ग्रहस्थठो. अथवा पोतानुं अजिमान देखाडवा सा रु एवी रीतें कहेके, अमे पण कोइ दिवस आवा हता, अमारा घ रमां आटखुं इज्य हतुं,हुं आटला गामनो खावंद हतो,अमुक वद्धा

द्वादरा अतिथिसंविजाग वत. १५३

सिरदार अमारी सेवा करता हता, आवी लक्सीनो लहावो लेता थका,खाता पीता हता,सर्वे जग्यायें हुकम चलावता हता अथवा श्रमारो व्यापार हजारो कोश सुधी चालतो हतो. प्रत्येक गाममां अ मारी डुकान हती, लक्कीनी संख्या न हती, हजारो रुपैथ्यानी तो कांइ गणती पण नहीं राखता हता. जग्या जग्यानी डुकाननां गुमास्ता त था जलामणीया हता. छुकानोना जवाब,खत पत्र विगेरे ञ्यावता ह ता. देश परदेशमां कोण अमने नहीं जाणता हता ? अर्थात् सर्व र्वलखता हता. हवे तो अमे साधु थया,बीजाने घेर आहार लेवाने छर्थें नीकल्या बीयें,त्यारें हवे पांडलनी वात छुं याद करीयें?ए वुं ते साधुनुं कहेवुं साजले, त्यारें ते ग्रहस्थलोक पण जाणे के " आ साधुपण असल महोटा घरनो हे, एवडी बद्धी संपत्ति हो डीने जावथी साधु थयो देखायढे;ए माटे एने जली रीतें विवेक पूर्वक आहार आपो, एमां महोटो नफोढे." एवो बुद्धिनो प्रपंच करी आगली ग्रहस्थावस्थानी संपत्तिनां वखाण करीने आहार **बेवो, ते मान**पिंकदोष. तथा साधुनी पासेंथी ग्रहस्थ मान पामे. ते एवि रीतें के ते ग्रहस्थ, साधुनी पासें आव्ये थके महोटी प र्षदाने विषे तेने साधु उंचे सादें हाथनी संज्ञा करी बतावे के छहींयां छावी बेसो. एवुं मान छापे, त्यारें एहस्थ जाणे के आटला लोकोनी वचमां अमोने आदर सन्मान आप्युं;माटे ए साधु सर्व तजवीज वालाढे. महोटी र्ठलादनाढे. एवुं जाणी ते ग्रह्स्थ, ज्यारें ते साधु घेर वहोरवा आवे त्यारें आहार आपे, अने ते साधु ले,त्यारें तेने मानपिंमदोष लागे.

ए नवमो मायापिंगदोष. ते जे आहारने आर्थें साधु, ग्रहस्थ ने घेर गये थके कोइ कूड कपट करी रूपपरावर्त्तनादिक कला क रीने आषाढजूति साधुनी पेरें माया प्रपंच करे अथवा वाजी गरनी पेरें तंत्रख्याल देखाडीने चमस्कार उपजावे. तेथी करी

- no man

२०

लोको आग्रह करें के, आ साधु तो करामतनुं घरजढे; ए सर्ववि द्या जाखे ढे.एवुं जाखीने ते साधुने घखा सन्मानथी आहारादि क आपे. तथा वल्ली कहे के हे स्वामीजी ! तमोने जे जोइयें, ते तमे बीजुं पण कांइ ल्यो. एवी रीतें मायाप्रपंच विद्याने फोरवीने साधु आहार खे, ते मायापिंकदोष कहियें.

१० दशमो लोजपिंमदोष.ते जे साधु आहारार्थें ग्रहस्थने घेर जाय अने त्यां कोइ जदार अने प्रबल दाननो दातार जोइ ने ते साधु तेना पासेंथी पोताना खप करतां वधारे आहार लीए; तेथी ते लोजपिंमदोष साधुने लागे.

११ अगीयारमो पुत्रपहासंस्तवदोष. ते आहारने अर्थे साधु ग्रहस्थने घेर जाय अने त्यां अहार हो, ते पहेलांज ग्रहस्थनी स्तवना करे के छहो ! आगल पर्ण छमोयें घणां वखत आ घर मांथी घणो सारो अने खादिष्ट अज्ञनादि चारे प्रकारनो आहार वहोस्रोढे. एवुं कोइ न हरो के जे आ गाममां आवीने आ घर मां न आव्युं हरो.आ घर, सदाथी एवुंज धर्मात्मावे.आ घर कां इ आज कालनुं वे ग्रुं ? वली एनां माता पिता पण एवांज सुधर्मा त्मा हतां.जे कोइ अन्यागत साधु आवे,तेउंने खुशी अइने आ हार देतां हतां. एमनी जक्तिनी तारिफ केटली करीयें ? सर्वे जग्या यें आ घरनी यश प्रतिष्ठा प्रसिद्धते. एमना पूर्वजोनी एवी, जक्ति सहित करणी हती तो आ पण एमनाज पुत्रवे. एमनी पण ते करतां सवाइ जक्तिठे, एमना वंशमां महोटा कुलदीपक थइगया, तेमनां नाम हजी सुधी चाढ्यां आवेठे. एवी एवी स्तुति करीने संजलावे, अथवा आहार लीधा पठी ते एहस्थाना महोढा उपर स्तुति करे के शेठजी! तमे घणा लायक ग्रहस्थठो, साधुजन विषे जक्तिमान् ठो,तमारा जेवो वीजो कोइ दाता नथी.आ गाममां ह मेशां तमारुं घर साधुने आदार आपवामां धोरी हे.तमे श्री जि

नशासनमां गर्जेंड्रबो. स्थंजबो, दीपक बो, श्रमारां माता पिता बो, तमे श्चवसरना जाणबो, परीक्तावंत बो, श्चने जला जूंमाने स वैने डेलखो बो. जे गाम जाइयें बैयें, ते गाममां तमारुं यश व्याप्त थइ रह्युंबे. इत्यादिक रीतियें करीने साधु श्चाहार खे, त्यारें पुवपञ्चासंस्तवदोष लागे.

११ बारमो विद्यापिंमदोष. ते आहारने अर्थें साधु गोचरी जतां पहेलां अन्नपूर्णा देवीनुं आराधन करे. जेनी प्रसन्नताथी ज्यां जाय, त्यां घणो अने सारो आहार मले. एवी रीतें देवतानी प्रसन्नताथी सदा यहस्थना घरथी आहार लावे, ते विद्यापिंमदोष.

११ तेरमो मंत्रपिंग्दोष. ते आहारना निमित्तें ग्रहस्थने कामण, मोइन, वशीकरण अने उच्चाटन प्रमुख प्रयोग करे; तथा मुखबंधनादि कोइ यंत्र प्रयोग करी आपे, अथवा ग्रहस्थने शीखावे, हस्तकला करे, अथवा कोइ तंत्रविधिथी जूठुं देखावा मात्र कांइ करे. एम मंत्रादि फोरवी चमत्कार देखाडीने आहा र लावे, ते मंत्रपिंग्दोष.

१४ चौदमो चूर्णपिंग्दोष. ते आहारने अर्थं साधु, एहस्थने घेर जाय, त्यां ते ग्रहस्थने अनेक जातिनां औषध, चूर्ण, मेलावी आपे, अथवा ते चूर्णनां विधि, रीति, क्रिया, कर्तव्यता, सहु करी आपे, त्यारें ते ग्रहस्थ, ते साधु उपर रागी थइने जाणे जे अमारी साथें ग्ररुजी कोइ वातनो अंतर राखता नथी, माटे ए रूडा साधुढे. ए प्रमाणे रागी थइने आहार आपे, ते साधु ले. ए वात पूर्वे तिगंढादोषमां कहीठे; पण आहेंयां एटखुं विशेष ढे जे साधु पो ताने हाथे औषध, चूर्णादिक सिद्ध करी आपे. ते चूर्णपिंग्दोष.

१५ पंदरमो योगपिंगदोष. ते जे साधु आ्राहारार्थें पादले पादिक करी, कोइ महोटो चमत्कार देखाडी लोकोने खानुकूल करी आहार ले, ते योगपिंगदोष. अर्हींयां पूर्वें मंत्रादि योग

1 5 -57_

दोष कह्या, ते तो सर्व क्रुद्रमंत्र, पण त्र्यामां तो महोटो चम त्कार करे, माटे जूदो जेद थयो.

१६ शोलमो मूलकर्मदोष. ते साधु आहारने अर्थें गृहस्थने अपुत्रीयो जोइने, गर्न रहेवानुं औषध बतावे, अथवा पोतें ते औषध वनावी आपे. अथवा कोइ अनाचरणी स्त्री होय, तेणे प रपुरुष साथें कुकर्म कीधुं होय ने तेथी ते गर्जवती थइ होय, पठी ते गर्जपात करवा माटे, साधुने आव्यो जाणीने तेनी पासें आवीने पोतानुं शख्य मटाडवा माटे गरीब थइने ते साधु त्रागल दीन जाष ण करें; छने कहे के हे खासिजी ! मुज इत्यारीनो उपकार करो. त्र्यावुं पाप मारायी थयुंठे, ते उपकार करीने टालशो तो जीवीश, नहीं तो मारे सरवुं पडरो. एवां वारंवार दीनवचन सांजलीने सा धुने करुणा उपजे. लारें गर्जना शातन पातन प्रयोग प्रमुखनां औषध वत्ती प्रमुख होय, ते बतावी छापे, तेणे करी ते स्त्री खुशी थइने सारो आहार आणीने आपे. अथवा मूलवंधन जे गर्न स्थिरीकरणप्रयोग करे अथवा शांतिकर्म करे. एवी किया क रीने आहार ले, ते मूलकर्मदोष. ए कर्म, साधुयें अवश्य नज करवुं. ए कर्मने सहाडुःखदायि जाणीने जरुर त्यागवुं. ए शोल उत्पादन दोष साधुंथी थाय; अने पूर्वें जे शोल दोप कह्या ते श्रावकथी थाय. तेने जजमदोप कहींयें. ए प्रमाणे ए बत्रीशे दोष टालीने आहार ले, ते एपणाशुद्ध कहीयें. अन्यथा अनेपणा कहियें.

हवे दश ग्रहणदोष कहेते.

र प्रथम शंकितदोप ते आहारमां कोइ जनमादि दोपनी शंका आवे तो आत्मार्थी साधु, ते आहार न खीए. जो खीये, तो शंकितदोप लागे.

१ वीजो म्नक्तितरोप. ते जे अनक्यादिक अयोग्य वस्तु ते सचित्त अथवा अचित्त होय तेनाथी हाथ खरड्या होय तेवे हाथे

द्वादश अतिथिसंविजाग वर्त.

श्रयवा अयोग्य डव्यथी जाजन खरड्युं होय, एवा जाजनथी आहारादिक आपे, साधु ले, लारें च्रक्तितदोष लागे,

३ त्रीजो निक्तित्तदोष. ते जे माटी, पाणी प्रमुख हरेक स चित्त वस्तुनो स्पर्श करीने अथवा परस्पर संघट्ट थवाथी अचि त थाय, एवो आहार खे, ते त्रीजो निक्तिप्तदोष.

४ चोथो पिहितदोषः ते एके, १ सचित्त वस्तु छचित्त वस्तु यें ढांकी होय, १ सचित्त वस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ३ छचित्तवस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ४ छने छचित्त वस्तु, छचित्तवस्तुयें ढांकी होय. ए चार जांगामां चोथो जांगो ग्रु ऊढे; छने बाकीना त्रण जांगा छग्रुऊढे. एमाटे ए त्रण जांगे छाहार खे, त्यारें पिहितदोष खागे.

थ पांचमो संहद्दोष. ते जे आहार आपवाना वाशणमां अ योग्य वस्तु जरी होय, ते वस्तु बीजा वाशणमां नाखीने पठी तेज वाशणथी आहार आपे, ते पांचमो संहदोष.

६ ठठो दायकदोष. ते जे नपुंसक, बालक, अतिइऊ, आंध लो, पांगलो, कंपवायुथी जेनो देह कंपतो होय ते, जेना पगमां शृंखला, बेडी प्रमुख जडी होय ते, धान्यने खांमतो होय ते, धा न्यने दलतो होय ते, धान्यने जुसतो होय ते, चरखा चरखी फेर वतो होय ते, कपास लोढतो होय ते, कपासने कालामांथी तूटो पाडतो होय, कपास लोढतो होय ते, कपासने कालामांथी तूटो पाडतो होय, वलोणुं वलोवतो होय, जमतो होय, ठकायना आरंजनुं कार्य करतो होय, सात मास उपरांत गर्जवती स्त्री होय, बालकने धवरावती स्त्री होय, अने जे स्त्रीनुं वालक रडतुं होय, तेने पडतुं मूकीने. ए उपर कहेली कियाउंमांनी हरकोइ किया करतां जे दातार आहार आपे, तेवा योगनो आहार साधु न लीये; अने जो ले, तो दायकदोष लागे.

७ सातमो उन्मिश्रदोष. ते योग्य आहारने अयोग्य आहा

द्वादश श्वतिथिसंविजाग वतं.

रसायें मिश्र करीने ञ्रापे,ञ्रने ते साधु खे, लारें उन्मिश्रदोष लागे.

5 आठमो अपरिणतदोष. ते आहारना वर्ण, गंध अने रस, ते कांइ परिणामांतर थइ गयां होय; कांइ न थइ गयां होय, वली पूर्ण संस्कार थयो नथी, अने कांइ काचो कांइ पाको, एवो आहार थयो होय, ते वखत साधु ते यहस्थने घेर आहार लेवा आहोत्यारें तेने ते आपे अथवा ते यहस्थ दाताना घरमांनां माणसो माहेला कोइकने आहार आपवानी रुचि थइछे अने कोइकने आ पवानो जाव नथी, त्यारें जेने आपवानी रुचि थइ होय, ते दान आपे, तेवारें वीजाना दिलमां खेद उपजे. एवा बेउ यहस्थने अप रिणत कहीयें. एवो आहार साधु ले, त्यारें अपरिणतदोष लागे.

ए नवमो बिप्तदोष. ते जे घरथी साधु आहार बे, ते आहार आपनार दातारना हाथ ते वखतें खरड्या होय, ते दान देवा माटे ते वखतें ते दातार, पोताना हाथ सचित्त पाणी प्रमुखथी धोइने पढी आहार वहोरावे अथवा वहोराव्या पढी हाथ धोइ नाखे त्यारें तेने, साधुनिमित्त पश्चात् कर्मनो आरंज लाग्यो. एवो आहार साधु बे, त्यारें बिप्तपिंमदोष लागे.

१० दशमो ठर्दितदोष. ते जे साधुने आहार आपनारो माणस ठे ते आहा, जात, घृत, रस, दहीं, मठो, तथा रसवती शाक,जाजी, मांगा प्रमुख जूमि जपर वेरतो तथा ढोलतो थको आहार आपे, एटले थोडो जूमि जपर वेराय, थोडो वाशणमां रहे, तेवो आहार छापे अने ते साधु ले, त्यारें ठर्दितदोप लागे. ए दश दोप जे अ हणना कह्या, ते साधु अने श्रावक वेहुना मलवाथी थायठे, अने पूर्वना वत्रीश.एकंदर वेंतालीश दोप लागे.ए वेंतालीश दोप रहित आहार साधु लेइ आव्या पठी गुरुसमीपें आवीने गोचरी आलोवे. आवतां, जतां तथा आहार लेतां जे जे किया थइ होय ते,तथा जे जे उत्तर प्रत्युत्तर थया होय ते, सर्व याद करीने गुरुने कहे, लारें

द्वादश अतिथिसंवित्राग वतं. १५७

ते गुरु आहारने निर्दोष जाणी आज्ञा आपे. पठी गुरुजी तथा स्थविर, तथा बीजा जे साधु होय, तेमने निमंत्रणा करे, अने सर्वने कहे के हे साधुजी ! तमे पण आहार वावरो. त्यारें ते साधु आहार करवाने बेसे, त्यां आहार करती वखत पांच दोष लागेठे. ते पांच दोषनां नाम लखे ठे.

१ प्रथम संयोजनादोष. ते आहार करतां साधु स्नादार्थें डव्य डव्यांतरथी मेवावी करीने खाय. जेम तरकारीमां लूए. मरीच, ख टाइ प्रमुख मेवावे, सारी चीजमां मीठुं मेवावे. एवी रीतें स्नादिष्ट बनावीने खाय, तेने संयोजनादोष लागे. साधुने तो पात्रमां जेवो श्राहार पड्यो होय, तेवो खावो, पए ते आहारने आगल पाठल करे नहीं तथा आहारनी प्रत्येकचीज जूदी जूदी खाधि जाय नहिं तो सर्व चीज एकठी मेलवीने घोत्तीने खाइ जाय पए जे आहार थी रसर्यद्ध वधे, ते न करे. कढी प्रमुख खातां थकां पए सबडका घएा थाय, ते न करे तथा पापड प्रमुख खातां थकां पए सबडका घएा थाय, ते न करे. एवी रीतें साधु जोजन करे, तेम ठतां जे साधु डव्यांतर मेलवीने रससहित सरडका प्रमुख जरीने खाय, सारें तेने संयोजनादोष लागे.

१ बीजो प्रमाणातिक्रमदोष. ते पुरुषनो आहार बत्रीश को लीया प्रमाणनो ढे, अने स्त्रीनो आहार अठावीश कोलीयानोढे. ए करतां एक बे प्रमुख कवल वधारे जमे, तो प्रमाणातिक्रमदोष.

३ त्रीजो छंगारदोष. ते साधु आहार करती वखतें आहारना देनारनी अथवा आहारनी तारीफ करतो खाय, ते एम के छ मुक आहारनो आपनार पण चतुरठे. आहो शी एनी चतुराइठे? जोजन पण सर्व सरस छने सुखादठे. वक्षी ए आहार आपनार ग्रहस्थ हाथनो पण जदारठे. जेने आपेठे तेनुं पात्र जरपुर करी आपेठे. आहारवहोरवा फरी वीजाने घेर जवानी इडा रहेतीन थी. तथा जे वस्तु वहोरावेठे, ते पण घणी खादिष्ट अने जावें करी वहोरावे ठे. तेमां पण आजनो आहार तो घणो खादिष्टठे. एवी आहारना आपनारनी तारीफ करीने खाय, ते अंगारदोष.

४ चोथो धूम्रदोष. ते आहारना आपनारनी तथा आहारनी निंदा करतो थको खाय. ते एमके फलाणो दातार तो कोइ सारो न थी, हाथनो महा कृपणढे, वली एनामां कांइ चातुर्य पण नथी, सारी वस्तुने बगाडी नाखीने खायढे. एनो सदा सर्वदा एज ढंगढे. जूर्ठ ! आ चीज बरोबर जो बनावी होय, तो केवी स्वादिष्ट थाय ? तेने केवी वेखाद करीनाखीढे ? एतो कमोदने कुशका करीने खाय ढे. चतुर होय ते तो कुशकाने कमोद करीने खाय. आ आहार केवी रीतें खाधो जाय ? एमां कांइ खाद नथी. एतो गले पण उतरतो नथी. एवां दूषणो देतो थको खाय, ते धूम्रदोष.

५ पांचमो छकारणदोष. ते जे साधु, विनय, वैयावच, संय मनिर्वाह, प्रवलक्तुधा ग्रुजध्यानस्थिरता. इत्यादिक कारण विना केवल शरीरनी पुष्टता निमित्तें सरस छने सुखाद छाहारनुं जोजन करे, ते छकारणदोष. ए पांच मंग्नलिकदोप कह्या. ते छागला वेंतालीश साथें मेलवतां सडतालीश दोष छया. ए सडतालीश दोप रहित छाहारना लेनारा जे साधु तेमने छातिथि कहीयें. तेवा साधुने श्रावक, दोष टालीने छाहार निमंत्रणा करे छने जे जे छाहार साधुयें लीधो होय, तेमांनोज छाहार पोतें पण ज मे. कदाचित् एवा साधुनो योग न मले, त्यारें ग्रुऊ श्रुऊावान् छाने वत नियमादिकधारक, एवा सुश्रावकने छाति वर्णा मान घी वोलावीने महोटा जक्तिजाव पूर्वक जमाडे छाने जे छाहार ते जमे, तेमांनोज पोतें पण खाय; परंतु पंक्तिविष्ठेद छाहार न करे. प्रायें ए व्रतनी, पोसहनुं पारणुं करवामां मुख्यताठे. प्रवाह

द्वादश श्रतिथिसंविजाग वर्त. १६१

थकी बीजा दिवसोमां पण वत प्रमुख करेजडे. तेना पांच अ तिचारडे, ते कहेडे.

१ प्रथम सचित्तनिद्वेप छतिचार. ते सचित्त चीज माटी, पा णीनो घडो, बलतो चूलो श्वथवा श्रनाजनो ढगलो, श्रथवा सचि त्त पान, तथा फल, एवी चीजना उपर, दान देवा लायक जे आ हार होय, ते मूकी राखे एटले मनमां साधुने आहार नहीं देवा नी तुन्न बुद्धियें विचार करे जे, में तो अतिथिसंविजागवत लीधुं वे, तेंची मारे तो साधुने सर्व चीजनी निमंत्रणा श्ववझ्य करवीँ पडरो; श्रने साधु पण लेवा लायक आंहार जोइने लेरो. माटे हमणांथीज आ युक्ति करुं ने पठी जो हुं निमंत्रणा करीने आय ह करीश, तो पण ते आहार साधु खेशे नहीं. एवो तुब बुद्धियें वि चार करी आहारने सचित्तं चीज उपर धरी राखे.पढी साधुने आ ग्रह करी बोलावे, जूठी जावना जावे; पण साधु, सदौष आहार दे खीने ते आहार बीधा विना पाठो फरे; त्यारें ते कुटिल बुद्धिवा लो जाणे जे में साधुने निमंत्रणा सर्व चीजनी करी, माटे महारुं वत तो छखंग घयुं, छने छाहारनो खरच पण न थयो ! एवो फे ल करे, ते प्रथम अतिचार. एवुं ते कुबुद्धि कुटिलताथी करे, कां तो ञ्रज्ञानजडकजावथी करे.

श्वीजो सचित्तपिहिण अतिचार. ते दान देवानी चीज सचि त्त फल पत्रादिकें करी ढांकी राखे. ए पण न देवानी बुद्धिथी ढां की राखे, अथवा अज्ञानताथी ढांकी राखे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अन्यव्यपदेश अतिचार. ते आहार नहीं देवाना निमित्तें ज्यारें साधु आवे, त्यारें महोटो जाव देखाडीने आहार नी चीज, पोताना हाथमां खेइने साधुना मुख आगल धरे. त्यारें साधुना आचार प्रमाणे साधु पूठे के ए चीज कोण संबंधी ठे ? एटले ए चीज कोनी ठे?ते सांजली ते दाता कहे के हे खामिजी !

37

द्वादश अतिथिसंविजाग वर्त.

ए चीज तमे लीयो. ए अमारी नथी पए श्रमारा जाइनी अ थवा संबंधीनी वे एटले ते अमारीज वे. ते श्रमारो जाइ पए बहु ज जाविकवे तथा धर्मरुचिवे. तमने आ चीज आपी सांजलीने बहुज खुशी थशे. ए माटे आप लेइयें; कशो खतरो नथी. एवी री तें बहु मान अने आयह करे, पए मनमां जाएे वे के आ पार की चीजवे ते साधु लेशे नहीं. माटे बहुज जाव देखाडे पए ते साधु, लीधा विनाज पाबो फरी जाय. त्यारें ते दाता विचारे के में तो मारुं व्रत पए साचव्युं अने कांइ खरच पए न थयुं ! एवी कुबुद्धिनो फेलाव करे. तथा कोइ दृष्टिरागी दातार, दृष्टिरागथी दे वानी बुद्धियें बीजानी चीजने पोतानी कहीने आपे, ते पए एमांज आवे. आवकें तो झुद्धाहारार्थी साधु आंगल याथातथ्य कहेवुं जोइयें, पए कपट न करवुं. ए प्रमाएे त्रीजो अतिचार लागे.

8 चोथो समत्सरदान छतिचार. ते ग्रहस्थने घेर कोइ साधु गोचरी आवे थके कोइ ठति चीज जूए, ने ते चीजनो साधुने ख प होय तेथी ते चीजनी याचना करे, त्यारें दातार होय ते तो ठ ती चीजनी ना कही शके नहीं; पण मनमां खीजाइने आपे, ते समत्सरदान कहीयें. आथवा कोइ सामान्य ग्रहस्थ सारी रीतेंथी परिगल दान आपेठे, तेनी तारीफ लांजलीने सहन करी न शके, तेवारें मनमां ईर्ष्या आणीने कहे के, ए सामान्य गरीव ठतां दान सारी रीतें आपीने छुं माराथी पण महोटो थवानी चाह राखे ठे? तो हवे हुं एवुं दान आएं, के तेवुं दान एनाथी दीधुं जाय नहीं. ए पोतानी मेलें थाकीने वेसी जशे. एवी रीतें पारका गुणनी ईर्ष्या धरीने जे दान आपे, ते पण समत्सरदान कहे वाय. ए चोथो आतिचार.

थ पांचमो कालातिक्रम छतिचार. ते साधुने गोचरीनो वखत थ यो जाणीने साधुनी गवेषणा न करे, छने जाणे के हवे ए साधुर्ฮ ने

۹₂₂

श्राहार લेइने पाढा पोताने स्थानकें जवानो वखत थयो, साधु पण पोतानो खप जेटलो आहार लइ आव्या होय, बीजा आहारनो खप न होय, त्यारें ते ग्रहस्थ कुटिलपणायें विचारे के आहार तो साधु खई आव्यावे. अने हवे आहारनो खप हरो तो थोडो ह शे!एम विचारी गोचरीथी फरती वखतें साधुने जोवो नीकले.ए वामां कोइ साधु पोताना प्रयोजन मात्र आहार बेइने पोताना स्थानक प्रत्यें जता होय तेमनी कने जइने ते श्रावक महोटी मनु हार करे के हे खामिजी ! मारे घेर पधारीयें, मारा मनोरथ सफल करीयें,महारी विनति दीलमां धरीयें,ऋपा करीने मने निस्तारियें, कांइक ग्रुऊ आहार लेइयें, जेम हुं पण पचलाण पालुं. एम वारंवार कहे. एवी तेनी विनति सांजली साधु कहे के हे महानुजाव! अमा रे तो हवे आहारनो खप नथी.खप माफक तो अमे लाव्या वैयें, वधारे आहार अमारे शा कामनो ? एवुं कहीने ते साधु आगल चालता थाय, त्यारें फरी ते कुटिल दाता कहे के, हे खामिजी!मा रे साधुने आहार वहोराव्या विना खावानों नियमें वे. तमे कांइक पण वहोरशो तो हुं खाइश, नहीं वहोरशो तो नहीं खाउं.ते सां जली साधु अंतरायना जयश्री एवुं विचारे के एने घेर जइने थोडुं खेइ आवुं, बहु नहीं लउं. एवुं विचारी तेने घेर जइने किंचित् मात्र आहार लइने जाय, लारें ते यहस्थ, मनमां विचा रे के मारुं वत पण पह्युं अने खरच पण घणो न थयो ! अ थवा साधुने स्थंभिल जूमि प्रये जतांदेखीने कुटिलताथी ते श्रा वक, आडों फरीने जाव देखाडीने कहे के हे खामीजी! घेर पधारो, छने शुद्धमान आहारनो अनुयह करो.ते सांजली साधु कहे के हे महानुनाव ! हमणां तो श्रमे आहार पाणी करी चूक्या; हवे निहारजूमि प्रत्ये जइएं वैयें.त्यारें ते मर्कट वैराग्य बतावे के हुं जाग्यहीन, मने घणा अंतरायनो जदयहे. जुर्ज घणो वखत य

१६३

द्वादश अतिथिसंविजाग व्रतं.

इ गयो !! तो पण महारो मनोरथ सफल थयो नहीं. साधुने गोचरीनो वखत पए जतो रह्यो, श्रामारे घेर श्रसूर थइ गइ.ह वे ग्रुं करुं ? एवो देखाडवामात्र पश्चात्ताप करतो घेर जाय. ते पण पां चमो अतिचार. अथवा अणदेवाना निमित्तथी पहेलो पोतें जमे श्रने पढी साधुने बोलावे, तो कालातिकम थाय एटले साधु केम श्रावे ? कदापि आवे तो वाकी वधेलो आहार साधुने आपे. सा धुने तो एवा आहारनो पण कशो हर्ष शोक नथी. शरीरने जा डुं आपवामाटे ए आहार पण सारोजने परंतु दातारनी ए शुऊ चाल नथी,दान आपीनेज जमवुं,ए चालठे.एम करी पठी पेलो ग्रहस्थ मनमां विचारे के में दान पण श्राप्युं श्रने बहु खरच प ण न थयुं ! ए पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार मांहेला प हेला त्रए अने पांचमो, ए मलीने चार अतिचार दंजथी थायहे. श्रयवा छज्ञानपणायें जोलाजावथी थायते. छने चोथो छति चार, देषदोषथी थायहे. ए चोथा शिक्तावतनी शैली कही. इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंक्ति श्री ज्योतसागरगणिनाकृता द्वाद शञ्चतिथिसंविजागनामकचतुर्थ शिक्ताव्रतकथने जाषा संपूर्णा ११

एटले छहीं श्रीसम्यक्त्वमूल वारे व्रतनी विगत संपूर्ण छइ.

हवे समकितमूल वार व्रतधारी आवकने एकशो चोवीश श्च तिचारनी खबर राखवी, ए सर्वे श्वतिचार जाणपणामां राखवा, पण श्वादरवा नहीं. एटला माटे एकशो चोवीश श्वतिचारनो विचार लखीयें ठैयें॥

तेनें प्रथम समकितना पांच अतिचार, वार व्रतना प्रत्येकना पांच पांच अतिचार करतां अति अति अति यया, अने कर्मा दानना पंदर अतिचार. ए

4

7. X -

संबेषणा वतातिचार खरूपं. १६५

खरूप तो व्रतनी विगतमां खखी गया ठैयें. बाकी संखेषणाना पां च तथा ज्ञानाचारना आठ, दर्शनाचारना आठ, चारित्राचारना आठ, तपाचारना बार, अने वीर्याचारना त्रण. ए बद्धा मली चु म्मालीश अतिचारठे, तेनुं खरूप कहीएं ठैएं.

॥ श्रथ ॥

॥ श्रीसंलेषणाव्रतातिचारस्वरूप प्रारंनः ॥

त्यां संखेषणानाा बे जेदठे. एक डव्यसंखेषणा, बीजी जावसं क्षेषणा. तेमां प्रथम डव्यसंखेषणा. ते जे साधु तथा श्रावक श्रन शननो मनोरथ करे, त्यारें प्रथम संखेषणातप करे. ते तप, आ गमोक्त विधियें करे. ते संखेषणातप त्रण प्रकारनुं ठे. उत्कृष्ट, मध्यम, द्यने जघन्य. तेमां उत्कृष्ट बार वर्षनुं, मध्यम बार मासनुं, द्यने जघन्य बार पक्तनुं. तेमां उत्कृष्ट संखेषणातपवा लो प्रथम चार वर्ष विचित्र तप करे, पठी फरी चार वर्ष षट् विगय रहित बिचित्र तप करे, पठी वसी वे वर्ष एकांतरें उपवास करे; अने पारणे आंबिल करे. पठी व मास नानाविध विक्रष्ट तप करे, ठठश्री उंतुं तप करे नहीं त्राने पारणे आंबिल करे. वसी ठ म हीना आतिविक्रष्ट तप करे परंतु आठमश्री उंतुं तप करे नहीं, पारणे आंबील करे. तेवार पठी वसी पक वर्ष निरंतर आंबिल करे. ए रीतें बार वर्ष उत्कृष्ट तप पूर्ण थाय.

१ एज रीतें मध्यम तथा जघन्य तप पण्ठे. जेवी वर्षनी संख्या ठे तेवीज मासनी तथा पक्तनी गणतरीठे. आ संखेषणातप कर तां शरीर गतरस, अने धातु सर्व शोषाय, अस्थिचर्मावशेष अ णशण करवा योग्य शरीर करे, त्यारें तेने ऊव्यसंखेषणा कहीयें.

१ बीजुं जावसंखेषणा. ते ऋंतरमांथी विषय, कषाय, नोकषा य, गारव, संज्ञा. इत्यादि ऋंतरदोषने ऋति क्तीण करे. एटले प्रब ती नथी. माटे पीडाथी वहेेला पार उतरीयें ! एवो विकल्प उठे, ते चोथो व्यतिचार.

थ पांचमो विसयासंसप्पर्ठंगे छतिचार. ते छएशए करीने छएशएनुं फल, काम जोगनी प्राप्ति इड्रे; ते पांचमो छतिचार.

ए संबेषणाना पांचे अतिचार व्यवहार प्रसिद्ध श्री तो अण शण निष्ठाएं कहेवायत्रे. परंतु वस्तुगतें तो सर्वव्रतमां लागेत्रे.

१ जेम सर्वव्रत, सर्वनियम, दान, पूजा, विनय, वैचावच, श्रजे प्रत्याख्यानादि क्रिया करीने आ लोकना सुखनी इहा न राखवी. तेम बतां जो राखे, तो पहेलो अतिचार लागे.

श्तथा परलोकें देवगत्यादिकनी इहा न राखवी, तेम छतां जो राखे, तो बीजो अतिचार लागे.

३ तथा आवो मनुष्यावतार पाम्या ठैयें, धर्मनियमकरणी, जी वदया, जिनपूजा महोत्सव प्रमुख करीयें ठैएं; शास्त्र सांजलीएं ठै यें,ए सारुंठे; ए माटे घणुं जीवीए तो सारुं.रखे आयुष्यस्थिति पासें आवी जाय? एहवो विकब्पन करे, अने करे, तो त्रीजो अतिचार.

४ वली धर्म करतां कोइ पूर्वसंचित पापकर्मना उदय थवाथी घणी छाता पामवा लाग्यो. त्यारें मरणने इब्वे जे मरण पामीएं तो छा छःखथी तूटीएं. पण ते एवुं न विचारे जे मरण पामवा थी कांइ कर्म तूटे नहीं. मुवाथकी पण बीजा जन्ममां छानुक्त कर्म छागलने छागल तैय्यारवे. 'कृतकर्मक्तयोनास्ति" एम जाण वुं, जलटी मरणनी इहा राखवाथकी छागुजकर्मरसपोपण थायवे. कारण के नवा छागुज विकल्पें छागुजवंध थाय; ए माटे साधक,

मरणनी इहा न राखे जो राखे, तो चोथो अतिचार लागे. ५ तथा धर्मफल तो निर्जराठे.ते निर्जरा साध्य धरीने जे जे धर्म करे, तेमार्गी जीव आराधक कहेवाय. त्यहां कामजोगनुं फल साध्य राखीने कर्म करे, त्यारें पांचमो अतिचार लागे. एम सर्व वतमां संखेषणाना पांचे अतिचार लागे. ए माटे उपयोग संजालीने पांचे अतिचार त्यागवाथी साधकता समरे. इति संखेषणा पंच व्रतातिचारखरूपं संपूर्णम् ॥

॥ ऋथ ॥

॥ श्री ज्ञानाचारस्य इप्रषटिचारस्वरूप प्रारंज ॥

१ प्रथम आकालाध्ययन अतिचार. ते कालविना सूत्रसिद्धांत जेे गेे. त्यां अतिचार लागे, ते कालवेला कहेेंडे. प्रथम सवा रमां एक घडी रात्रीनी अने एक घडी प्रातःकाल अरुणोदय थया पठीनी. ए बे घडी प्रजातनी कालवेला कहीयें. तथा ए वीज रीतें बे घडी मध्यान्ह कालनी, तथा एज रीतें बे घडी सं ध्यानी, तथा बे घडी मध्यरात्रीनी. ए चारेने कालवेला कहीएं. ए कालवेलामां नवुं जणवुं, गणवुं, सांजलवुं, ए कांइ पण केरवुं नहीं. ए कालवखतें ए कालनी किया जे पडिकमणादिकने ते सुखें करे; पण बीजुं नवुं जे गे गे नहीं. ए कालनी वखतें म नोगत जप, ध्यान सुखें करे, पण वचनोचार करीने जणे नहीं. ए अतिचार, साधु अने आवक बन्नेने साचववो. जो जणे, तो साधु अने श्रावक बन्नेने अतिचार लागे. तथा साधुने कालिक सिद्धांत पहेेले पहोर अथवा चोथा पहोर शिवाय रोंष कालमां सिद्धांतसूत्र जणाय नहीं. रात्रियें पण एमज जाणवुं, वली वीजा, त्रीजा पोहोरमां अर्थचिंतवन करे तथा अकालें मेघवृष्टि थाय तथा त्रए चोमासाना महा पडवाना छढी दिवस छसझाइ, ते छावी रीतें के छर्द्धी चुजदश, पूर्णिमा छने पडवो ए छढी दिवस तथा आंशो अने चैत्र ग़ुद पांचमथी ते वदि पडवा सुधी श्रसझाइ, तथा बर गाजमां महासंग्राम थतो होय, त्यहां सुधी

デジー

ज्ञानातिचार खरूपं.

असझाइ. तथा राजा, बत्रपति, महोटो देशाधिपति मरण पाम्यो होय तेना तखत जपर ज्यां,सुधी नवो राजा न वेसे,त्यां सुधी ते देश मां छसझाइ. इत्यादिक छनेक सिद्धांतमां छसझाइकाल कह्योबे. तथा म्लेइना तहेवारकालें एटले वकरीइदें महाहिंसा थायवे. मा टे ते दिवसें केटलोएक कालरात्री प्रमुख, महा हिंसाना दिवस मां पण लिद्धांत जणवुं नहीं. तथा सो हाथमां पंचेंडिय जीवनुं क लेवर ज्यां सुधी पड्युं होय, त्यां सुधी सिद्धांत जे जिनप्रणीत सूत्र ते कांइ जणाय गणाय नहीं. ए केत्रथी छसझाइ कहीएं. इत्यादि छसझाइना प्रकार छागममां घणा कह्याबे; तेमां सिद्धांत जण वुं तथा सांजलवुं पण नहीं. छने जो जणे तथा सांजले, तो इाननो कालातिचार लागे.

श् बीजो विनयहीनातिचार. ते गुरु, पुस्तक, तथा झान नां उपकरण जे पाटी, पोथी, ठवणी, कवसी, सांपडा, सांपडी, द सतरी, वही, नोकरवासी तथा व्यदार जातिनी सीपिना व्यक्तर स हित कागल प्रमुख उपकरणने पग लगाडे, पगथी दावे, थूंक ल गाडे, थूंकथी व्यक्तर जूंसे, एठे हाथे स्पर्श करे, व्यक्तर उपर रेती नाखे, उपर वेसे, सूवे तथा फाडी नाखे, एठा मुखें एनो उचार क रे, कोइ डव्यना उपर व्यक्तर होय, तेने पासें राख्या थका त्यां व डीनीति, लघुनीति करे, लघुनीति, वडीनीति करतां उचार करें, व्यने स्नान, मैथुन, पूजा करतां वोले, पुस्तकने वाले, जलमां वू माडे, वेचे. इत्यादिक आशातना करे, व्यने गुरुनी तेत्रीश व्याशा तना न टाले, ते विनयहीनातिचार.

३ त्रीजो अवहुमानातिचार. ते गुरु तथा पुस्तकादिकनुं घणं मान न करे, तेमनी अदव राखे नहीं. वह साध्य धरोनेप दर्श्वर्म पुरुषने धनप्राप्ति थयाथी जेवो अति आर्त् कामजोगनुं फल साध्य मान्य पुरुषने घेर राजा पोतें चालीनेचार लागे. एम सर्व व्रतमां ज्ञानातिचार खरूपं.

श्रानंद पामे? अने आश्चर्य पामे ? तेम गुरु पुस्तकादिकनी जेट करवा वखतें तेथी पण विशेष आनंद पामे. ते न करे तथा ज्ञानडव्य इंडिय सुखमां वापरे. अथवा कोइ डव्य खातो होय तेने जाणीने देखीने बति शक्तियें जवेखे नहीं तथा बति शक्तियें शिक्ता न आपे, कोइ जपर जयता करें नहीं; मनमां एवुं जाणे के आपणने र्गु **डे ? जे जेवुं कर**रो, ते तेवुं पामरो. एवी रीतें गइ गुजरी करी जाय. तथा ज्ञानी पुरुष जपर देष राखे, ज्ञानीनो व्यवर्णवाद बोले, ज्ञान जणनारने अंतराय करे, वति शक्तिएं ज्ञानने जणवा,गणवा, तथा सांजलवावालानी सहायता करे नहीं. ज्ञाननागंजीरजावमां असदहणा करे, शास्त्रोना अटपटा अक्तरनी मजाक करे, दृसे, कुयुक्ति लगाडे, गुरु तथा सिद्धांतनी प्रखनीकता करे, अने मतिकानादि पांच क्राननी असदहणा करे. इत्यादि अतिचार लगावे, ते त्रीजो श्रबहुमानातिचार.

४ चोथो उपधानहीनातिचार. ते श्रावक, उपधान वह्या वि ना षडावच्यकादि किंगा करे, तथा साधु, योगनी तपक्रिया कीधा विना सिद्धांत जाणे, जाणावे, तथा संजलावे, त्यारें तेने चोथो उपधानहीनातिचार लागे.

८ पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार.ते कोइ अल्पश्चत, अल्पवि ख्यात एवा साधु अथवा आवकनी पासें जाखो होय, मूल उपकार तो तेनो होच, पढी जणवावालो पोताना सारा इयोपराम जयम श्री ज्ञास्त्रमां घणो हुज्ञीआर, ज्ञाणो अने चतुर थयो; त्यारें को इ जडक लोको, तेनी निपुणता, अने चमत्कारिक ज्ञान जोइने ते चमत्कार पामी वहुमान करी पूठे के, छहो खामिजी ! तमे ते अतमां सावधान ढो, एवी अतकाननी चतुराइ, संपूर्णविद्या, दिवस तथा आशो अने अभे पण दर्शन करियें. हवे ते गुरु तो सुधो असझाइ, तथा बर गाउम

25

Ser a

दर्शनातिचार खरूपं.

गरीब, पण ज्ञानगुणसंयुक्त होय अने पोतें तो महोटो बोगा लो होय अथवा आवक होय तो महोटो ताखेवर होय, पोषा क प्रमुख सारो होय, चाकर प्रमुख घणा होय, तेवारें ते उन्नता दोषथी मनमां विचारे के महारो विद्याग्ररु तो घणो प्रख्यात न थी, माटे एनुं नाम लझ्श, तो महारी महोटाझ थशे नहीं माटे ते वर्त्तमान कालमां कोइ महोटो पंफित वृद्ध होय, जेनुं यश प्र ख्यात होय, तेनुं नाम लीये. एम करी पोताना मूल गुरुने जुपावे. ते गुरुलोपी, महापापीने पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार लागे.

६ ठठो कूटसूत्रातिचार. ते सूत्रना व्यक्तर खोटा उचारे. ऱ्हख दीर्घनी खबर न राखे,श्रक्तर, मात्राहीन श्रथवा श्रधिक करीने जणे, ठंदोजंग करी जणे, पद, संपदासहित न बोखे,ते सूत्रकूटातिचार

७ सातमो अर्थकूटातिचार. ते पोताना अज्ञानदोषथी थवा कोइ कुमति कदायहना उदयथी अद्युद्ध अर्थ करे, विप त प्ररुपे, ते सातमो अर्थकूटातिचार.

ण आठमो जजयकृटातिचार. ते सूत्र छने अर्थ ए बन्ने द्युद्ध जणे, प्ररूपे, ते आठमो जजयकूटातिचार. इति ज्ञानाच स्य अष्टातिचारखरूपं संपूर्णम् ॥

॥ ऋष ॥

॥ श्री दुर्शनाचारस्य अष्ठातिचारस्वरूप प्रारंजः॥

१ प्रथम शंकातिचार. ते जे जिनागमना सूक्य व्यतींडिय गंजीरजाव सांजलीने पोताना मंदक्त्योपशमना योगथी तथा मिथ्यात्वना प्रदेशोदयथी शंका धरे, जे ए वात केम ठरशे? ए केम हशे ? कांइ मनमां वेसती नथी. शुं जाणीयें जे केवी रीतेंठे ? ए ते साचुं ठे के जूठुंठे ? एवो विकल्प उठे, ते प्रथम व्यतिचार.

Start way

52

दर्शनातिचार खरूपं.

श्वचवा जेने मंदक्तयोपरामढे, पण मिथ्यात्वना बहुप्रदेशोदय नथी. समकितनुं स्थान जंचुं हे, ते पण गंजिरजाव सांजलतां बुद्धिमांतो एका एक आवे नहीं. पण ते समकेती एम विचारे जे ए वात, मारी बुद्धिमां नथी आवती; ते मारा आत्मदोषथी मने आवरणो दय घणांंग्रे; पण ए वात साचीग्रे; कारण के जे माटे ए सर्वजिन जाषित हे. अने श्री जिनेश्वरजी तो असल्यजाषी नथी. असल्य नाषणमां त्रणे दोष जे राग, देष, अने अज्ञान, ते तो जेमना नाज्ञ पाम्याबे अने ते दोषना सहचारी जे हास्य जयादिक ते पण जेमना नाश पाम्याढे, तो तेवा वींतराग परमेंश्वर कोण कारणे जू ठुं बोखे ? विना जदेश कोइ कार्य प्रवर्त्ति ढेज नहीं छाने वीतराग कुतकृत्यने तो कोइ कार्यनो जदेश रह्यो नथी, ए माटे जे केवलि जाषित बे, ते सर्व सत्यजबे. एमां कांइ संदेह नथी. एवी निश्चल बुद्धि थइ, तेने समकितनी निर्मलता वधती जाय. अने जेने एवी निश्चल बुद्धि न होय, तेने व्यतिचारना सबबथी समकि त, मलीन थइ जाय. ते प्रथमातिचार.

१ बीजो आकांक्तातिचार. ते जे दान, शील, तप प्रमुख ध मकरणी करीने पुष्परूपी फलनी इछा राखे, अति आतुरता क रे, अथवा आकांक्ता ते परमताजिलाष अन्यदर्शनीना धर्मनो उन्नतिजाव देखी, ते धर्मनी इछा राखे जे, आ पण धर्म सारोढे, आचरवा लायकढे, जूर्ठ जूर्ठ !! एमां पण केवा केवा प्राणी ढे ? औदार्य, धेर्य, गांजीर्य, पूर्णजक्ति, परोपकार, अने निस्पृहता के वी धारण करे ढे ? एवा धर्मने केम निंदीएं ? एवो विकल्प, ते बीजो आकांक्तातिचार.

३ त्रीजो वितिगिछातिचार. ते धर्म करणीना फलनो संदेह धरे. छाहींयां पोतानां पूर्वकृत पापना उदयथी कोइ उदयिक डुःख पामे,त्यारें शिथिल परिणामना योगथी छाग्रुऊ विकब्प जठे, जे श्रमे विधिपूर्वक धर्मकरणी करीयें ढैयें, पण कांइ फल नजरमां श्रावतुं नथी. कोए जाएे केवुं फल पामर्यु ? पए एम न विचारे जे, धर्म तो आजन्ममां पाम्या ढैयें, अने हमणां करीयें ढैयें तेनुं फल तो निश्चे आगल पामर्युं. पण एतो पूर्वजन्मने विषे मिथ्यात्वा दि चारनी प्रवलताथी जे चीकणां कर्म बांध्यांठे; तेनो ऋहीं उदय थयो ढे, ते पोताना विपाक मात्र जोइने जेने धर्ममां निश्चल बुद्धिंगे, तेनां कर्म तरत नाश पामशे, जे कारण माटे धर्मक रणी करतां पाप जदय थाय. ते प्रायें निकांचितरसियां कर्म जद य आवे, अने बंध, स्पष्ट, निधत्त रसीयां कर्म ते धर्मना परिणा मथी विफलोदय थइ जाय, एवुं न विचारे. एम छःखनी त्र्यातुर तामां जूले, ते पण अतिचार हे. तथा साधु साधवीनां मलमली न वस्त्र तथा शरिरादिक जोइने मनमां छगंढा करे, सूग आणे, जे ए सर्वकरणी तो सारीबे पण ए गलीच रहेबे, ते बूरुं करे बे. जो ते ऋचित्त फासु परिमित जलथी स्नानादिक करीने शुद्ध र हेतो घणुं सारुं; एवो विकल्प करे, पण एम न विचारे के ए पु जल, सर्व एक सरखांजठे. सारुं नठारुं कोइ नथी. जे कारण मा टे शुचि ते छशुचि थाय,छने जे छशुचि होय ते शुचि थाय. सम य समय अग्रुचि पुजलमां ग्रुचि पुजल आवेढे, अने ग्रुचि पुजल मां छागुचि जायते. जे शरीरने पवित्र करवाने विविध प्रकार करें ठे, ते शरीर तो केवल ऋशुचिथी जखुंठे; तो तुं क्यहां सुधी एने पवित्र करीश ? वली आ शरीर, पवित्र करवाथी कांइ जीव पवित्र नहीं थरो, जीव तो सर्व पुजलनी वांढना मटवाथी पवित्र थरो. जो अहीयां फांसु अचित जलथी पवित्रता करे, तो पण ते पुज लरंगी थयो; अने ज्यारें जीव पुजलरंगी थयो, त्यारें आ जीवनी अनादिनी जूल मटी नहीं. एने तो पहेलोज दिवसठे. सर्वे धर्म नुं मृल तो एते. के जेम जेम पुजल वासना उतरे, तेम तेम धर्म

दर्शनातिचार खरूपं. १९५

निश्चलता होय. पवित्र अपवित्रपणानी वासना तो राग द्वेषनुं मूलढे. अने ज्यां राग द्वेषनी पुष्टिढे, त्यां धर्म क्यांढे ? इत्यादिक शुऊयुक्ति चित्तमां न आवे, त्यारें कुविकब्प करे. अथवा विति गिठ्ठा ते घणो पुष्पोदय थये थके माचे, मनमां फुबे, अति मान धरे; अने अतिपापोदय थये थके डुःख धरे, बहु अरति वेदे, जदासी रहे, दीनता करे, दिलगिरी रहे, ए सर्व डुगंछा ढे. तथा एक सारो, अने एक जूंनो ए लक्त्रों करीने ए त्रण प्रकारना विफब्प, ते त्रीजा अतिचारमां आवे.

४ चोथो मूढदृष्टि अतिचार. ते जे अन्यदर्शनी मिथ्यात्वीनां कष्ट, मंत्र, चमत्कार, ऋथवा कोइ मिथ्यात्वीना देवनो परतो जे मनःकामनापूर्ण, ते जोइने दिलमां सुरजाय जे आ देवधर्म तो प्रत्यक्तवे; तो गुरु केम ना कहेवे ? कांइ खबर पडती नथी. एम मुरफाय, पण एम न विचारे जे सुख छःखतो कर्मना जदयने आ धीनहे. देवता तो तिमित्तमात्रहे. आपणां पुख पापना उदय विना देवताथी कांइ थनार नथी. तेर्ठ तो केवल आपणां पुख पापना जदयनिमित्त थइने यश अहेेेे; पण जदयिक पाप पुख ना उदय विना सुख छुःख त्रापी शकता नथी. अन्यदर्शनना जे जे प्रजावक देवता हे, तेमनी सेवनाना करवावाला तो कोइ सर्व सुखी नथी, तेमां पण घणा छःखीठे, ए माटे कर्मना उदय विना सुख डुःखनी प्राप्ति, ते मिथ्यांढे. अथवा श्री जिनागमना अति सूक्तमविचार, निगोदना, अथवा षट्रइव्यना, नय, गम, जंग, प्र स्तारा दिक गहनविचार सांजलीने पोताना आवरणना दोषथी बुद्धिमां न आवे, सारें मुफाय, ते एम के कोण जाणे ए छुं कहे ठे ? कांइ खबर पडती नथी. कोण जाणे जी रीतें हरो ? ए प्र कारें विकल्प करे, ते चोथो मूढदृष्टि व्यतिचार.

५ पांचमो अणुववुह अतिचार. ते जे पोतानी सत्ताना गुणप

र्याय प्रकाश करीने कहे नहीं. उप्रथवा गुणवंतना गुण जाणे तो पण तारीफ करीने प्रकाशे नहीं. पांच लोकमां गुणीना गुण प्रस्ता वती वखतें तेना गुण प्रगट जांखे नहीं. प्रकाशे नहीं, मोढेथी कहे नहीं तथा रागद्वेषादिक, कर्मजपाधि संयोगिक ज्ञाव, सर्व डुःखनुं मूलठे. एम वीशदरीतें प्रकाश करीने कहे नहीं, ते पांचमो व्यतिचार ठे.

६ ठठो अस्थिरीकरण अतिचार. ते जे आपणने कोइ पाप कर्मनो जदय थयो, त्यारें आपदा, रोग, शोक, आजीविका, छ र्क्षजता, कूडां ऋाल, तेवी दिनपर दिन छुःखनी चढती जोइने कोइ मिथ्यात्वना प्रदेश उदयबलें करी जैनमार्गथी परिणाम खसता जा य. आचारमां शिथिल थाय, ते पोतेंज पोताना शास्त्रपरिचयथी जाणे जे मारां परिणाम धर्ममार्गथी शिथिल थयाढे, पूर्वथी मा री श्रद्धा पण मलीन रहेंठे. एवुं जाणे तो पण तेनी दढतानां कारण जे सज़ुरुसेवन, शास्त्रश्रवण, टढवृत्ति, महापुरुषचरित्रस्म रण, देवदर्शन, उत्सवादिगमन, कर्मग्रंथादिक अथवा अध्यात्म शास्त्रपठन, इत्यादि हढतानां कारणढे, ते न सेवे, अने जाणतां वतां पण गुरुसंसर्ग, शास्त्रपठनादि उद्यम करे नहीं. अथवा कोइ छधर्मरुचि प्राणीथी परचो करे, छाथवा कोइ बीजो धर्म रुचि जीव होय, तेने धर्मथी पडतो देखे, त्यारें कहे फलाणो पुरुष, श्रागल धर्ममार्गमां घणोज हढ थयो हतो, हवे तो दिवसें दि वसें एना शिथिलतानां परिणाम नजरें वधारे आवेवे. एवं पोतें जाणे छने पोतामां एवी शक्ति पण ठे, के ते धर्म शिथिलने वहुविध हेतुयुक्ति देखाडीने धर्ममार्गमां स्थिर करे अने पडवा न दीए, एवी शक्ति वतां पण तेने जपकार बुद्धिएं करी शुद्धोप देशें छर्गतिपतनादि विपाकदर्शन. इत्यादि स्थिरीकरण न करे, श्वने मनमां जाणे जे आपणुं हुं वगडेवे ? चेतना तो एनी वगडे

माटे जे करशे, ते पामशे. एवी उदासी करीने बति शक्तियें धर्मथी मगतो होय, तेने धर्ममार्गमां स्थिर न करे, तो तेने अ स्थिरीकरण बघो अतिचार लागे.

७ सातमो अवात्सल्यातिचार. ते जे जे साधर्मी प्राणी, जे नी एक श्रद्धांहे, अने शास्त्रश्रवण, देवदर्शन, सामायक, पोसह प्रमुख करवुं, इत्यादिक धर्मकरणी. साथेंज करता होय, जेनी साथें धर्मनो महोटो संबंधबे अने जे एक गुरुना उपदेशित प्रमु ख बे, तेने साधमीं कहीयें. ते साधमींनी बति शक्तियें जकि न करे तेने कोइ रीतनुं संकट आवी पड्युं होय अने पोतानामां ते संकट टालवानी शक्ति हे, तो पण तेनो उद्धार न करे, ते संक टने मटाडे नहीं, ते साधर्मी उपर घणुं हेत न धरे, तेने जोइने खुज्ञी न थाय. संघमध्यें कोइ गुणवान् पुरुषनी शोजा यश, प्रतिष्ठा सांजलीने अप्रीति उपजे तथा साधर्मीकनो समुदाय मले, त्यां कषाय करीने मांहो मांहे विरोध पेदा करावे. सांधर्मी साथें शत्रुतानी रीति राखे, तेनी जपर अद्युज परिणाम चिंतवे, श्रयवा सर्वेजीव सत्तामां सरखाडे, एकज जाति, समानगुएप र्यायी, अने तेर्डनुं वस्तुगतें एकज खरूपढे, ए माटे समानसाध मीं थया, एवुं शास्त्रना उपकारथी जाण्युं, तो पण तेर्जनी र क्ता न करे, ते छवात्सल्यदोषढे छथवा खनिष्ठामां छंतर्गतमां पोताना ज्ञान दर्शनादि गुएपर्याय ठे, ते निश्चें साधर्मी ठे, एवुं गुरुक्टपाथी जाणेढे तो पण तेने ज्ञान, ध्यान, संवर अने समता रमणें करी पोषे नहीं, ख्रथवा जेम वार तहेवारें पोताना पाप कुटुं वने आदरशी अने जक्तिशी वोलावी विविध उपचारो करी हर्षे करी पोषेठे; तेम कोइ वार्षिक पर्वादि धर्मगत पर्व आवे अके, स्वामीवा त्सल्यादिक चक्ति, बति शक्तियें करे नहीं; ते पण व्यवात्सल्यदोष रूप अतिचार वे अथवा देवजव्य, ज्ञानजव्य, गुरुजव्य, अने

साधारण्डव्य वावरे. कोइ देवडव्य जक्त्ण करतो होय, तेने ठति शक्तियें शिक्ता न आपे. मनमां विचारे के आपणने शुंठे? जे खाशे, ते छुर्गतिनो देखवावालो श्वशे, संघमां शुं आपणे एक लाज ठैयें !! वीजो तो कोइ वोलतो नश्री, त्यारें हुं एकलो शा माटे कोइ जाइ कुटुंबीने माठुं मनावुं ? एवुं विचारे तथा ठति श कियें देहेरा प्रमुख धर्मस्थानकना डव्यनी खवर राखे नहीं, आ थवा खंक्ति, कंक्ति, मेली, अशुद्ध, अपवित्र धोतीश्री पूजा करे आ यवा पूजा करतां बीजाने एवीज रीतें, एवे वेपें जोइने तेने कांइ कहे नहीं, अथवा पूजा करतां मुखकोश बांधे नहीं, तेत्रीश आ शातना टालीने पूजा करे नहीं, अथवा पूजा करतां विंवने हा यमांथी पाडी नाखे, विंवने कलश प्रमुखनों धको लगाडे, देहेरा नी दश आशातना न साचवे, सामायक तथा पोसहमां थापना चार्यनी पडिलेहणा करतां हाथमांथी जूमि जपर गिरावे अने शुद्ध मानजक्ति न राखे. ए सर्व सातमो अवात्सव्यातिचार जाणवो.

ण् त्राठमो छप्रजावनातिचार. ते जे, ठति शक्तियें धर्मनी उन्न तिनां जे जे कारणोठे, जेवां के स्नात्रपूजा, सत्तरप्रकारीपूजा, एक शो छाटोत्तरीपूजा छने एकवीशप्रकारीपूजा ते महोटा हर्पथी क राववी, तथा थोडी शक्ति होय तो व्यवहारें छाटप्रकारनी पूजा,प्र जावना,संघजक्ति, रथयात्रा,तीर्थयात्रा,संघसहित जवुं, महोत्सव, विंवप्रतिष्ठा कराववी, तीर्थोंद्धार कराववा, जीर्णोद्धार पोताथी क राववां,छ्ययवा छन्यने उपदेशप्ररूपक थइने नवां प्रासाद वीजाकने कराववां, छाने सद्गुरु, छाचार्य, जद्दारक प्रमुख छावे थके तेमने संपत्तियुक्त छवारित दान छापे. ठति शक्तियें उद्धं न करे. सोना ना तथा रखना खुंठनां करतो थको तेने नगरप्रवेश करावे ते समयें उदारचित्तवाको थइ जेवुं पोतानुं सामर्थ्य होय,ते प्रमाणे चौटा प्र मुखमां शोजा करावे. प्रतोक्री प्रमुख विविध प्रकारें विज्रूषा वना

चारित्राचारातिचार खरूपं.

वे उदारताथी दीनने दान आपे. ए सर्व शासननी उन्नतिनं कारण ठे. जेकारण माटे एवा उत्सव, महोत्सव, बहुमान ऊने आवारित दाननी उदारता विगेरेने देखवाथी सर्व कोइ निष्क त्वी जीव, धर्मनी अनुमोदना करीने पुण्योपार्जन करे. सुझ्फ्र् त्वी जीव, धर्मनी अनुमोदना करीने पुण्योपार्जन करे. सुझ्फ्र् धी पण थइ जाय, अने आपणा पण एवे कारणे करी परिएम कि मेख थाय. कोइ खेश्या एवी आवी जाय के, तेवी खेल्या करी मरमां पण आवे नहीं. एवो परिणाम समरी जाय. झाल्प्रक क् जावनाथी घणा जीवोने उपकार थाय; एवं जाएतां उत्त अन्ते वति शक्तियें पण प्रजावना न करे, आथवा निश्च प्रजावना करे गतमां ज्यां ज्यां पुष्टनिमित्त जे देवग्ररुदर्शन, झाल्प्रका कर्य भेवन, जेनाथी आत्माना ग्रणनी वृद्धि थाय, वर्ण दिल्क्त कर आत्मामां झानप्रकाश थाय. एवं सर्व पोतें जाएक्ते, ज्य के दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री चारित्राचारस्य अष्टातिचारम्बस्ट उन्हे

१ प्रथम अनुपयुक्तगमनातिचार. ते मार्गे उत्तर चन, काया, एकत्र उपयोगीरूप प्रणिधानहुन कि साधु जूसर प्रमाण जूमियें दृष्टि पहिंबहुन कि ईर्यासमितियुक्त गमन थाय. त्यां सानुन कर श्रावकने सामायक पोसह कीधे होय. चपलतासहित वर्त्ते, तोते प्रथम अनुप्रहुक्त कि

१ बीजो अनुपयुक्तजाषी अतिचार के कि ल, अने आवक सामायक पोसहमां के कि

चारित्राचारातिचार स्वरूपं.

त्यां जाषाना चार जेदढे. प्रथम सत्यजाषा. ते जेवुं होय, तेवुंज कहे, पए कम वेश न कहे, बीजी असत्यजाषा, ते कांइ कहे वानुं होय तेने बदले कांइ कहे. त्रीजी मिश्रजाषा. ते कांइक जू ठुं अने कांइक साचुं, जेम के आजे नगरमां दशनो जन्म थयो.ए उुं कहे, ते मिश्रजाषा. चोथी अनुजयजाषा. ते साचुं पए नहीं अने जूठुं पए नहीं, पए जे लोकव्यवहारें बोलवुं. ते जेम गाम आव्युं रात्री पडी, वली कोइनुं नाम कहेवुं. जेम के जगत्पाल, लक्कीधर, देवदत्त, अमर इत्यादि व्यवहारजाषा चोथी. त्यां साधु सदाकाल, अने आवक सामायक पोसहमां पहेली अने चोथी ए बन्ने जाषा बोले; ते पए प्रेशिधानयुक्त उपयोगी अने जयएायुक्त वोले. ते अहींयां विना जपयोगें अशुद्ध बोले, ते वीजो अतिचार.

३ त्रीजो अनुपयुक्तएषणातिचार. ते जे पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त वेंताक्षीश दोष टाक्षीने जिक्ता ले. पांच दोष टाक्षीने आहार करे, ते चारित्राचारढे; पण उपयोग विना एथकी विपरीतपणे आहार ले, ते त्रीजो अतिचार. अहींयां एषणाग्रुद्धिमां वीजुं पण वस्त, पात्र, शय्या, संथारक, वसती प्रमुख जे जे चीज चारित्रने उप कारी होय, ते चीज जो निर्दोष ले, तो आचार जाणवो अने जो सदोष ले, तो अतिचार लागे. ए पण अतिचार साधुने सर्वदा, अने ग्रहस्थने पोसह सामायक लीधे लागे. एम पोतानी दशा माफक पाले, तेमां जो अनुपयुक्त प्रवर्त्ते, तो ते त्रीजो अतिचार.

ध चोथो छनुपयुक्तआदानमोचनातिचार. ते जे साधु सदा काल, अने आवक सामायक पोसहमां जे जे चीज ले, तथा मूके, ते चीज पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी थको दृष्टि पडिले हणा पूर्वक ले, फरी एवी रीतेंज मूके, एवो आचारठे. अने जे अ नुपयुक्त अवधियी आदान मोचन करे, ते चोथो अतिचार कहीयें. ४ पांचमो अनुपयुक्तपरिष्टापन अतिचार. ते जे साधु सर्व

काल, अने आवर्क सामायक पोसहमां लघुनीति, वडीनीति, मे ल, श्खेष्मादि जे परठवणा लायक वस्तु, ते ग्रुऊ निर्जीव जूमि ना स्थानकमां दृष्टिपडिलेहणापूर्वक, पुजन प्रमार्जन करीने परठवे, एवो आचारठे. तेथी विपरीत, प्रणिधान रहित अनुप योगी थको परठवे, तो पांचमो अतिचार लागे. अहींयां पहेली बे समिति, पोसह सामायकमां तो अवझ्य साचववी. कदापि न सचवाय, तो पण ए बेनो जैनधर्मीने उपयोग राखवो, कारण ए धर्मनो मूलमार्गठे.

६ बठो अनुपयुक्तमनप्रवर्त्तनातिचार. ते जे साधु सर्व कालें अने आवक सामायकादिक धर्मकरणीना अवसरें पूर्वोक्त प्रणि धानपूर्वक सर्व कुविकब्प बोडीने सूत्रार्थ चिंतवन प्रमुख आलं बनयुक्त उपयोगी थको मनने स्थिर राखे, ते मनयुप्ति आचार, अने एनाथी विपरीत आर्त्तध्यानादिकें करी कुविकब्पमां मन दोडावे, ते बठो अतिचार.

७ सातमो अनुपयुक्तअकारणवचनातिचार. ते जे साधु सर्व काल अने आनक सामायक पोसहमां प्रायें मौनज रहे. अने बोले, तो पण उपयोगी, पूर्वोक्तप्रणिधानयुक्त अवस्य कारण योगें जिनाज्ञायुक्त सर्व जीवने हितकारक, एवुं शुद्ध जांगे सां जलवामां मधुर एवुं वचन कहे, ते वचनगुप्ति श्वाचारढे. अने एनाधी विपरीत निष्कारणे जेवुं तेवुं बोले, ते सातमो अतिचार.

5 आउमो अनुपयुक्तनिष्कारणकाययोगचपलतातिचार. ते जे साधु सर्वकाल अने आवक पोसह सामायकमां इंडिउंने ग्रप्त क री राखे अने अवश्य कारण योगें उपयोगी थको प्रणिधान यु क आज्ञाधूर्वक जयणाथी हस्त पादादिक आकुंचन प्रसारण क रे, अथवा उठे, बेसे, ते कायग्रप्ति आचार. पण निष्कारण, अनुपयुक्त, अने अविधिधूर्वक जे हस्त पादादिक योगचपल ता करे, ते आठमो अतिचार जाणवो. ए अतिचार जाणवामां राखे, पण आदरे नहीं. अहिंगां गुप्तिधर्म ते उत्सर्गधर्म ठे अने समिति ईर्यादिक जे पांचेठे, ते अपवादधर्मठे. ए आठे धर्मनी माता कहेवाय, जे जे धर्म करणीठे, ते ए आठें करी युक्तठे, ते आचारठे. अने ए विना जे करे, ते अतिचार जाणवो ॥ इति चारित्राचारस्य आष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ श्रय ॥

॥ श्री तपाचारस्य धादुशातिचार स्वरूप प्रारंजः ॥

त्यां तपनुं मूल लक्तण एवे जे, श्री जिनेश्वरें वार प्रकारना तपनी प्ररूपणा कीधी, ते तप, परम निर्जरानुं कारणवे. पण इहा निरोध करीने मनमां ग्लानपणुं नहीं, मन हारे नहीं, अग्लान नी आतुरता रहित, विषयानुष्ठान, गरलानुष्ठान रहित, अन्योन्या नुष्टानरहित एटंबे आ लोकने विषे आजीविका हेतुयें अथवा मानने अर्थें, तथा पूजाने अर्थें, अने परलोकें देवादिक पदवीना हेतुर्ये ए त्रए अनुष्ठान हे; इत्यादिक आज्ञायरहित, कोधमा नादि कषायरहित, जमंगसहित, समतासहित, छने चित्तनी प्र सन्नतायें करी, केवल कर्मक्तयना निमित्तें करे, तेने झुद्धतप क हीयें. ते तपना वार जेद हे, माटे वार छतिचार लागे, ते लखेहे. १ प्रथम छए शएतप. ते जे जे जपवासादिक वीविध प्रकार नाठे, ते करीने पठी पूर्वें जोगवेला आहारने याद करे, जक्तकथा करे, आगला दिवसें पारणानी चिंता करें के आवी रीतें रसोइ व नावीने खाइ्श. एवो मनमां विकल्प करे. छा संसारमां आहार संज्ञादि दोषठे, ते मोहोटुं लांठनठे, छने सर्व आरंजनुं मूल ठे. "ठए काहनो थाय ज्यारें जेटो, त्यारें वने एक रोटो" एवो अ नादि दोप जिनवचन सांजलवाथी जाखो पण ते दोप सर्व प्रका रें परित्यागवाने तो खाचार ढे, त्यारें मोक्तार्थी जीव, पोतानी श कि मुजब योग्य परिमित काल कवलाहार त्रिविध योगें त्यागरू प पच्चलाण करे; एटले धारणापरिमाणकाल सुधी ढकायने अज यदान थयुं. अने रसनेंडियादिक मार्गी थया. त्यारें सकल लब्धि प्रमुख आत्मिक संपत्तिनुं बीज रोप्युं. एम सकल मनःकामना पूर्ण करवाने समर्थ एवुं तप करीने आगला पाढला दिवसनी चिं ता, अनुमोदना करे, ते तपफल व्यर्थ करे. अथवा मनग्लान करे जे, उपवास महोटो कठिन थयो ? आ छुं कखुं ? एवो पश्चात्ताप करे. ए सर्व, तपना अतिचार ढे ॥ इति अण्शा तपातिचार.

श्बीजो जणोदरीतप अतिचार. ते जे पुरुषनो पूर्ण आहार बत्रीश कवलप्रमाण, अने स्त्रीनो अठावीश कवल प्रमाण आ हार. ए नीरोगी शुद्धकायानुं लक्तणुढे. एमां जो कमी जास्ती आ हार थाय, ते प्रायें रोग ओषधादिकना प्रजावश्री थइ जाय तो लाचारींडे, पण प्रमाण तो बत्रीश कवलनुं डे. अने एक कवलनुं प्रमाण मुरगीनुं इंगुं अथवा जेवडुं आंबलुं तेवडुं, अथवा आपणा मोढानी फाडमां जेवडो कवल सुखें आवे एटलो ग्रास खेवो तेने पण कवलप्रमाण कहीयें. ऋथवा छापणो जेटलो छाहार होय, तेना बत्रीश जाग करीएं तेमांना एक जागने पण कवल कहीयें. एवा बत्रीश कवलनो जे आहार करे, ते पूर्णाहारी कहेवाय. ते पूर्ण आहारमांथी इडारोध करीने क्तुधा ठते संतोष धरीने वे अथवा चार अथवा आठ कोलीया ठंठा खाय; तेने ऊणोदरी तप कहीयें. त्यां जणोदरीतप करीने कवल परिमाणमां महोटा महो टा को बीया गणतरीमां राखीने खाय अथवा सरस आहार जे मो दक प्रमुख चीज घणी चीकणीठे, तेना कोलीया खावामां पण उ ठा छावे. कारण तेना थोडा कोलीयामांज तृप्ति थाय. ते थोडा को क्वीया गणतरीमां राखे, अथवा विशेष खादथी घणुं खाय. एवं

करीने विचारे जे आहार प्रमाण तो बत्रीश कोलीयानुंढे; अने में तो चोवीश कोलीया खाधा; माटे मारे पण जणोदरी तप थयुं. पण एम न विचारे जे, बत्रीश कोलीयामां मोदक प्रमुख चीकणी वस्तुनी गणतरी नहीं जाणवी. तेम ढतां आज्ञानदोषथी समजीने ते एवो मनमां विकल्प करे, ते जणोदरी तप अतिचार.

॥ त्रीजुं वृत्तिसंक्तेपतप. ते विविध प्रकारना अजिग्रह धरे, अने श्रावक चौद नियम धरे. अथवा आहारनी चीज होय तेनी डव्य द्वारायें संख्या राखे, ते इत्तिसंकेपतप कहीयें. ते तप करी ने साधु वार्तामां अथवा उपदेश देतां थकां पोताना अजियहनी वात पण ग्रहस्थना आगल कही दे, त्यारें ते सांजलीने ग्रहस्थ जाणे जे अहो !! साधुयें केवा केवा अजियह लीधावे. तेथी वि वेकी अने चतुर आवक होय, ते पोतानी बुद्धियकी अवसर थये थके छजियह पूरे. तथा यहस्थ डव्यपरिमाणादि नियम धरतो होय, ते पोताना घरमां संकेत शिक्तारूप करे. जे तमे तो स्नेह ग्रेथिख ढो तेथी हरेक चीज खावीने जोजन करती वखतें जोज नमां नाखशो; अने अमें तो इत्तिसंद्रेप वैयें, तेथी डव्य अधिक थइ जाय त्यारें व्रत खंगन थाय. माटे श्रमने जूदी जूदी चीज ञ्चापवी नहीं. ऋमाराथी एकठी करेेेेे चीज लीधी जाय, जेेेंनु एक इव्य गण्युं जाय माटे हलफल करीने विना खबरथी कोइ चीज जूदी आपशो नहीं. एवी शिका कहे त्यारें ते रसोइदार तुरत रहस्य पामी जाय अने पठी पोतानी निपुणताथी लूण, म रचुं, जीरुं, हिंग संयुक्त व्यंजनादिक मीठी चीज प्रमुख आगल थी एकठी मेलवीने राखे अने ते सौ चीज सुखाद होय ते पी रसे छने ते चीज आरोगे. मनमां जाणे के, मारुं डव्यापरिमाण हुं गुद्ध राखुंढुं. पण पूर्वे एवी संज्ञा करी, तेथी वत तो मलिन थयुं. एवो कुविकटप, ते इत्तिसंदेभतपत्रतिचार.

४ चोथो रसत्यागतप छतिचार. ते रस जे ढ विगय, ते वि कारना हेतुढे. छने रसग्रद्धिना बहु कटु विपाक ढे; एवुं जाणीने त्याग कस्वो. पढी कोइ कारण विना छने गुरुष्ठाङ्गा विना निविष्ठाता करी खाय ऋथवा छन्य इव्यांतरसंयोग मेलावी घणी रीतें छन्निसं स्कार करीने तेनी मजा छावे; एवी गुणवान् चीज करी खाय. एटले जिव्हानी रसग्रद्धि मटाडवा सारु ए तप कीधुं हतुं ते तो थयुं नहीं, ते चोथो छतिचार.

५ पांचमो कायक्केशतप अतिचार. ते जे साधु, मुनीश्वर लोच करावे. तडकामां ताप सहन करे, शीत सहन करे, मांस, मछर,कुतरा प्रमुखना परिसह सहन करे, विकटासनें स्थिर यइने ध्यान करे, विकटासनें सज्जाय करे, ए तप साधुने तो हररोजडे अने श्रावकने तो सामायक, पोसह अथवा जाप, नवकरवाली, पंचपरमेष्टिना ध्यानना अवसरमां कायक्केश सहन करवानोडे त्यां डति शक्तियें आगलथी वस्त्रादिक लपेटी सर्व शरीर, आइत करीने किया करे, अथवा कोमल आसनें बेशीने जपादिक करे, ते कायक्केशतप अतिचार.

६ ठठो संबीनतातप अतिचार.ते जे साधुने तो सदा संबीनता तपठे तेथी सदा पोताना अंगोपांग संवरी राखे. विना कारणें इ लावे नहीं अने आवक पए सामायक पोसहमां, अथवा पूजा ज पादिक अवसरें पोतानुं अंग संवरी विनयगुएयुक्त राखे एटले गप लांबा करवा, अवष्टंत्र लेवो, गले हाथ देवो अने अंगोपांग मोडवादिक न करे. एक ग्रुद्ध जपयोगी अंगोपांग संवरी जयणापू र्वक विनयगुएयुक्त प्रवर्त्तन करे, ते संलीनतातप कहीयें.त्यां एवुं तप करीने पूर्वोक्त दूषए लगाडे, तेने संलीनतातप अतिचार ठठो लागे. ए ठ प्रकारनां वाह्य तपना ठ अतिचार कह्या.

16.7

हवे व प्रकारनां अञ्यंतर तपनां व श्रतिचार कहेवे.

१ त्यां प्रथम प्रायश्चित्ततप छतिचार. ते जे साधु छथवा श्राव क, पोतपोताना वतमां दूषण लाग्युं जाणे, त्यारें ज्ञानी गुरुपासें ञ्चालोयणा ले.त्यां ञ्चालोयणा बे प्रकारनीठे.एक खल्पविषयी ख **ल्पका**क्षीन. ते कोइएक नियमनो तथा व्रतादिकनो त्र्यतिचार लाग्यो जाणे, त्यारें तरत गुरुने पूठीने तेनुं प्रायश्चित्त लीये. वीजी बहुविषयी,बहुकालीन,जमरगत दूषणनी आलोयणा. तेमां जे एकाद नियमना दूर्षे एनी आलोयणा तो, जे, वर्त्तमानें शाणो हो य,तेने पूठी ले;पण ज्यारें आखी उमरनी महोटी आलोयणा लेवा ने चहाय, त्यारें शुद्धगुरु जे ज्ञान छने किया ए बन्ने गुणोयें युक्त होय, तेनी पासें आलोयणा ले. कदापि ए वन्ने गुणोयें युक्त एवो शुऊरगुरु न मले, तो बहुश्रुत, ज्ञानवान्, शुऊ जाषी, एवो पासहा प्रमुख होय, तेनी पासेंथी आलोयणा ले; पण जे उत्क्रृष्ट क्रियावंतज होय परंतु सिद्धांतना रहस्यने न जाणे तो तेनी पासेंथी न ले. कदापि ज्ञानवंत पासबो पण न मले तो वे गुणें युक्त अथवा एक गुणें युक्त गुरूप्ररूपक ज्यां होय, त्यां तेनो शोध करीने तेने माटे वीजे गाम वीजे देश जाय. एवी रीतें खोज करतां पोताना निवासकेत्रश्री सातशें योजन सुधी गुरुनी गवेप णा करे, तथा कालथी वार वर्ष पर्यंत गवेपणा करे. एम शोधतां शो धतां कदापि तेनुं झयुष्य पूर्ण थाय; तो पण तेने आराधक कही यें.तथा गवेषणा करतामां ज्यां गुणवंत गुरु मले,त्यां ते गुरुनी पासें ञालोयणा ले.एम करतां वे गुणयुक्त अथवा एक गुणयुक्त पण गुरु साधु पासन्नो श्रथवा ज्ञानवान् होय तेनी खवर, वार वर्ष सुधी खोज करतां न मली,त्यारें पठी कोइएक ठेकाणेथी एवी खवर मली के एक साधु, बहुश्रुत अने कियावंत हतो, ते साधु कोइ पापकर्मना जदययी प्रतिपाति थइने अहींयांथी कोइ दूर देशांतर

तपाचारातिचार स्वरूपं. १०७

जइने त्यां ते वेष ढोडीने एहस्थ थयोढे, तेवुं नाम पहाकडो श्रा वक कहीयें ते फलाणा गाममां हे. एवुं सांजलीने प्रायश्चित्ती त्यां जाय अने ते पत्नाकडाने एवो प्रतिबोध आपे के हे महानुजाव ! तमे तो रतत्रयिनी महोटी पदवी पामी करीने ठोडी दीधी,ते सारुं नहीं कच्छं. पण तेमां तमे द्युं करो ? जदय वे ते महाबलवान् **बे. तेना जोर**थी तमारा परिणाम शिथिल थइ गया. ते तो जे थवानुं हतुं ते थइ गयुं, ते माटे हवे कांइ चेतो अने फरी पराक मने फोरवो. हमणां अशुज कर्मना उदयनी अशाता पाठी हठ वानो समय थयो जणायडे तेथी करी अमारो पण तमारी सांथें मेलाप थयोडे. वली तमोने तो महाज्ञाननो आधारहे. तो तमे देखी पेखीने केम जूलमां पडोठो ? ए माटे फरीथी खबरदार थइ चारित्ररतने छंगीकार करो छने छात्माने तारो. छागल पृण घणा पतित अइने फरी जाग्रत थयाढे, सर्व कर्मनो इत्य करीने मुक्तिसुखने पाम्याढे ए माटे तमे पण चारित्र खो, ढील करो नहीं. एवो सारो उपदेश सांजलीने ते पद्याकडा श्रावकना परिणाम सुधरे, तो तेने चारित्र लेवरावी, पठी तेनी पासेंथी प्रा यश्चित्त ले. एम करतां पण ते जारे कर्मींडे, तेथी एम कहे के जाइ साहेब ! गजपाखर ते रासजथी केम उठावी शकाशे ? तेम माराश्री आ निष्कलंक चारित्ररत न पखे तो तेने जूतुं लीधा थी शो गुए थाय ? जो ते विधि माफक निर्वहेनहीं तो हुं जलटो महापापी अने अघोरी थाउं. एकवार तो थयो ढउं अने ए माघ लागी चुक्योंने. हवे एवी हकीकत कही अने ते जाइयें सांजली ते समयें ते, ते पत्नाकडाने जिनमंदिरमां लेइ जाय अने त्यां तेने सामायक खेवरावे. पढी तेने वंदन करीने तेनी पासेंथी आलोय णा ले; पण अज्ञानी पासेंथी आलोयणा ले नहीं. एवी रीतें गुरुनी गवेषणा करीने पण आलोयणा ले, ते एवी रीतें के जेम पोतानी

तपाचारातिचार स्वरूपं.

माता कने वालक पोताना मननी वात कहे; तेमांनी कांइ पण तुपावे नहीं, कोइ वात कहेतां लाजे पण नहीं, तेम साधक पण गुरुनी आगल जेवी वीती होय तेवी, निष्कपटी थइ करीने त्रणे योग जे मन,वचन,ऋने काया तेणे करी जे जूल थइ होय ते कही त्र्यापे. कोइ जाणीती वातमां **ढुपावे नहीं, तेने** श्रालोयणा कही यें. पण जो कांइ ढानुं राखीने कहे, तो ते तत्वदंत्री थयो, तेथी तेनी ग्रुद्धि थाय नहीं. एवा विधिपूर्वक साधकें ग्रुरु आगल, सर्व पाप प्रगट करी दीधां; गुरुयें पण सर्वे जाणी खीधुं. त्यार पठी गुरु, आगमना ज्ञाताने ते विचारे के पापकर्म, चार रीतें लागेने १ आक्रुद्दी, १ दर्प्प, ३ कढप, छने ४ प्रमाद. एवा चार प्रकारना पापमां आ आलोयणा लेनार कया पापना प्रायश्चित्तने लायक वे ? एवो विवेक करीने यथायोग्य प्रायश्चित्ततप, गुरु आपे, ते शिष्य प्रसन्न थइने ले अने एवुं जाणे के गुरुजीयें मारा जपर महोटी कृपा करीने संकष्टमांथी ठोडाव्यो छने मने घणो सुखी कस्त्रो. मने घणो शुद्ध जपाय बताव्यो. ए गुणना जपकारने कोण वि सरे ? एवी रीतें हर्षित चित्तथी गुरुदत्त प्रायश्चित्ततप ले. पठी गुरुयें जपदिष्टकालने विषे जे तप आप्युं ठे, ते तप लेखा द्युऊ पूरुं करी पहोचाने. ते प्रायश्चित्ततपाचार कहीयें. अने जे गुरुयें आपेला मार्गने ठोडीने पोतानी मतिकल्पनापूर्वक करे, अथवा प्रतिज्ञात कालची वधारे काल, विना कारणे लगाडे, अथवा कमवेश करे अथवा प्रतिज्ञा, राजवेठ समान करे, पांच लोकमां छए बूटतुं करे छथवा ज्ञून्यचित्तथी करे छथवा फरी तेवुंज आश्रवसेवन करे, ते प्रायश्चित्ततप अतिचार कहीयें.

१ वीजो विनयतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावक सहु पो त पोतानी दशा माफक विनयपूर्वक आगममां "आयरियजवझाए" इत्यादिक ग्रणवंत प्रत्यें विनय जे वंदन, नमन, अज्युत्थानादि उचितजक्तिकियारूप, ते आगमशैक्षी प्रमाणे करे, ते विनयत पाचार कहीयें; अने जे आगमोक्तिथी कमवेश करे अथवा विपरीत करे अथवा अण ढ्टतो करे अथवा दंजथी करे, ते विनयतप अतिचार कहीयें.

३ त्रीजो वैयावच्चतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावकने, कुल, गण, चैल, संघ इत्यादिकनुं जेनुं जेनुं जेवुं जेवुं वैयावच करवुं आगममां कद्युं ठे, ते प्रमाणे तेनुं वैयावच्च करे. त्यहां वै यावच्च ते रोगादिक विघ्न उपजे थके तेनो प्रतिकार जे उपाय विविध औषध, श्रंगमईन, पथ्य, जक्तादि योगमां तत्पर थइ ज किपूर्वक करे, ते वैयावच्चतपाचार कहीये अने जे ते वैयावच्चनी वखतें काइ बानुं काढी टल्ली जाय श्रथवा वैयावच्च खोटुं करे अने जे जक्ति बिना श्रणतूटते करे श्रथवा दंजधी करे श्रथवा श्राचार्यादिकना जयथी करे श्रथवा पोताने करवानुं, ते बीजा पासें करावे, तेने वैयावच्चतप श्रतिचार कहीयें.

४ चोथो सझायतप अतिचार. ते जे सांधु तथा आवक पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे श्रुतज्ञाननो अञ्यास करे, ते सझायत पाचार कहीयें. ते सझायतप, पांच प्रकारनुंढे. १ वांचवुं, १ पू ढवुं, ३ परावर्त्तवुं, ४ अनुप्रेक्ता, ८ धर्मकथा.

र लां प्रथम वांचनसझाय. ते जे श्रुतनुं जणवुं जणाववुं, ते वांचनसझाय कहीयें.

१ बीजी प्रहणासझाय. ते जे जणवामां संदेह थयो, तेनुं शि ष्यें पूडवुं श्रथवा गुरुयें शिष्यने कद्देवुं.ते प्रहणानामें बीजी सझाय.

३ त्रीजी परावर्त्तनासझाय. ते जे पूर्वे जणेला श्रुतनुं गणवुं छाथवा गुरुयें शिष्यनी परावर्त्तना सांजलवी छाथवा परावर्त्तना करवानी प्रेरणा करवी, ते परावर्त्तनासझाय कहीयें.

४ चोथी अनुप्रेकासझाय. ते जे पठितश्रुतना अर्थनुं चिंतव

न करवुं, अथवा परस्पर साधु श्रावकें मलीने चर्चा करवी अथवा गुरु, स्याद्वादशैलीपूर्वक उक्ति युक्तियें करी शिष्यनो संशय टाले, ते अनुप्रेकासझाय.

५ पांचमी धर्मकथासझाय. ते जे रुचिवंत जीवने जाव कर णापूर्वक धर्मोपदेश कहे; धर्म प्रत्यें पमाडे, तेने धर्मकथासझा य कहीयें. ए पांचे प्रकारनी सझाय, शिष्य छाथवा ग्रुरुपोतानी दशा माफक यथागम करे, ते सझायतप कहीएं.

१ अथवा शिष्य विनयसहित हर्षित थको, गुरु आशय अट कल करतो, अनुकूलपणे आसनस्थ प्रशांत इत्यादि विधिपूर्वक वां चना ले तथा गुरु पण प्रसन्नचित्तथी तेनी योग्यता माफक प्रमाद तजीने अग्लानपणे वाचना आपे, ते वेजने वांचनासझाय तप.

१ तथा प्रव्वणासझाय. ते आसनस्थ गुरु जोइने शिष्य विन यादि गुणयुक्त आशय अनुकूल थइने पूठे. गुरु पण जाव दया धरीने धर्मरागथी घणी बुद्धिनो खरच करीने स्याद्वादशैली अनुसरतो, एवो जवाव आपे के, तेणे करी शिष्यना चित्तनो संशय तरत मटी जाय, ते वेडने प्रब्लणासझायतप कहीयें.

३ तथा परावर्त्तनासझाय. ते जे शिष्य, तीव उपयोगी थको पूर्व पठितशास्त्रने गुषे, तथा गुरु पण तीव उपयोगी थका सां जखे, जूल चूक कही दीए, ते बन्नेने परावर्त्तनासझायतप कहीयें. छनुप्रेक्तासझाय. ते जे व्यर्थनी चर्चा,शिष्य सहाध्यायी व्यने वी जा पण निपुण साधु मसीने विविधयुक्ति जैनशैक्षीपूर्वक करे,त्यां क्या रेंक चर्चा करतां उक्ति युक्ति पूर्वक निर्णय थाय व्यने क्यारेंक निर्णयन याय,त्यारें गुरु पण व्यागमानुकूल उपयोगी थइने विशद रीतें चर्चानो ४ करी श्वापे, ते वन्नेने पूर्वोक्त व्यायेक्तासझाय तप कहीयें. तथा धर्मों पदेशसझाय. ते वन्नेने पूर्वोक्त विधिपूर्वक ज बुद्धिची धर्मों पदेश श्वापे. त्यां जो पोताने जपदेश आप

به به به

तपाचारातिचार खरूपं.

वानी योग्यता होय, तो आगमशैक्षीपूर्वक उपदेश आपे, अने जो आगमशैक्षीना नय, निद्तेप, प्रमाण, सप्तजंगी प्रमुखमां तथा वि ध इत्योपशम न होय, त्यारें जे बहुश्रुत उपदेश आपे, ते कचित् हर्षित अने विस्मय स्मेरमुख थको सांजले, ते धर्मकथासझाय तप कहीयें. ए पांचे सझाय, कहेक्षी रीतिथी विपरीत करे अथवा दंजधी करे, अथवा शिरबोजनिर्वाहन्यायें करे, अथवा अजिमान धरीने करे, बीजानी ईर्ष्याधी करे, अथवा उतावलो उतावलो गड बड करीने पूरी करे, अथवा पोतानी मरजी माफक करे, अथवा यश अर्थे करे, ते सझायतप अतिचार कहियें.

५ पांचमो ध्यानतप अतिचार. ते जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बन्ने मुक्तिदायकढे. त्यां प्रथम साधुने धर्मध्यानना चारे पाद ध्याववानां हे. ते धर्मध्यानने ध्यावतां ध्यावतां, ज्यारें परिपूर्ण अप्र मत्त नामे उत्कृष्ट स्थानें पहोंचे, लार पढी आठमा गुएस्थानकने पासे. त्यां शुक्लध्यानना प्रथम पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां ञ्जागल बारमुं गुणस्थानक पामे, तेवारें गुक्लध्यानना बीजा पादनं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां बारमुं गुएस्थानक ज्यारें पुरुं थइ रहे, त्यारें चारे घनधातीकर्म क्तय थइजाय, एटले केवलज्ञान पामे,तेर मुं गुएस्थानक पामे छने त्यार पढी पोताना छायुष्यनी स्थिति मा फंक तेरमे गुणस्थानकें रहे.पढी जेवारें तेरमा गुणस्थानकनो होष झं तरमुहूर्त्त काल रहे,ते वारें गुक्कध्यानना शेष बे पाद ध्यावे,त्यां च जदमा गुणस्थानकें पहोचे, ते स्थलें सर्वकर्मनो क्तय करीने मुक्ति सुख पामे, ए साधुना ध्याननी पद्धति वे तथा आवकने तो धर्म ध्यान छने गुक्कध्यानने ध्याववानी योग्यता नथी जे कारणे मूल घाती चार कषाय जदयवंत सरु हे, ए माटे ते आवक, अनित्य अशरणादि बारे जावनाने एक चित्तें शुज आर्त्तरूपें ध्यावे. ते जा वना करतां, कोइ उत्तम जीवने उपयोगनी निर्मलताथी लयली

वीर्याचारातिचार खरूपं.

नता थाय, तेनाथी धर्मध्याननी समाप्ति थाय.समाप्ति ते एम के, जेम सूर्योदय पहेलां श्चारुणोदय ञ्चाजास मात्र होय, ते सूर्य नथी पण एथी सूर्योदयजन्य कार्य, घट पटादि सर्वनो श्चनुजव थइ जाय. तेम आवकने पण जावनाजन्य द्युद्धोपयोगथी धर्मध्याननी समाप्ति ऊलकरूप धर्मध्यानसरखो श्चनुजव थाय. मुनिजावनो श्चाखादमात्र पामे, पण ध्यानपदनी पूर्णता पामे नहीं, ए जे ध्या नयोग, ते ध्यानतप कहीयें. श्चने जे ए जे ए ध्यानमां वीजो विकल्प, योगचपलतादिक करे, ते ध्यानतपश्चतिचार कहीयें.

६ ठठो त्यागतप अतिचार. त्यां त्यागतपना वे जेदठे. एक इव्यत्याग, अने बीजो जावत्याग. त्यां इव्यत्याग, ते साधु त था श्रावकने पोतपोतानी दशा माफक आहार उपधि तथा नव विध परिग्रहरूप इंडियसुखनो तथा अवस्थाविशेषें देहनो पण त्याग करे, वोसरावे, ते डव्यथी त्यागतप कहीयें. अने जे वि षयतृक्षा तथा कषाय जे कोधमानादिक, तेनो जे त्याग करे,तेने जावत्यागतप कहियें. ए रीतें जिनागममां जावत्याग तप कह्युंठे. तेनो ठति शक्तियें त्याग न करे, अथवा विधिरहित करे, अथवा तत्वप्रतीति धरी करे नहीं, अथवा पांच माणसमां अणढूटते करे, अथवा निदान धरी करे, ते त्यागतप अत्तिचार कहीयें ॥ इति तपाचारस्य द्वादशातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ ऋथ ॥

॥ श्री वीर्याचारातिचारत्रय प्रारंजः ॥

् १ त्यहां वीर्याचार. ते जीवने मन, वचन छने काया, ए त्रणे योगनुं सामर्थ्य जे शक्तिविशेप, ते वीर्य कहीयें. त्यां साधु तथा श्रावेक, पोत पोताना गुण स्थानक माफक तथा पोत पोतानी द

वीर्याचारातिचार खरूपं.

<u></u> যুল্ড

शा माफक जे जे धर्मकरणी करे, ते सनादि त्रणे योगनुं वीर्य फोरवीने करे, सर्व धर्मकरणीमां जेवो जेवो वीर्योद्धास होय, ते वुं तेवुं ते फल पामे. जे माटे गुणस्थान, योगस्थान अने संयम स्थानना जेद पडे. ते वीर्यनी प्रबलता अने मंदताशी चढतुं अ ने पडवुं थायहे. त्यां प्रथम काययोगथी सर्वधर्मकरणीमां पोताना श्रंगनुं बल, वीर्य, फोरववामां जूल न करे तथा मनोयोगथी उ त्साह, जक्ति, उमंगतथा प्यार, बहु धरतो करे अने वचनयोगथी धर्मकरणीनी प्रशंसा घणा मानश्री करे; धर्मनी उन्नति, जपमा आपी आपीने करे अने घणा जीवने धर्मसंन्मुख करे, पोताना ञ्चात्माने धर्मप्राप्ति सराहे, एटले वखाणे के, धन्य मारुं जाग्य, के मने श्री जिनेश्वरजीना मार्गनी धर्मप्रवृत्ति सली ! हवे मने जवडुःखनो जय नथी. इत्यादि त्रिकरण योगशक्ति धर्मकरणीमां वीर्योद्धास फोरवे, ते वीर्याचारनो आराधक थोडा कालमां अक्त य लीला पामे. जो थोडी पण दानादि करणीमां वीर्योद्वास घणो होय तो, महोटी करणीथी पण वधारे फल पामे.

अने धर्मकरणीमां जे ढति शक्तियें काययोगें आलस्य करे, कायबल फोरवे नहीं अथवा राजवेठ समान करे, कांइ पण ज कि विना जयादि कारणे करे अथवा अजिमानथी करे अथवा देखा देखीयें करे अथवा ते लालची, अनुष्ठानादिक वांढाथी क रे, ते काययोगवीर्याचारातिचार प्रथम जाणवो.

१ तथा वचनयोगें उत्साहथी सझ्लाय स्तवनादि करे नहीं, मंद मंद जाषाथी गडवड करीने जणणानी रीतें कहे, तथा वीजो कोइ धर्मकार्य करतो होय, तेने छुष्करता कही देखाडे, जे ए धर्म काम ढे, ते घणुं मुइकेल ढे, तमाराथी पूरुं पडरो नहीं माटे प्रथ मथीज जोइ विचारीने करजो. ए प्रमाणे कहीने समर्थने पण ज त्साहजंग करे तथा धर्मकार्य करतां छाथवा करीने पढी खेदनां

यंथसमाप्तिना दोहा.

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कखुं, पए ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन ठे. करशे, तेज जाएशे. मने वीती ते मारुं मन जाऐठे, कोइ सहाय पए न थयुं, एने कोश्यें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें ? व्यमे कोने कहीयें. व्यधिकारी थ या त्यारें सर्व व्यमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें ? व्या धर्मकार्य करतामां व्या शरीर, डुर्बल थइ गयुंठे, ते हजी सुधी ठेकाणे व्याव्युं नथी. एवां वचन कहीने घएानां चित्त, जंग करे. इत्यादि हीन तानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाएवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतररो ? ए काम हाथमां नहीं बेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उठाव्युं तो खरुं, पए हवे कोइ बीजो माथे खे, तो हुं मूकी आपुं. कोइरीतें ढूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थरो, पैशो घणो खरचा रो, ग्रुं करीयें ? वगर विचारे कखुं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडग्रुं नहीं अथवा आ तप, कियादिक, कठिन थ यां. हवे फरी जोइने आदर करग्रुं ! इत्यादिक कुविकब्प मन मां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाएवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने आवकना धर्मना सर्व मढी एक शो चोवीश अतिचारनुं विवरण कद्युं. इति श्री सम्कक्त्वमूल द्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकव्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

शत अठारे जपरे, वीते वर्ष ववीश;

मगशिर द्युदि पंचमि गुरु, पूरण जई जगीश ॥ १ ॥

, J

ग्रंथसमाप्तिना दोहा.

सुरसरिताके तट वसे, पामबिपुर द्युजथान; जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ १ ॥ ब्रह्मचारि शिर सेहरो, श्रूलिजझ गुणधाम; जिए कोच्या प्रतिबूजवी, जिएपुर राख्युं नाम ॥ ३ ॥ तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अजिधान; दाता जुक्ता ग्रुजमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥ तसु सुत जडक व्रतरुचि, धर्में हढमतिमान्; हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम उण्वान् ॥ ५ ॥ धर्मकथा सुणिने जइ, वतरुचि तव कहे साह; लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें हम चाह ॥ ६ ॥ समकित युं व्रत बारकी, विगत पुनी छतिचार, वृद्धपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनों बिस्तार ॥ 3 ॥ आगमजलधि अपार है, मुज मति नौका तुन्न; को निवहे जादों नदी, पकरे जेडी पुछ ॥ ज ॥ आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती वात विशेष: वाक़ं दिख जाषा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥ ए तौनी तसु आसय अगम, जो बिन पाय अशुऊ; लिखिर्ज मिन्ना डुकडं, सांखी गुरुजन बुद्ध ॥ १० ॥ श्राब्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य; कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुऊ अवस्य ॥ ११ ॥ विगत एह व्रत बारकी, लिखी यथामति योग: व्रतरुचि विविध व्यज्यास करि, करजो तसु परिजोग ॥ ११ ॥ काल अनंत अनंतमय, जो पुग्गल परिअह; सोनी अनँतानंत गये, जनम मरण संघट ॥ १३ ॥ परमरिष्न परमाद है, तसु जय करण जपाय; विधियुत मानव जब लह्यो, तौजि न चेतो कांय ॥ १४ ॥

यंथसमाप्तिना दोहा.

जूले जव जो एइ तुम, बहुरि न आवे इठ्ठ; तो चेतो चितमें चतुर! निसुणी श्रुत परमठ ॥ १५ ॥ सुविहित सूरि सिरोमणि, नागरवंदित पाय; (श्री) पुष्प सागर सूरिंद्र ते, तपगठपति सुखदाय ॥ १६ ॥ तसु आणा सिर धारतां, वारतां विषय कषाय; श्रुतधारी जपगारि बहु, (श्री) ज्ञान सागर जवद्याय ॥ १६ ॥ तासु शिष्य पूरव तणा, तीरथ जेटण काज; किय प्रयाण ग्रुज दिन घडी, ग्रुज शकुनें ग्रु साज ॥ १० ॥ तीरथ फरसत आविया, पटणा नयर सुठाय; परमानँद जयो वंदतां, शेठ सुनीसर पाय ॥ १७ ॥ दिन केताइक तिहां रहि, लिख्यो सुत्रतविस्तार, वज्रोत्कीर्णमणिसूत परि, वहु श्रुतके जपगार ॥ १० ॥ इह विधि जो व्रत धारशे, वारशे विषयकषाय; विलपे ज्ञान ज्योतमय, आनँदघन सुखदाय ॥ ११ ॥

